युग निर्माण योजना

सितंबर 2026

₹ 13 एक प्रति | ₹ 150 वार्षिक | वर्ष-63 | अंक-3

परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा
जन्म शताब्दी
1926 2026

वंदनीया माताजी एवं अखण्ड दीप
शताब्दी विशेषांक

दिव्य अखण्ड दीप शताब्दी समारोह
1926 2026
शान्तिकुञ्ज-हरिद्वार

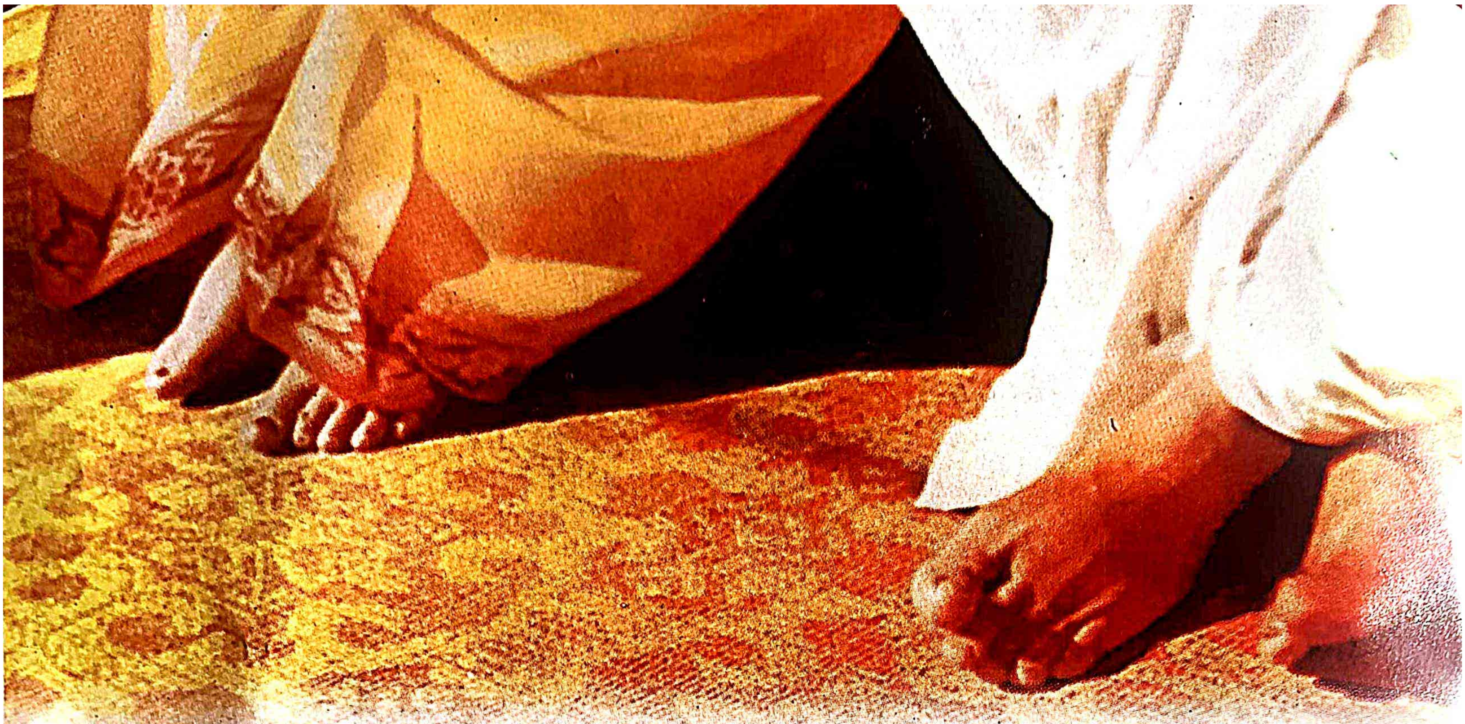

जन्म शताब्दी पर सादर समर्पित

गायत्री परिवार के जनक, संरक्षक, युग निर्माण योजना के प्रवर्तक, नवयुग के संदेशवाहक
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं स्नेह सलिला वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा ज
के चरणारविंदों में

श्रद्धावनत

- समस्त गायत्री परिवार के परिजन

- **अखण्ड ज्योति संस्थान**
  मथुरा
- **युग निर्माण योजना**
  गायत्री तपोभूमि, मथुरा
- **गायत्री तीर्थ, शांतिकुंज**
  हरिद्वार

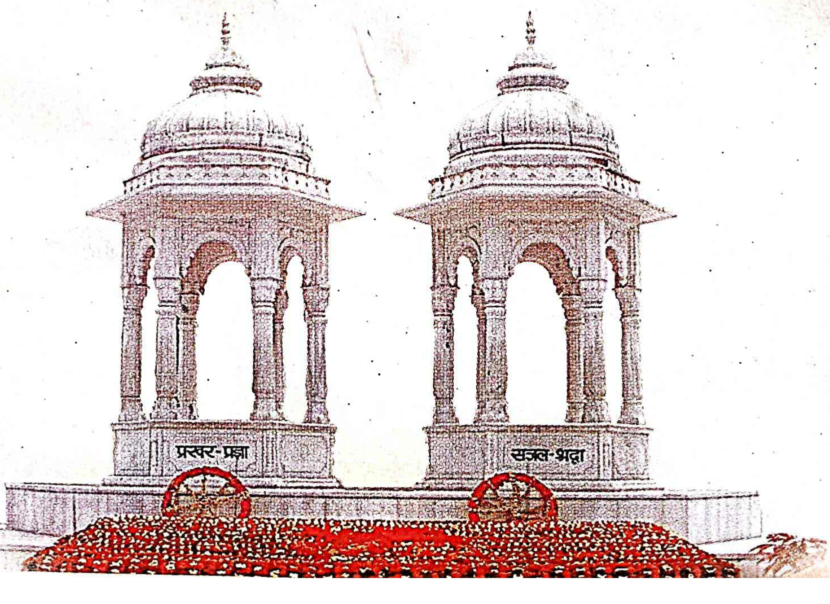

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्
उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अपनी अंतरात्मा में धारण करें । वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे ।

युग निर्माण योजना

नैतिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान का मासिक पत्र

संस्थापक / संरक्षक
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ युगद्रष्टा
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य
एवं
माता भगवती देवी शर्मा
संपादक
ईश्वर शरण पाण्डेय
सहसंपादक
सूर्यमणि तिवारी
दीनदयाल अमृते
कार्यालय
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
पि० को० 281003
दूरभाष नंबर
(0565) 2530115, 2530128, 2530399,
मो० 09927086287, 09927086289
(इन पर एस.एम.एस. न करें)

समय : प्रातः 9 से सायं 5 बजे
ई-मेल :
yugnirman@yugnirmanyojna.org
सितंबर—2026
प्रकाशन तिथि : 17.08.2026
वर्ष : 63 **अंक : 3**
वार्षिक शुल्क : 150 रु०
वार्षिक विदेश : 2200 रु०

वंदनीया माताजी एवं अखण्ड दीप शताब्दी विशेषांक

वंदना

ॐ वंदे भगवतीं देवीं,
श्रीरामञ्च जगद्गुरुम्।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा,
प्रणमामि मुहुर्मुहुः॥

जगज्जननी स्वरूपा वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा एवं जगद्गुरु स्वरूप पू. गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की हम वंदना करते हैं। उनके चरण कमलों के आश्रय में रहते हुए, पूर्ण समर्पण श्रद्धा-भाव से उन्हें बार-बार प्रणाम करते हैं। □

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.
1.	वंदना	3
2.	हमारी आराध्य सत्ता—पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी	7
3.	पूज्य आचार्य जी का वंशवृक्ष	13
4.	वंदनीया माताजी का वंशवृक्ष	14
5.	युगऋषि के लिए भावाभिव्यक्तियाँ	15
6.	वंदनीया माताजी के लिए भावाभिव्यक्तियाँ	17
7.	चित्र	19–38
8.	माताजी के जन्म से पूर्व के संकेत	39
9.	वंदनीया माताजी का अवतरण	40
10.	पिताजी द्वारा शिक्षण	41
11.	शिवपूजा में गहरी आस्था	42
12.	बच्चों से अलग जीवन पसंद	43
13.	पूर्वजन्मों की दिखी झलक	44
14.	पूजाकाल में दिखे आराध्य (पतिदेव)	45
15.	विदेशी वस्त्रों की होली	46
16.	शुभ विवाह की स्वीकृति-सहमति	47
17.	श्रीराम के जन्म के पूर्व के प्रसंग	48
18.	जन्म और नामकरण संस्कार	49
19.	बचपन से ही सीखने की उत्कट अभिलाषा	50
20.	कथा, भागवत का मिला ज्ञान	51
21.	पिताजी का मिला मार्गदर्शन	52
22.	प्राणियों के प्रति प्रेम-दया	53
23.	सेवाभावी स्वभाव	54
24.	साधना का शुभारंभ	55
25.	यज्ञोपवीत एवं दीक्षा संस्कार	56
26.	नियमित उपासना और तपश्चर्या	57
27.	आततायी अँगरेज का सिर फोड़ा	58
28.	छपको की सेवा	59
29.	भावी कर्मभूमि मथुरा का दर्शन-भ्रमण	60
30.	गुरुसत्ता से साक्षात्कार	61
31.	क्रांतिकारी लेखन	62
32.	हुब्बालाल की सेवा और औषधि-केंद्र की स्थापना	63
33.	आग से घिरी महिला को बचाया	64
34.	गाय को कसाई से बचाया	65
35.	हरिजन के यहाँ कथा एवं मंदिर-निर्माण	66
36.	प्रौढ़ शिक्षा-केंद्र चलाया	67
37.	गर्भवती विधवा का विवाह कराया	68
38.	काशी की तीसरी यात्रा	69
39.	बेहोश हुए, पर झंडा नहीं छोड़ा	70
40.	जेल जीवन के कुछ प्रसंग	71
41.	स्वतंत्रता संग्राम में योगदान	72
42.	सरकार द्वारा आचार्य जी का सम्मान	74
43.	'बुनताघर' की स्थापना	76
44.	हरिजन फंड के लिए अनुदान	77
45.	अखण्ड ज्योति का शुभारंभ	78
46.	मथुरा बनी कर्मस्थली (1940 से 1971 तक)	79
47.	साहित्य-लेखन का शुभारंभ	81
48.	भुतहा मकान की बदल गई स्थिति	82
49.	माताजी द्वारा गोसेवा, पत्राचार में सहयोग	83
50.	माताजी द्वारा प्रेस के कार्यों में गुरुदेव का सहयोग	84
51.	अतिथि सत्कार	85

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.
52.	बिना धर्म-जात के भेदभाव के सभी की सेवा	86
53.	गायत्री तपोभूमि के लिए जेवर दान	87
54.	बिड़ला जी का आग्रह अस्वीकार	88
55.	मिली 'आचार्य' की उपाधि	89
56.	गायत्री तपोभूमि में गायत्री माता की प्राण-प्रतिष्ठा	90
57.	तपोभूमि में यज्ञ, संस्कार आदि का नियमित क्रम	91
58.	नरमेध यज्ञ का दिव्य आयोजन (1956)	92
59.	गायत्री और यज्ञ की देशव्यापी महाक्रांति	93
60.	सहस्त्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ आयोजन (1958)	94
61.	ऋषियुग्म का आदर्श गृहस्थ जीवन	95
62.	माताजी की पाककला में दक्षता	97
63.	वाक्कला में निपुण वंदनीया माताजी	98
64.	माताजी में समाहित थी उत्कृष्ट गायन-वादन कला	99
65.	वंदनीया माताजी द्वारा गाए गीत	100
66.	गुरुसत्ता द्वारा उद्घोषित नारे व जयघोष	102
67.	बेजुबानों के प्रति अगाध प्रेम	103
68.	महिला संगठन का शुभारंभ	104
69.	माताजी द्वारा संपादन कार्य एवं लेखन	105
70.	गुरुदेव का अज्ञातवास (हिमालय प्रवास 1960-61)	110
71.	वेदों के भाष्य का सम्मान	111
72.	युग निर्माण योजना सत्संकल्प एवं शतसूत्रीय कार्यक्रम (1962-63)	112
73.	युग निर्माण सत्संकल्प	113
74.	युग निर्माण योजना का 1963 में घोषित शतसूत्रीय कार्यक्रम	114

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.
75.	आचार्य जी पर शोध प्रबंध	116
76.	अखण्ड ज्योति पत्रिका के संबंध में अभिमत	119
77.	आचार्य जी को 'लाइट ऑफ एशिया' की उपाधि	125
78.	गोरक्षा हेतु महापुरश्चरण (1966)	126
79.	युग निर्माण विद्यालय	127
80.	शांतिकुंज निर्माण की प्रक्रिया-महत्ता	128
81.	मथुरा से ऋषियुग्म की भावभरी विदाई	129
82.	देवकन्याओं द्वारा जप-साधना एवं जनजागरण	131
83.	नारी शक्ति के परमहितैषी—गुरुदेव, माताजी	132
84.	शक्तिपीठों की स्थापना, शिलान्यास एवं उद्घाटन	133
85.	नवयुग के संबंध में ऋषियुग्म की भविष्यवाणी	134
86.	चित्र	135-150
87.	सूक्ष्मीकरण साधना एवं हीरक जयंती समारोह	151
88.	अंतिम संदेश (परमपूज्य गुरुदेव)	152
89.	युगऋषि का महाप्रयाण	153
90.	वंदनीया माताजी द्वारा परिजनों को मार्गदर्शन	154
91.	श्रद्धांजलि समारोह	155
92.	वंदनीया माताजी की हिमालय यात्रा	156
93.	अश्वमेध यज्ञों का आयोजन	157
94.	वंदनीया माताजी का अंतिम संदेश	158
95.	महाशक्ति का महाप्रयाण	159
96.	माताजी की पावन जन्मस्थली	160
97.	साहित्य का विशाल परिमाण में सृजन	161

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.
98.	अखण्ड दीप के सौ वर्षों का ज्योतिर्मय अनुदान	163
99.	साधना शुभारंभ के स्वर्णिम सौ वर्ष	165
100.	जन्मभूमि आँवलखेड़ा, आगरा	167
101.	अखण्ड ज्योति संस्थान	168
102.	गायत्री तपोभूमि, मथुरा	169
103.	गायत्री तपोभूमि के कार्यक्रम एवं प्रकल्प	171
104.	गायत्री तीर्थ शांतिकुंज हरिद्वार	174
105.	ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान	175
106.	देव संस्कृति विश्वविद्यालय	176
107.	गायत्री परिवार के सात आंदोलन	177
108.	युग निर्माण योजना पत्रिका के बारे में पूज्य गुरुदेव गुरुदेव वंदनीया माताजी का अभिमत	179
109.	ऋषियुग्म के अभियान का संक्षिप्त परिचय	180
110	आत्मीय अनुरोध-श्रद्धांजलि संकल्प	185
111.	गायत्री तपोभूमि के बैंक खातों का विवरण	189
112.	माँ के चरणों में विनम्र वंदन	190

अनुरोध

परमवंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष में प्रकाशित यह श्रद्धांजलि विशेषांक पीढ़ियों तक सुरक्षित रखकर इसका स्वाध्याय प्रत्येक परिवारी जन को करना चाहिए। हम लोगों का पवित्र कर्त्तव्य है कि इसे अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाएँ।

इसकी लागत अत्यधिक है; पर प्रचार की दृष्टि से इसको पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जा रहा है, जिसका मूल्य लागत से भी कम मात्र 100/- रुपये प्रतिपुस्तक रखा गया है, न्यूनतम 10 प्रतियाँ तो कोई भी मँगा सकता है, अधिक-से-अधिक मँगाने का प्रयास करें और अग्रिम राशि निम्नलिखित बैंक खाते में भेजें। बैंक की स्लिप भरकर सूचित अवश्य करें, अन्यथा समायोजन न हो सकेगा।

Beneficiary	Yug Nirman Yojna Vistar Trust (Prachar Khata)	I.F.S. Code	Account No.
I.O.B.	Yug Nirman Tapobhoomi, Mathura	IOBA0001441	144102000002021
P.N.B.	Jawahar Inter Collge, Govind Nagar, Mathura	PUNB0497600	4976005700000071
S.B.I.	Vrindavan Gate Mandi Ram Das, Mathura	SBIN0002503	42597926175

E-Mail ID : yugnirman@yugnirmanyojna.org. **WhatsApp No.** 7055514422

हमारी आराध्य सत्ता पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी

बीसवीं सदी में इस धरती पर पू. गुरुदेव, वं. माताजी के रूप में एक महान सत्ता का अवतरण हुआ। उन्होंने वह पुरुषार्थ कर दिखलाया और आदर्श जीवन जिया जिसका उदाहरण और कहीं नहीं मिलता। उनके जीवन में अगणित विशेषताएँ, महानताएँ थीं, इसी कारण से उनका परिचय किसी नाम, पद, विशेषण आदि से नहीं दिया जा सकता।

जब ऐसी सत्ता की महानता के आगे उसे संबोधित करने के सारे शब्द छोटे पड़ जाएँ उसका परिचय देने के लिए कोई एक शब्द हो ही नहीं, अनेक शब्द मिलकर भी उसका परिचय न दे पाते हों, तो निश्चित ही माना जाना चाहिए कि वह सत्ता विशिष्ट सत्ता ही है।

पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी ऐसी सत्ता हैं जिनकी महिमा-महत्ता अवर्णनीय है। उनके गुणों का, उनकी महानताओं का, उनके कार्यों का वर्णन करते हुए उनके परिचय में, तपस्वी विद्वान, संत, महामानव, अवतारी पुरुष आदि सब कुछ कह लिया जाए, तब भी बहुत कुछ ऐसा बचता है, जिसकी अभिव्यक्ति के लिए कोई भी शब्द उपलब्ध नहीं है। पूज्य गुरुदेव और वंदनीया माताजी ने सारे संसार के कल्याण के लिए इतना कुछ किया है, जिसका आकलन भी नहीं हो पाता।

ऋषियुग्म में संतों का संतत्व है, सिद्धों की सिद्धियाँ हैं, ऋषियों का ऋषित्व है, महापुरुषों की महानता है, अवतारी चेतनाओं की प्रखरता है। इतना सब कुछ होने के बाद भी और बहुत कुछ है, जो अन्यत्र नहीं है।

पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी एक ही अस्तित्व हैं, दो नहीं। वे शिव-पार्वती, सीता-राम, राधे-श्याम, लक्ष्मी-नारायण, प्रकृति-पुरुष की तरह हैं। ऋषियों की दृष्टि से देखा जाए तो वे वसिष्ठ-अरुंधती, कश्यप-अदिति, अत्रि-अनसूया की तरह हैं। जैसे हाइड्रोजन और ऑक्सीजन मिलकर जल का निर्माण करते हैं, उसी तरह पूज्य गुरुदेव-वंदनीया माताजी ने दो शरीर, किंतु एक व्यक्तित्व बनकर कार्य किए। गुरुदेव, माताजी दोनों ने स्पष्ट घोषणा की है कि वे अलग-अलग सत्ता नहीं, एक ही सत्ता हैं।

संत तुलसीदास जी ने जल और लहर की अभिन्नता का वर्णन करते हुए मानस में लिखा है—

गिरा अरथ, जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न।

यही स्थिति पू. गुरुदेव एवं वं. माताजी की सत्ता में रही है। भगवान शिव शक्ति के साथ ही शिव हैं, कल्याणकारी हैं, बिना शक्ति के वे शव सदृश हैं। कार्य व्यवस्था को उत्कृष्टतम रूप से संपन्न करने के लिए एक ही सत्ता ने भले ही दो स्वरूप धारण कर लिए हों, पर वे प्रारंभ से अंत तक एक ही हैं, एक ही थे और एक ही रहेंगे। जब कभी गुरुदेव, माताजी के अनुदानों-योगदानों की चर्चा करनी हो तो दोनों के अलग-अलग नहीं, संयुक्त स्वरूप से ही सब कुछ संभव और संपन्न हुआ देखा जाना चाहिए।

परमपूज्य गुरुदेव एवं वं. माताजी ने विश्व-मंगल हेतु जो महानतम पुरुषार्थ किया है, उसके कतिपय बिंदु अग्रलिखित हैं—

(1) ऋषियुग्म ने सनातम धर्म-संस्कृति के वास्तविक एवं प्रभावशाली स्वरूप को जगत् के सामने लाने के लिए बहुत बड़ा पुरुषार्थ किया। धर्म को पाखंडों, अंधविश्वासों, मूढ़ मान्यताओं से मुक्त कर विवेकसम्मत उत्कृष्ट स्वरूप दिया।

भारतीय संस्कृति के आधार कहे जाने वाले गायत्री और यज्ञ को जन-जन तक पहुँचाया। गायत्री-साधना और यज्ञ जो कुछ लोगों तक ही सीमित हो गया था, उसे सार्वभौमिक एवं सार्वजनीन बना दिया। गायत्री और यज्ञ को सभी जाति के लोगों, महिलाओं, पिछड़ों-दलितों के लिए सुलभ कराया।

(2) विश्वकोश स्तर का गायत्री महाविज्ञान ग्रंथ तथा छोटी-बड़ी सैकड़ों गायत्री संबंधी पुस्तकों और गायत्री साहित्य संबंधी 6 खंड वाङ्मय ग्रंथों के साहित्य का लेखन किया।

(3) 24-24 लाख मंत्र के 24 महापुरश्चरणों को 24 वर्ष में पूर्ण किया। गायत्री-साधना के महान सिद्ध दंपती जिन्होंने गायत्री शक्ति का साक्षात्कार किया, करोड़ों लोगों को प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से गायत्री मंत्र की दीक्षा दी।

(4) विश्व के महान गुरु मार्गदर्शक के रूप में करोड़ों को सन्मार्ग पर चलाया।

(5) छोटे से लेकर बड़े-से-बड़े सभी प्रकार के चौबीस कुंडीय, शतकुंडीय, सहस्रकुंडीय यज्ञों को हजारों की संख्या में संपन्न कराया। अश्वमेध यज्ञों के आयोजनों की शृंखला चलाई जो अब तक चल रही है। कम साधन एवं कम समय में संपन्न होने वाले दीपयज्ञों का प्रचलन विश्वव्यापी किया।

(6) आर्ष वाङ्मय का भाष्य—ज्ञान-विज्ञान के आदिस्रोत कहे जाने वाले वेदों के ज्ञान की सुलभता के लिए उनका सरल भाष्य कर जनसुलभ बनाया। उपनिषद्, दर्शन, पुराण, गीता, स्मृति आदि ग्रंथों का सरल भावार्थ लिखकर उनमें सन्निहित सद्ज्ञान को लोगों के लिए उपलब्ध कराया।

जीवनोपयोगी 3200 पुस्तकों का लेखन तथा अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना, प्रज्ञा अभियान, युग शक्ति गायत्री आदि पत्रिकाओं का लेखन, प्रकाशन किया। उनका साहित्य और पत्रिकाएँ गुजराती, उड़िया, मराठी, अँगरेजी, तेलुगु, तमिल आदि में भी प्रकाशित हो रही हैं।

आदर्श-स्तर के लेखन, संपादन, पत्रकारिता, काव्य सृजन आदि से समाज को लाभान्वित कराया।

(7) विश्व के प्रथम गायत्री माता मंदिर एवं गायत्री तीर्थ की स्थापना मथुरा में की। देश एवं विदेशों में हजारों की संख्या में शक्तिपीठों-प्रज्ञापीठों का निर्माण कराया।

(8) संस्कारों, पर्व-त्योहारों एवं अन्य कर्मकांडों के स्वरूप को सरल तथा प्रभावशाली बनाकर उनका प्रचार-प्रसार देश एवं विदेशों में किया-कराया।

(9) सूक्ष्मीकरण-साधना, विश्व कुंडलिनी जागरण-साधना आदि साधनाओं को संपन्न करना।

(10) रामायण, भागवत, गीता, सत्यनारायण कथा, प्रज्ञापुराण कथा आदि के माध्यम से लाखों लोगों तक सच्चिंतन-सत्प्रेरणाओं का प्रसार करना।

(11) धर्मतंत्र को लोक-शिक्षण का माध्यम बनाकर, जन-मानस को उत्कृष्टता की ओर ले जाना।

(12) कठोर तपश्चर्या, गाय के गोबर से निकले जौ की रोटी एवं छाछ पर साधनाकाल में निर्वाह, गृहस्थ जीवन में रहते हुए महान योगियों, तपस्वियों की तपश्चर्याएँ पूरा करना, बार-बार हिमालय जाकर तप करना, नैमिषारण्य में तप करना।

(13) योग की विधाओं को सामयिक उपयोगी रूप में जन-जन को सुलभ कराना, आज के युग के लिए योग के रूप में 'प्रज्ञा योग' को देना।

(14) मंदिरों को जन-जागरण का केंद्र बनाना।

(15) सर्वधर्म समभाव की प्रतिष्ठा।

(16) एक धर्म, एक भाषा, एक शासन, एक राष्ट्र (विश्व राष्ट्र) की प्रेरणा-दिशा देना।

(17) देव-दक्षिणा का आदर्श विधान देना, जिसमें दक्षिणा को धन प्रधान नहीं व्रत, अनुशासन, सत्संकल्प प्रधान बनाना। देव दक्षिणा में रुपया-पैसा न लेकर व्यक्ति को एक बुराई छोड़ने एवं एक अच्छाई अपनाने को संकल्पित कराना।

(18) युगांतरकारी विशाल सामूहिक अनुष्ठानों, पुरश्चरणों, साधनाओं को लोकहित में संपन्न कराना।

(19) व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण की योजनाओं को पूरी तत्परता से चलाना।

(20) संसार के सबसे महान संकल्प 'युग निर्माण सत्संकल्प' (1962) और सबसे महान योजना 'युग निर्माण योजना' (1963) का प्रारूप बनाना और पूरा करने हेतु लाखों परिजनों को इस दिशा में प्रेरित-नियोजित करना। पू. गुरुदेव ने सत्संकल्प के साथ शतसूत्रीय युग निर्माण योजना का शुभारंभ कर नवसृजन का महा अभियान चला दिया।

(21) संसार को दिशा देने वाले महान आध्यात्मिक संगठन 'गायत्री परिवार' का निर्माण करना।

(22) पूज्य गुरुदेव ने स्वतंत्रता संग्राम के आदर्श सेनानी के रूप में लगभग 20 वर्ष कठोर पुरुषार्थ किया, कठिन यातनाएँ सहीं, कई बार जेल गए। उनके योगदान को देखते हुए सरकार ने 1988 में उन्हें ताम्रपत्र देकर सम्मानित किया। पू. गुरुदेव ने पेंशन न लेकर उसे हरिजन कोष में जमा करने को कहा। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में उनका उल्लेख सूचना मंत्रालय उ.प्र. सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'आगरा संभाग के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी' में बहुत सम्मान के साथ किया गया है।

(23) पू. गुरुदेव के महाप्रयाण (2 जून, 1990) के पश्चात उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर 27 जून, 1991 को भारत सरकार ने उनके सम्मान में एक रुपये का डाक टिकिट जारी किया, जिसका विमोचन महामहिम डॉ. शंकर दयाल शर्मा जी (तत्कालीन उपराष्ट्रपति) और सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री रंगनाथ मिश्रजी ने किया।

नवंबर 1995 में प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव जी ने आचार्य जी की जन्मभूमि आँवलखेड़ा में 'कीर्तिस्तंभ' का लोकार्पण किया और आचार्यजी को युगप्रवर्तक सत्ता बताया।

(24) ऋषियुग्म ने नारी जागरण का अभियान चलाकर महिला शक्ति को उसका गौरव-सम्मान वापस दिलाने, नारी को हर क्षेत्र में आगे बढ़ाने का कार्य किया।

(25) गायत्री और यज्ञ के प्रचार-कार्य में अनुचित रूप से विरोध करने वाले दुराग्रहियों को गुरुदेव ने शास्त्रार्थ की चुनौती दी। उन्होंने सन् 1952 के अक्टूबर माह की 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका में एक लेख प्रकाशित किया, जिसमें लिखा है—"हमारे विरोधी जन यदि अपनी बातों का आधार मजबूत समझते हों और हमारी बातों को अप्रामाणिक समझते हों तो इसके लिए एक विद्वज्जनोचित शास्त्रार्थ कर लें और उसमें यह शर्त रख लें कि—(1) जिसकी बातें अप्रामाणिक सिद्ध हों उसे

गोली मार दी जाए। (2) विजेता को पराजित की सारी संपत्ति दे दी जाए।''

—अखण्ड ज्योति 1952, अक्टू. पृ. 29

पू. गुरुदेव की शर्त को पढ़-सुनकर कोई भी विरोधी शास्त्रार्थ करने के लिए तैयार नहीं हुआ।

(26) जिनके पिता की छाया सिर से 12 वर्ष की छोटी उम्र में ही उठ गई हो, मित्र, रिश्तेदार, परिवार के लोग समुचित सहायता संरक्षण कर सकने में असमर्थ सिद्ध हों, वह अकेले अपने बल पर अपना ही नहीं, पूरे विश्व का भाग्य-भविष्य बनाने चल पड़ा हो, ऐसा महान संकल्पवान और साहसी दुनिया में कठिनाई से मिलेगा।

(27) बहुत बड़े लोगों, अमीरों, पद-प्रतिष्ठा वालों, कला, विज्ञान, धर्म, धन, शासन आदि क्षेत्र की महान विभूतियों का आश्रय लिए बिना, केवल निम्न एवं मध्यम वर्ग के अपने रीछ-वानरों, ग्वाल-बालों के सहयोग से विश्व को बदलने वाली महाक्रांति जिनने खड़ी कर दी हो, उनकी आत्मशक्ति का आकलन भला कौन कर सकता है।

(28) पू. गुरुदेव और वं. माताजी ने स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन, सभ्य समाज के निर्माण के लिए अनेकों कार्यक्रम चलाए। दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन के अंतर्गत दहेजप्रथा, भिक्षा-व्यवसाय, जादू-टोना, बलि-प्रथा, बालविवाह, अनमेलविवाह, अश्लीलता, फैशनपरस्ती, अंधविश्वास, कुरीतियाँ, मूढ़मान्यताएँ, जुआ, सट्टा, फजूलखरची, कामचोरी, जाति-वंश, नर-नारी का भेदभाव, नशा, दुर्व्यसन आदि को समाज से मिटाने का अभियान चलाया।

सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन हेतु वृक्षारोपण, साक्षरता, शिक्षा विकास, स्वच्छता, स्वास्थ्य रक्षण, संस्कार, आस्तिकता संवर्द्धन, गोपालन, कला से लोक-मंगल का कार्य आदि को आगे बढ़ाया।

(29) ऋषियुग्म ने आयुर्वेद, जड़ी-बूटी चिकित्सा, यज्ञ चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा आदि स्वास्थ्य विधाओं को प्रतिष्ठित-संवर्द्धित किया।

(30) राष्ट्र के लिए समय-समय पर महत्त्वपूर्ण विशिष्ट योगदान। 1962, 1965, 1971 के युद्धों में भारत की सफलता के लिए उत्कृष्ट पुरुषार्थ किया-कराया।

(31) 1979 में जब अमेरिकी अंतरिक्ष स्टेशन स्काईलैब वैज्ञानिकों के नियंत्रण से बाहर होकर पृथ्वी पर गिरने लगा, तब उसके गिरने से होने वाले नुकसानों से धरतीवासियों को बचाने के लिए पू. गुरुदेव ने गायत्री परिजनों द्वारा सामूहिक साधना अनुष्ठान कराया। मानव मात्र के कल्याण को लक्ष्य बनाकर की गई इस सामूहिक साधना के प्रभाव ने कार्य किया। स्काइलैब का मलबा मानव बस्तियों से दूर गिरा, जिससे किसी प्रकार की जन-धन की क्षति नहीं हुई।

(32) स्वावलंबन, लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, पशुपालन, कृषि आदि पर आधारित प्रशिक्षण तंत्र खड़ा करना।

(33) ग्रामोत्थान के अनेकों कार्यक्रम चलाना।

(34) लाखों पुरोहित, कर्मकांडी लोकसेवियों को धर्मक्षेत्र के मैदान में उतारना, उनके प्रयत्नों से धर्मक्षेत्र की दिशा और दशा में बदलाव लाकर सर्वोपयोगी धर्म अध्यात्म का स्वरूप खड़ा करना।

(35) प्रवचन संगीत (सत्संग) विधा द्वारा करोड़ों तक दिव्य जीवन का आलोक पहुँचाना।

(36) वानप्रस्थ परंपरा को जीवंत करना।

(37) पर्यावरण संरक्षण के लिए अभीष्ट कार्यों में जनशक्ति को निरंतर लगाना। हरीतिमा संवर्द्धन का अभियान गतिशील बनाए रखना।

(38) आध्यात्मिक साम्यवाद की स्थापना करना। अध्यात्म के उच्च सिद्धांतों 'वसुधैव कुटुंबकम्', 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' आदि की भावना को जनमानस में प्रतिष्ठित करते हुए सुखी, समृद्ध, सुसंस्कृत समाज की आधारशिला रखना।

(39) ऋषियुग्म ने वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की स्थापना की। जप, ध्यान, प्राणायाम, यज्ञ आदि धार्मिक प्रक्रियाओं को विज्ञान की कसौटी पर खरा सिद्ध किया। वैज्ञानिक यंत्र, उपकरणों और उनके प्रयोगों द्वारा योग-साधनाओं को आवश्यक, उपयोगी एवं लाभकारी प्रमाणित किया।

(40) वर्णाश्रम व्यवस्था को कर्ममूलक बनाया।

(41) समयदान, अंशदान की दिव्य परंपरा बनाकर लाखों लोगों के श्रम, साधनों का उत्कृष्टतम नियोजन जनहित में करना।

(42) आँवलखेड़ा, अखण्ड ज्योति, गायत्री तपोभूमि, शांतिकुंज, ब्रह्मवर्चस, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय जैसे विश्वस्तरीय संस्थानों की स्थापना करना।

(43) अपनी चमत्कारिक शक्तियों से लाखों लोगों का भला करना। पूज्य गुरुदेव, वं. माताजी ने समय-समय पर अपनी अलौकिक शक्तियों का उपयोग लोगों के कल्याण के लिए किया। मृतक अवस्था में पहुँचे लोगों को जीवनदान देना, असाध्य बीमारियाँ ठीक करना, विभिन्न प्रकार के संकटों से उबारना, कठिनतम समस्याओं का समाधान करना, जैसे अनेकों कार्यों को करने में उन्होंने अपनी अलौकिक शक्तियों का उपयोग किया। इस शक्ति से उनने न केवल कुछ व्यक्तियों के लिए कार्य किया, बल्कि समाज-कल्याण के लिए भी कार्य किया।

गुरुदेव, माताजी ने स्वयं स्वीकार किया है कि उनके प्रत्यक्ष पुरुषार्थ द्वारा जितना जन-कल्याण का कार्य हुआ है, उससे कई गुना परोक्ष पुरुषार्थों, अलौकिक शक्तियों द्वारा किया गया है।

(44) गुरुदेव, माताजी संस्कारपूर्ण शिक्षा को बहुत महत्त्व देते थे, इसके लिए उनने 1963 में आँवलखेड़ा विद्यालय, 1967 में युग निर्माण विद्यालय, 1980 में शांतिकुंज विद्यापीठ की स्थापना की। उन्हीं की प्रेरणा से विभिन्न क्षेत्रों में भी हजारों विद्यालय चल रहे हैं, जहाँ उनके आदर्शों के अनुरूप शिक्षण व्यवस्था की जाती है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय भी उन्हीं की आकांक्षा एवं प्रेरणा का मूर्तिमान रूप है।

(45) जब नरमेध यज्ञ 1956 में मथुरा में हुआ, तब उस अवसर पर सबसे पहले पू. गुरुदेव, वंदनीया माताजी ने अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति, जमीन, जेवर, नकदी, प्रेस आदि को समाज के लिए गायत्री माता को समर्पित कर दिया था। उनके द्वारा यह नरमेध से भी बड़ी 'सर्वमेध' प्रक्रिया संपन्न हुई थी।

(46) विश्व के महान द्रष्टा के रूप में गुरुदेव, माताजी ने मानव मात्र को उज्ज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त किया है। उनकी चार प्रमुख भविष्यवाणियाँ हैं, जो सभी सत्य सिद्ध होती दिखाई दे रही हैं—

1. इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य।
2. इक्कीसवीं सदी-नारी सदी।
3. इस सदी में भारत विश्व का नेतृत्व करने में पुनः समर्थ होगा।
4. युवाओं का सर्वतोमुखी विकास होगा, इक्कीसवीं सदी युवाओं के दिव्य उत्कर्ष की सदी होगी।

(47) ऋषियुग्म का कथन था कि लोग हमको बहुत बड़ा सिद्ध, महामानव, अवतारी पुरुष आदि के रूप में देखते हैं, पर सच्चाई यह है कि मानव कल्याण के लिए अनवरत प्रयत्नशील हम एक ऐसी आत्मा हैं, जिसके भीतर लोकहित ही कूट-कूटकर भरा है और कुछ दूसरा है ही नहीं। हम मुक्ति, ईश्वरप्राप्ति, अपने लिए नहीं चाहते, हमारा तो संकल्प और प्रयास है कि जब तक धरती का एक भी

प्राणी बंधनों में है, तब तक हम उसके उद्धार के लिए प्रयत्नशील बने ही रहेंगे।

(48) वे बड़े गर्व के साथ परिजनों, शिष्यों से कहते रहे, कोई यह कहे कि हमारा गुरु तुम्हारे गुरु से अधिक योग्य, विद्वान, सिद्ध आदि है, तो मान लेना, किंतु कोई कहे कि हमारा गुरु तुम्हारे गुरु से अधिक प्यार करता है तो बिलकुल मत मानना। बेटे! तुम सबके लिए हमारे हृदय में असीम प्यार है। सारे संसार के लिए ममता, वात्सल्य, स्नेह का असीम भंडार है। हम दोनों पूरे विश्व को अपना परिवार मानकर जो अच्छा-से-अच्छा सोचा जा सकता है, वह सोचते हैं, जो अच्छा-से-अच्छा किया जा सकता है, वह करते-कराते हैं।

(49) करोड़ों के लिए पूं. गुरुदेव, वंदनीया माताजी अपनी दया, करुणा, सेवा, प्यार, मार्गदर्शन, दुःख, कष्ट-निवारण आदि सद्गुणों, महानताओं के कारण भगवान बनते चले गए।

(50) धरती का सबसे महान कार्य है— युग निर्माण। विश्वभर के मानवों के चिंतन, चरित्र, व्यवहार को निकृष्टता से उबारकर उत्कृष्टता से युक्त बना देना—यही है युग निर्माण। इसी के लिए पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी की सत्ता निरंतर कार्य करती रही, आगे भी करती रहेगी। जब तक लक्ष्य नहीं मिल जाता, तब तक आगे ही बढ़ते जाना है, यह ऋषियुग्म एवं उनके करोड़ों स्वजनों का संकल्प तथा प्रयत्न है।

(51) समस्त मानव समाज को उत्कृष्ट प्रेरणा और मार्गदर्शन देने वाले मानवतावादी नारों एवं जयघोषों का प्रचलन ऋषियुग्म ने 1953 से आरंभ किया।

(52) गुरुदेव एवं माताजी ने ऋषियों, संतों, महामानवों, अवतारी पुरुषों की परंपरा को आगे बढ़ाने में भरपूर पुरुषार्थ किया।

(53) बिना किसी बाहरी आडंबर, वेश-भूषा आदि के सादा जीवन जीते हुए आदर्श गृहस्थ जीवन जीकर लाखों परिवारों को आदर्श पारिवारिकता का मार्गदर्शन दिया।

(54) सारी कलाओं में सर्वोपरि 'जीवन जीने की कला' का प्रशिक्षण लोगों को दिया।

(55) मानव समाज को उत्कृष्टता के साँचे में ढालने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण शिविरों का शुभारंभ किया।

(56) शिक्षा, स्वास्थ्य, साधना, स्वावलंबन, पर्यावरण, नारीजागरण, व्यसनमुक्ति, कुरीति-उन्मूलन को लक्ष्य बनाकर सप्त महा आंदोलनों का प्रवर्तन कराना।

(57) गायत्री तपोभूमि मथुरा में 700 वर्ष से अधिक पुरानी हिमालय की सिद्ध धूनी से लाई हुई अखंड अग्नि की स्थापना, 2400 करोड़ मंत्र लेखन स्थापना, 2400 तीर्थों के जल-रज की स्थापना करना।

(58) गोरक्षा, गोसंवर्द्धन की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य। गो रक्षार्थ 1966 में पूरे वर्ष तक विशेष सामूहिक साधना कराना।

(59) दलित-पिछड़े, आदिवासी आदि सभी के लिए उनके मन में विशेष करुणा थी और उनने ऐसे वर्ग के लोगों के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य किए।

(60) ऋषियुग्म यश, प्रतिष्ठा, उपाधियों से सदैव दूर रहे। उन्होंने जो कुछ भी किया, वह संसार को भगवान का प्रत्यक्ष स्वरूप मानकर, उसकी सेवा की भावना से किया।

पू. गुरुदेव, वं. माताजी के लोक-कल्याण के लिए किए गए प्रत्यक्ष-परोक्ष अगणित कार्य हैं, जिनमें कुछ कार्यों का ही वर्णन यहाँ हो पाया है। उनके महान व्यक्तित्व और कर्तृत्व का समग्र विवेचन करने में तो कई ग्रंथ बन जाएँगे, शायद तब भी कुछ-न-कुछ शेष ही रह जाएगा। ❐

पूज्य आचार्य जी का वंशवृक्ष

ब्राह्मण-सनाढ्य, गोत्र-भारद्वाज, उपगोत्र-राजौरिया

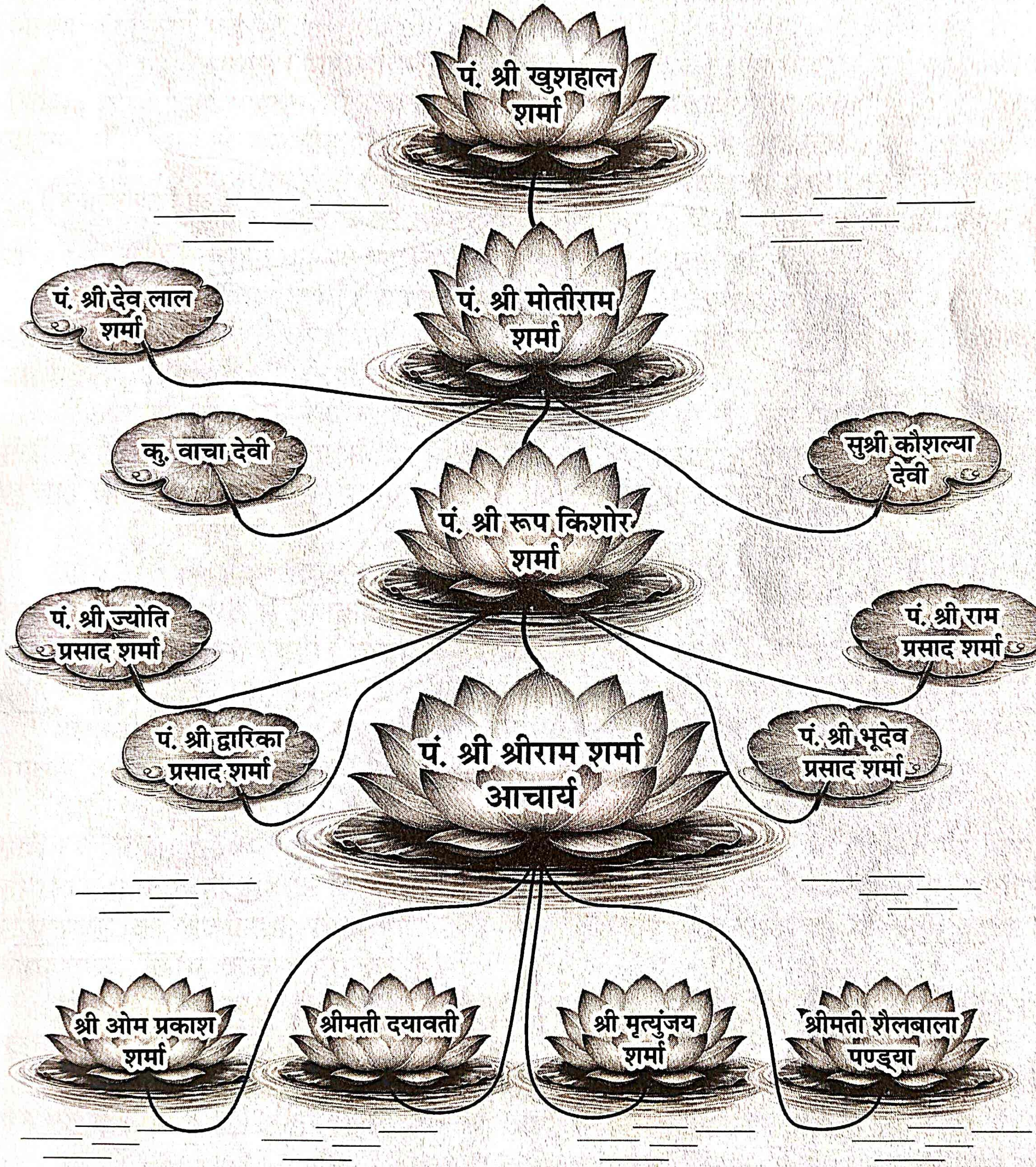

वंदनीया माताजी का वंशवृक्ष

ब्राह्मण-गौड़, गोत्र-तिवारी

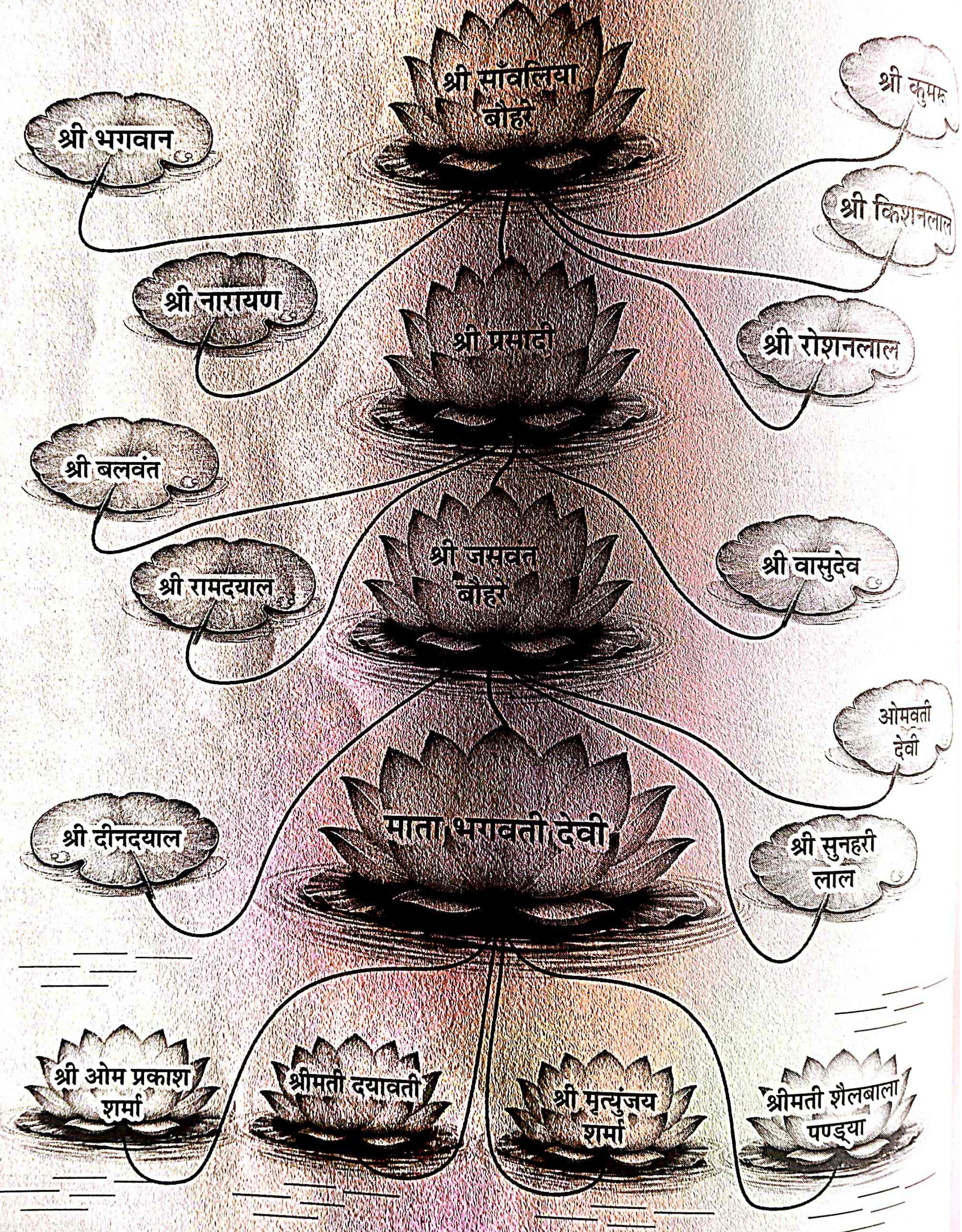

युगऋषि के लिए भावाभिव्यक्तियाँ

परमपूज्य गुरुदेव बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, अगणित विशेषताओं, महानताओं से संपन्न नवयुग के निर्माता महामानव अवतारी पुरुष थे। उनके लिए कतिपय विशिष्ट जनों की भावाभिव्यक्तियाँ पढ़ें—

डॉ० राधाकृष्णन (महामहिम राष्ट्रपति)—"यदि यह ज्ञान नवनीत मुझे कुछ वर्ष पूर्व मिल गया होता तो संभवत: मैं राजनीति में प्रवेश न कर आचार्यश्री के चरणों में बैठा अध्यात्म दर्शन का शिक्षण ले रहा होता।" (पूज्य गुरुदेव के वेदभाष्य के अवलोकन के बाद)

श्री गुलजारी लाल नंदा (भारत के दो बार के कार्यवाहक प्रधानमंत्री)—"आचार्य जी भारत को सुसंस्कृत भारत बनाने और देश के नागरिकों में सेवा, साधना, राष्ट्रप्रेम, त्याग और बलिदान के भाव जगाने का जो महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं वह अद्वितीय है।"

डॉ० शंकर दयाल शर्मा (महामहिम राष्ट्रपति)—"आचार्य जी ने सिद्धांत और साधना को आधुनिक युग के अनुकूल तर्क व शब्द देकर सामाजिक परिवर्तन का जो मार्ग दिखाया है, उसके लिए आने वाली पीढ़ियाँ युगों-युगों तक कृतज्ञ रहेंगी।"

"आचार्य जी ने अनेक छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ लिखी हैं, जो व्यावहारिक जीवन से संबंधित हैं और अत्यंत महत्त्व की हैं। मैं चाहूँगा कि ये पुस्तिकाएँ अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचाई जाएँ, ताकि लोग उनसे अपने जीवन का निर्देशन प्राप्त कर सकें।"

(देशमणि पुस्तक, पृष्ठ-111)

डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम (महामहिम राष्ट्रपति)—"युगऋषि श्रीराम शर्मा आचार्य वर्तमान भारत में ज्ञानक्रांति के अगुआ हैं।"

डॉ० एम० चेन्ना रेड्डी (महामहिम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश)—"आज मैं अपने जीवन में प्रथम बार एक महान संत, तपस्वी और भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक का दर्शन कर पाया हूँ।"

श्री विश्वनाथ दास (महामहिम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश)—"आज मैंने, व्यक्ति में भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन किए हैं।"

आचार्य निरंजननाथ (अध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा, जयपुर)—"मैंने पाया कि उनमें (पूज्य गुरुदेव) मानव सेवा की तड़पन, साधना का प्रकाश, प्रेम का सौरभ और विरक्ति की सौम्यता बहुत ही अधिक है, उनका पांडित्य आध्यात्मिक क्षेत्र का प्रकाशस्तंभ है। गांधी जी के प्रवचनों की शालीनता, रामकृष्ण परमहंस की सहजता और नेहरू जी की निश्चिंतता का संगम उनकी अभिव्यक्ति में मिलता है।"

संत देवरहा बाबा—"गायत्री के सिद्ध साधक आचार्यश्री का मैं नित्यप्रति अभिनंदन करता हूँ। वे मेरे हृदय में बसते हैं।"

महात्मा आनंद स्वामी (आर्यसमाज के महान संत)—"आचार्यश्री ने गायत्री को जन-जन की बनाकर महर्षि दयानंद के कार्य को आगे बढ़ाया है। गायत्री और वे एक रूप हैं।"

श्री विनोबा भावे—"मैंने इस वेदभाष्य को भली प्रकार देखा है। ऐसा सुंदर भाष्य कोई सुंदर ऋषि ही कर सकता है। अन्य में भला ऐसी सामर्थ्य कहाँ? इसके भाष्यकर्त्ता को मैं वेदमूर्ति मानता हूँ।"

माँ आनंदमयी—एक बार गुरुजी-माताजी माँ आनंदमयी के आश्रम में पहुँचे। उन्हें देखकर माँ आनंदमयी प्रसन्नता से भर गईं और बोलीं—''आइए, आइए! माताजी-पिताजी आइए।'' गुरुजी बोले—''माँ तो आप हैं।'' इस पर वे बंगाली भाषा में बोलीं—''आमी जानी, के बाबा के माँ।'' माँ आनंदमयी ने गुरुजी-माताजी के चरण पखारे और फिर गुरुजी-माताजी का सत्कार सम्मान किया।

स्वामी करपात्री महाराज—''आचार्य जी इस युग में गायत्री के जनक हैं। गायत्री सबकी होने के बाद लुप्त होने से बच गईं। (सन् 1974 हरिद्वार कुंभ)

स्वामी अखंडानंद सरस्वती—''जो गायत्री का गंगाजल की तरह सेवन करना चाहते हों, वे आचार्य जी का मार्ग अपनाएँ।''

स्वामी विशुद्धानंद (हिमालयवासी महान सिद्धपुरुष)—''आचार्य जी आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान के पारदर्शी मनीषी हैं, उन्होंने अपने को घनघोर तपस्या में तपा-तपाकर अष्टधातु का बना लिया है। आचार्य जी असंख्यों को पार करने वाले अनुभवी मल्लाह हैं, वे महान पैदा हुए हैं, महानता के साथ जी रहे हैं और उनका अंत भी महान ही होगा।''

शंकराचार्य स्वामी जयेंद्र सरस्वती (कांचि काम कोटि पीठ)—''आचार्य जी का एकाकी पुरुषार्थ सारे संत समाज की सम्मिलित शक्ति के स्तर का है। उन्होंने गायत्री व यज्ञ को प्रतिबंध रहित करने के निमित्त जो कुछ भी किया, वह शास्त्रों के अनुसार ही था। आचार्य जी ऐसे युगपुरुष हैं, जिनका हर कार्य शास्त्रसम्मत, विधिसम्मत माना जाना चाहिए।''

स्वामी कल्याणदेव—''मेरा और आचार्य जी का संबंध कृष्ण और सुदामा जैसा था। लोग मथुरा-वृंदावन मंदिरों के दर्शन करने जाया करते हैं। मैं आचार्य जी के यज्ञ के दर्शनों के लिए मथुरा जाया करता था।''

स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि—''वर्ष में एक बार बुलाकर वे मुझे भिक्षा (भोजन) कराते थे। आचार्य जी के प्रत्येक कार्य में संयम का दर्शन होता है। उनकी महानता में उनकी संयमी जीवनचर्या का विशेष योगदान है।''

प्रतिभा देवी सिंह पाटिल (महामहिम राष्ट्रपति)—''राष्ट्र के नैतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान तथा जनसामान्य के व्यक्तित्व विकास लिए पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने अपना पूरा जीवन लगा दिया। उनके व्यक्तित्व में एक संत और अध्यात्म-वैज्ञानिक के दर्शन होते हैं। मानव अपने जीवन में सत्यमार्ग पर चलकर प्रगतिशील बने—इसी से शांति और संतोष प्राप्त होगा। यही उनका संदेश था।''

श्री रामानंद सागर (निर्देशक-निर्माता, रामायण सीरियल)—''विचार, तप, ज्ञान के रूप में आचार्यश्री तथा क्रिया, शक्ति, भक्ति के रूप में माताजी, ऋषियों के रूप में विद्यमान हैं। मानव जाति के लिए भगवान का इससे बड़ा वरदान और क्या होगा ?''

श्री रंगनाथ मिश्र (प्रधान न्यायाधीश सुप्रीम कोर्ट)—पूज्य गुरुदेव के सम्मान में भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया। उस समय इस समारोह में सर्वोच्च न्यायालय के चीफ जस्टिस श्री रंगनाथ मिश्र भी तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० शंकरदयाल शर्मा के साथ शामिल हुए थे। उन्होंने कहा—''शरीर छोड़ने के बाद भी पूज्य आचार्य जी एक बार मुझे मार्गदर्शन दे गए।''

श्री जुगल किशोर बिड़ला—''मैंने पंडित जी में साक्षात् ब्राह्मण के दर्शन किए हैं। उनका कोई कार्य कभी रुक नहीं सकता, क्योंकि स्वयं भगवान उनमें समाये हुए हैं।'' ❐

वंदनीया माताजी
के लिए भावाभिव्यक्तियाँ

क्या कुछ नहीं समाया था वंदनीया माताजी के व्यक्तित्व में। आदर्श गृहिणी, वात्सल्यमयी माँ, उत्कट तपस्विनी, आध्यात्मिक शक्तियों की दिव्य स्रोत, ओजस्वी वक्ता एवं कुशल व्यवस्थापिका आदि न जाने कितने रूपों में वह अपना प्रकाश बाँटती-बिखेरती रहीं। जिनके हाथ में देश और समाज ने अपनी बागडोर सौंपी है, वे सब भी माताजी के सामाजिक-सांस्कृतिक अनुदानों की चर्चा करते नहीं थकते।

विशिष्ट जनों की बहुरंगी स्मृतियों की हलकी-सी झाँकी नीचे प्रस्तुत की जा रही है—

श्री भैरों सिंह शेखावत (महामहिम उपराष्ट्रपति)—"जहाँ से आत्मिक शांति एवं आध्यात्मिक शक्ति का प्रवाह निरंतर बहता रहता है, उनका नाम ही माताजी है।"

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (माननीय प्रधानमंत्री)—"मानवीय संवेदना अगर घनीभूत हो जाए, तो कैसी होगी; यह माताजी को देखकर पता चला। उनके द्वारा चलाया गया अश्वमेध अभियान राष्ट्र-निर्माण का वेगपूर्ण प्रवाह है।"

डॉ० एम० चेन्ना रेड्डी (महामहिम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश)—"भगवान से मेरी प्रार्थना है कि आचार्य जी एवं माताजी की भावधारा से, उत्तर प्रदेश ही नहीं, समूचा देश और दुनिया परिचित-प्रभावित हो।"

श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी (महामहिम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश)—"उनके द्वारा विश्व-कल्याण के लिए किया जा रहा कार्य सर्वथा अद्वितीय है।"

श्री पुरुषोत्तम कौशिक (पर्यटन एवं उड्डयन मंत्री, भारत सरकार)—"वंदनीया माताजी के प्यार के आकर्षण ने उच्चशिक्षित एवं प्रतिभासंपन्न लोगों को भौतिकता का मोह छोड़कर शांतिकुंज आने एवं लोकसेवा करने के लिए मजबूर किया है।"

श्री ब्रजलाल वर्मा (संचार मंत्री, भारत सरकार)—"शांतिकुंज न आता, तो पता भी न चलता कि नारी शक्ति के विकास का सही स्वरूप क्या है? माताजी भारतीय नारी के आदर्शों की जीवंत मूर्ति हैं। स्नेह, ममत्व, करुणा, साहस, सेवा, सदाशयता—सभी गुण तो उनमें हैं। उनसे एक बार मिलकर हमेशा-हमेशा के लिए उनका अपना हो गया।"

श्रीमती सुषमा स्वराज (विदेश मंत्री, भारत सरकार)—"जिसने भी उनको एक बार देखा, जो भी उनसे एक बार मिला, उनका अपना हो गया। सही मायने में व्यक्तित्व परिष्कार का पुनीत कार्य जो शांतिकुंज कर रहा है, बहुत ही सराहनीय है। वाणी और आचरण के अद्‌भुत संगम का नाम है—शांतिकुंज।"

श्री राजेंद्र प्रसाद शुक्ल (अध्यक्ष, मध्य प्रदेश विधानसभा)—"शांतिकुंज से चिंतन की एक नई दिशा सदैव मिलती रहती है। इसकी शक्ति, साधन एवं प्रेरणा की स्रोत वंदनीया माताजी हैं जिनके चरणों में हमारे श्रद्धा-सुमन सदैव अर्पित होते रहेंगे।"

श्री गिरिराज प्रसाद तिवारी (अध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा)—"आध्यात्मिक-सामाजिक कार्य के साथ देश की अखंडता, एकता के लिए पूर्व ऋषियों तुल्य चिंतन-मनन एवं कार्यप्रणाली मेरी राय में शायद ही कोई अन्य कर रहा हो।"

श्री सत्येंद्र नारायण सिंह (माननीय मुख्यमंत्री, बिहार)—"उनका सारा कार्य देश को समृद्ध बनाने के लिए चल रहा है। मनुष्य मात्र का कल्याण उनका मुख्य अभीष्ट है।"

श्री अमर सिंह (माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात)—"मानवीय प्रेम का अगाध समुद्र उनमें लहराता है। उसके कुछ कणों को पाकर मैं अपने को बड़भागी मानता हूँ।"

श्री माधव सिंह सोलंकी (माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात)—"मानवीय हित ही जिनका सब कुछ है, उनका नाम है—माताजी। वह सचमुच में माँ हैं, किसी एक की नहीं, सभी की, सारे मनुष्यों की, तभी तो सबके कल्याण की चिंता करती रहती हैं।"

श्री श्रीपति मिश्र (माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश)—"माताजी स्वयं में ज्योतिपुंज हैं और उनके कार्यकर्त्ता उनसे निकला हुआ प्रकाश।"

श्री दिग्विजय सिंह (माननीय मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश)—"उनके ममत्व पर मेरा अधिकार है। मानवीय हितों में एवं उनके हितों में किए जा रहे कार्य, विश्व-इतिहास में एक नया कीर्तिमान स्थापित करेंगे।"

श्री बीजू पटनायक (माननीय मुख्यमंत्री, उड़ीसा)—"सचमुच आप विश्वमाता हैं। उड़ीसा ही क्यों समस्त विश्व आपकी गोद में है।"

श्री भजन लाल (माननीय मुख्यमंत्री, हरियाणा)—"माताजी राष्ट्र की आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत हैं। उनके द्वारा प्रारंभ किया गया अश्वमेध अभियान राष्ट्र-निर्माण में अपनी सक्षम भूमिका निभाएगा, ऐसा मेरा विश्वास है।"

प्रो० राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) (सरसंघ चालक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)—"माताजी ने अपने प्रेमपूर्ण वात्सल्य के सूत्र में अनेक लोकसेवी कार्यकर्त्ताओं की मणिमाला तैयार की है।"

श्री मुरली मनोहर जोशी (वरिष्ठ राजनेता, भारतीय जनता पार्टी)—"माताजी के सान्निध्य से स्फूर्ति, प्रेरणा एवं बल लेकर जा रहा हूँ। उनके पास आकर चेतना को नई शक्ति मिली।"

श्री सत्यप्रकाश मालवीय (मंत्री, उत्तर प्रदेश)—"शांतिकुंज आने पर प्रत्यक्ष हुआ कि यह आश्रम राष्ट्र-निर्माण के कार्यों में रत है। जिससे न केवल विश्व-निर्माण होगा, अपितु एक युग का नवनिर्माण होगा। मुझे माताजी के स्नेहभरे व्यवहार ने अत्यंत प्रभावित किया है।"

जस्टिस वी० रामास्वामी (मुख्य न्यायाधीश, पंजाब)—"उनके सान्निध्य में मुझे जीवन को नया आधार देने वाला अलौकिक तत्त्व चिंतन मिला। उनका ममत्व मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी निधि बनी रहेगी।"

श्री सुंदरलाल बहुगुणा (प्रख्यात समाजसेवी, पर्यावरणविद्)—"माताजी के पास कुछ देर रहकर मैं शक्ति अर्जित करके जा रहा हूँ। उनके द्वारा संचालित यह केंद्र वैज्ञानिकों, समाज-आंदोलनकारियों, करुण हृदय साहित्यकारों, कलाकारों एवं पत्रकारों के लिए प्रेरणा का केंद्र है। मेरी इच्छा है कि इन विविध विधाओं के मर्मज्ञ यहाँ आएँ और सीखें कि अपनी प्रतिभा एवं विशिष्ट क्षमता को नवनिर्माण के लिए नियोजित करने की सही तकनीक क्या है?" □

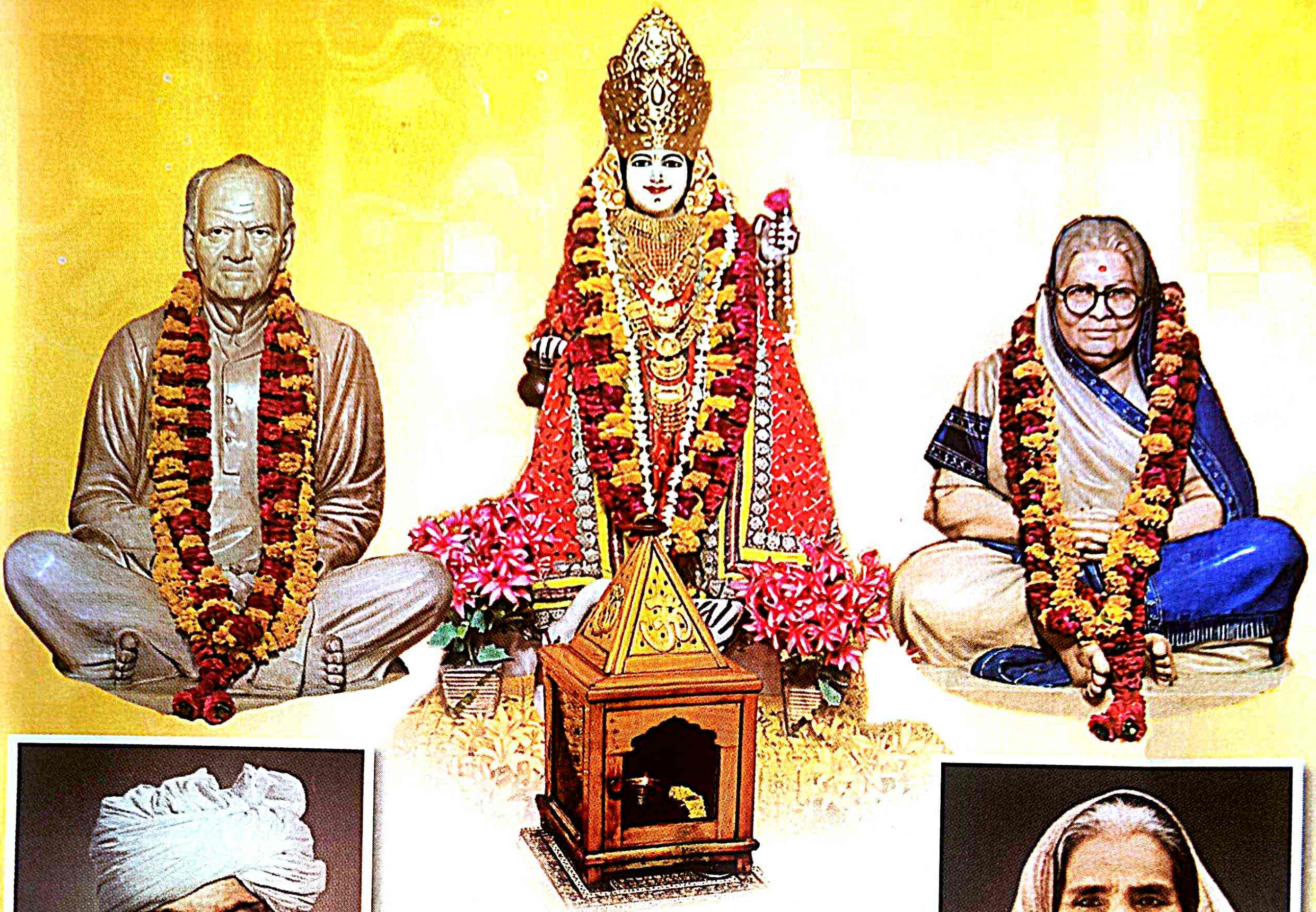

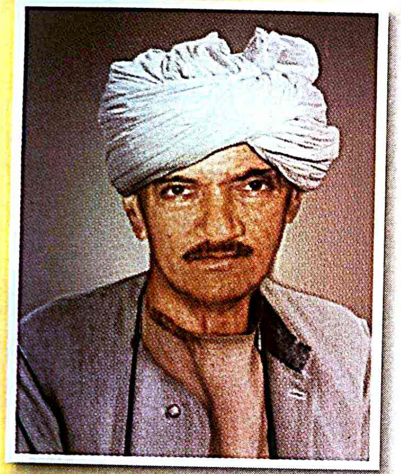

पूज्यवर के पू. पिताजी
पं. रुप किशोर शर्मा जी

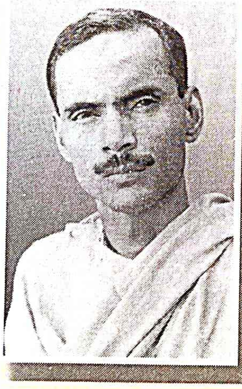

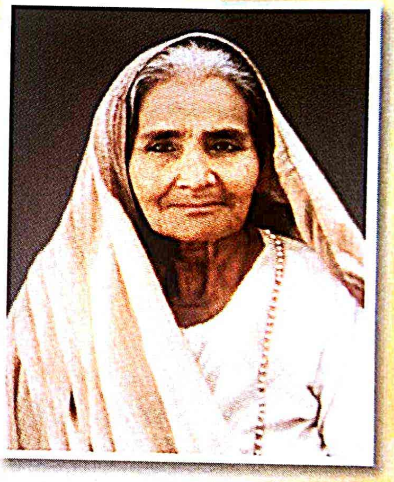

पूज्यवर की पू. माताजी
श्रीमती दानकुँवरि जी

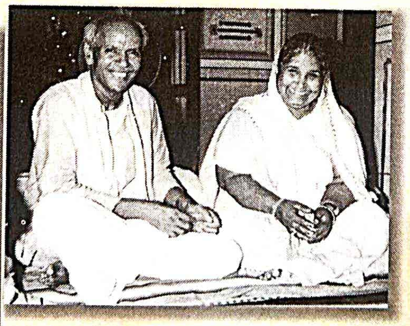

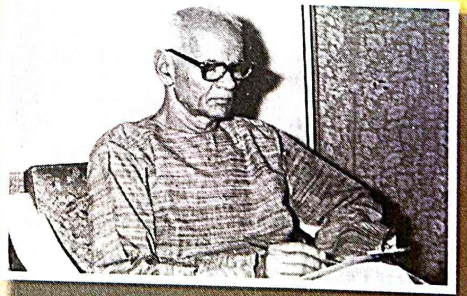

गायत्री तपोभूमि मथुरा में स्थित माँ गायत्री व परम पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी के दिव्य विग्रह तथा ऋषियुग्म के विभिन्न छायाचित्र

परम वंदनीया माताजी ि न
सारे जग के लिए हृदय क
दुलार लुटाया और कोटि
संतानों पर स्नेहामृत ब

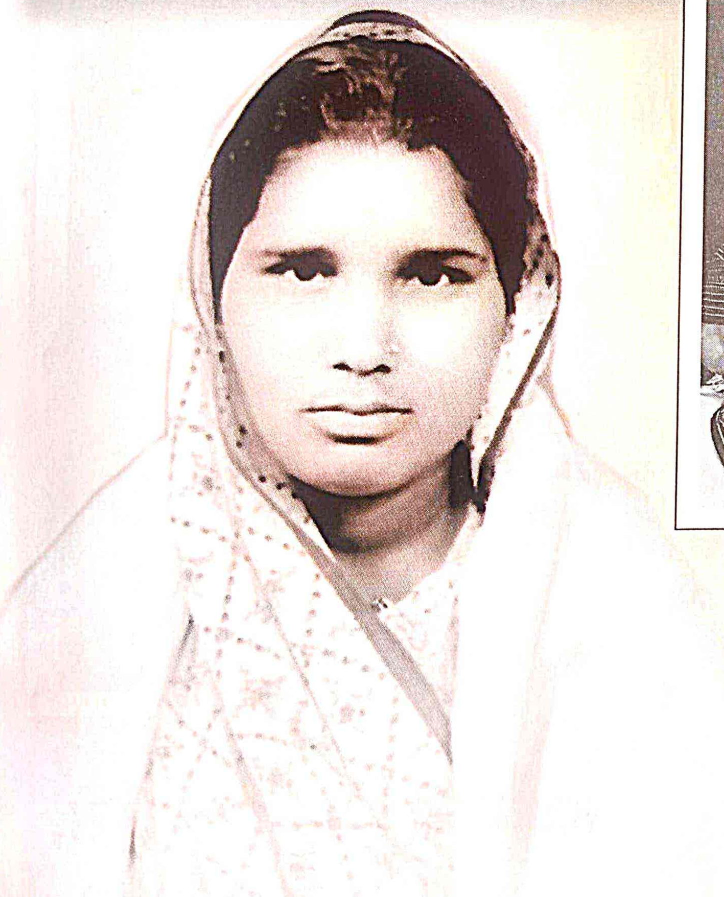

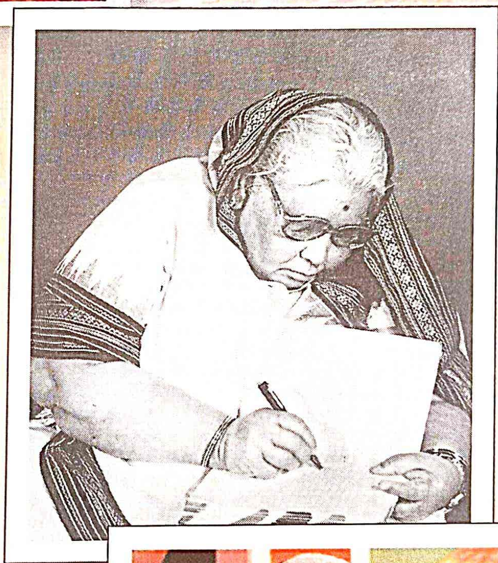

वंदनीया माताजी के
विभिन्न दिव्य रूप

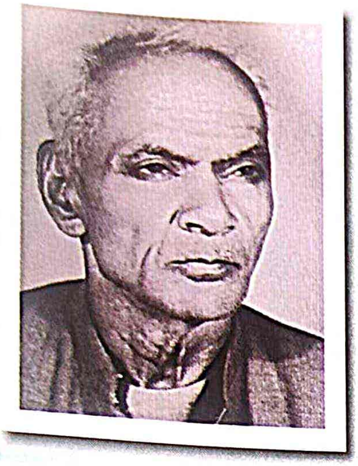

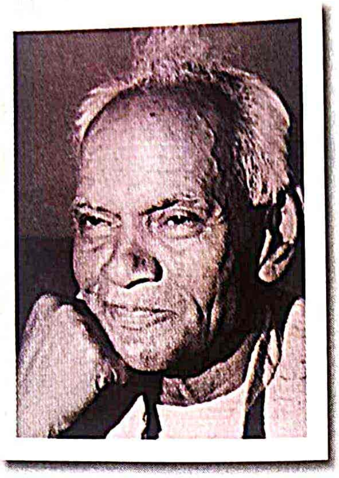

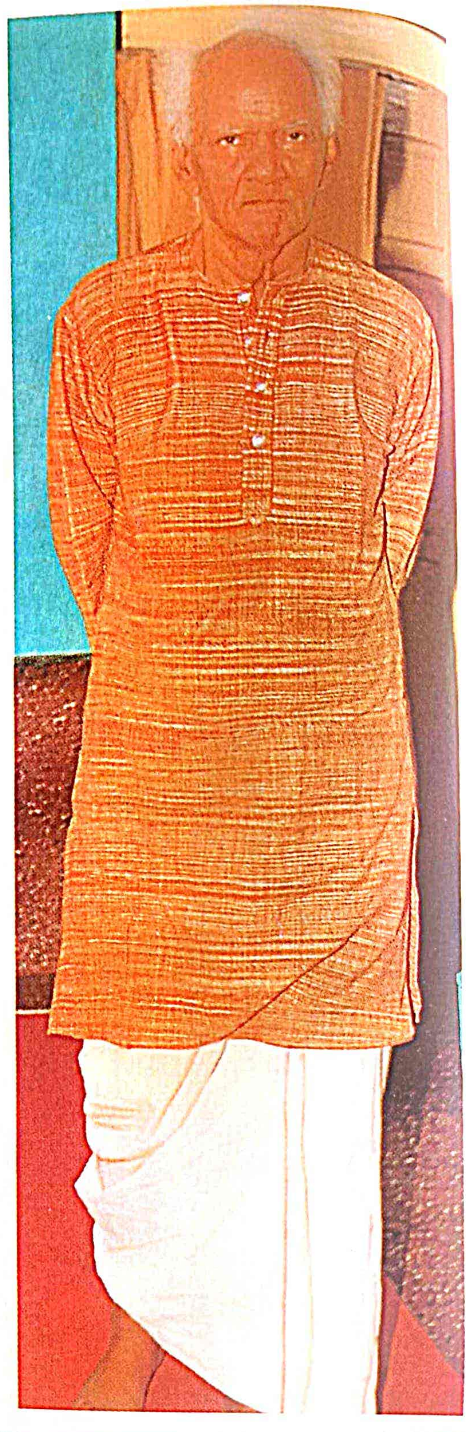

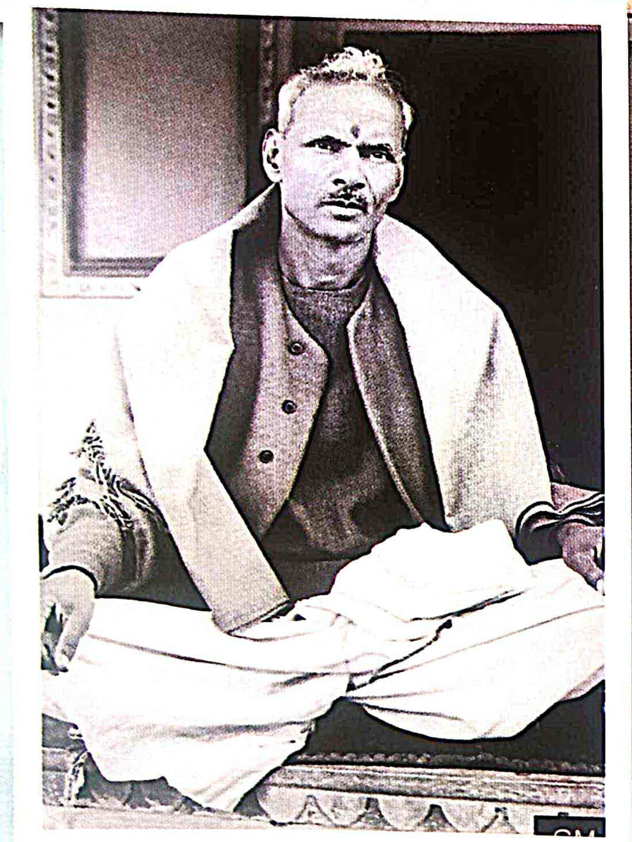

अपनी दिव्य लेखनी वाणी से,
सद्भाव जगाया।
गुरुवर आपके चिंतन से
जग ने अमृतरस पाया।।

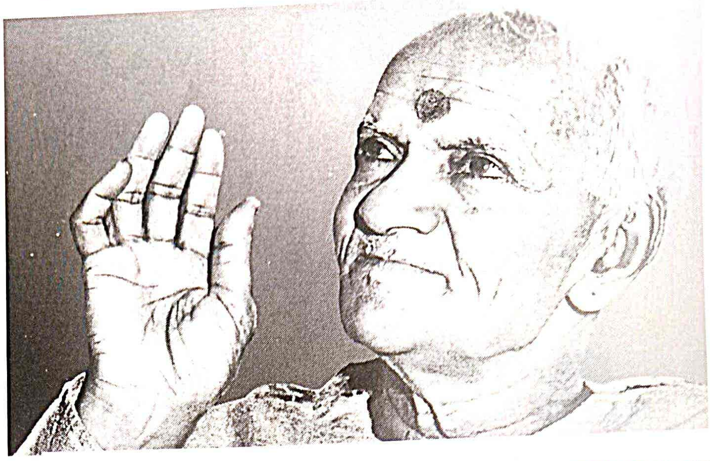

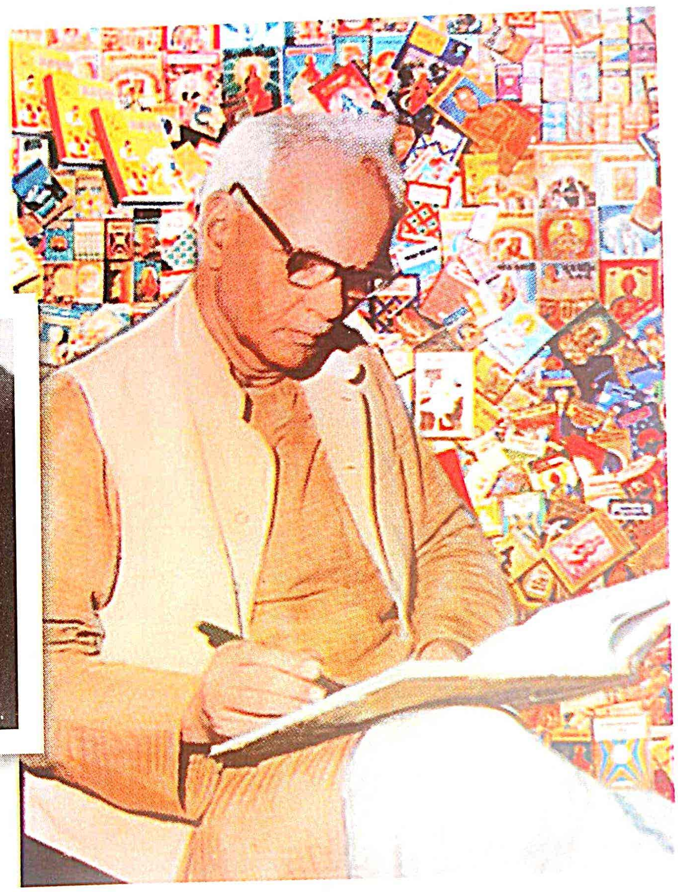

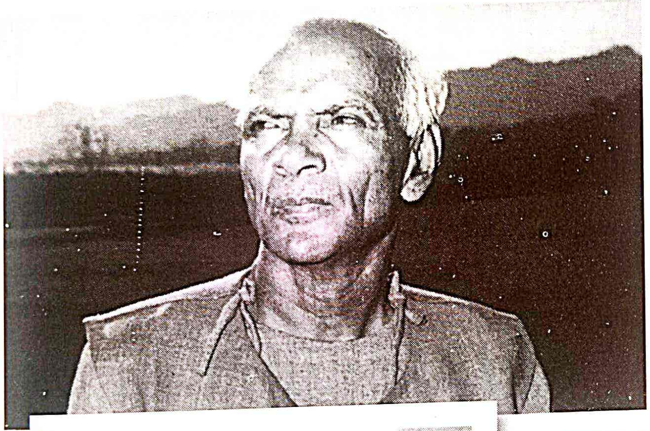

अनुपम जीवन जिया आपने
आदर्श लक्ष्य अपनाकर ।
धन्य हो गई मानवता
रत्न आप सा पाकर ।।

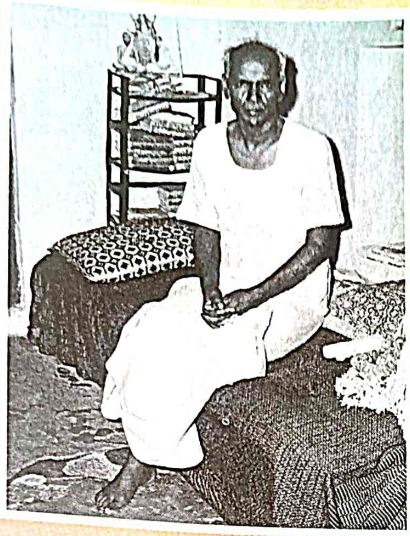

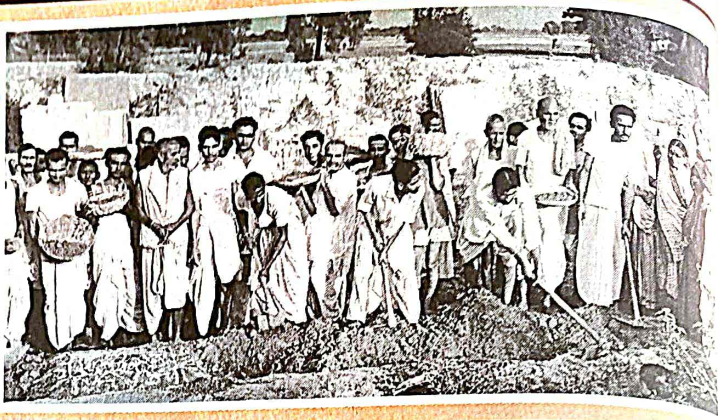

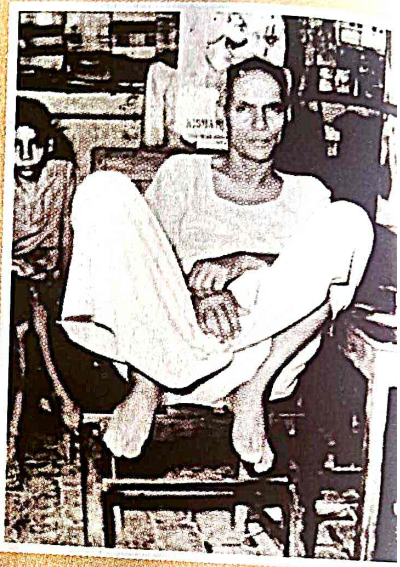

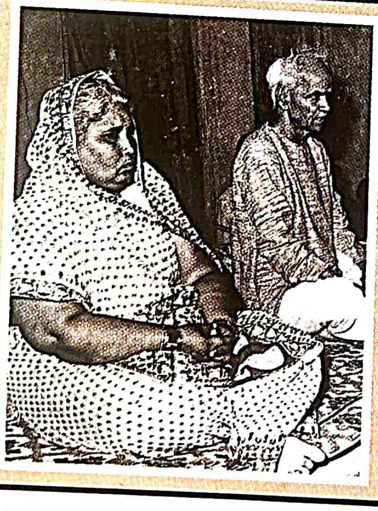

कर्मभूमि गायत्री तपोभूमि एवं अखण्ड ज्योति संस्थान में ऋषियुग्म

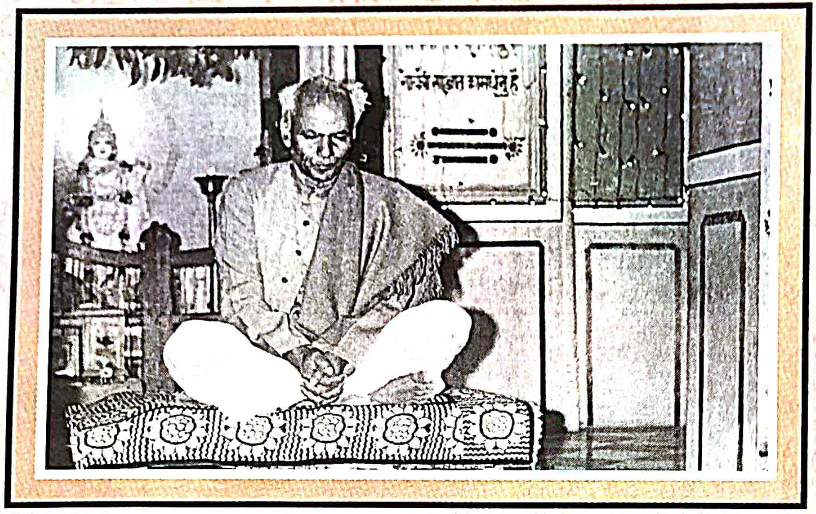

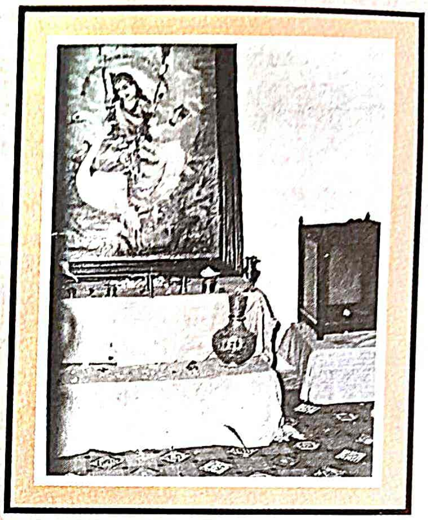

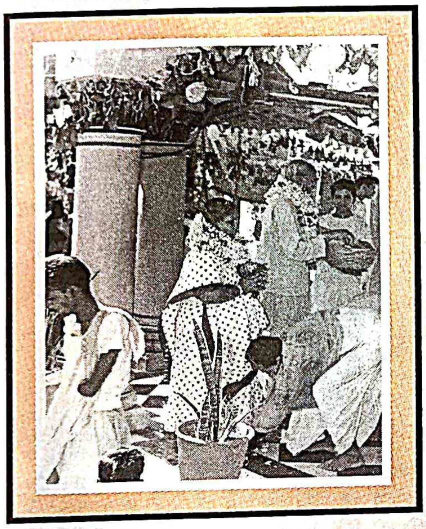

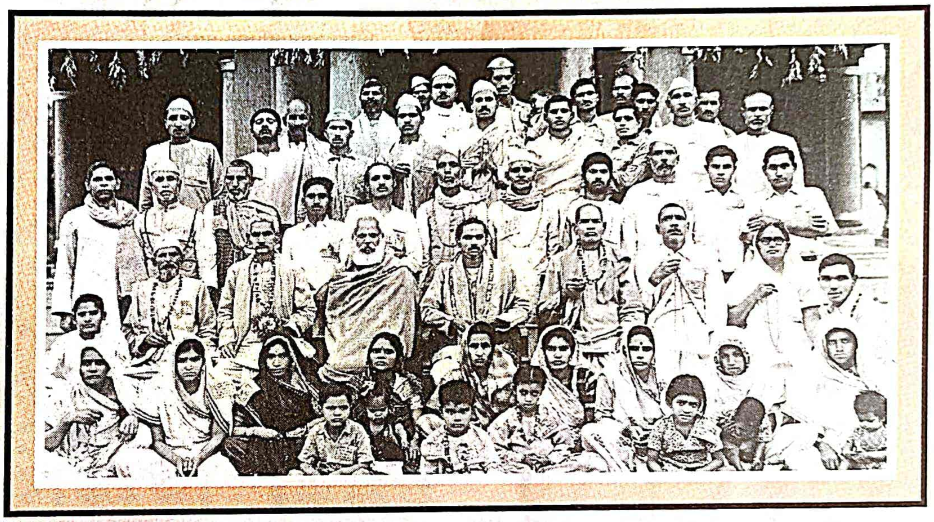

अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा एवं गायत्री तपोभूमि मथुरा में
पूज्य गुरुदेव व वंदनीया माताजी

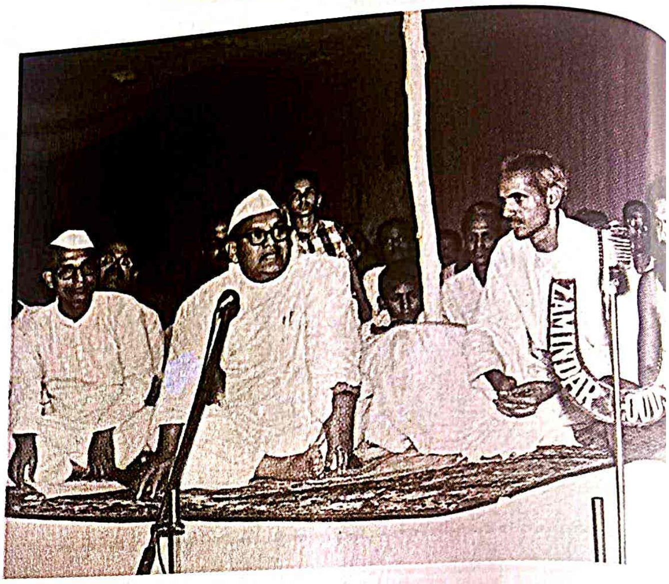

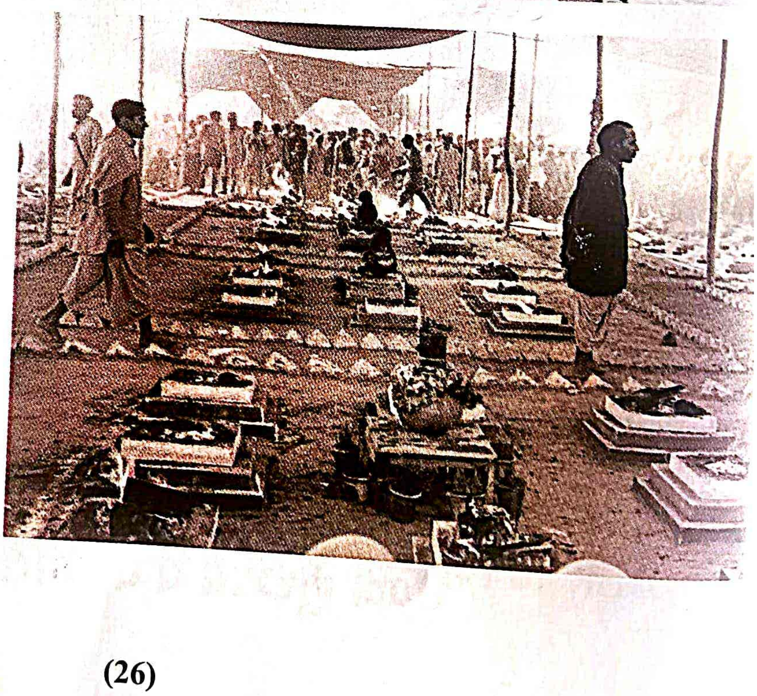

अभूतपूर्व
सहस्र कुण्डीय
गायत्री महायज्ञ
1958

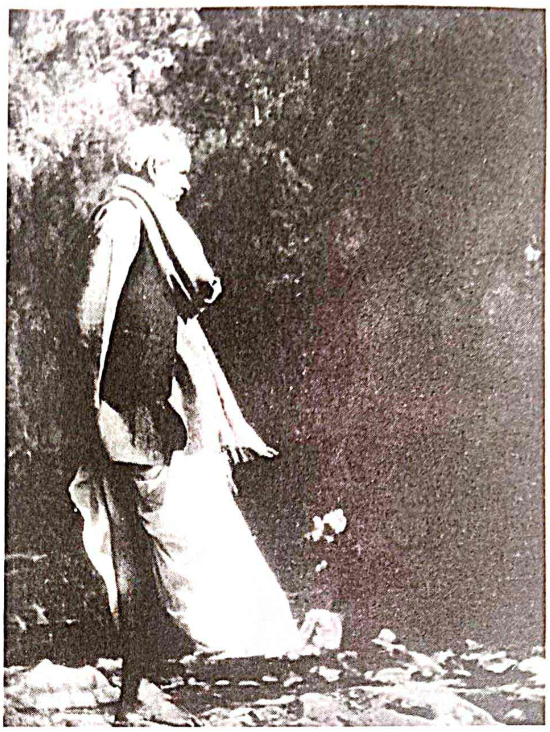

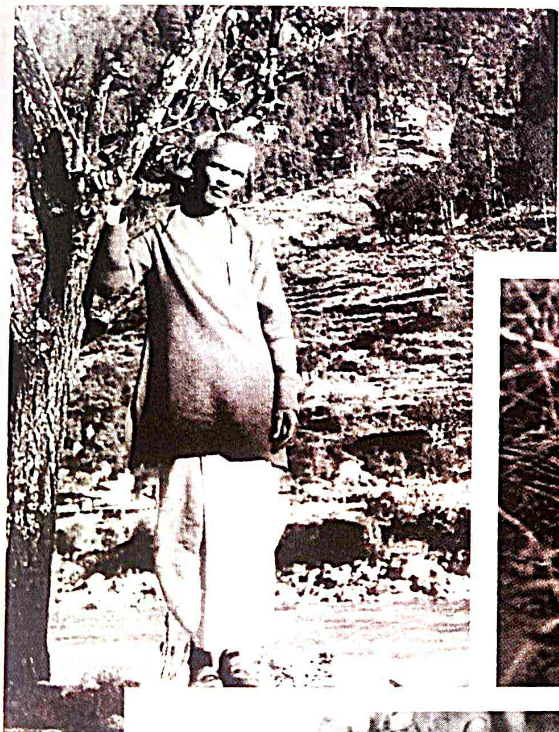

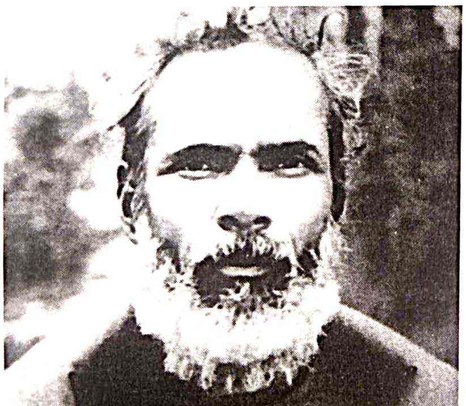

परम पूज्य गुरुदेव के 1960-61 में दुर्गम हिमालय प्रवास के अनोखे दृश्य

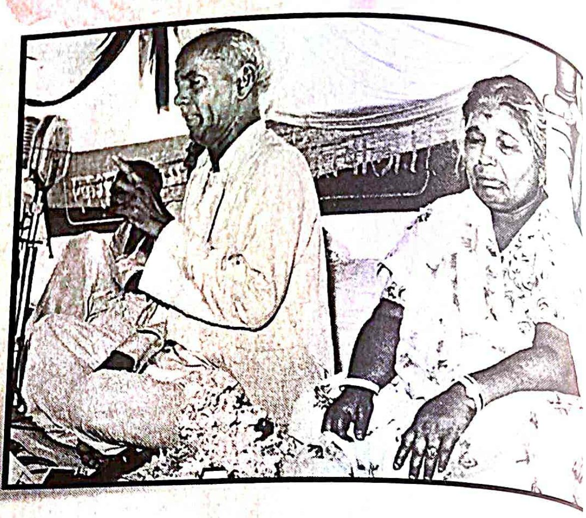

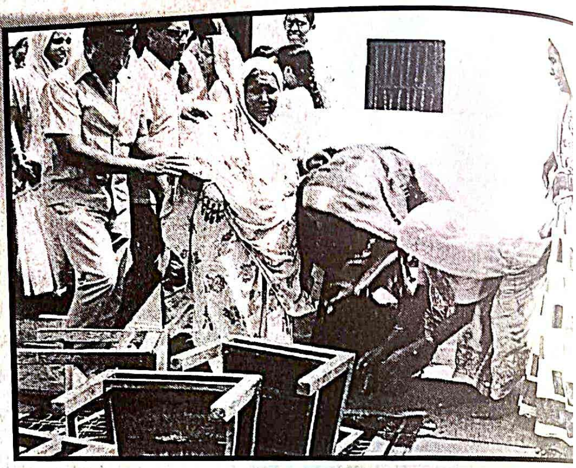

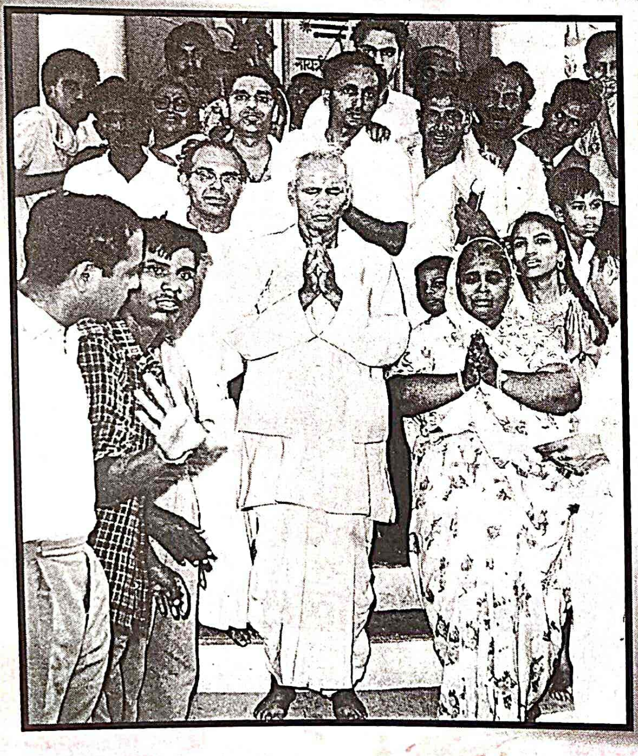

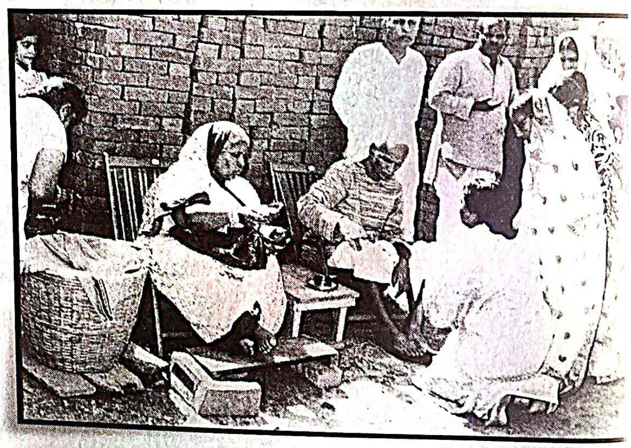

मथुरा से विदाई 20 जून 1971

शांतिकुंज हरिद्वार प्रस्थान

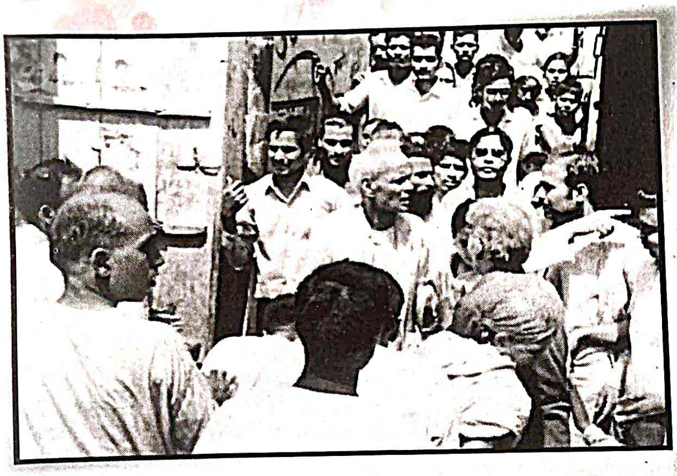
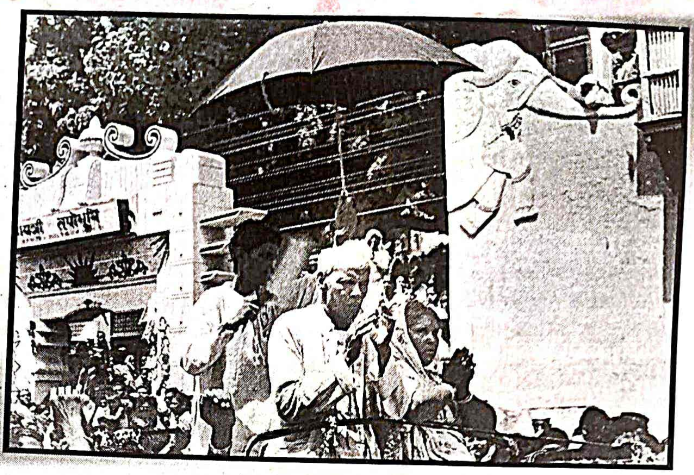
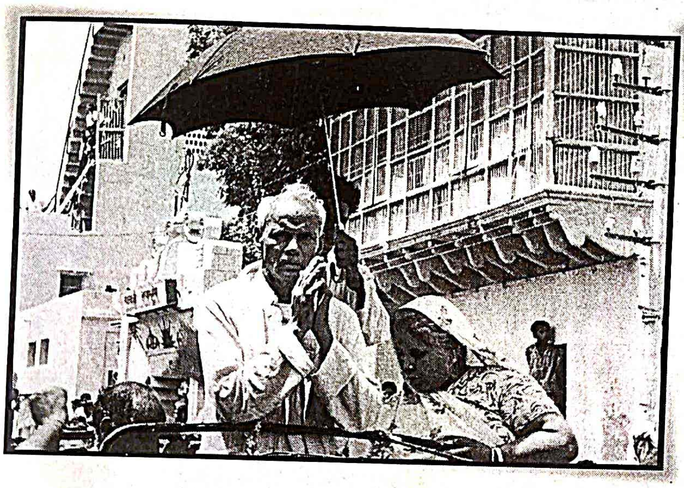
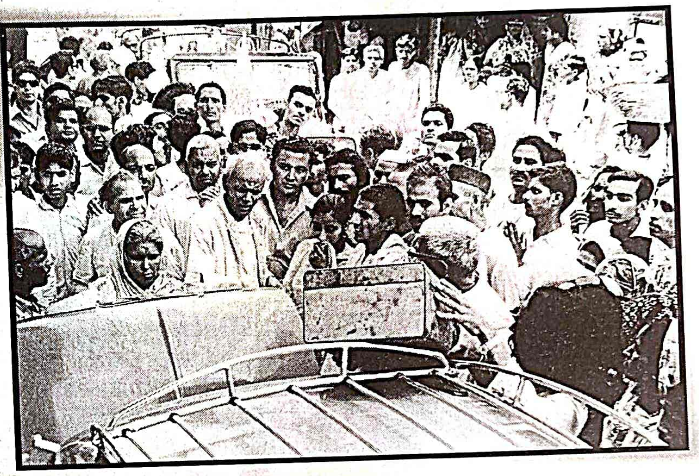

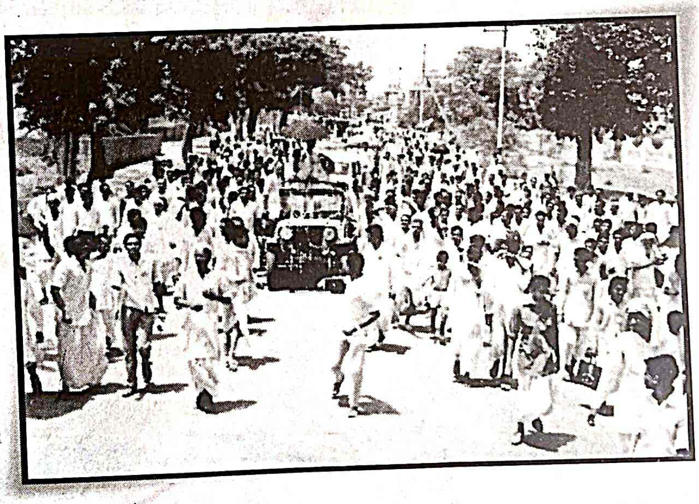

मथुरा से विदाई 20 जून 1971

शांतिकुंज हरिद्वार प्रस्थान

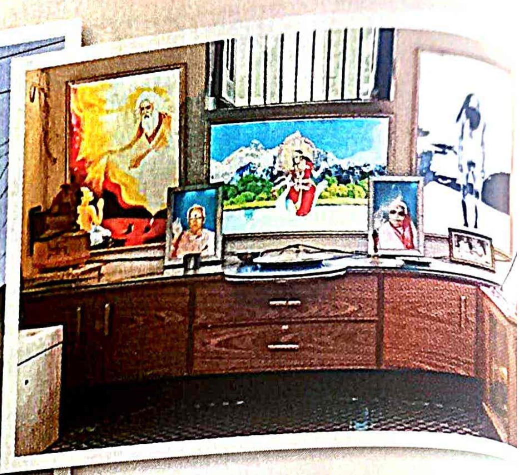

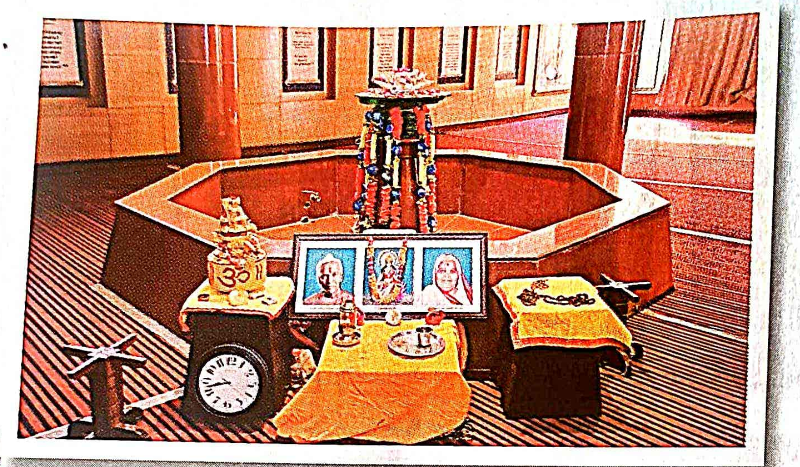

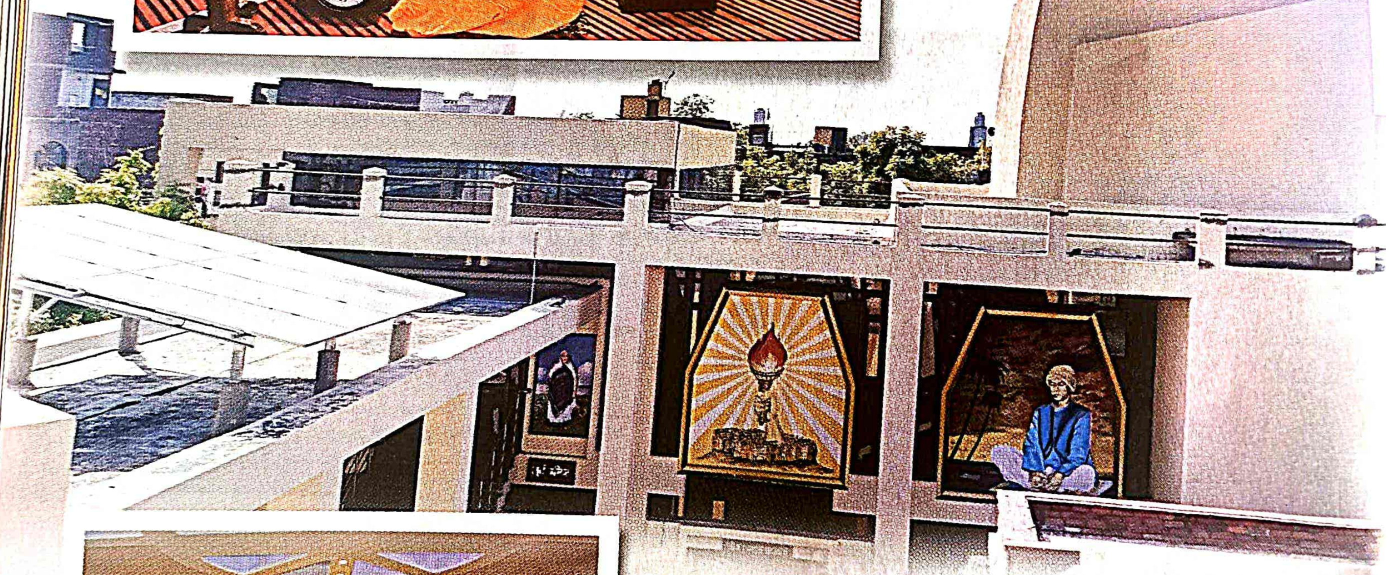

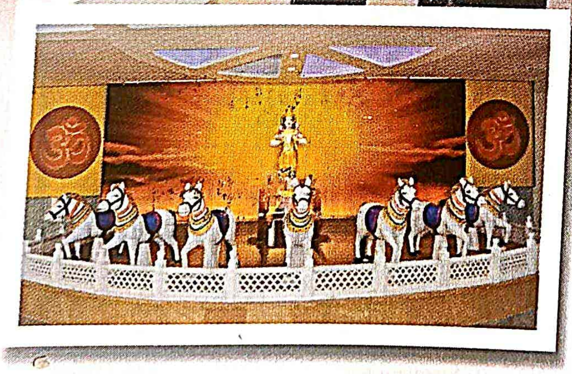

पूज्यवर की जन्मस्थली आँवलखेड़ा,
स्थित सूर्य मंदिर, गायत्री मंदिर

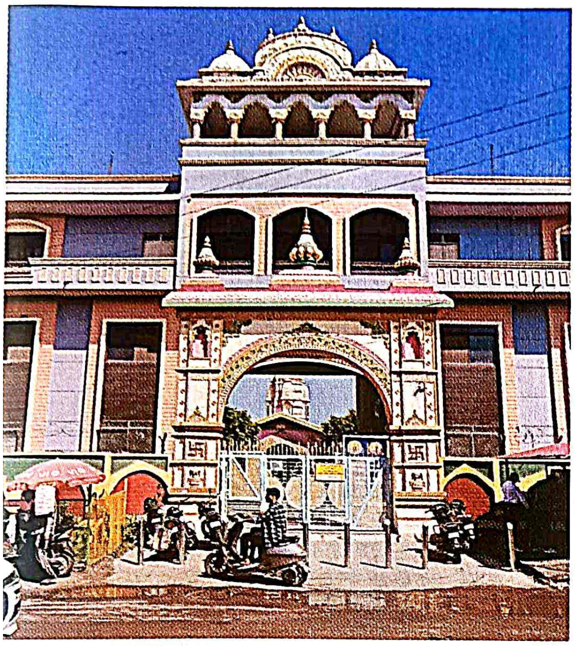

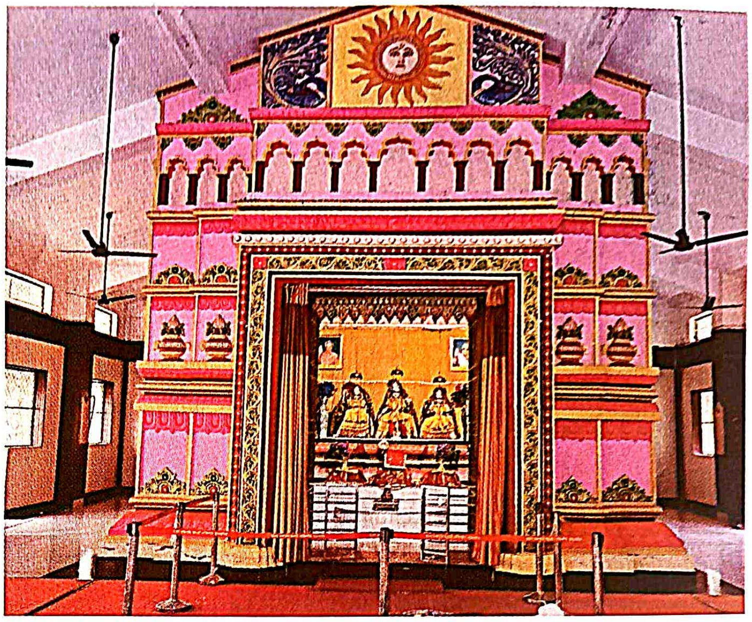

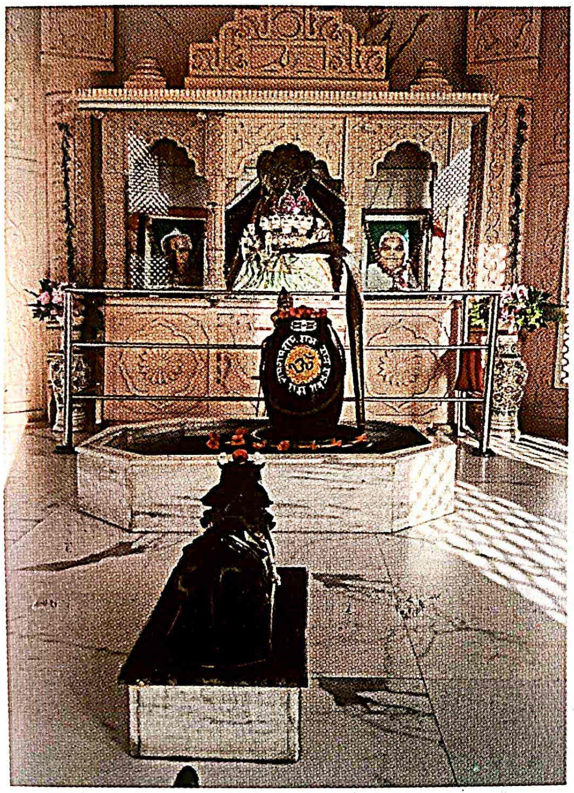

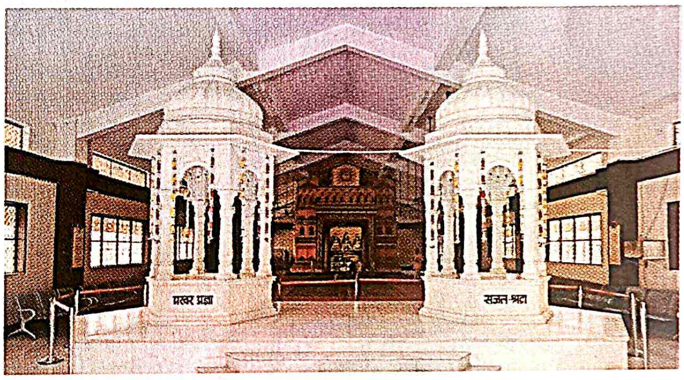

पूज्यवर की जन्मस्थली आँवलखेड़ा शक्तिपीठ, आगरा में गायत्री मंदिर सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा एवं श्री दानकुँवरि इण्टर कॉलेज

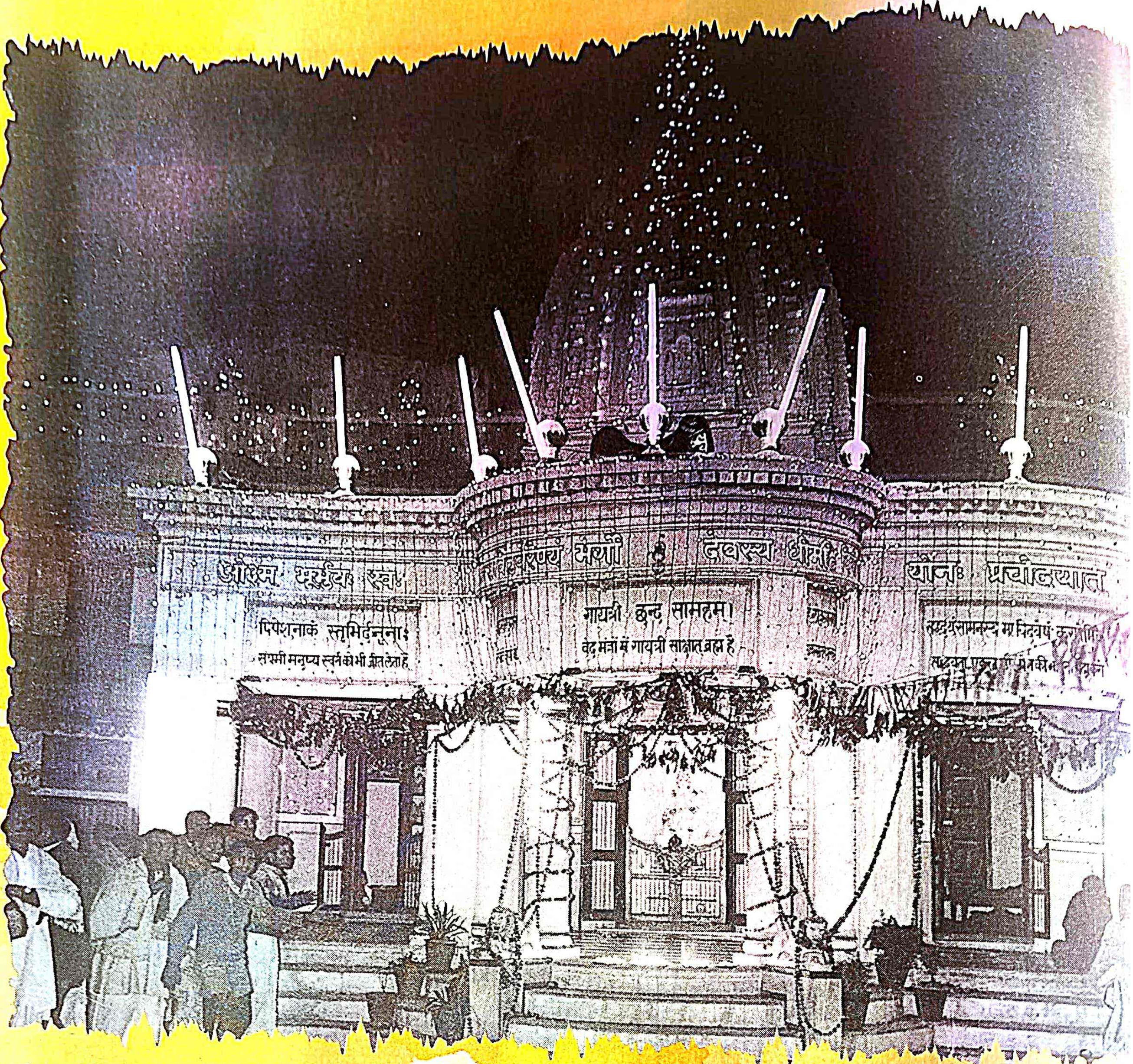

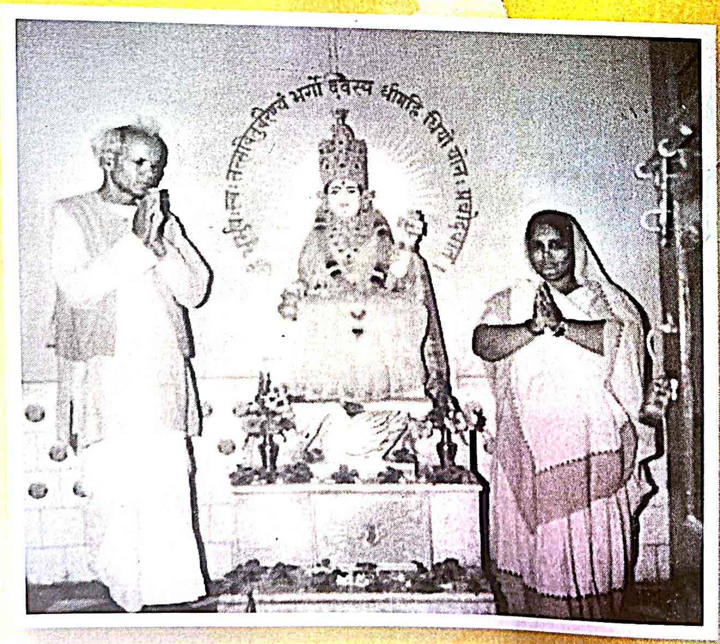

**गायत्री तपोभूमि मथुर
1953 में स्थापित विश्व क
आद्यशक्ति माँ गायत्री म
जहाँ से विश्व में गायत्री
का प्रसार हुआ।**

गायत्री तपोभूमि मथुरा में यज्ञशाला जहाँ 800 वर्ष पुरानी अखण्ड अग्नि में 1953 से अद्यतन करोड़ों साधकों ने आहुतियाँ प्रदान की हैं।

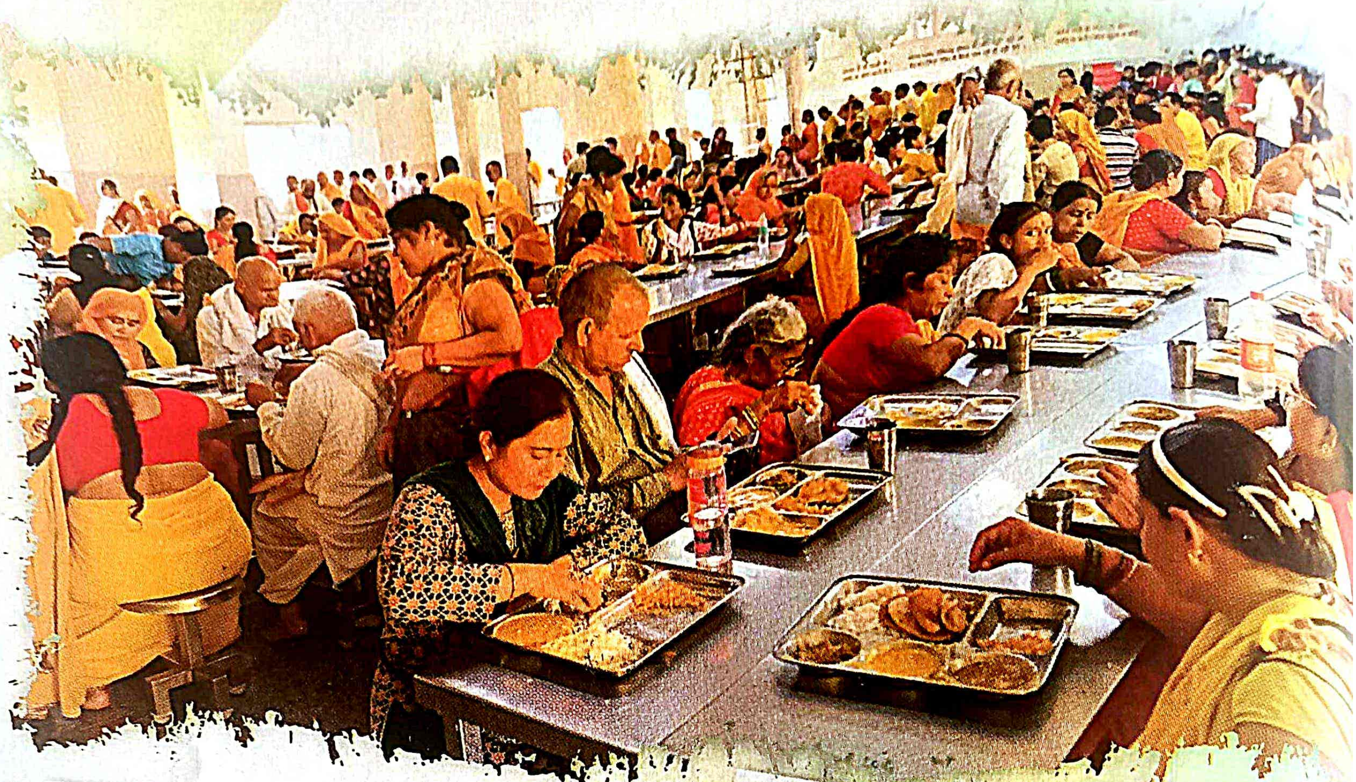

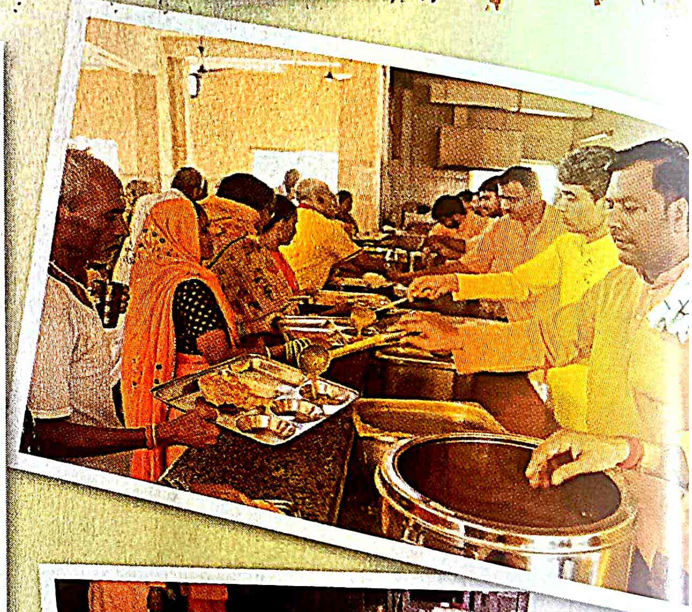

गायत्री तपोभूमि मथुरा में माँ भगवती भोजनालय
माँ अन्नपूर्णा का दिव्य भोजन प्रसाद

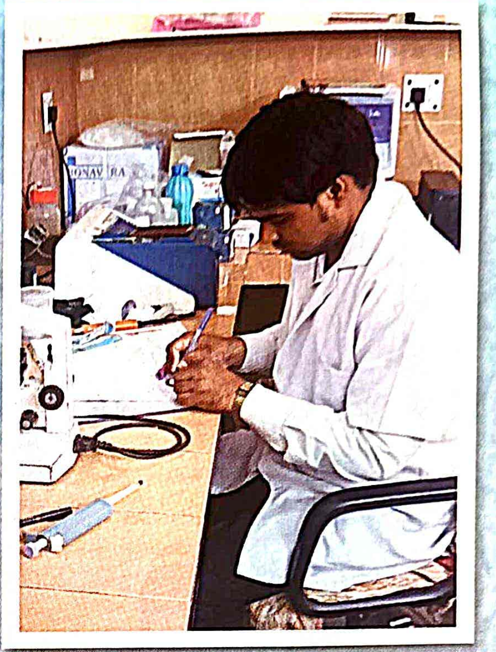

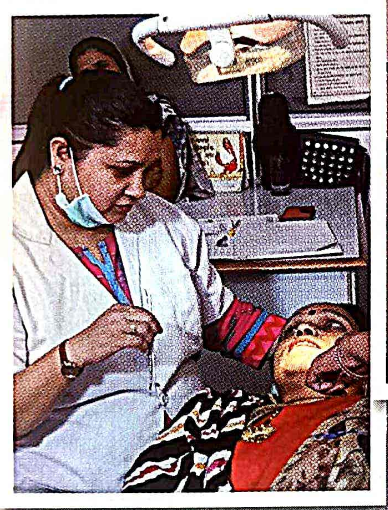

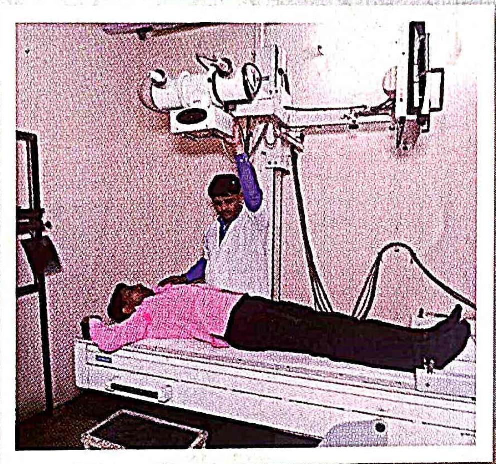

सेवा केंद्र - पं.श्रीराम शर्मा आचार्य पारमार्थिक चिकित्सालय
गायत्री तपोभूमि मथुरा

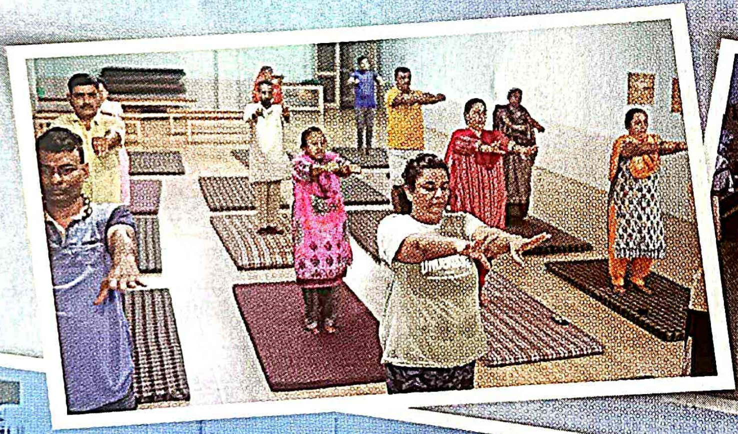
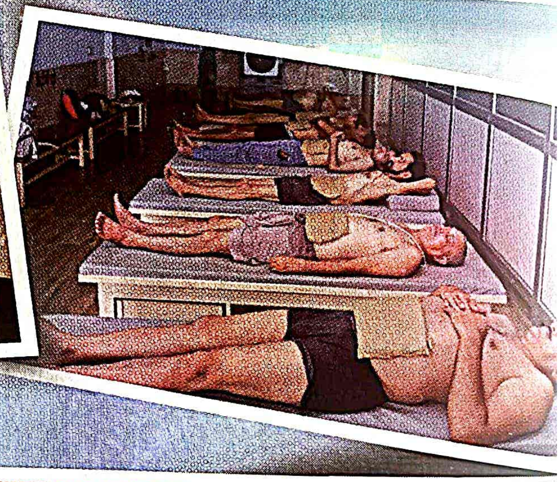

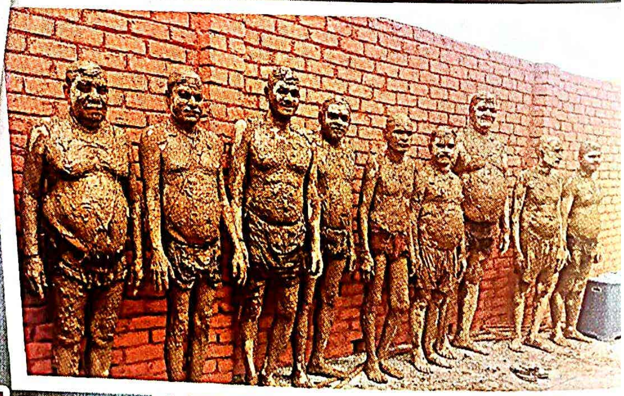

प्राकृतिक चिकित्सालय एवं भव्य माँ भगवती गौशाला
युग निर्माण योजना विस्तार, मथुरा

अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी मथुरा जहाँ अब प्रस्तावित ऋषियुग्म का निर्माणाधीन स्मारक

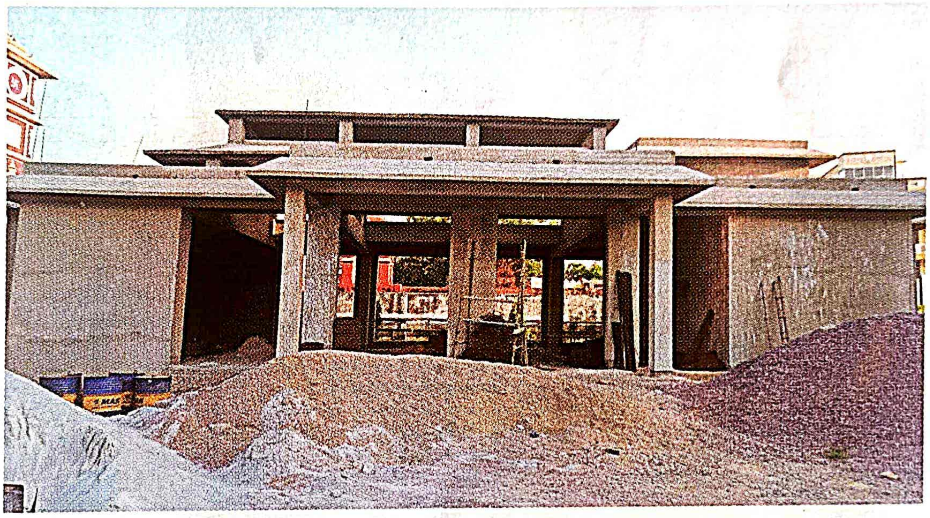

निर्माणाधीन यज्ञशाला युग निर्माण योजना विस्तार मथुरा

निर्माणाधीन गायत्री मंदिर युग निर्माण योजना विस्तार मथुरा

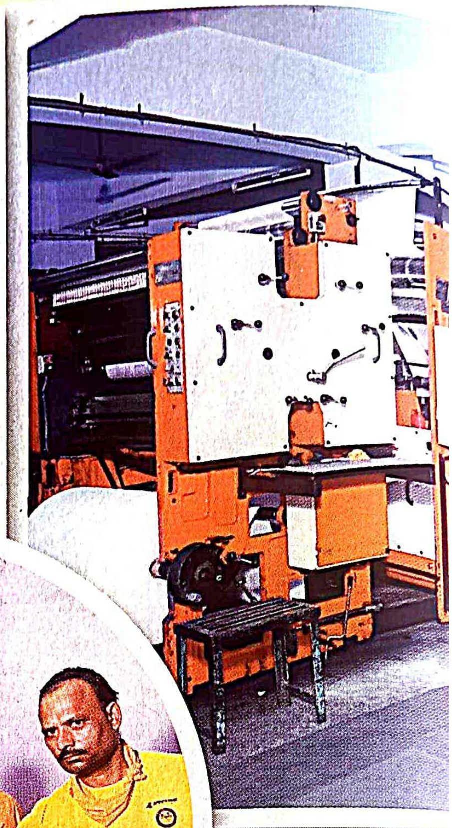

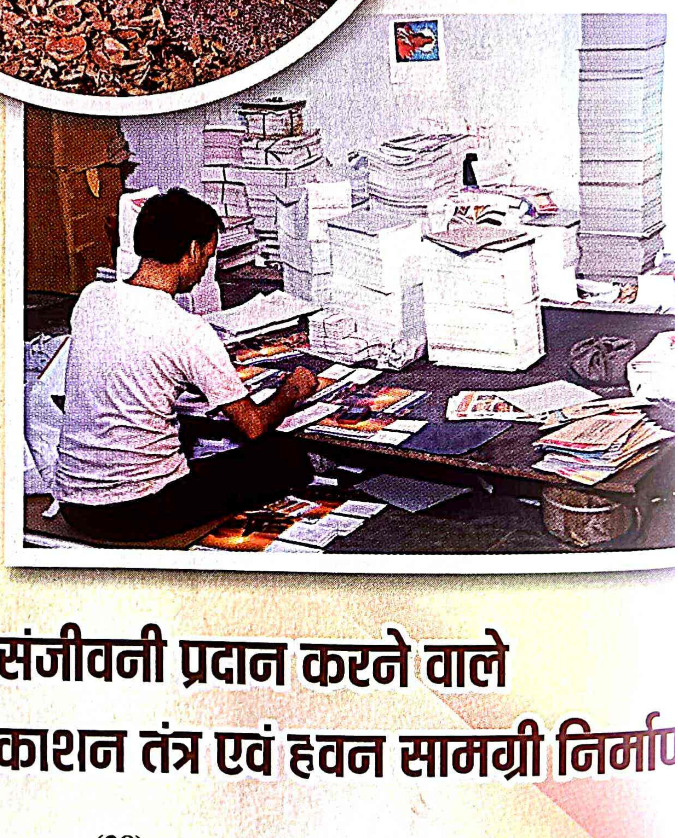

विश्व को अमृत संजीवनी प्रदान करने वाले
युग साहित्य का विशाल प्रकाशन तंत्र एवं हवन सामग्री निर्मा

माताजी के जन्म से पूर्व के संकेत

महाशक्ति जब धरा पर अवतरित होती है तो उसके पूर्व अगणित दिव्य संकेत उभरने लगते हैं। दिव्य परिस्थितियाँ बनने लगती हैं; विशिष्ट घटनाक्रम घटने लग जाते हैं। कुछ इसी तरह का विशेष अवसर था, सन् 1926 का। स्नेह, वात्सल्य, ममता, करुणा आदि दिव्य भाव अनुदानों से जगत् को तृप्त करने एवं जगत् के पाप-ताप को मिटाने के लिए महाशक्ति ने अवतरित होने का निश्चय कर लिया था। उन्होंने प्राचीनकाल के 'सुतपा' एवं 'पृश्नि' के समान पवित्र-श्रेष्ठ चरित्र वाले तपस्वी दंपती आगरा निवासी पं० जसवंत बौहरे एवं श्रीमती रामप्यारी शर्मा के यहाँ जन्म लेना स्वीकार किया।

माता रामप्यारी को गर्भ धारण के कुछ माह बाद दिव्य अनुभूतियाँ होने लगीं। उन्होंने ध्यानावस्था में देखा माँ दुर्गा की प्रतिमा से एक तेजपुंज निकलकर कन्या के रूप में उनके पेट में प्रवेश कर रहा है। उन्हें स्वप्न में बार-बार दिखाई देता कि उनके गर्भ के ऊपर अनेकों देवियाँ, देवगण, ऋषि, सिद्धजन पुष्पवर्षा कर रहे हैं। ऐसा भी दिखाई दिया कि हिमालय के शुभ शिखर पर एक देवी लघु बालिका के रूप में प्रकट होकर कह रही हैं—"मैं तुम्हारी श्रद्धा, तपस्या से प्रसन्न हूँ, जगत् का कल्याण करने के लिए मैं तुम्हारे गर्भ से जन्म लूँगी।"

जसवंत बौहरे भी जब दुर्गा सप्तशती के अपने नित्य पाठ में भाव-विभोर हो जाते थे तो उन्हें लगता था—साक्षात् जगदंबा एक छोटी-सी बालिका के रूप में उनकी गोद में आ बैठी हैं। उन्होंने धर्मपत्नी रामप्यारी से कहा—"निश्चित ही माता भगवती जगदंबिका ही इस बार हम सभी पर एवं समूचे जगत् पर कृपा करने के लिए अवतीर्ण हो रही हैं।" पति की बात सुनकर रामप्यारी ने भी स्वीकार किया कि उन्हें भी इसी तरह के दिव्य संकेत निरंतर मिल रहे हैं। ❑

वंदनीया माताजी का अवतरण

आश्विन कृष्ण चतुर्थी संवत् 1983 सन् 1926 की प्रातः वेला में महाशक्ति का अवतरण इस धरा-धाम पर हुआ। भगवान सूर्यदेव बड़े ही सुखद एवं आश्चर्य भाव से इस महाप्रसंग के साक्षी बन रहे थे। उन्हें अपनी सहस्र किरणों से सद्यः अवतरित जगदंबा के दर्शन-वंदन का सौभाग्य प्राप्त हो रहा था। समूचे वातावरण में एक स्निग्धता, शांति, शीतलता एवं मधुर सुगंधि व्याप्त हो रही थी। अवतरण भूमि पावन तीर्थ भूमि बन चुकी थी।

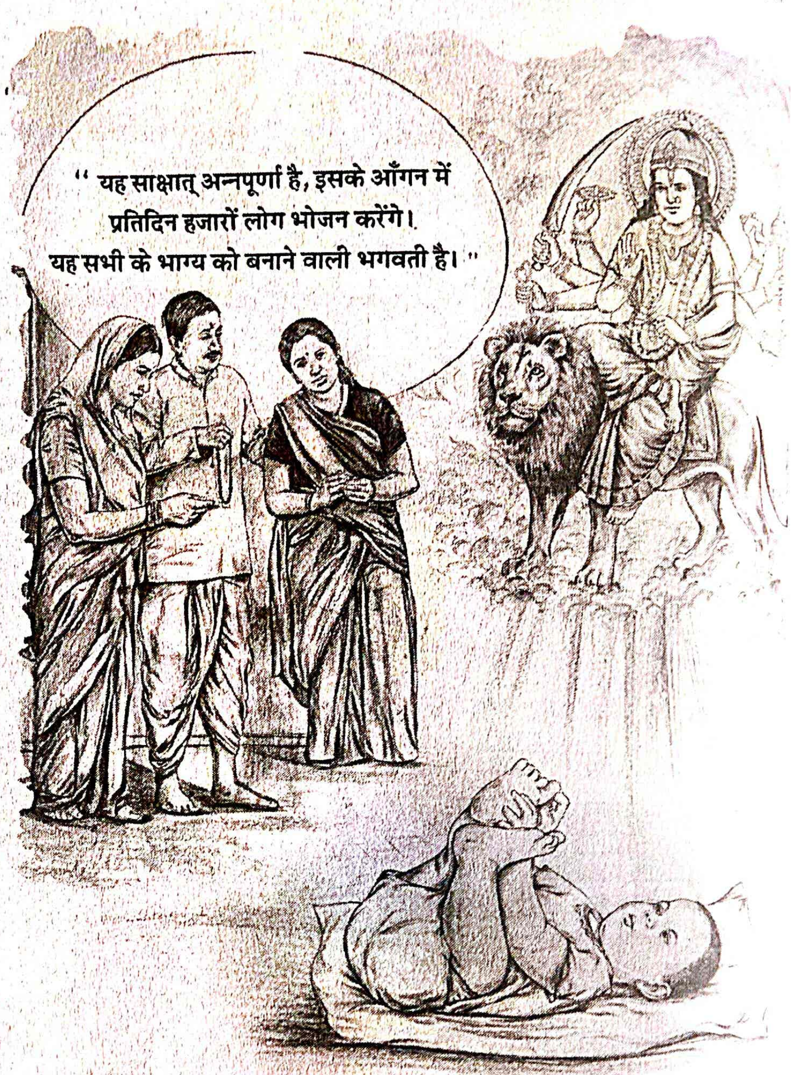

जन्म लेते ही कन्या ने माँ की समस्त प्रसव-वेदना को हर लिया। माता रामप्यारी कन्या के मुख का दर्शन करते ही शांति एवं आनंद से भर गईं। पिता जसवंत बौहरे ने जब कन्या को गोद में लिया तो उन्हें अलौकिक अनुभूतियाँ होने लगीं। उन्होंने कहा—"आदिशक्ति का ही यह साकार विग्रह कन्या रूप में है। आस-पास के घरों की महिलाएँ एकत्र हो गईं। कन्या के दिव्य स्वरूप को देखकर वे नमन करने लगीं। पिताश्री ने अपने ज्योतिषीय ज्ञान एवं अंतर अनुभव से यह स्पष्ट किया कि यह कोई साधारण कन्या नहीं, बल्कि साक्षात् अन्नपूर्णा का अवतार है; इसके द्वार से कोई भूखा नहीं जाएगा; यह प्रतिदिन हजारों को भोजन कराएगी। यह तो सभी का भाग्य बनाने वाली भगवती है।"

जन्म से लगभग बारह दिन बाद आश्विन शुक्ल प्रतिपदा के पावन मुहूर्त में कन्या का वही नाम 'भगवती' रखा गया, जो पिताश्री के मुख से जन्म वाले दिन निकल चुका था। घर-परिवार तथा पड़ोस के लोग भगवती को बड़े प्यार से 'लाली' कहकर पुकारते थे। लाली सभी को बहुत ही प्रिय लगती थी। जब से लाली का जन्म हुआ था, तब से पूरे घर-परिवार ही नहीं, पास-पड़ोस में भी प्रेम, प्रसन्नता, आनंद का वातावरण बन गया था।

पिताजी द्वारा शिक्षण

लाली (भगवती) बहुत ही कोमल स्वभाव एवं सेवाभावी मधुर व्यवहार की बालिका थीं। अनेकों श्रेष्ठ आचार-व्यवहार उनके जीवन में जन्मजात समाहित थे। माँ ने बड़े ही लाड़-प्यार से उनका पालन-पोषण किया एवं आरंभिक आवश्यक संस्कार दिए, किंतु ऐसा बहुत दिन तक नहीं चल सका। लाली के जीवन के मात्र चार वर्ष हुए थे, ममतामयी माँ रामप्यारी का स्वर्गवास हो गया। लाली के लिए माँ का अभाव बहुत दुःखदायी एवं खटकने वाला था। किंतु पिताजी, बड़ी बहन एवं भाइयों ने लाली का पूरा-पूरा ध्यान रखा, उसे भरपूर प्यार, स्नेह, ममत्व एवं दुलार दिया।

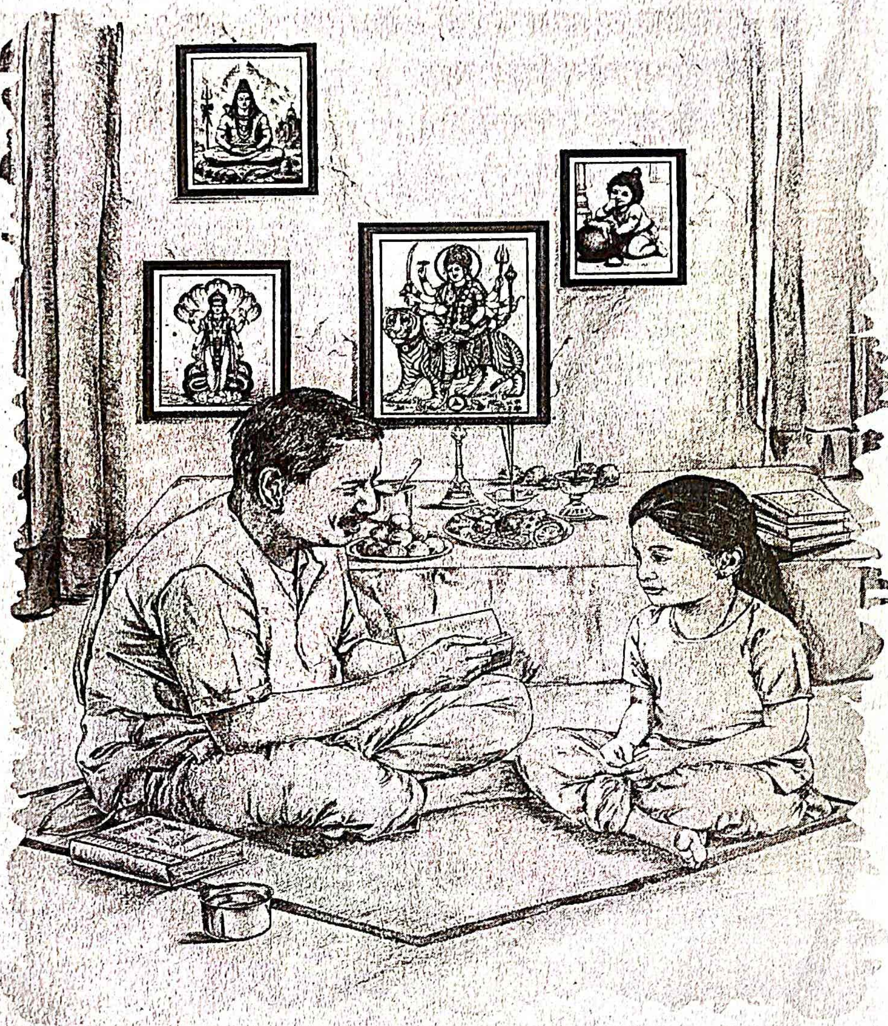

पिताजी ने पढ़ना-लिखना सिखाया, आरंभिक शिक्षा दिलवाई एवं स्वयं नियमित रूप से धर्मग्रंथों के अनेक प्रसंगों, कथा-कहानियों, उपदेशों को सुनाते-सिखाते रहे। लाली ने धर्मग्रंथों के सैकड़ों प्रसंग मौखिक याद कर लिए थे, जिन्हें वे अपनी सहेलियों को सुनाया करती थीं। शिक्षा एवं विद्या का समुचित प्रशिक्षण उन्हें घर के दिव्य सुसंस्कारित वातावरण में मिला। पूर्वजन्मों की तपस्या, दिव्य संस्कारों या शक्तियों का जाग्रत होना कहें; लाली जो कुछ बोलती थीं, वह सब सच हो जाता। कभी-कभी भविष्य में होने वाली घटनाओं को पहले ही बताकर अचंभित कर देतीं।

लाली के जीवन में दिव्य सद्‌गुणों का विकास तेजी से होने लगा। वे अपने सद्‌गुणों, सुसंस्कारों के चलते सभी की अतिशय प्रिय बनती चली गईं। ❑

शिवपूजा में गहरी आस्था

लाली को बचपन से पूजा–उपासना के कार्य बहुत पसंद थे। देवी–देवताओं की पूजा में उनको सबसे अधिक पसंद थी—शिवपूजा। भगवान शिव की पूजा वे दिनभर में कम-से–कम एक बार अवश्य करतीं। कभी–कभी इससे अधिक बार भी हो जाता। यह पूजा आरंभ होती—भगवान शिव का प्रतीक चिह्न शिवलिंग बनाने से। वे इसके लिए पवित्र मिट्टी लातीं, उसे साफ करतीं, उसके कंकड़–पत्थर आदि को बाहर निकालतीं। शुद्ध जल डालकर मिट्टी गूँधकर पार्थिव शिवलिंग बनातीं, कभी–कभी मन में अधिक उत्साह, श्रद्धा–भाव का संचार चल रहा होता तो एक से अधिक संख्या में निर्माण करतीं। विधिवत् स्थापना के बाद पवित्र पूजन–सामग्री पुष्प, अक्षत, चंदन, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से भावभरा पूजन करतीं। इस श्रद्धा–अर्पण की पूजा में बड़ी बहन ओमवती एवं अपनी प्रिय सहेली सुखमती को भी साथ में रखतीं। बड़े भक्तिभाव–अनुराग से पूजन संपन्न किया जाता, फिर आरती के पूर्व ॐ नमः शिवाय (पंचाक्षरी मंत्र) का जप किया जाता।

रुद्राभिषेक आदि शिवार्चन के पूजा–उपचारों में पार्थिव शिवलिंग की स्थापना का विधान आज भी बड़ी संख्या में भक्तजन अपनाते हैं; पर लाली को इस तरह की पूजा के लिए किसी ने बताया नहीं था। स्वयं के अंतःकरण की प्रेरणा से वे यह सब किया करतीं थीं। उनके नन्हे हाथों से बनाए पार्थिव शिवलिंग इतने सुंदर होते थे कि दर्शन करने वालों का मन मोह लेते थे। □

बच्चों से अलग जीवन पसंद

लाली को सामान्य जीवन जीना पसंद नहीं था। उन्हें विशिष्ट जीवन ही स्वीकार था। जहाँ बच्चे सामान्य रूप से बचपने को खेल-कूद, हँसी-मजाक, हलकी-फुलकी

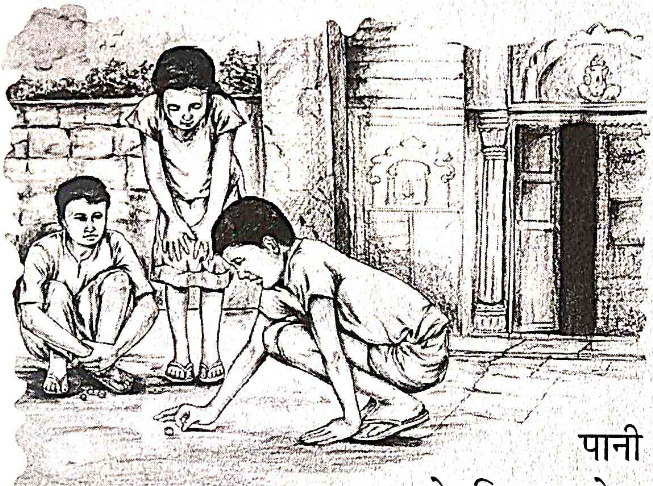

गतिविधियों को अपनाकर अनगढ़ रूप से बिता देते हैं, वहीं लाली श्रेष्ठ जीवन के प्रति आरंभ से ही अति जागरूक थीं। सुबह बहुत जल्दी उठना, प्रायः अधिकांश बच्चों को बहुत कम अच्छा लगता है, किंतु लाली तो भोर में 4 बजे के पूर्व ही उठ जाती थीं। उठकर सामान्य दैनिक क्रियाओं से निवृत होकर घर के कार्यों को करने लग जातीं। गाय को चारा-पानी देना, पक्षियों के लिए अनाज डालना, बंदरों के लिए उनके खाने की वस्तुओं का प्रबंध करना। तुलसी, पीपल, नीम तथा फूलों के पौधों को जल देने जैसे कार्य उनने अपने जिम्मे ले रखे थे जिनमें कभी नागा नहीं होता था। घर में कोई याचक अन्न-वस्त्र माँगने के लिए आ जाता तो बेहिचक जो कुछ उपलब्ध होता, वह दे देतीं। किसी का दुःख देखकर, वह स्वयं दुःखी हो जातीं एवं आँखों से आँसू बहाने लगतीं।

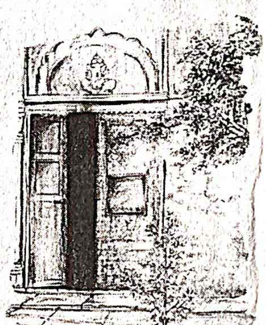

लाली का कोमल हृदय दूसरों के कष्टों को सदैव दूर करने में आनंदित होता था। जिन व्यर्थ के खेलों में बच्चे अपना कीमती समय गँवाकर प्रसन्नता पाने की कोशिश करते हैं, वे उन्हें पसंद ही नहीं थे। पसंद था तो परोपकार-परमार्थ, प्रभु का ध्यान, प्रभु की पूजा और प्राणिमात्र के प्रति करुणा भरा व्यवहार।

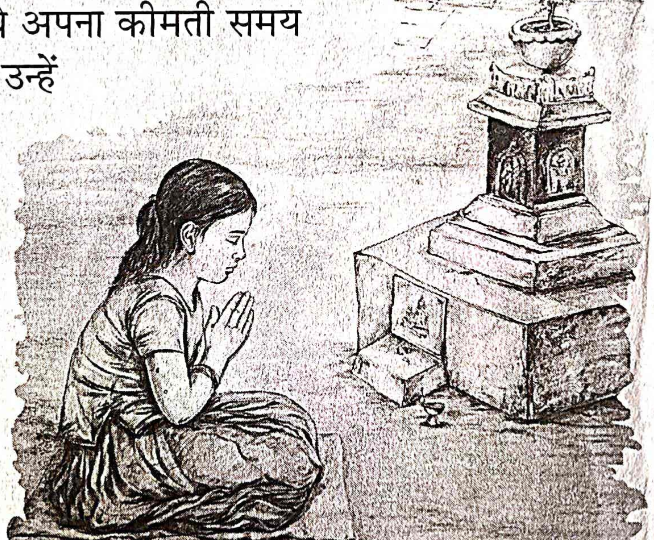

वे जब सेवा कार्यों से मुक्त होतीं, भगवान के ध्यान-पूजा में लग जातीं। और बच्चियाँ जब खेल-खिलवाड़ कर रही होतीं उस समय वह ध्यान की गहन-गहराइयों में आत्मचेतना से एकाकार हो रही होतीं। ❐

पूर्व जन्मों की दिखी झलक

भगवती की उम्र ज्यों-ज्यों बढ़ती जा रही थी, त्यों-त्यों उनका भगवत् प्रेम भी प्रगाढ़ होता जा रहा था। श्रद्धा-निर्विकारिता की देवी को भक्तिमार्ग बहुत ही पसंद था। सांसारिक भावों से परे उनका मन आध्यात्मिकता की दिव्य भूमिकाओं में ही सदा विचरण किया करता था। उन दिनों में बाल विवाह का प्रचलन था। बालक-बालिकाओं के विवाह किशोरावस्था तक कर ही दिए जाते थे। भगवती के विवाह की भी बात स्वजनों द्वारा सोची जाने लगी थी, पर भगवान की भक्ति में उनकी प्रगाढ़ता को देखकर लगता था कि वे विवाह के लिए 'हाँ' करेगी भी या नहीं।

घरवालों ने जब उनसे विवाह की चर्चा की तब उनने सहज रूप से मना कर दिया कि उन्हें अभी अपनी भक्तिमयी तपस्या पूरी करनी है। अभी विवाह के बंधन में नहीं बँधना है। पूजा और ध्यान की गहराइयों में उन्हें कुछ विलक्षण अनुभूतियाँ भी होने लग गईं थीं। एक दिन की अनुभूति में उनने देखा कि वे रामकृष्ण परमहंस के साथ माँ शारदामणि के रूप में तथा संत कबीर के साथ लोई के रूप में हैं। भगवती को ऐसी अनुभूति पाकर बहुत आश्चर्य नहीं हुआ। उनने अपने अतीत के इन जन्मों को पूर्णतः सच अनुभव किया। अब उनका स्वयं के प्रति दृष्टिकोण बदल गया था। उनने निश्चय कर लिया कि यह जीवन सामान्य नहीं है; इसे अपने पूर्वजन्मों के आराध्य के साथ जोड़कर ही जिया जाना है। जब तक उनकी प्राप्ति का सुयोग नहीं बनता, तपस्या—कठिन तपस्या करते ही जाना है।

पूजा काल में दिखे आराध्य (पतिदेव)

लाली भगवती की पूजा-तपस्या बढ़ती ही जा रही थी। शिव पंचाक्षरी मंत्र (ॐ नमः शिवाय) का विशिष्ट अनुष्ठान निरंतर ही चलता रहता था। समय-समय पर भगवान शिव का अभिषेक वे गंगाजल अथवा गोमाता के दुग्ध से करतीं। संत तुलसीदासकृत भगवान भोलेनाथ की दिव्य स्तुति 'नमामीशमीशान' उन्हें याद थी। सुबह-शाम की पूजा में इस स्तुति का पाठ वे अवश्य करतीं थीं। रामचरितमानस से भी उन्हें बहुत प्रेम था। उनके द्वारा मानस के कुछ दोहों तक का पाठ प्रतिदिन किया जाता था। पाठ में जब शिव-पार्वती का प्रसंग आता तो उनका हृदय भाव-संवेदनाओं से भर उठता। उनकी आँखों से श्रद्धा-प्रेम भरे अश्रु निकलने लग जाते। पार्वती के मुख से निकली यह चौपाई—

कोटि जनम लगि रगर हमारी।
बरउँ संभु न त रहउँ कुँआरी॥

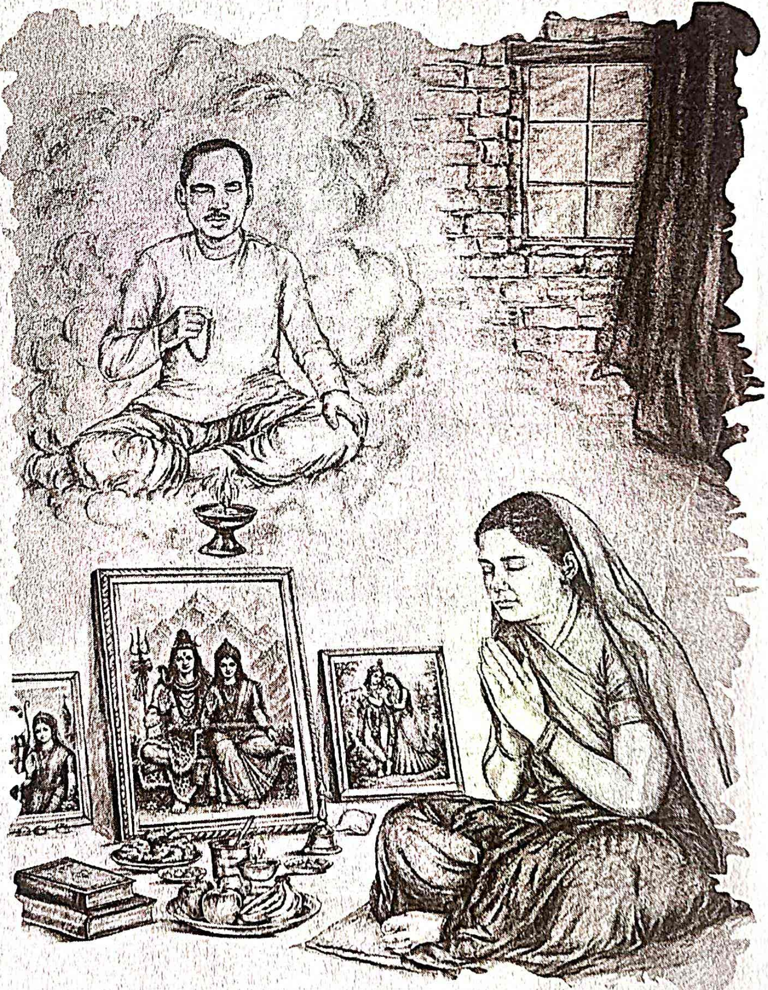

उनका ध्येय बन चुका था। महाकाल के प्रति आत्मीयता—श्रद्धा का भाव निरंतर बढ़ता ही जा रहा था। एक दिन ऐसी ही प्रगाढ़ भाव-अवस्था में अपने पूजनकक्ष में उनने एक दिव्य स्वरूप का दर्शन किया। उन्हें भगवान शिव के प्रतीक से एक तेजपुंज निकलता दिखाई दिया, जो एक तेजस्वी, सुदर्शन, देवता जैसे शरीरवाले युवक के रूप में परिवर्तित हो गया। वह युवक (पं० श्रीराम शर्मा आचार्य) अखंड दीपक के सामने बैठकर ध्यान जैसी अवस्था में अपनी साधना में लीन थे। भगवती ने उन देवपुरुष से विशेष अपनापन अनुभव किया और अपनी अंतरात्मा का संकेत पाकर यह निश्चय किया कि यही हमारे होने वाले पति, आराध्य देव हैं, इन्हीं के साथ जुड़कर हमें दांपत्य जीवन जीना है। ❐

विदेशी वस्त्रों की होली

भगवती केवल पूजा-पाठ और घर के कार्यों तक सीमित नहीं थीं। उन्हें समाज एवं राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारियों, कर्त्तव्यों का भी सम्यक बोध था, जिन्हें वे समुचित रूप से पूरा किया करतीं थीं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वह समय संघर्षों का चल रहा था। सभी देशभक्त अपने-अपने ढंग से योगदान कर रहे थे, ऐसे में भला भगव कैसे पीछे रहतीं। वे आस-पास के गाँवों में जाकर महिलाओं-युवतियों में राष्ट्रप्रेम का भाव जगातीं; स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के लिए साधन जुटाने हेतु अभियान चलातीं। स्वतंत्रता संग्राम में भाग ले रहे लोगों पर पुलिस की कड़ी निगरानी होती थी, ऐसे में अधिकांश लोग लुक-छिपकर अपनी गतिविधियाँ चलाते थे; उनकी भरपूर मदद के लिए उनके भोजन एवं अन्य साधनों के प्रबंध के लिए भगवती एवं उनसे प्रेरित महिलाएँ निरंतर कार्य किया करती थीं। स्वतंत्रता आंदोलन को सफल बनाने के लिए जो भी कार्यक्रम चलते थे, उनमें उनकी एवं साथी महिलाओं की कुछ-न-कुछ उल्लेखनीय भागीदारी अवश्य हुआ करती थी। इस प्रसंग में एक घटना का वर्णन करना यहाँ आवश्यक है—स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग एवं विदेशी सामानों के बहिष्कार का अभियान तेजी से गति पकड़ रहा था। जगह-जगह विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जा रही थी। इस कार्य में भगवती एवं उनकी टोली कैसे पीछे रहती? उनने भी अपनी सहयोगिनी महिलाओं को लेकर विदेशी वस्त्र एकत्र किए एवं उन्हें जलाया; साथ ही उपस्थित सभी को यह संकल्प दिलाया कि देशहित में वे सभी स्वदेशी चीजों को ही अपनाएँगे, विदेशी वस्त्र, वस्तु आदि को नहीं। ☐

शुभ विवाह की स्वीकृति-सहमति

भगवती की उम्र किशोरावस्था को पार कर चुकी थी। उन्हें अपने होने वाले पति का आभास भी हो चुका था। इधर पिताजी एवं भ्रातागण उनके लिए सुयोग्य वर की खोज में लग चुके थे। रिश्तेदारों, संबंधियों से इस कार्य की चर्चा चलाई जा चुकी थी। सभी अपने स्तर से इस दिशा में प्रयत्नशील हो गए थे।

पंडित जसवंत बौहरे जी के रिश्ते में मामा लगने वाले पं० किशन प्रसाद एक दिन आए और उन्होंने बताया कि वर का नाम 'श्रीराम' है; वे बहुत ही सुयोग्य, विद्वान, संत, तपस्वी जैसा जीवन जीने वाले देवपुरुष हैं। कुल-परिवार के लोग खानदानी रईस एवं बड़े जमींदार हैं। आँवलखेड़ा गाँव तथा आस-पास के गाँवों में उनकी बड़ी जमींदारी है। परिवार में सभी सुशिक्षित, विद्वान एवं यशस्वी जीवन के लोग हैं। वर श्रीराम के बारे में ज्यादा कुछ कहना नहीं है, वे दिव्य गुणों से संपन्न अपनी भगवती के लिए हर दृष्टि से सुयोग्य हैं।

दोनों बड़े भाई दीनदयाल एवं सुनहरी लाल के साथ पिता श्री जसवंत बौहरे जी ने लगभग घंटे भर इस विषय पर विचार-विमर्श किया और इस विवाह पर स्वीकृति उन सभी की ओर से बन गई। पं० जसवंत बौहरे जी से पूछा गया कि ज्योतिष के हिसाब से यह विवाह कैसा है तो उन्होंने बताया—ज्योतिष के हिसाब से भी सब कुछ ठीक है, जैसा मैंने सोचा था वैसे ही ये वर हैं; ये सब तरह से लाली के लिए ठीक हैं। अगले अध्यायों में हम वर 'श्रीराम शर्मा आचार्य' के संबंध में प्रमुख प्रसंगों को जानेंगे; यहाँ अभी इतना ही जानना अभीष्ट है कि वर 'श्रीराम' के संबंध में भगवती की क्या प्रतिक्रिया रही?

जब भगवती को वर के संबंध में बताया गया तो वे बड़े शांत भाव से सुनती रहीं। जानकारी मिल जाने के बाद उनने कुछ क्षणों के लिए अपने नेत्र बंद किए और ध्यानावस्था में पहुँच गईं। उन्हें इस सत्य का बोध हो गया कि जिस वर से उनके विवाह की बात हो रही है; वही ध्यान एवं स्वप्न में दिखाई देने वाले तेजस्वी युवक हैं, जो उनके पिछले जन्मों के पति और मार्गदर्शक रहे, उनके आराध्य ही इस बार भी उनके पति होने जा रहे हैं। भाभी से पिताजी के लिए बस इतना ही कहलवा दिया कि वे इस विवाह के लिए पूर्ण सहमत हैं। पिताजी जो कुछ करने जा रहे हैं, उसी में मेरा कल्याण है, उसी में जीवन की सफलता है।

लाली (भगवती) की सहमति व स्वीकृति पाकर परिवारी जनों का हृदय आनंद से भर गया। श्रीराम के पिता पं. श्री रूप किशोर शर्मा जी का स्वर्गवास उनके बाल्यकाल में ही हो गया था। माता दानकुँवरि ही उनकी माँ, संरक्षिका, अभिभाविका सब कुछ थीं। उन्हीं से 'श्रीराम' के साथ भगवती के विवाह की स्वीकृति पं० जसवंत बौहरे जी ने ले ली। ❒

श्रीराम के जन्म के पूर्व के प्रसंग

भारतभूमि देवभूमि है, यहाँ देवपुरुष, अवतारी पुरुष समय-समय पर अवतरित होते ही रहते हैं, पर अवतरित होते हैं विशिष्ट तपस्वी, भक्त समर्पित देवात्माओं के यहाँ ही। ऐसे ही धर्मनिष्ठ, सेवाभावी साधक दंपती आँवलखेड़ा, आगरा निवासी पं० रूप किशोर शर्मा एवं माता दानकुँवरि शर्मा थे, जिनके यहाँ देवपुरुष ने जन्म लेना स्वीकार किया था। पं० रूप किशोर शर्मा जिनकी भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध निष्ठा थी, पौरोहित्य एवं कथावाचन, कर्मकांड आदि के द्वारा जनमानस को कल्याणकारी प्रेरणा दिया करते थे। संस्कृत के असाधारण पंडित थे और ज्योतिष एवं आयुर्वेद में उनकी गहरी पकड़ थी। वे महामना मदन मोहन मालवीय जी के सहपाठी थे। आँवलखेड़ा और आस-पास के गाँवों में धांधू नाम के एक डकैत का बड़ा आतंक था। इस रत्नाकर कहे जाने वाले डकैत को पं० रूप किशोर शर्मा ने बदलकर सन्मार्ग पर चला दिया था। पं० रूप किशोर शर्मा जी ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के लिए बड़ी राशि एकत्र कर महत्त्वपूर्ण सहयोग अनुदान दिया था।

माता दानकुँवरि बहुत ही सरल स्वभाव की तपस्विनी साधिका थीं। माता दानकुँवरि के गर्भ में जब देवात्मा ने प्रवेश लिया, तभी से उन्हें दिव्य अनुभूतियाँ होने लगीं। तरह-तरह के दिव्य स्वप्न भी उन दिनों में उन्हें दिखाई देते, जिससे लगता कि कोई महान सत्ता उनके गर्भ में पल रही है। गर्भ के दिनों में हवेली पर गायों का झुंड आया करता था। आई हुई गाएँ ॐ ध्वनि जैसी हुँकार भी करती थीं। मानो कहती थीं कि अवतारी चेतना का आगमन साकार रूप में होने वाला है। माँ दानकुँवरि को देवों द्वारा गर्भ पर पुष्पवर्षा के दृश्य स्वप्न में दिखाई देते थे। कुछ ऐसे ही विशेष आध्यात्मिक अनुभव पिताश्री को भी होने लग गए थे। यह सुनिश्चित हो गया था कि गर्भ में आई आत्मा कोई महायोगी, महाशिव स्वरूप महापुरुष हैं। ❑

जन्म और नामकरण संस्कार

गर्भकाल के दिन पूरे होने के बाद आश्विन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी संवत् 1968, 20 सितंबर सन् 1911 को माता दानकुँवरि ने पुत्ररत्न को जन्म दिया। जैसे ही यह समाचार

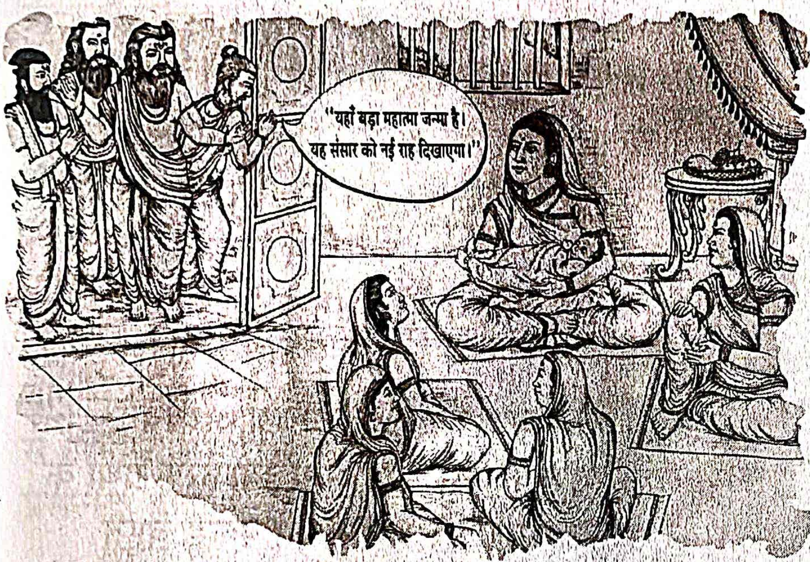

पिता श्री रूप किशोर जी को प्राप्त हुआ उनके हृदय में दिव्य आह्लाद एवं प्रसन्नता तथा आनंद की लहरें उठने लग गईं। यह सामान्य जन्म नहीं था, विश्व-वसुधा को नई चेतना और शक्ति से भर देने वाला दिव्य अवतरण था, जो 'यदा-यदा हि धर्मस्य.....' के क्रम में अपने आप को दोहराता रहता है।

दिव्य शिशु के जन्म के पश्चात दर्शनार्थ आने वालों में सामान्य महिला पुरुष तो थे ही, साधु-महात्मा, ऋषि स्वरूपधारी और विशिष्ट जन भी थे। सभी दर्शन करके अपने को कृतकृत्य हुआ अनुभव करते थे। दर्शनार्थ आने वाले साधु-महात्माओं ने कहा—

"यहाँ बड़ा महात्मा जन्मा है। यह संसार को नई राह दिखाएगा।"

माँ दानकुँवरि को कुछ-कुछ डर भी लगने लगा था कि शिशु का कोई अहित न हो जाए, उस पर किसी की नजर न लग जाए। उन्हें आश्वस्त करते हुए पं० रूप किशोर जी ने कहा—"डरने और चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। भगवान की दिव्य मूर्ति ही हमारे घर आई है, भला उसका अनिष्ट कोई कैसे कर सकता है?"

जन्म के लगभग 12 दिन बाद विजयादशमी की शुभ तिथि में शिशु का नामकरण हुआ, शिशु का नाम 'श्रीराम' रखा गया। युग की उद्धारक चेतना को भला इससे अलग अन्य नाम दिया भी कैसे जा सकता था? ❑

बचपन से ही सीखने की उत्कट अभिलाषा

बालक श्रीराम को माता-पिता ने सुसंस्कार देना आरंभ कर दिया। स्कूली शिक्षा तो उम्र के चौथे वर्ष में प्राप्त होना शुरू हुई, तब तक तो वे अपने नन्हे से व्यक्तित्व में अनेकों सुसंस्कारों, सद्‌गुणों, स्वभावों, आदतों को भर चुके थे। गाँव में ही पं० रूप राम शर्मा जी प्राइमरी पाठशाला चलाते थे, वहाँ श्रीराम शिक्षा पाने के लिए जाने लगे। वे गुरुजी के दिए हुए हर पाठ को शीघ्रता से याद कर लिया करते थे। पढ़ाई में इतने प्रवीण थे कि प्राइमरी की परीक्षा में पूरे आगरा जिले में प्रथम स्थान पर रहे।

पिताजी ने संस्कृत का बहुत अच्छा अध्ययन कराया। लघुसिद्धांतकौमुदी और अन्य व्याकरण ग्रंथों के माध्यम से संस्कृत भाषा पर श्रीराम की पकड़ बहुत अच्छी बन गई। जब पिताजी के द्वारा वैदिक स्वस्ति वाचन एवं अन्य मंत्रों, कल्याणकारी वेद-सूक्तों को वे सुनते थे तो उन्हें बहुत ही प्रिय लगता था। वेदों के कई मंत्रों को उन्होंने याद कर लिया था। वे जब पिताजी के साथ 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उद्‌घाटन समारोह में गए तो वहाँ हो रहे सांस्कृतिक आयोजन में वेदमंत्रों का सस्वर पाठ करके सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

बालक श्रीराम में सीखने की गहरी ललक थी, वे पिताजी के मार्गदर्शन में योगासन एवं प्राणायाम आदि करते थे। 'हरिया' नाम के एक व्यक्ति द्वारा उन्होंने अस्त्र-शस्त्रों के संचालन का भी बहुत अच्छा प्रशिक्षण प्राप्त किया। ज्ञान को बाँटने, लोगों को मार्गदर्शन देने का उनका स्वभाव बचपन से ही था। पिताजी एवं अन्य स्रोतों से उन्हें जो कुछ मिलता था, उसे औरों को बाँट दिया करते थे। ❐

कथा भागवत का मिला ज्ञान

बालक श्रीराम को सांसारिक बातें कम अच्छी लगती थीं। धर्मशास्त्रों के प्रेरक–प्रसंग बहुत अच्छे लगते थे। पिताजी शास्त्रों के प्रति उनकी ऐसी लगन देखकर, राजा–महाराजाओं के यहाँ जब भागवत कथा कहने जाते थे, तब छोटे पंडित जी श्रीराम को अवश्य ही अपने साथ ले जाते थे। उनके लिए एक अलग छोटा–सा आसन लगता था। वे उस पर बैठकर एकाग्र चित्त हो कथा सुनते। कथा के जो प्रसंग कम समझ में आते, उन्हें बाद में पिताजी से पूछते। पिताजी से अभीष्ट समाधान पाकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती।

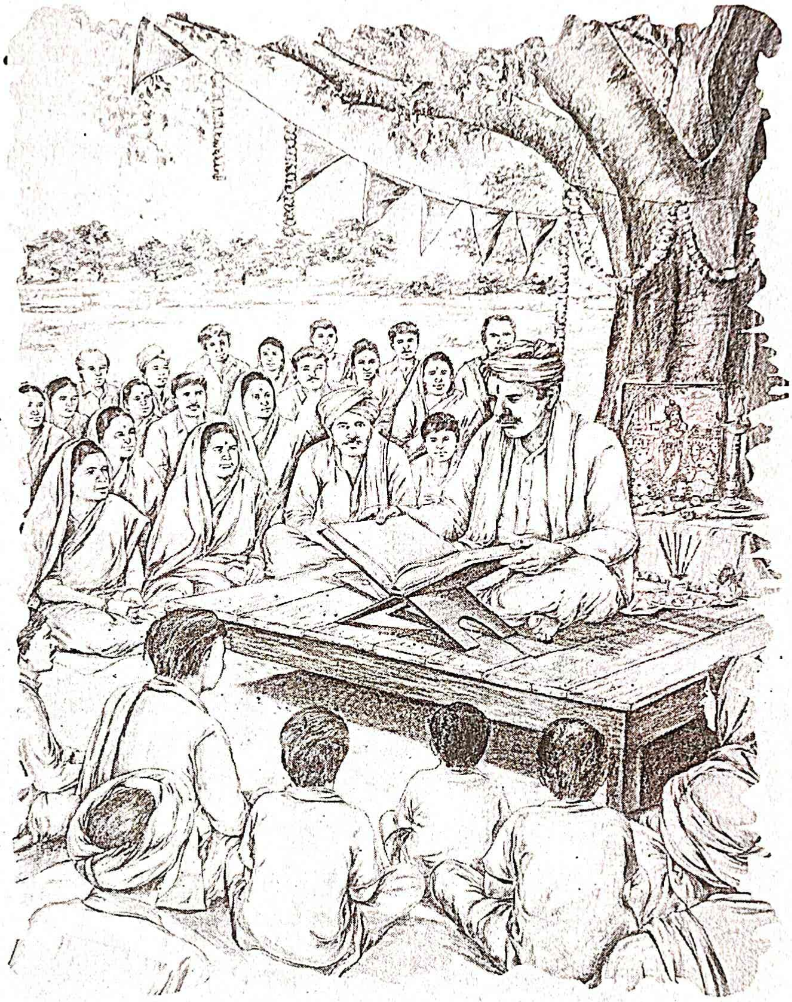

हमारे देश में भगवान राम, भगवान कृष्ण के प्रति लोगों की अपार श्रद्धा है। भगवान राम की कथा का सरल अवधी भाषा में लिखा गया श्रीरामचरितमानस ग्रंथ अत्यंत लोकप्रिय हुआ है। श्रीमद्‌भागवत संस्कृत का ग्रंथ है, जिसमें अन्य प्रसंगों के साथ भगवान श्रीकृष्ण की कथा का विशेष वर्णन है। इस नाते श्रद्धालु लोग इसे बहुत महत्त्व देते हैं। पं० रूप किशोर जी ने श्रीरामचरितमानस और श्रीमद्‌भागवत का बहुत ही गहराई से अध्ययन किया था। वे कथा के प्रसंगों को देश–काल की परिस्थितियों तथा समस्याओं के समाधान के रूप में प्रस्तुत करते थे। उन्होंने अनेकों बार भागवत कथा कही, उसका लाभ सभी ने उठाया। अंतिम कथा अपने ही घर बालक श्रीराम को यजमान बनाकर सुनाई और दक्षिणा में प्रभुसमर्पित जीवन जीने का उन्हें संकल्प दिलवाया था। श्रीराम ने उस समय उन्हें जो वचन दिया था, उसका पालन जीवनभर किया। ❑

पिताजी का मिला मार्गदर्शन

पं. रूप किशोर शर्मा धर्मग्रंथों का नियमित स्वाध्याय तो करते ही थे, उनका पारायण भी करते थे। उन्होंने अपना एक पुस्तकालय बना रखा था; जिसमें धर्म, अध्यात्म, कथा, पुराण, ज्योतिष, चिकित्सा आदि के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ संगृहीत थे। उनका पूजा मंदिर तो था ही, ज्ञान मंदिर भी था, जिसमें सैकड़ों महत्त्वपूर्ण पुस्तकें थीं। जब वे उन पुस्तकों को पढ़ने बैठते थे, तब बालक श्रीराम भी वहाँ बैठ जाते। कभी-कभी माँ से बोलते—''माँ मैं भी इन्हें पढ़ूँगा और पिताजी जैसा बनूँगा।''

पंडित जी साधना-पूजा, स्वाध्याय आदि करने के बाद कुछ समय जीवन को श्रेष्ठ, सफल, सार्थक बनाने वाले आदर्श जीवन-सूत्र पर चर्चा करते। इस चर्चा में भाग लेने के लिए दूर-दूर से लोग आते थे; अपनी-अपनी समस्याओं-उलझनों को पंडित जी के सामने रखते। पंडित जी उसका बड़ा अच्छा समाधान युक्ति-युक्त, विवेकपूर्ण होता था, वह देते थे। बालक श्रीराम को यह चर्चा (गोष्ठी) भी बहुत अच्छी लगती। सभी को संतुष्ट हुआ देख उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती। धीरे-धीरे करके बड़ी संख्या में प्रेरणा-ऊर्जा देने वाले उत्कृष्ट विचार, जीवन को श्रेष्ठ जीवन में बदलने वाले सिद्धांत उनके पास इकट्ठे होते चले गए। भविष्य में इन उत्कृष्टता के चिंतन-बीजों का उगना, बढ़ना, फूलना-फलना हुआ और श्रीराम का जीवन श्रेष्ठ सफलताओं, उपलब्धियों, विभूतियों का महान भांडागार बनता चला गया। ❐

प्राणियों के प्रति प्रेम-दया

बालक श्रीराम को गायों से बहुत प्रेम था। गायों की सेवा के लिए घर में नौकर-चाकर लगे थे। पर श्रीराम स्वयं अपने हाथ से उनकी सेवा करने में आनंद अनुभव करते थे। न केवल घर की गायों का, बल्कि अन्य गायों की भी वे बड़ी निष्ठा से सेवा किया करते। गाएँ उन्हें देखकर उनके पास आ जातीं, रुक जातीं। श्रीराम अपने नन्हे-नन्हे हाथों से उन्हें सहलाते, घास आदि खिलाते, पानी पिलाते, गायों का भी उनके साथ ऐसा व्यवहार होता था, जैसे कि जन्म-जन्मांतरों से उनसे परिचित हों, उनके सामीप्य में रहती आई हों।

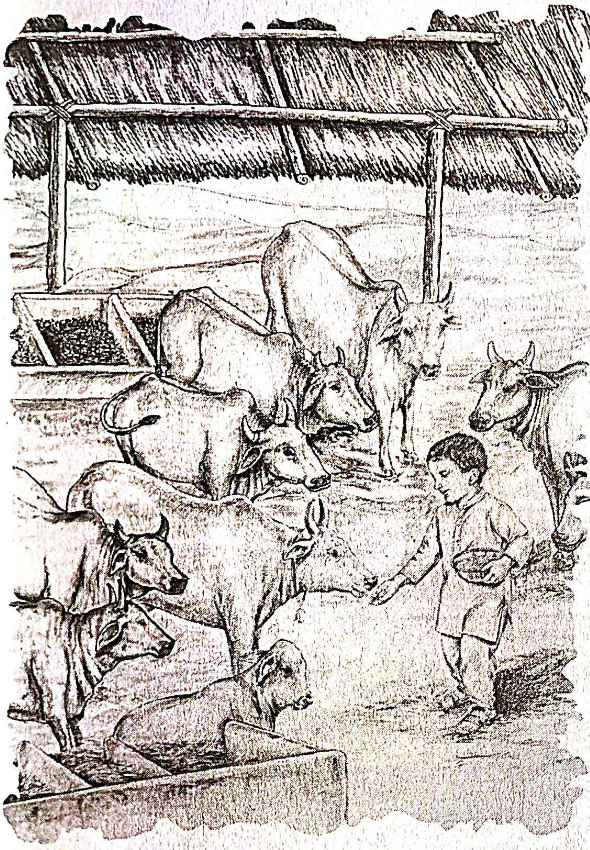

पक्षियों को जब वे दाना डालते तो वे जमीन पर पड़े दानों को चुगने के बजाय उनकी हथेली के दानों को चुगना अधिक पसंद करते। पक्षी आस-पास मँडराने लगते। उनके कंधे-सिर-हाथ आदि शरीर के अंगों पर बैठ जाने की कोशिश करते। उनके पेट की भूख तो शांत होती ही, अपनापन पाने की उनकी प्यास भी तृप्त होती थी।

बालक श्रीराम को कीड़ों-मकोड़ों तक का खयाल रहता था, किसी को किसी कारण कोई कष्ट न मिले ऐसा ध्यान रखते थे। कबूतर, तोते, गौरैया, कौवे, गिलहरी, बंदर, खरगोश, कुत्ते आदि जानवरों-पक्षियों पर उनकी आत्मीयतापूर्ण दृष्टि सदैव रहती थी, वे उनके लिए कुछ-न-कुछ जरूर करते थे।

बालक श्रीराम चीटियों के लिए आटा डालना अनिवार्य रूप से करते थे। जलाशय जहाँ कछुआ और मछलियाँ होतीं, वहाँ आटे की गोलियाँ घर से बनाकर ले जाते और उन्हें खिलाते। ☐

सेवाभावी स्वभाव

बालक श्रीराम के जीवन में माता-पिता द्वारा दिए सुसंस्कार पूर्णतः जीवंत-जाग्रत रूप से कार्य कर रहे थे। उन्हें भक्त नरसी का वह भजन बहुत ही प्रिय था, जिसमें उन्होंने बहुत मार्मिकतापूर्ण भावों के साथ कहा है—

वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीर पराई जाने रे
पर दुख्खे उपकार करे तोये मन अभिमान न आने रे...

श्रीराम का हृदय बहुत ही कोमल था। अत्यंत कोमल भावनाएँ थीं उनकी। किसी का दुःख देखते उनका हृदय भर आता, आँखों से आँसू झर-झरकर बहने लग जाते। दुःख पाने वाला इतने आँसू नहीं बहाता, जितने परदुःखद्रवित श्रीराम की आँखों से बहते। श्रीराम आँसू ही बहाकर नहीं रह जाते, बल्कि जितना बन पड़ता, वे दीन-दुःखियों, कष्ट-पीड़ितों की सहायता भी करते। कई बार ऐसे प्रसंग आए कि भूख से पीड़ित जन के लिए अपने भोजन की थाली को दे दिया, स्वयं भूखे रह गए। घर में जो वस्तुएँ होती थीं, यदि उन्हें माँगने वाला कोई पीड़ित याचक आ गया तो उसे देना-ही-देना होता था, कभी माता-पिता स्वजनों से पूछकर, कभी बिना पूछे। उनके इन कार्यों से घर के लोग नाराज भी नहीं होते थे, बल्कि उन्हें प्रसन्नता ही होती थी।

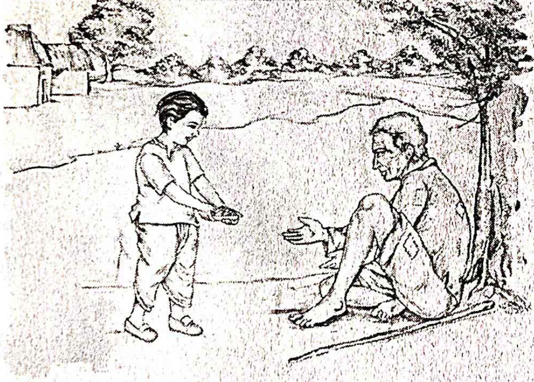

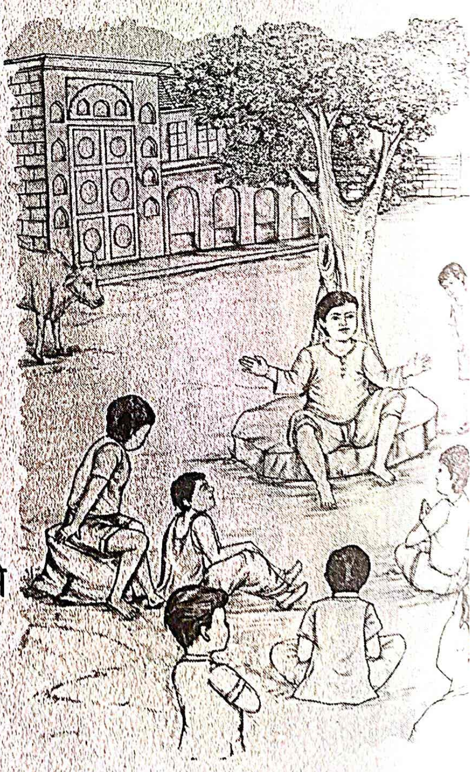

केवल अन्न-वस्त्र आदि का ही दान नहीं, बल्कि ज्ञान का दान उन्हें और अधिक प्रिय था। अपने सभी मित्रों को सामूहिक बिठाकर या व्यक्तिगत रूप से वे जीवनोपयोगी अमूल्य ज्ञान को उन्हें दिया करते थे। उन्होंने अपने मित्रों को सदा सन्मार्ग पर चलना सिखाया। ❑

साधना का शुभारंभ

अभी तक तो श्रीराम की दीक्षा भी नहीं हुई थी, पर उपासना-साधना के संस्कार उन्हें गहरे ध्यान एवं तन्मयता भरे जप-अभ्यास की ओर द्रुतगति से खींचे ही जा रहे थे। इसके प्रमुख रूप से दो कारण थे—पहला पिताजी की नैष्ठिक जीवनचर्या का प्रभाव और दूसरा श्रीराम के स्वयं के पूर्वजन्मों के दिव्य संस्कार, जो उन्हें इस जन्म में साधना-पथ पर बढ़ाने हेतु तत्पर थे।

श्रीराम की जीवनचर्या बड़ी कसी हुई थी, कहीं भी ढील-पोल की कोई गुंजाइश नहीं थी, वे घर में सबसे पहले जग जाते। जगकर अपने दैनिक क्रम में लग जाते। माता-पिता, बड़ों को प्रणाम, साधनास्थली पर जप-ध्यान, सूर्य को जल देना, गाय को रोटी देना, अपनी पौध-वाटिका के पौधों-पुष्पों की सिंचाई जैसे कई कार्य सुबह के ही नित्य क्रम में उन्होंने सम्मिलित कर रखे थे।

उपासना-ध्यान के लिए कभी मंदिरों में, कभी एकांत स्थानों में चले जाते। कभी-कभी गाँव से दूर जंगल में किसी गुफा में या वट-पीपल वृक्ष आदि के नीचे ध्यान में डूब जाते, ध्यान की अवस्था समाधि तक पहुँच जाती। जंगली जानवरों गीदड़, भेड़िये, सूअर, सर्प, बिच्छू आदि से उन्हें कतई डर नहीं लगता था।

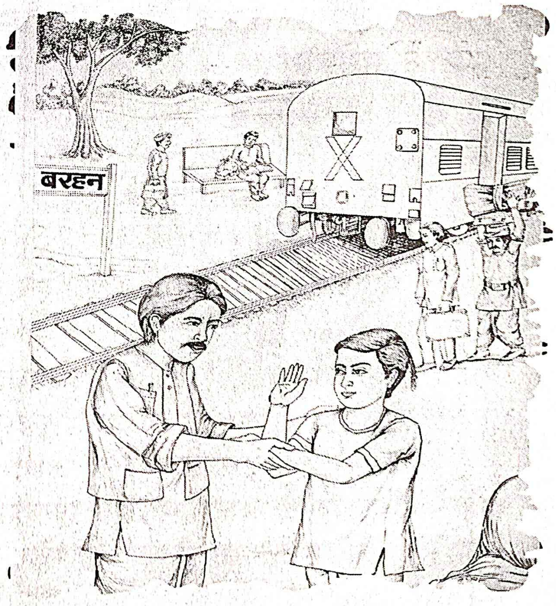

हिमालय से उन्हें बहुत लगाव था। वे सुना करते थे कि हिमालय में बड़े-बड़े ऋषि-महर्षि तप करते हैं और उनके तप से धरतीवासियों का कल्याण होता है तो एक दिन वे भी घर से हिमालय के लिए निकल पड़े। पास के बरहन रेलवे स्टेशन पर उधर जाने वाली ट्रेन की प्रतीक्षा करने लगे। जब परिजनों को पता लगा तो वहाँ से उन्हें वापस लाया गया। ❐

यज्ञोपवीत एवं दीक्षा संस्कार

परिष्कृत वर्ण-व्यवस्था में द्विज बनना, ब्राह्मण बनना जन्म से नहीं, कर्म से माना गया है। हमारे शास्त्रों की स्पष्ट घोषणा है **'जन्मनाजायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते'**। जन्म से सभी अनगढ़, असंस्कृत, शूद्रवत् होते हैं, उन्हें संस्कारों-सद्‌गुणों को अपनाकर द्विज बनने का सौभाग्य मिलता है।

बालक श्रीराम के यज्ञोपवीत एवं गायत्री मंत्र की दीक्षा की बात घर में चल रही थी। माँ दानकुँवरि ने कहा—"पुत्र का यज्ञोपवीत संस्कार महामना मदन मोहन मालवीय जी के ही हाथों होना चाहिए।" पं० रूप किशोर ने उनकी सहमति में अपनी सहमति को जोड़ते हुए कहा—"हाँ तुम ठीक कहती हो, हमारे प्रिय मित्र मालवीय जी भी तो यही चाहते हैं। विश्वविद्यालय के उद्‌घाटन समारोह 1916 से वापस आते समय उन्होंने जोर देकर कहा था—"यह महाकाल का अंशधर देवता है, इसका यज्ञोपवीत और दीक्षा संस्कार उनकी पावन भूमि काशी में ही होना चाहिए।"

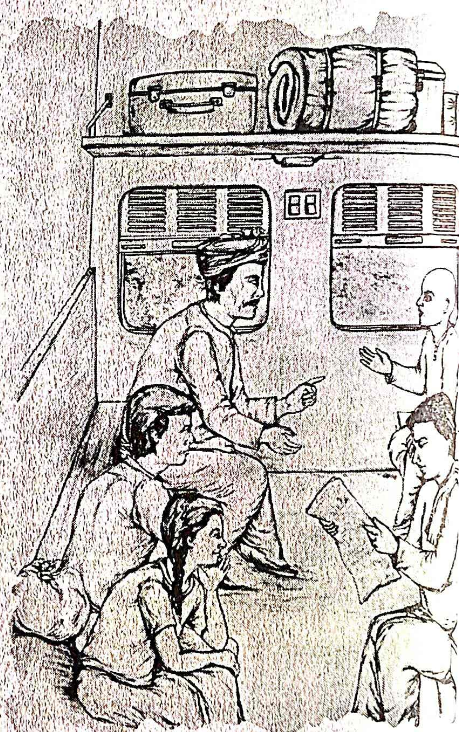

पं० रूप किशोर शर्मा जी अपने ज्योतिष ज्ञान के आधार पर शुभ लग्न-मुहूर्त देखकर उसके पूर्व ही मालवीय जी के पास पहुँच गए। मालवीय जी ने विधिवत् कर्मकांड के पश्चात यज्ञोपवीत पहनाया और गायत्री मंत्र की दीक्षा दी। महान तपस्वी होने का आशीष भी दिया।

जब पिताजी ट्रेन से वापस आगरा लौटने लगे तो उन्होंने गायत्री मंत्र और साधना के बारे में विस्तार से समझाया कि गायत्री महामंत्र पारस, कल्पवृक्ष, अमृत और ब्रह्मास्त्र की तरह है। संसार का सर्वश्रेष्ठ यह मंत्र साधक को ब्राह्मणत्व प्रदान कर, उसे अभीष्ट भौतिक-आत्मिक सिद्धियाँ, सफलताएँ दिलाकर जीवन सफल-सार्थक बना देता है।

नियमित उपासना और तपश्चर्या

मालवीय जी एवं पिताजी ने गायत्री शक्ति एवं मंत्र के बारे में अच्छे से बता दिया था। श्रीराम भी धुन के धनी, निष्ठा के पक्के थे, वे पूरे मनोयोग एवं लगन से गायत्री महामंत्र की उपासना में लग गए। उपासना की सफलता के लिए निश्चित समय, निश्चित स्थान, निश्चित संख्या एवं भावश्रद्धा को अनिवार्य माना गया है। श्रीराम ने सहज ही इन शर्तों को हृदय से स्वीकार कर लिया एवं दृढ़ता से पालन भी करने लग गए। मालवीय जी ने तो केवल पाँच माला ही अनिवार्य कहा था, पर श्रीराम ने अपनी अंत:प्रेरणा से ग्यारह माला नित्य का जप अपना लिया।

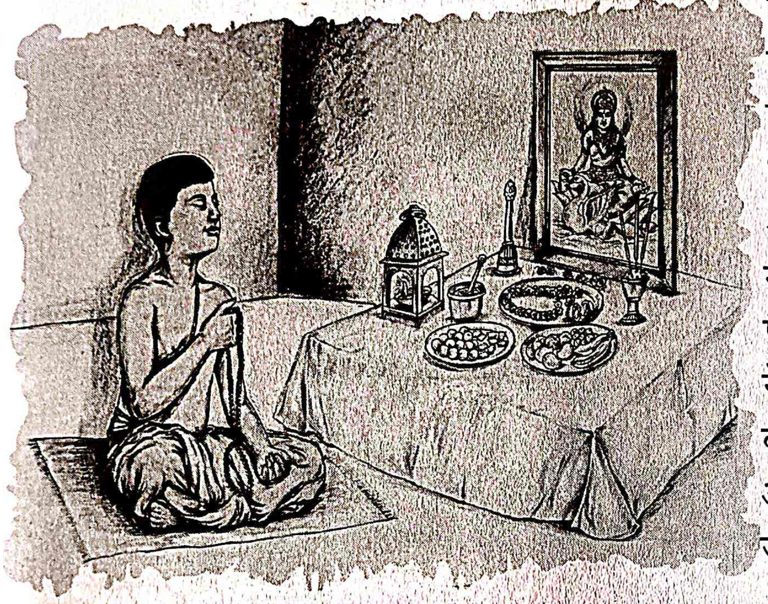

उनका जितना अधिक ध्यान जप और ध्यान पर था, उससे अधिक तपश्चर्या एवं संयम को उन्होंने अपना लिया। माँ नहीं चाहती थी कि पुत्र भोजन संबंधी कोई कठोरता अपनाए, पर जन्म-जन्मांतरों तक जिनने कठोर दिनचर्या को ही अपना जीवनक्रम बनाए रखा हो, उन्हें स्वाद आदि के सुख कैसे बाँध पाते? लेकिन वे माँ के हाथ का भोजन भगवान का प्रसाद मानकर बड़े प्रेम से ग्रहण करते थे।

श्रीराम को एक बात बचपन से ही बहुत प्रिय थी—'कड़ी वाली परीक्षा और बढ़िया वाला परिणाम' कठिन-से-कठिन तप, त्याग, पुरुषार्थ करना उन्हें शुरू से ही प्रिय था। प्रिय भी क्यों न होता, ऋषि आत्मा जो ठहरे। वे युगऋषि के रूप में दुनिया को मार्गदर्शन देने आए थे तो साधना की पृष्ठभूमि को मजबूत करने से क्यों चूकते? उन्होंने सतयुगकालीन ऋषिपुत्र (बटुक) जैसा जीवन क्रम अपनाकर साधना की पृष्ठभूमि को पक्का कर लिया। ❐

आततायी अँगरेज का सिर फोड़ा

बालक श्रीराम साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा सभी क्षेत्रों में निरंतर आगे बढ़ रहे थे। उस समय देश में आततायी अँगरेजों के प्रति जन-जन में रोष पैदा हो रहा था। श्रीराम भी इससे अछूते नहीं थे। अँगरेजों के अत्याचारों से उन्हें बड़ी नफरत थी। एक दिन एक अँगरेज सिपाही एक महिला का पीछा करता हुआ उसे पकड़ने के लिए व्याकुल हो रहा था। ऐसी स्थिति में श्रीराम ने उस महिला को बचाने तथा अँगरेज सिपाही को सबक सिखाने के लिए एक पत्थर का टुकड़ा उसके सिर पर दे मारा। उसके सिर में तेज चोट लगी, वह वहीं गिरकर बेहोश हो गया। महिला उसके चंगुल में फँसने से बच गई, श्रीराम भी वहाँ से चले गए। अन्याय, अनीति का विरोध करना उनके स्वभाव में सहज रूप से था। वे ऐसे प्रसंगों में कभी पीछे नहीं हटे।

उन्होंने उन्हीं दिनों अपनी उम्र के किशोरों और बालकों को संगठित कर एक बाल सेना बनाई; जो गाँवों में स्वच्छता, साक्षरता, देशभक्ति, एकता-समता के भाव जगाती थी एवं जनसेवा के कार्य करती थी। बाल सेना उन लोगों का पता करती, जो स्वतंत्रता संग्राम में लगे हुए थे। उनके बहुत-से गुप्त रूप से किए जाने वाले कार्यों को यह सेना करती। अँगरेजों के खिलाफ होने वाले कार्यों को सफल बनाने में इस सेना का नन्हा-सा ही, पर बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान रहता था; यह बाल सेना देशभक्ति के भाव जगाने वाले गीतों, नुक्कड़ नाटकों को भी प्रस्तुत करती थी।

छपको की सेवा

गाँव की सफाई करने वाली 'छपको' जिसके हाथ के घाव में कीड़े पड़ गए थे, वह घोर कष्ट की हालत में पीड़ा से बुरी तरह तड़पती रहती थी। श्रीराम को जब पता चला तो वे अविलंब दवा का प्रबंध करके उसके पास पहुँच गए। उसका उपचार, उसकी सेवा तब तक की, जब तक वह पूर्णत: ठीक नहीं हो गई। जात-पाँत को मानने वाले ओछी मानसिकता के लोगों ने उनके इस कार्य का बहुत विरोध किया, पर वे अपना कार्य बिना किसी परवाह के करते रहे।

पूर्णत: स्वस्थ हो जाने पर माँ छपको ने अपने हृदय के उद्‌गार को व्यक्त करते हुए कृतज्ञता एवं आभार के साथ कहा—"मैंने भगवान राम को नहीं देखा। मेरे राम तो यह श्रीराम ही हैं। इन्हें हर आदमी पूजेगा।"

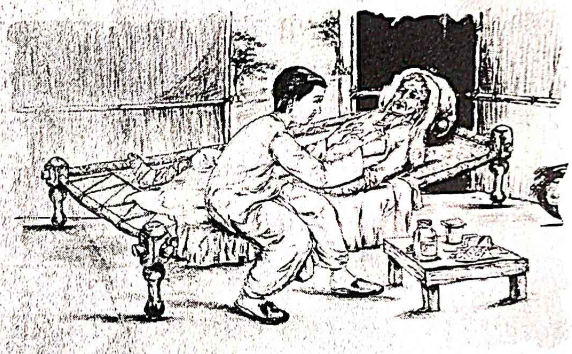

छपको जैसे कितने नर-नारी सेवा और उपचार के अभाव में प्राण त्याग देते हैं। उनका समुचित रूप से ध्यान रखने वाले न उनके परिवार में होते हैं और न संबंधियों में। ऐसे में कोई मदद करने के लिए यदि आगे बढ़ता है तो वह धरती का देवता ही कहा जाएगा।

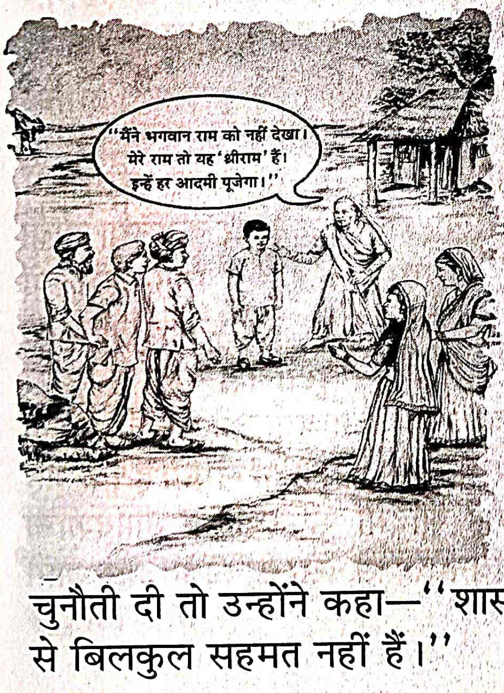

श्रीराम जिन दिनों छपको के उपचार और सेवा में लगे हुए थे, उनको परिवारवालों ने घर में घुसने नहीं दिया। उनके साथ अछूत जैसा व्यवहार किया गया। उनको जाति से निकालने जैसा सामाजिक दंड देने की धमकी दी गई, पर श्रीराम झुके नहीं। पिता श्री रूप किशोर शर्मा जी कहीं बाहर थे, वे जब आए तो उन्होंने श्रीराम का पक्ष लिया। तथाकथित कुछ पंडितों, शास्त्रियों ने जब उनके पिताश्री से इस विषय पर शास्त्रार्थ की चुनौती दी तो उन्होंने कहा—"शास्त्रों का हम सम्मान करते हैं, पर उनमें घुसे प्रक्षिप्त अंशों से बिलकुल सहमत नहीं हैं।" ❒

भावी कर्मभूमि मथुरा का दर्शन-भ्रमण

श्रीराम लगभग 13 वर्ष की उम्र में चल रहे थे। पिताश्री ने उन्हें मथुरा-वृंदावन के महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थलों का दर्शन कराया तथा तीर्थ और उनके कार्यों की उपयोगिता बताई। भागवत की पूरी कथा भी श्रीराम को यजमान बनाकर सुनाई। दक्षिणा में प्रभुसमर्पित जीवन जीने का संकल्प दिलाया। श्रीराम को यह सब सहज ही स्वीकार होता चला गया। पिताजी ने कहा—''श्रीराम मैं रहूँ, न रहूँ तुम्हें मार्गदर्शन का अभाव नहीं होगा। समय-समय पर अभीष्ट प्रेरणाएँ ज्ञात-अज्ञात रूप से तुम्हें मिलती ही रहेंगी। बस, तुम अपने लक्ष्य-पथ पर बढ़ते जाना।'' इस प्रसंग के कुछ दिन बाद ही पिताजी की तबीअत बिगड़ी और बिगड़ती ही गई। लगभग 67 वर्ष का एक श्रेष्ठ जीवन जीकर वे इस जगत् से विदा हो गए। पिताजी के शरीर छोड़ने के बाद श्रीराम माँ के संरक्षण में अपने जीवन-पथ पर आगे बढ़ने लगे। वे लगभग एक वर्ष बाद माँ से आज्ञा लेकर ब्रजक्षेत्र के भ्रमण के लिए निकल पड़े। गोवर्धन में वे पंडित गया प्रसाद जी से मिले; वृंदावन के काठिया बाबा एवं मथुरा के बूटीसिद्ध बाबा आदि से भेंट-परामर्श के बाद वे उस 'श्याम की बगीची' में गए और 2-3 दिन रहे भी, जहाँ आज गायत्री तपोभूमि स्थित है।

इस समय जहाँ तपोभूमि है, वहाँ उस समय एक बगीची थी। बगीची में एक पुराना टूटा-फूटा छोटा-सा मंदिर था और उस मंदिर में एक बहुत पुरानी मूर्ति थी। जब श्रीराम ने उस मूर्ति के बारे में स्वामी रामदास, जिन्हें लोग काठिया बाबा कहते थे, से पूछा तो उन्होंने बताया—''यह मूर्ति गायत्री की हो सकती है, क्योंकि यहाँ हजारों वर्षों से गायत्री-साधना होती चली आई है। इस स्थान को महर्षि अंगिरा एवं दुर्वासा की तपस्थली माना जाता है। गायत्री के अनगिनत साधकों ने यहाँ साधनाएँ की हैं।'' श्रीराम को उस स्थान से एक अपनापन अनुभव हुआ, पर कारण कुछ समझ नहीं आया।

जब काठिया बाबा श्रीराम को बूटीसिद्ध बाबा से मिलवाने मथुरा चौक के रास्ते गायत्री टीला जा रहे तो घीयामंडी में उस स्थान पर उनके पाँव अपने आप रुक गए, जहाँ भविष्य में अखण्ड ज्योति संस्थान बनना था। श्रीराम के कुछ क्षणों के लिए वहाँ रुकने पर काठिया बाबा ने पूछा—''श्रीराम चलते-चलते तुम यहाँ क्यों रुक गए।'' श्रीराम ने कहा—''पता नहीं क्यों मुझे ऐसा लगता है कि इसी स्थान पर मुझे गायत्री मंत्र के 24 लाख वाले कई पुरश्चरण करने हैं।'' काठिया बाबा ने कहा—''तुम ठीक कहते हो श्रीराम! सिद्ध संत बूटीसिद्ध बाबा ने मुझसे कहा था—मथुरा में ही कोई महान तपस्वी, अवतारी स्तर का साधक गायत्री की प्रचंड साधना करेगा और उसके द्वारा पूरे विश्व में गायत्री मंत्र का प्रचार-प्रसार होगा। मुझे तो लगता है कि वह सिद्ध साधक तुम्हीं हो। श्रीराम! तुम्हीं भूली-विसराई गई सदियों से उपेक्षित आदिशक्ति का उद्धार करोगे।'' उनकी बात सुनकर श्रीराम ने अति विनम्रता से सिर झुकाया और आगे बढ़ गए। ❐

गुरुसत्ता से साक्षात्कार

श्रीराम के जीवन में एक दिव्य स्वर्णिम सुयोग तब आया, जब वे अपनी उम्र के पंद्रहवें वर्ष में थे। सन् 1926 जनवरी (माघ, संवत् 1982) का महीना, शुभ वसंत पंचमी तिथि की पावन वेला में उनके कई जन्मों के मार्गदर्शक, हिमालयवासी, सूक्ष्मदेहधारी स्वामी सर्वेश्वरानंद जी ने आकर उनकी साधनास्थली में उन्हें दर्शन दिया। ब्राह्ममुहूर्त की उस दिव्य वेला में श्रीराम अपनी उपासना के नित्यक्रम में लगे हुए थे। अचानक दिव्य ज्योति का प्राकट्य हुआ और उसमें दिखे दिगंबर सिद्धपुरुष, तो श्रीराम को आश्चर्य हुआ। उनके मन के विस्मय को तोड़ते हुए मार्गदर्शक सत्ता ने उन्हें अपना सूक्ष्म परिचय दिया और आने का कारण बताया। श्रीराम के पिछले महत्त्वपूर्ण तीन जन्मों (संत कबीर, रामकृष्ण परमहंस, समर्थ गुरु रामदास) की झाँकी दिखलाकर उन्हें इस जन्म में क्या करना है उसको बताया। मार्गदर्शक सत्ता ने जो कुछ बताया, उसमें तत्काल के लिए था—अखंड दीप की स्थापना और 24 लक्ष के 24 महापुरश्चरणों का शुभारंभ। श्रीराम ने उनकी आज्ञा को शिरोधार्य किया और अपने परिवर्तित जीवनक्रम को उसी दिन से आरंभ कर दिया।

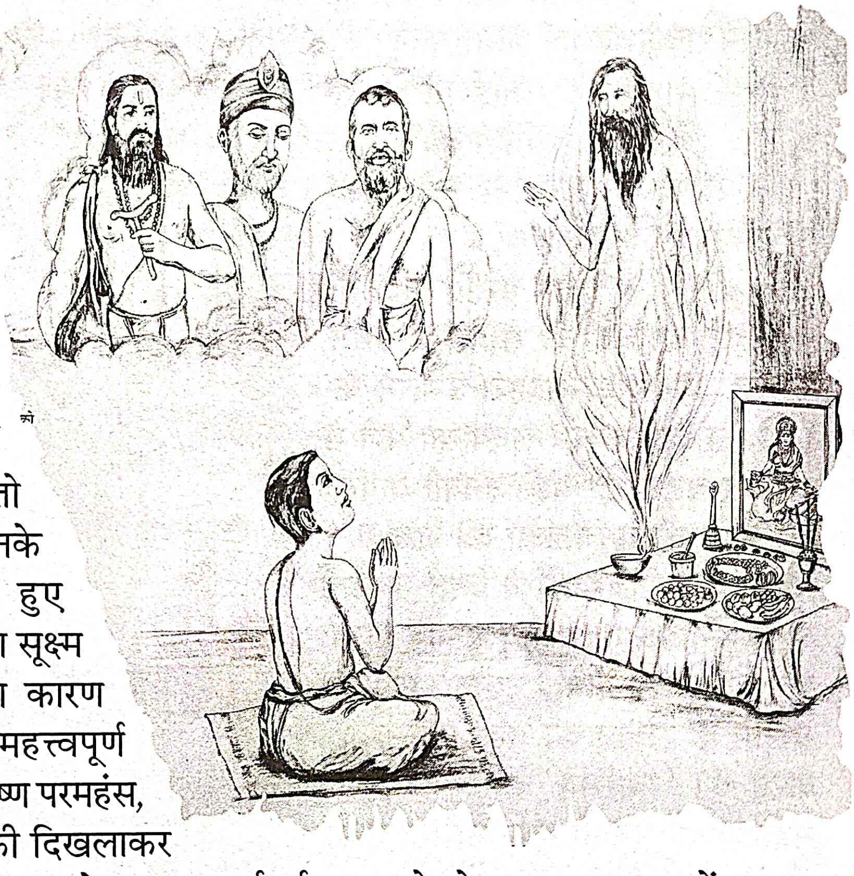

परिवार ने जब पुरश्चरण साधना के कठिन नियम सुने तो सभी ने ऐसी तपश्चर्या-साधना में न उलझने की सलाह दी। माँ को अपने पुत्र पर पूरा-पूरा विश्वास था कि मेरा पुत्र साधारण नहीं, असाधारण है; जो सोचता है, संकल्प लेता है; उसे पूरा कर दिखाता है। माँ ने अपनी सहमति दे दी। ❐

क्रांतिकारी लेखन

श्रीराम ने बचपन से ही अच्छे लेख एवं कविताएँ लिखना प्रारंभ कर दिया था। उनकी रचनाएँ दैनिक 'सैनिक' के अलावा 'किस्मत', 'चाँद', 'सतयुग', 'मस्ताना', 'विद्यार्थी', 'सन्मार्ग', 'विश्वामित्र' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थीं। सैनिक के मत्त प्रलाप स्तंभ में प्रकाशित हुई भारत माता के प्रति कविता की दो पंक्तियाँ यहाँ द्रष्टव्य हैं—

कोई भी हो तेरा दुश्मन, निश्चय मिट जाएगा।
त्रिंश कोटि हुंकारों से, नभमंडल फट जाएगा॥

'सैनिक' अखबार में श्रीराम की रचनाएँ 'मत्त प्रलाप' स्तंभ में छपती थीं, जो बहुत ही प्रभावशाली होती थीं।

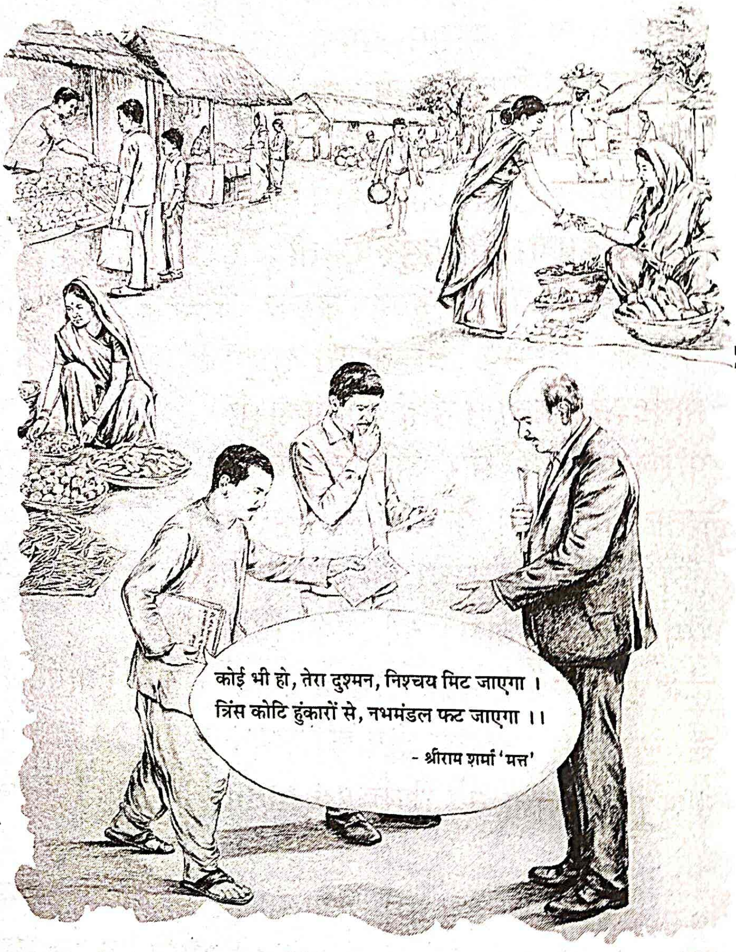

श्रीराम ने कलम उठाई थी क्रांति के लिए, आजादी के संग्राम में उमंग, उत्साह और शौर्य-साहस उभारने के लिए। उनकी कलम लक्ष्य को पाने के पथ पर बढ़ती ही गई। उनकी क्रांति की आगभरी कविताओं को जब गणेश शंकर विद्यार्थी ने देखा तो उन्हें बहुत संतोष हुआ। बाबू गुलाब राय एवं बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' भी श्रीराम के लेखन की बड़ी प्रशंसा करते थे। 'किस्मत' के संपादक महोदय को उनकी एक कविता बहुत अच्छी लगी थी, उसे उन्होंने 'किस्मत' में प्रमुखता से छापा। उन्होंने श्रीराम के लिए पत्र में लिखा—कभी हर्बर्ट स्पेंसर ने बालक नरेंद्र (विवेकानंद) के लिए लिखा था—"शीघ्र ही विश्व तुम्हें महान विचारक के रूप में जानेगा।" हर्बर्ट स्पेंसर की बात मैं आज तुम्हारे लिए बड़े गर्व और गौरव के साथ कह सकता हूँ—"तुम निश्चित ही अपने उत्कृष्ट विचारों से मानवता को नई दिशा दोगे।"

हुब्बालाल की सेवा और औषधि केंद्र की स्थापना

श्रीराम ने अपने सेवाभावी क्रांतिकारी विचारों वाले मित्रों को लेकर एक 'सेवा समिति' भी बनाई, जिसका कार्यक्षेत्र लगभग पूरा आगरा जनपद था। अपनी सेवा समिति को लेकर वे एक दिन गाँव आए हुए थे। देखा तो गाँव का हुब्बालाल पटवारी अपनी चारपाई पर बीमारी और भूख से तड़प रहा था। पटवारी के जीवन में उसने बहुत ही अत्याचारी कार्य किए थे, जिसके कारण लोगों की उससे सहानुभूति खत्म हो गई थी। घर के लोगों ने भी उससे दूरी बना ली थी। श्रीराम एवं उनके साथियों ने उसकी सेवा-चिकित्सा करके उसे ठीक कर दिया तथा उसके लिए आवश्यक साधनों की व्यवस्था कर, वे सभी अपने कार्यों में लग गए।

श्रीराम ने ग्रामवासियों की चिकित्सा के लिए गाँव में ही औषधि-क्रेंद्र खोल दिया। दवाओं एवं वैद्य जी की व्यवस्था अपने साथियों के साथ मिलकर करते रहे।

श्रीराम को उस समय तक औषधियों के बारे में बहुत-सी जानकारियाँ हो चुकी थीं। वे नाड़ी देखने का भी प्रामाणिक ज्ञान रखते थे। बहुत-सी आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण करने का विधान भी उन्हें मालूम था। औषधियों के रस, काढ़ा, अर्क, वटी, पाउडर, अवलेह, भस्म आदि अनेक प्रकार हुआ करते हैं—सभी के बारे में अभीष्ट जानकारी हासिल कर चुके थे। पथ्य, कुपथ्य का ज्ञान भी मरीजों को बताया जाता था। बहुत-सी बीमारियाँ जो अच्छे वैद्य ठीक न कर पाते थे, उन्हें श्रीराम ठीक कर देते थे। उसका श्रेय स्वयं न लेते हुए भगवान की कृपा बताकर मरीज में भगवान के प्रति आस्था पैदा करते थे। □

आग से घिरी महिला को बचाया

किशोर श्रीराम सेवा के हर कार्य को करने का प्रयास करते। यही कारण था कि जरूरतमंद और पीड़ित लोगों से घिरे रहते। उनसे हर कोई अपनी समस्याओं के समाधान की प्राप्ति की अपेक्षा रखता था। लड़ाई-झगड़ों को शांत कराना भी उन्हें बखूबी आता था। पशुओं में बीमारी फैल गई तो उनके निवारण के लिए दवा और डाक्टरी व्यवस्था की जिम्मेदारी वे स्वयं ले लेते थे। ग्रामीण जीवन की अनेकों समस्याओं को वे व्यक्तिगत या सामूहिक स्तर पर सुलझाते और समाधान देते। गाँव में मीठे पानी का अभाव था। श्रीराम ने भगवान से प्रार्थना की। अकेले ही कठिन श्रम करके एक कुआँ खोद डाला, जिसका पानी मीठा निकला। जिस काम के लिए किसी की हिम्मत न पड़ती उसे श्रीराम करते।

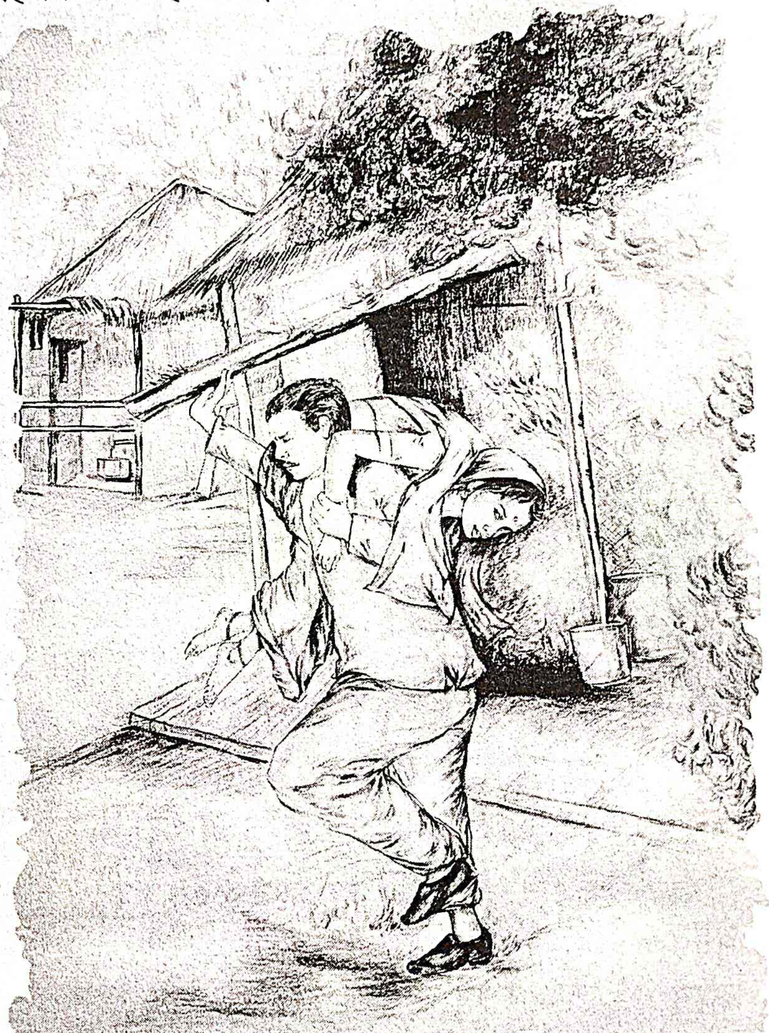

गाँव में एक सेठ जी के घर में आग लग गई, पूरा घर जलने लग गया। सब बाहर निकल आए। उनकी बहू घर में आग की लपटों से घिरी वहीं रह गई थी। कोई निकालने वाला न था। श्रीराम ने तुरंत निर्णय लिया, वे कंबल ओढ़कर घर में घुसे और उस महिला को सुरक्षित बाहर निकाल लाए। ऐसे एक नहीं, अगणित प्रसंग हैं जिनमें श्रीराम के शौर्य, साहस, सेवा, सदृशता, करुणा, प्रेम, आत्मीयता की प्रेरक गाथाएँ भरी पड़ी हैं; जिनसे अवगत होने वालों को सत्प्रेरणाएँ, श्रेष्ठ जीवन हेतु सदा मिलती रहेंगी।

घोर संकटों-विपत्तियों से घिरे लोगों के प्राण बचाने के लिए वे अपने प्राण की बाजी लगा दिया करते थे। ❑

गाय को कसाई से बचाया

स्वतंत्रता संग्राम में उनकी यथासंभव भागीदारी चल ही रही थी। इसी बीच समाज-सेवा और प्राणिमात्र के हित के अनेकानेक कार्यों को वे संपन्न करते जाते थे। सन् 1930 का ही प्रसंग है। एक कसाई दो लँगड़ी गायों को काटने के लिए ले जा रहा था। श्रीराम ने उन गायों का पैसा देकर कसाई के हाथों से उन्हें बचाया। उन गायों को सुरक्षित स्थान तक पहुँचाने के लिए उन्होंने किराये की एक बैलगाड़ी ली और उस पर गायों को लादकर हाथरस गोशाला की ओर जाने लगे। बैलगाड़ी का एक बैल बहुत वृद्ध एवं कमजोर था। वह लँगड़ाकर चल रहा था। नवयुवक श्रीराम से उसकी दयनीय दशा देखी नहीं गई। उस बैल को जुए से अलग करके वे स्वयं बैल की जगह जुत गए तथा बैलगाड़ी को दूसरे बैल के साथ खींचते हुए कई मील की यात्रा पूरी कर गोशाला तक पहुँचाया।

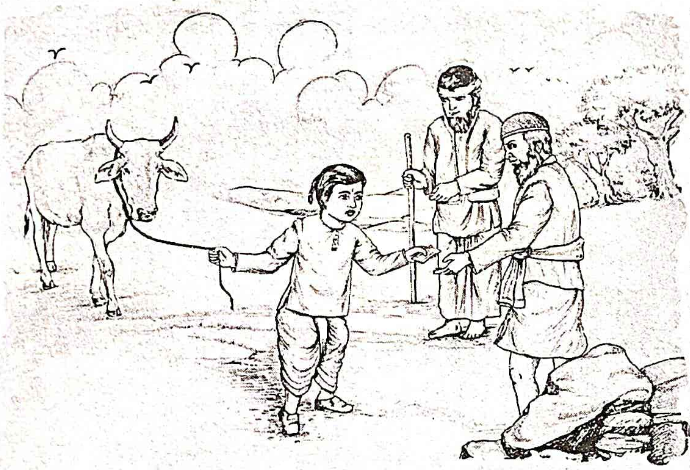

श्रीराम ने हाथरस गोशाला में गायों को पहुँचाकर बैलगाड़ी को वापस लाकर जिसकी थी, उसको दिया और किराया भी चुकाया। उनके द्वारा गोसेवा का जो कार्य बन गया, उससे उन्हें बहुत संतुष्टि थी। लेकिन उनके मन में एक बात बार-बार चुभ रही थी कि गाय पालनेवाले गाय के वृद्ध होते या दूध न देने की स्थिति में कसाई के हाथों क्यों बेच देते हैं? गोमाता के सारे उपकारों को भुलाकर चंद पैसों के लिए कटने-मरने के लिए कसाई के हाथों में उसकी डोर पकड़ा देते हैं; यह तो बिलकुल गलत है। उन्होंने भौतिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से गाय के महत्त्व को ग्रामवासियों को समझाया और यह संकल्प भी कराया कि कोई भी व्यक्ति गायों को कसाई के लिए नहीं बेचेगा।

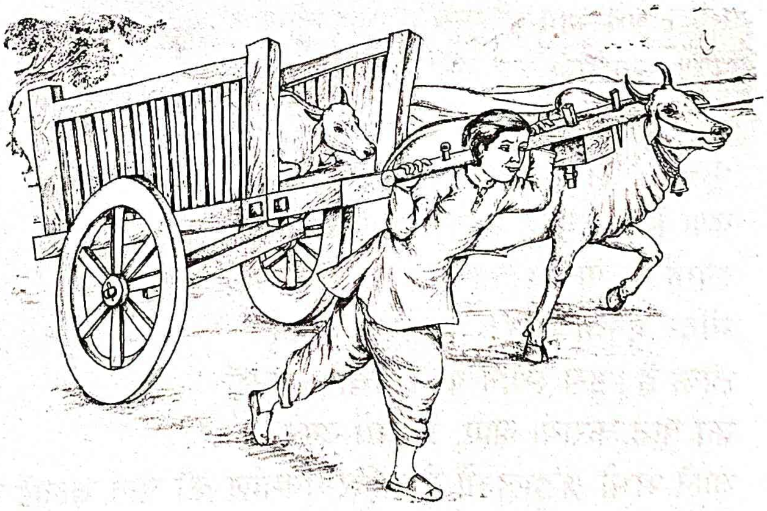

हरिजन के यहाँ कथा एवं मंदिर निर्माण

छपको वाले घटनाक्रम को लोग भूल भी नहीं पाए थे, तब तक युवा श्रीराम ने सामाजिक क्रांति का एक कदम और उठा डाला। बात यह थी कि हरिजनों-दलितों के यहाँ कोई पंडित सत्यनारायण की कथा कहने को तैयार नहीं होता था—श्रीराम ने हवेली के घुड़शाला में काम करने वाले 'गिरधर' को तैयार करके बस्ती के सभी लोगों को कथा सुना डाली। बहुत-से लोगों ने उनका विरोध किया, पर उन्होंने कहा—"समाज की एकता-समता के लिए इतना तो करना ही पड़ेगा।"

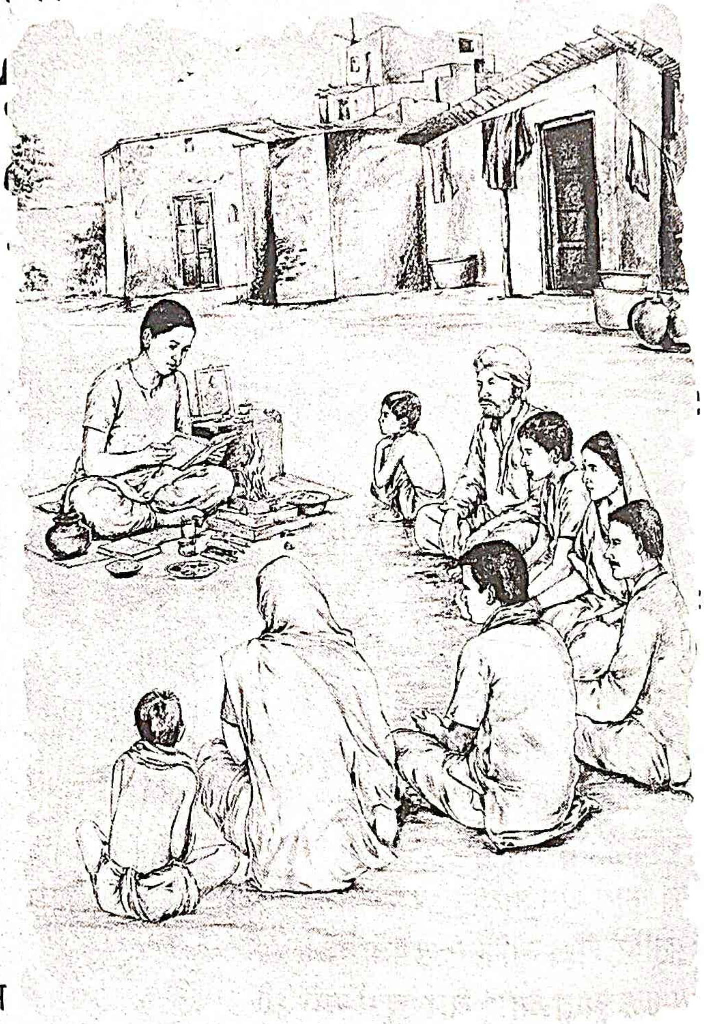

जिस बस्ती में श्रीराम ने कथा सुनाई, उसी में एक चबूतरा था; जिस पर किन्हीं लोक देवता के चरण-चिह्न स्थापित थे। बस्ती में रहने वालों का मन था कि वहाँ एक छोटा-सा सुंदर मंदिर बन जाए, जिसमें आकर लोग पूजा-उपासना कर सकें। श्रीराम ने बस्ती के ही एक व्यक्ति कन्हैया से पूछा—"मंदिर के निर्माण में कठिनाई क्या है?" कन्हैया ने बताया—"हम लोगों के पास इतना पैसा नहीं है कि मंदिर बनवा सकें।" श्रीराम ने कहा ठीक है। इस स्थान पर रामचरितमानस का पाठ कराया जाए, जिसमें आने वाले सभी श्रद्धालुओं से मंदिर-निर्माण की बात चलाई जाए।

अखंड पाठ की तैयारी कर ली गई, निश्चित तिथि पर पाठ आरंभ भी हो गया। इस आयोजन के खरच की व्यवस्था श्रीराम ने स्वयं के पास से की थी। कुछ लोगों को छोड़कर सभी लोगों ने मंदिर-निर्माण में सहयोग देने का वचन दिया। निर्माण-कार्य आरंभ हो गया। जब मंदिर बन गया तो प्राण-प्रतिष्ठा भी विधिवत् करा दी गई। ❒

प्रौढ़ शिक्षा-केंद्र चलाया

युवा श्रीराम जब समाज के लोगों को निरक्षरता के चलते अनेकों परेशानियों में फँसते देखते तो उन्हें बहुत पीड़ा होती थी। उन्होंने देखा कि गाँव के बड़े-बूढ़े लोग अशिक्षा के चलते अंधविश्वास, पाखंडों, कुरीतियों, मूढ़मान्यताओं तथा अन्य प्रकार की बुराइयों में फँसे रहते हैं और आने वाली पीढ़ी को भी वैसा ही बनाने का प्रयत्न करते हैं, तो उनका मन बहुत दुःखी हो गया। उन्होंने गाँववालों को साक्षर बनाने के लिए उस जमाने में (सन् 1932) प्रौढ़ पाठशाला खोली। श्रीराम की पाठशाला में सभी उम्र के नर-नारी जो शिक्षा के प्रति जागरूक हो गए थे, अवश्य आते थे।

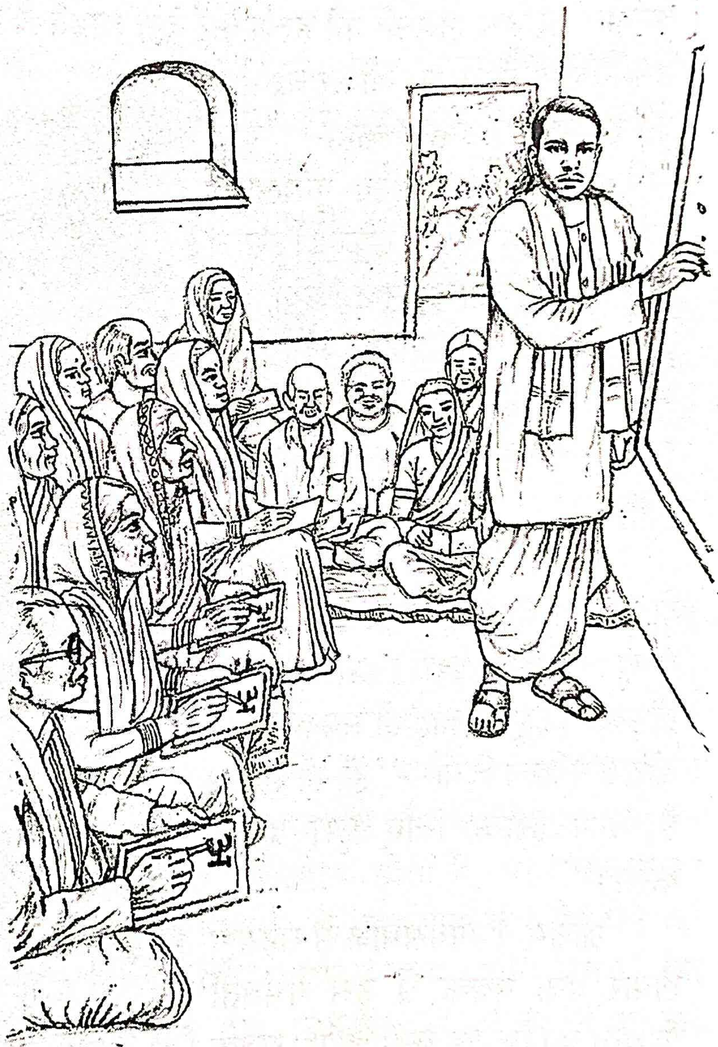

धीरे-धीरे गाँव का माहौल बदला, बड़े-बुजुर्ग रामचरितमानस का पाठ कर सकने में सक्षम हो गए। प्रगतिशीलता के विचार अपनाने लग गए; पढ़ाई का महत्त्व समझ में आ जाने पर अपने बच्चों की शिक्षा पर पूरा ध्यान देने लगे। साक्षरता-शिक्षा के अभाव में उन्हें जो परेशानियाँ होती थीं, अब वे नहीं हो रहीं थीं। धूर्त लोग जमीन-जायदाद के दस्तावेजों पर अँगूठा लगावाकर उसे हड़प लेते थे, अब ऐसा नहीं हो रहा था। देश, समाज की गतिविधियों पर नजर रहने लग गई। जिम्मेदार नागरिक का दायित्व निभाने की तत्परता लोगों में जाग्रत हो गई। जब लोगों में विचारशीलता जागी तो लोग गलत मान्यताओं, विश्वासों, आस्थाओं का विरोध स्वयं ही करने लग गए। श्रीराम की प्रौढ़ पाठशाला से ग्रामवासियों को अनेकों महत्त्वपूर्ण लाभ मिले। ❑

गर्भवती विधवा का विवाह कराया

एक प्रसंग जो उन्हीं दिनों घटित हुआ, एक विधवा स्त्री के विवाह का है। गाँव में एक परिवार ने अपनी लड़की का विवाह किया। लड़की 2-3 वर्ष बाद विधवा हो गई। विधवा को उसके ससुरालवालों ने छोड़ दिया। वह अपने मायके आँवलखेड़ा रहने लगी। कुछ दिनों बाद वह एक दुष्ट-लंपट व्यक्ति के चंगुल में फँसकर गर्भवती हो गई। घरवाले अपनी इज्जत बचाने के नाम पर उस लड़की की हत्या कर देना चाहते थे। श्रीराम को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने लड़की के घर जाकर घरवालों को समझाया। उन्होंने कहा—"दुष्ट चरित्रहीन व्यक्ति ने बहला-फुसलाकर उसे वासना के नरक में ढकेला। उसकी पवित्रता-शुचिता को नष्ट किया, दोष उसका ही तो है। माना कि लड़की से भी गलती हुई, पर इसका मतलब यह तो नहीं होता कि इसका प्राण ले लिया जाए।"

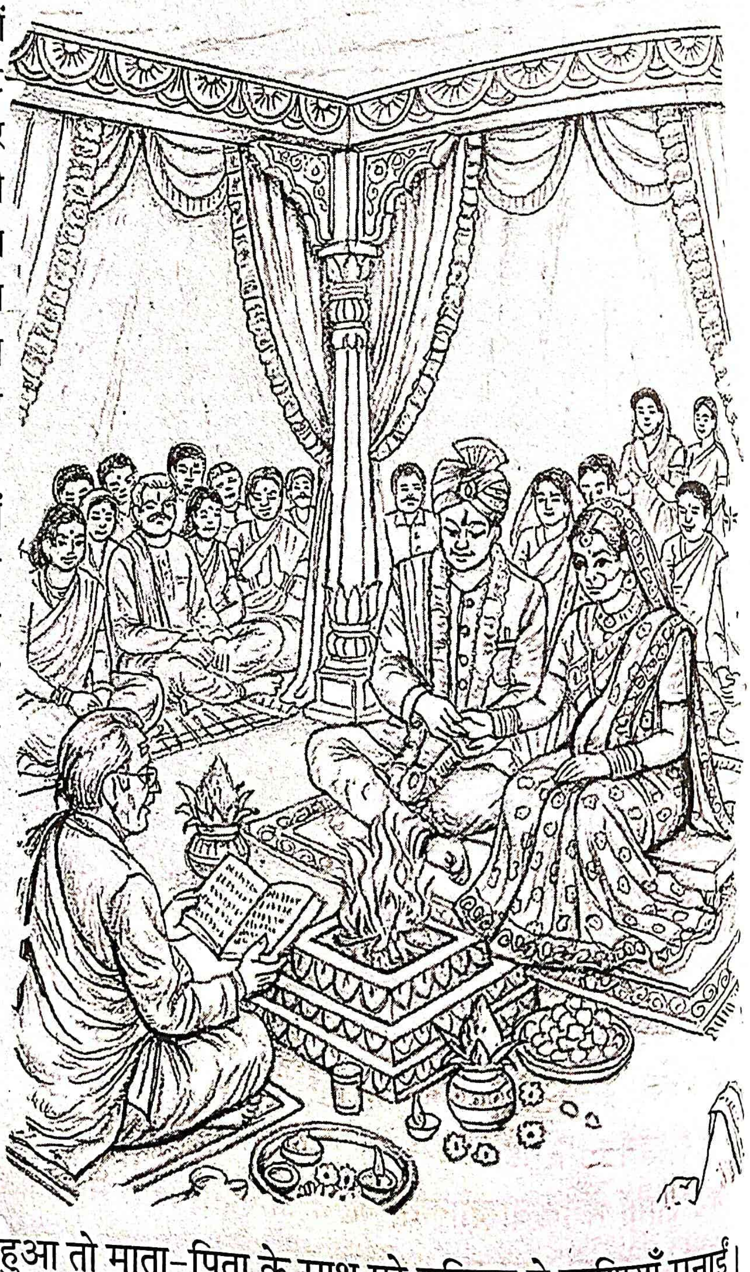

लड़की के पिता ने आँसूभरे नेत्रों से अत्यंत दीनता के साथ श्रीराम से पूछा—"क्या इस स्थिति में भी लड़की का पुनर्विवाह हो सकता है?" श्रीराम ने उत्तर दिया—"हाँ, हो सकता है, हम इसके लिए पूरा प्रयत्न करेंगे।"

श्रीराम ने आर्यसमाज से सहयोग लेकर एक युवक से उस गर्भवती विधवा का विवाह करा दिया। युवक बहुत ही समझदार एवं हृदयवान व्यक्ति था। उसने पूर्ण निष्ठा एवं सम्मान के साथ पत्नी को अपने घर रखा। संतान के रूप में पुत्र जब पैदा हुआ तो माता-पिता के साथ पूरे परिवार ने खुशियाँ मनाई। उनका गृहस्थ जीवन सुंदर रूप से चलने लग गया। ☐

काशी की तीसरी यात्रा

इन्हीं दिनों श्रीराम के मन में दीक्षा भूमि काशी जाने की प्रेरणा बार-बार उठ रही थी, वे 20 अगस्त 1930 को काशी के लिए रवाना हुए। काशी उनके लिए अपरिचित नहीं थी पर बहुत परिचित भी नहीं थी। इस यात्रा के पहले वे दो बार (1916, 1921) काशी आ चुके थे। अबकी बार आने का उद्देश्य काशी की महान विभूतियों के दर्शन-परिचय-परामर्श-अनुग्रह पाने का भाव था।

श्रीराम जब काशी पहुँचे तो वहाँ के प्रख्यात संत शुद्धानंद तथा स्वामी विशुद्धानंद से मुलाकात की। विशुद्धानंद जी ने भारत माता की एक प्रतिमा देकर कहा—हमारी सद्भावनाएँ तुम्हारे साथ हैं, तुम राष्ट्र सेवा के लिए जो करना चाहते हो, उसमें अवश्य सफल होगे।

काशी के बंगाली टोला के खालिसपुरा मुहल्ले में रहने वाली सिद्धिमाता की प्रेरणा थी कि भावुकताभरी भक्ति की जगह श्रीराम तुम्हें भक्ति, ज्ञान, कर्म तीनों की समन्वित त्रिवेणी बहानी है। माँ आनंदमयी से भी उनकी मुलाकात हुई। माँ ने कहा—श्रीराम आपका जीवनलक्ष्य लोक-कल्याण है। आप उसी के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। आगे यह और अधिक बढ़ता जाएगा। श्रीराम माँ आनंदमयी द्वारा अपने लिए तुम की जगह 'आप' का संबोधन सुनकर बहुत सकुचा रहे थे। इस पर माँ ने कहा—''आपको दुनिया जाने न जाने पर मैं जानती हूँ। आप जिस कार्य को करने के लिए आए हैं, वह 'युग परिवर्तन' संसार का सर्वश्रेष्ठ कार्य है।''

गंगातट पर श्मशान घाटों पर मुरदे जलते रहते हैं। लोग अंत्येष्टि-क्रिया कर अपने घरों को लौट आते हैं। काशी में गंगा को गंभीरता से निहार रहे श्रीराम को यह सब सामान्य नहीं लगा। उनकी विचारधारा में एक नवीन तथ्य-सत्य उद्घाटित हुआ। उन्होंने सोचा—एक दिन जन्म होता है एक दिन मृत्यु हो जाती है; बीच का बहुत लंबा वर्षों का जीवन बिना सुव्यवस्थित किए, बिना ढंग से ऐसे ही बीत जाता है। अधूरा अनगढ़ जीवन, असफल जीवन जब मृत्यु के समय समाप्त होने को होता है तो बहुत पश्चात्ताप होता है, पर मरने वाला पश्चात्ताप के सिवाय कुछ नहीं कर पाता। तो क्यों न हर दिन को सुंदरतम रूप से जीने का विधान अपनाया जाए। प्रतिदिन जन्म (जगते समय) और प्रतिदिन मृत्यु (सोते समय) का ध्यान रखकर हर दिन का पूरा-पूरा उत्तम उपयोग कर, एक-एक दिन से बने पूरे जीवन को उत्कृष्टतम बना लिया जाए।

दीक्षा भूमि का यह विशेष दिव्य मार्गदर्शन था, जो हरदिन नया जन्म—हरदिन नई मौत के सिद्धांत के रूप में मिला, यही आगे चलकर युगऋषि प्रणीत 'प्रज्ञायोग' का सक्षम आधार बना। प्रज्ञापुत्रों एवं सभी परिजनों के लिए परमपूज्य गुरुदेव ने प्रज्ञायोग को इस युग का श्रेष्ठतम योग बताया है। ❑

बेहोश हुए पर झंडा नहीं छोड़ा

उन दिनों आगरा जिले के जरार को क्रेंद्र बनाकर सत्याग्रहियों का संघर्ष चल रहा था। उसमें अपने साथियों के साथ श्रीराम भी थे। तिरंगा झंडा लिए श्रीराम अँगरेजों के खिलाफ नारे लगा रहे थे, तभी वहाँ अँगरेजी पुलिस पहुँची। सत्याग्रहियों की भयंकर पिटाई हुई। सभी तितर-बितर यहाँ-वहाँ हो गए पर श्रीराम पिटाई से बेहोश होकर कीचड़ में गिरने के बाद भी झंडा को मुँह में दबाकर दाँतों से पकड़े रखा। जब पुलिस ने झंडे को खींचा तो भी झंडे का एक टुकड़ा दाँत में ही फँसा रह गया। देश प्रेम में उनके ऐसे मतवालेपन को देखकर लोग

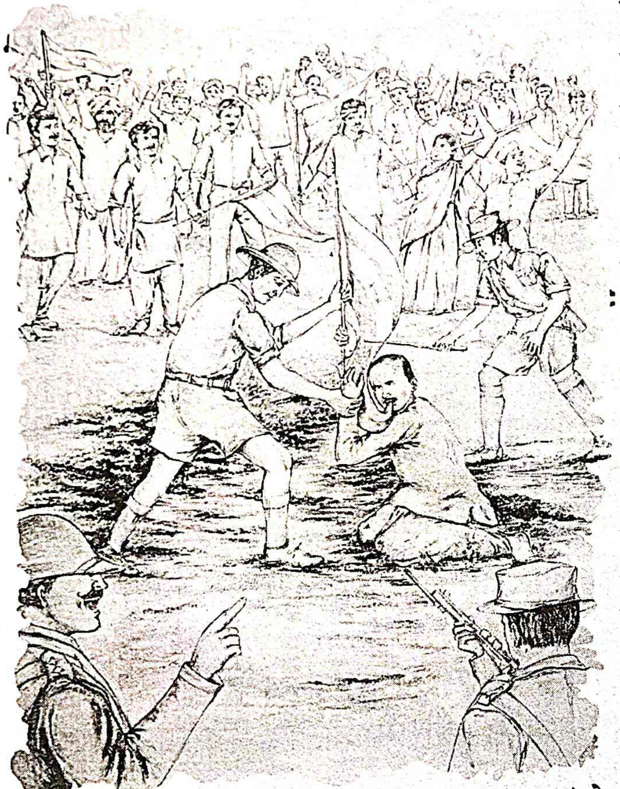

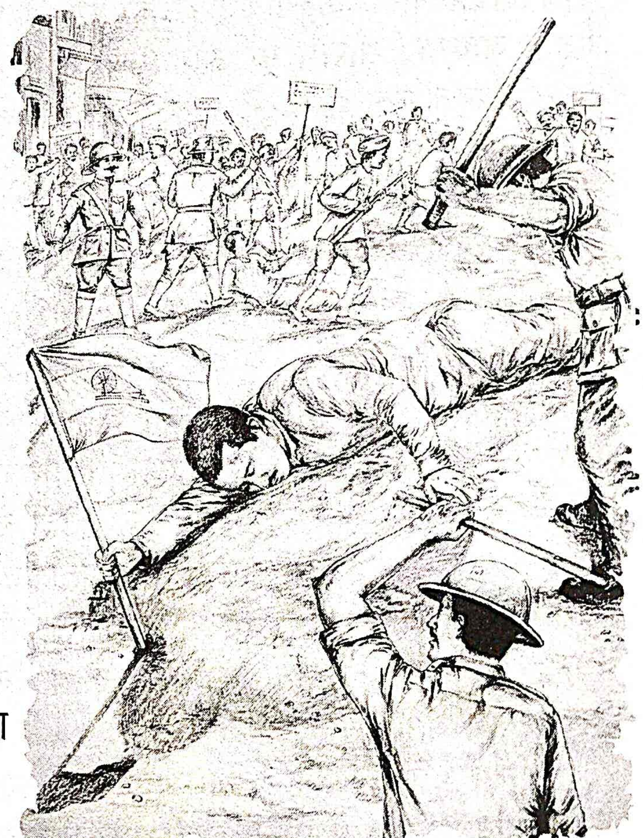

'मत्त-मत्त' कहने लग गए। श्रीराम 'मत्त' के रूप में आंदोलनकारियों एवं आम जनता के बीच उनकी ख्याति फैलने लगी।

ऐसा ही एक कठोर संघर्ष का प्रसंग नमक आंदोलन सफल बनाने के क्रम में आता है। श्रीराम अपने साथियों के साथ नमक बनाने के कार्य में जुटे थे, तब तक अँगरेजों की पुलिस आ गई। सभी को मारा-पीटा, सभी लोग वहाँ से भाग गए। जब साथियों ने देखा कि उनके बीच श्रीराम नहीं हैं तो उन्हें चिंता हुई। प्रातः उनका एक साथी नमक बनाने वाले स्थल पर गया तो वहाँ श्रीराम नमक के घोल में गिरे बेहोश पड़े थे। उसने साथियों को सूचना दी, वे आए और उन्हें अस्पताल ले गए, जहाँ कुछ दिनों के उपचार से वे पूर्णतः स्वस्थ हो पाए। ❐

जेल जीवन के कुछ प्रसंग

श्रीराम आजादी के आंदोलन की हर गतिविधि में भाग लेने लग गए थे। इसके चलते बार-बार गिरफ्तारी, जेल जाने और मिली सजा को भुगतने के प्रसंग अधिक बनने लग गए थे। 14 अप्रैल, 1930 को आगरा के बेलनगंज में सभा होनी थी। पुलिस की तरफ से मनाही थी, पर आंदोलन के मतवालों ने नहीं माना, नारों को लगाते हुए सभा-स्थल पर पहुँचकर सभा करने का प्रयास करने लगे। पुलिस ने श्रीराम को व उनके 4 अन्य साथियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। यह श्रीराम की पहली गिरफ्तारी थी, लगभग हफ्ते भर कैद में रखने के बाद सभी को छोड़ दिया गया।

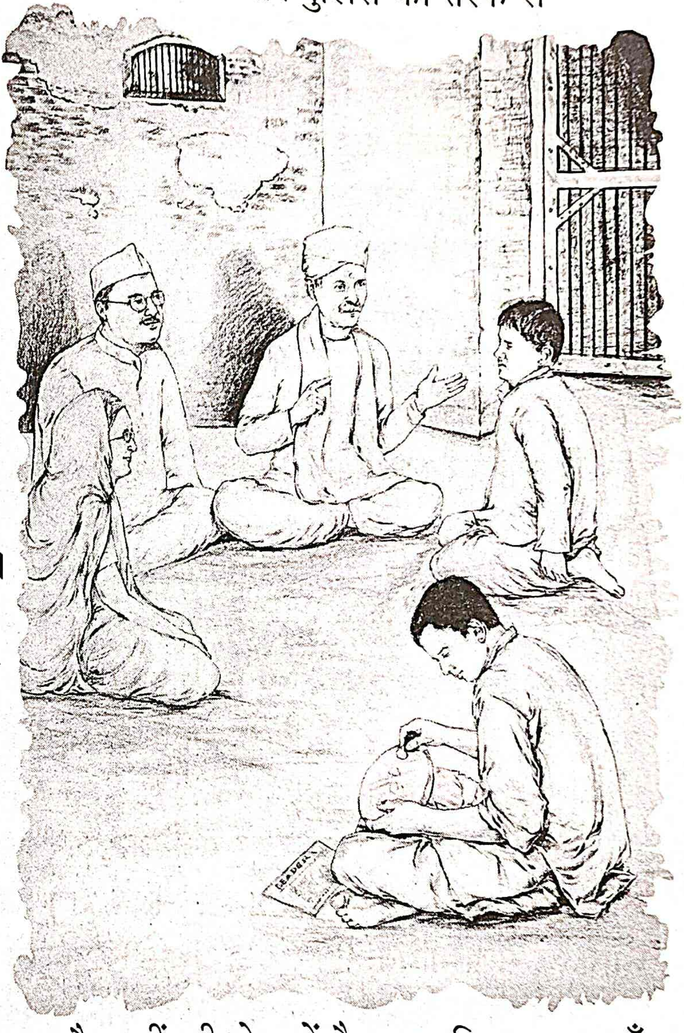

अब तक पुलिस की निगाह में वे आ चुके थे। पुलिस जगह-जगह छापा मारकर आंदोलनकारियों को पकड़ रही थी। श्रीराम की खोज में पुलिस परेशान थी; तभी अचानक 5 अप्रैल, 1932 को श्रीराम पकड़ लिए गए। अबकी बार उन्हें कठिन यातनाओं के साथ डेढ़ माह हवालात में रखा, फिर 6 माह की सजा सुनाई गई। 25 रु० जुरमाना भी उन पर लगा।

सन् 1933 में कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने के लिए जाते समय वे आसनसोल रेलवे स्टेशन पर पकड़ लिए गए और वहीं की जेल में कैद कर दिए गए। वहाँ जेल में पहले से ही कैद पं० मदन मोहन मालवीय, स्वरूपा रानी नेहरू, देवदास गांधी, रफी अहमद किदवई आदि उपस्थित थे। श्रीराम से जुड़ी लीडर अखबार और तसले पर कोयले से लिखकर अँगरेजी सीखने की घटना का संबंध इसी जेलयात्रा से है।

टूंडला जेल में वे किशोर कैदियों के बीच रखे गए, जहाँ उन्हें नन्हे कैदियों को नैतिक शिक्षा देने का कार्य मिला। जेलर ने सिखाने की उनकी प्रतिभा को देखकर कहा— "यह तो पूरे विश्व को मार्गदर्शन देगा।" प्रयागराज, लखनऊ की जेलों में भी वे रहे। ❐

स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

श्रीराम ने अपने जीवन के दो महत्त्वपूर्ण दशक (सन् 1927-47) स्वतंत्रता संग्राम में लगाए। 1927 से 1937 तक वे विशेष रूप से सक्रिय रहे और 1937 से 1947 तक अखण्ड ज्योति पत्रिका प्रकाशन आदि अन्य कार्यों को करते हुए सक्रियता बनाए रखी। स्वदेश प्रेम का भाव उनमें बचपन से ही था। आजादी की दिशा में छिटपुट प्रयत्न तो 10-12 वर्ष की उम्र से ही करने लग गए थे। देश को जब स्वतंत्रता मिली, तब उनकी उम्र 36 वर्ष थी। इन 36 वर्षों में बचपन के 10-11 वर्ष छोड़ दिए जाएँ तो लगभग 25 वर्ष (एक-चौथाई शताब्दी) उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए समर्पित किए।

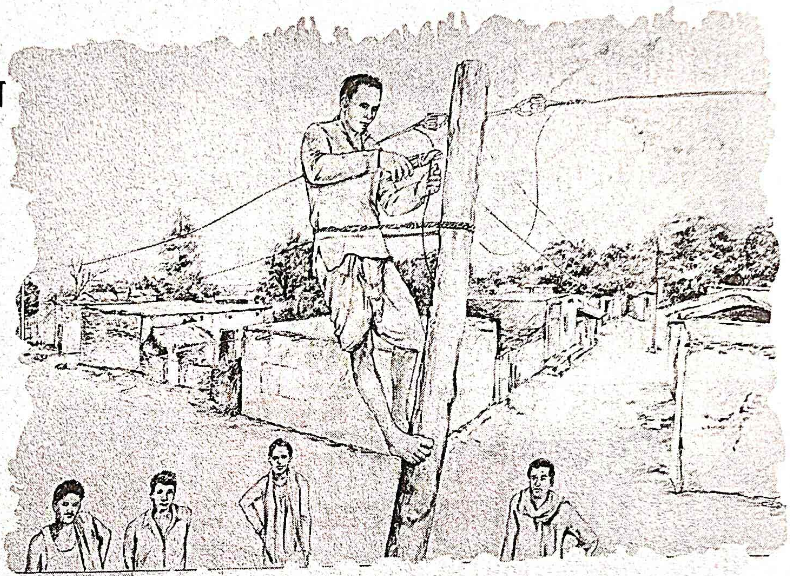

श्रीराम समर्पित थे स्वतंत्रता संग्राम के लिए, इसलिए छोटे से बड़े तक सभी कार्यों को करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। सब कुछ करते हुए भी अपने आप की स्थिति छोटे-से कार्यकर्त्ता स्वयंसेवक की ही बनाए रखते थे। कभी भी किसी भी तरह की कोई माँग नहीं, चाह नहीं। उनके परिश्रम और विनम्र स्वभाव के कारण उनसे बड़े पुराने कार्यकर्त्ता भी उनका भरपूर सम्मान करते थे।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने एक बार पालीवाल जी से कहा—हमें एक सच्चा कार्यकर्त्ता चाहिए तो उन्होंने श्रीराम को उनके सामने प्रस्तुत कर दिया। वे श्रीराम के सौम्य-प्रखर व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उन्हें प्रणाम करने लगे। श्रीराम ने उन्हें ऐसा करने से रोका।

बालकृष्ण केसकर जो कांग्रेस के आगरा संभाग के कोषाध्यक्ष थे, समस्त आय-व्यय का हिसाब-किताब रखते थे। जब उन्हें विश्वस्त स्वयंसेवक की आवश्यकता हुई तो श्रीराम ने अपने आप को उनके कार्यों में सहयोग के लिए समर्पित कर दिया।

पालीवाल जी 'सैनिक' के प्रकाशन में कम ही कार्य कर पाते थे, सारा कार्य श्रीराम सँभालते, उन्होंने अपने लेखों एवं क्रियाकलापों से स्वतंत्रता संग्राम की आग को उद्दीप्त किए रखा। कभी उसकी आँच कम नहीं होने दी। जब कोई सेनानी ठंढा पड़ने लगता तो वे उसमें प्राण भरते और दोबारा कर्मपथ पर आरूढ़ करते।

श्रीराम ने स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता के निमित्त चलाई जा रही हर गतिविधि में भाग लिया। जब विदेशी वस्त्रों और वस्तुओं के बहिष्कार की बात आई तो उन्होंने इस अभियान को भी सफल बनाने के लिए पूरा प्रयास किया।

लगानबंदी आंदोलन के लिए, लोगों में प्रेरणा भरने के लिए बहुत बड़ी सभा का आयोजन आगरा के किरावली तहसील स्थित बरौदा में होना था। सरकार ने अनुमति नहीं दी, तब श्रीराम और उनके साथियों ने वहाँ यज्ञ-प्रवचन का धार्मिक कार्यक्रम रखकर हजारों की भीड़ इकट्ठी कर ली; उन सभी तक लगानबंदी आंदोलन को सफल बनाने की प्रेरणा पहुँचाई गई।

श्रीराम ने आगरा जिले के किसानों से मिलकर लगानबंदी संबंधी आँकड़े तैयार किए। उन आँकड़ों के आधार पर अँगरेजी सरकार ने किसानों के लगान को माफ कर दिया। नशाखोरी के विरुद्ध संघर्ष, चौकीदारों, मुखियों से इस्तीफे दिलाने, कॉलेजों पर धरने, बाल भारत सभा, ग्राम-ग्राम प्रचार और समानांतर सरकारों की स्थापना तथा किरावली कांड में युवा श्रीराम की भूमिका एक तपे हुए आदर्श सैनिक एवं कुछ अंशों में सेनापति जैसी थी।

श्रीराम ने क्रांतिकारी गतिविधियों में भी डटकर भाग लिया। एक ओर सरकार आंदोलनकारियों पर गोलियाँ बरसाती थी, उन्हें आजीवन कारावास और मौत की सजाएँ दी जा रही थीं; दूसरी ओर नवयुवक भी मार-काट करने, बम फेंकने, सरकारी प्रतिष्ठान जलाने, रेल, डाक-तार आदि की व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने में लगे थे। श्रीराम ने भी क्रांतिकारियों के इन कार्यों में जहाँ-जितना बन पड़ा, समुचित रूप से योगदान दिया।

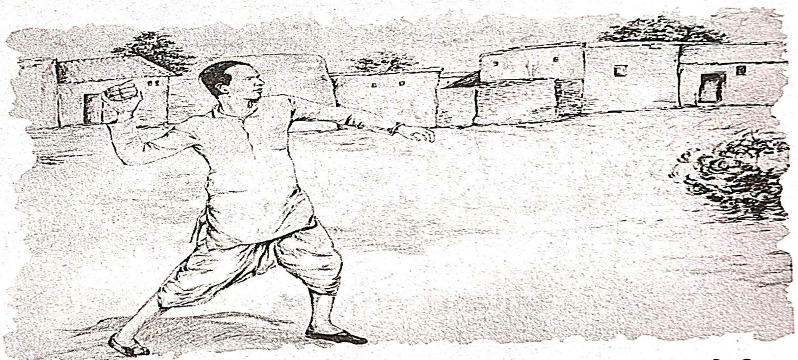

जब महर्षि अरविंद स्वतंत्रता आंदोलन की प्रत्यक्ष गतिविधियों से पीछे हटकर पांडिचेरी चले गए तो बहुत-से लोगों ने उनके इस निर्णय को पलायनवादी कहा। पर दिव्यदर्शी मनीषी जानते हैं कि महर्षि अरविंद और महर्षि रमण का स्वतंत्रता संग्राम में परोक्ष रूप से बहुत बड़ा योगदान है। इसी तरह श्रीराम (पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी) ने जो कुछ प्रत्यक्ष रूप से आजादी के संग्राम के लिए किया, उससे कम नहीं अधिक ही परोक्ष रूप से किया।

'हमारी वसीयत और विरासत' में परमपूज्य गुरुदेव लिखते हैं—''हमें राजनीति में श्रीराम मत्त के रूप में जाना जाता है। जो लोग जानते हैं, उन्हें विदित है कि आचार्य जी 'मत्त' जी आधारस्तंभ की तरह रहते हुए कठिन-से-कठिन कार्यों में सदैव अग्रिम पंक्ति में खड़े रहे हैं, किंतु जब श्रेय लेने का प्रश्न आया तो उन्होंने स्पष्टतः स्वयं को परदे के पीछे रखा।

भारत सरकार द्वारा आचार्य जी का सम्मान

पूज्य गुरुदेव ने देश के लिए जो कुछ किया, उसका कभी भी कोई प्रतिफल-प्रतिदान नहीं चाहा। देश के स्वतंत्र होने पर उनके साथियों ने सरकार में सम्मिलित होने, महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त करने का प्रेमपूर्ण आग्रह किया, जिसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया। सरकार द्वारा स्वतंत्रता की रजत जयंती वर्ष के महत्त्वपूर्ण अवसर पर सभी सम्माननीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को ताम्रपत्र भेंट कर उन्हें गौरवान्वित करने का विनम्र प्रयास किया गया।

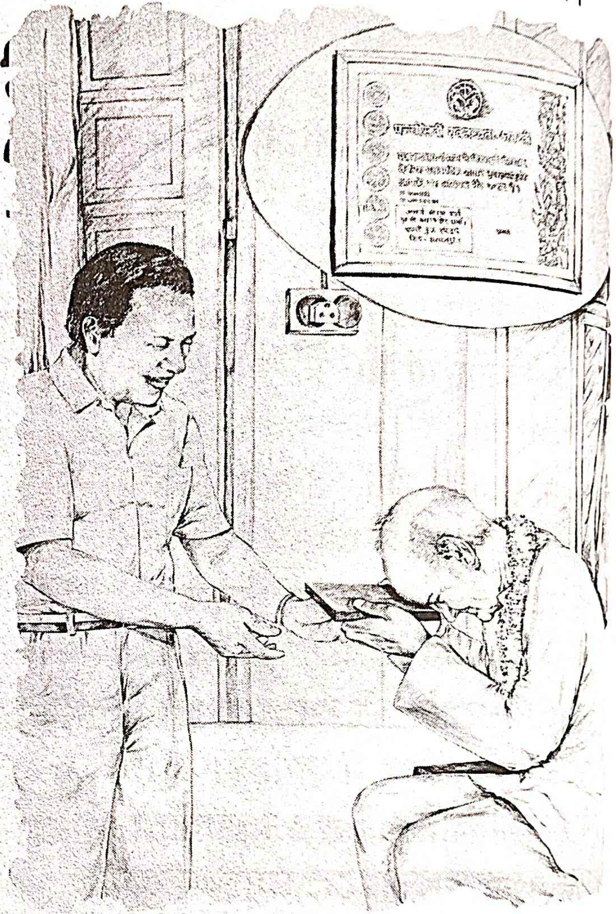

पू० गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी को भी ताम्रपत्र भेंट किया गया। उ०प्र० सरकार के सूचना विभाग से प्रकाशित पुस्तक 'स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक' (33) में श्रीराम मत्त के रूप में उनके योगदानों का वर्णन किया गया है। अखिल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संगठन के संयोजक श्रीराम सिंह जो स्वयं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे एवं श्रीराम मत्त के मित्र भी, वे कहा करते थे कि श्रीराम मत्त जी का स्वतंत्रता संग्राम में जितना बड़ा योगदान रहा है, उसका बहुत कम ही अंश लोगों को विदित हो पाया है। पूरी जानकारी न तो सरकार को हो सकी है और न किसी अन्य को, इसलिए उनको सामान्य न मानकर असामान्य, असाधारण ही माना जाना चाहिए। वे भारतमाता के सर्वोच्च समर्पित सपूतों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

1988 में सरकार की ओर से सहारनपुर जिलाधीश (श्री हरिश्चंद्र) शांतिकुंज गए और वहाँ उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का प्रमाणपत्र प्रस्तुत करते हुए पेंशन आदि की सुविधा के लिए बात की। आचार्य जी ने कहा—''न हमें कोई पेंशन आदि की सुविधा चाहिए और न कोई मान-सम्मान ही। पेंशन को सरकारी कोष में जमा कर दिया जाए। हमने जो कुछ किया अपनी मातृभूमि के लिए किया। अपने देश के लिए किया, उसका कोई मूल्य या प्रतिफल नहीं चाहिए।''

जब पू० गुरुदेव का महाप्रयाण हुआ, तब सरकार ने भी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। 4 अगस्त, 1990 को नई दिल्ली स्थित आगाखाँ आडोटोरियम में भारत सरकार के महत्त्वपूर्ण पदों पर स्थित महानुभावों ने भावपूर्ण श्रद्धा-सुमन अर्पित किए।

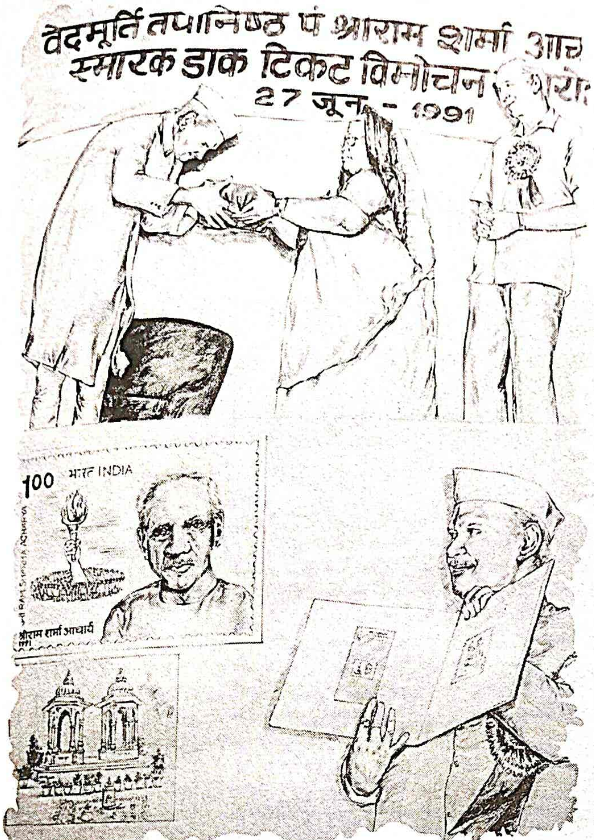

27 जून, 1991 को सरकार ने एक प्रखर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते आचार्य जी के सम्मान में एक रुपये का डाक टिकिट भी जारी किया, जिसके विमोचन कार्यक्रम में तत्कालीन सूचना प्रसारण मंत्री, सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्र एवं महामहिम उपराष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा आदि ने अपनी भावांजलि अर्पित की।

नवंबर, 1995 में भारत के माननीय प्रधान मंत्री नरसिम्हा राव जी ने पू० गुरुदेव की पावन स्मृति में 'कीतिस्तंभ' का लोकार्पण करते हुए उन्हें राष्ट्र उद्धारक महान संत बताया।

महामहिम राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन से लेकर ए०पी०जे० कलाम आदि ने राष्ट्र के लिए आचार्य जी के योगदानों की सराहना की है। महामहिम राष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा जी ने महापुरुषों के ऊपर लिखी गई अपनी प्रख्यात पुस्तक 'देशमणि' के दो अध्यायों में आचार्य जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का भावपूर्ण वर्णन किया है।

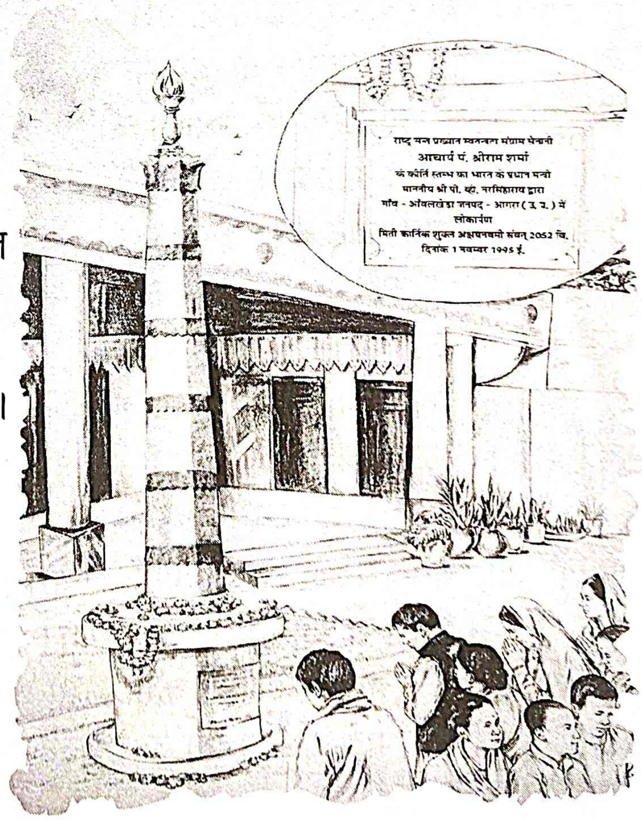

भारत सरकार ने आचार्य जी द्वारा स्थापित शांतिकुंज की स्थापना के पचास वर्ष पूरे होने पर आश्रम के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में 2021 में पाँच रु० का डाक टिकिट जारी किया।

कई प्रांतीय सरकारें श्री आचार्य जी के योगदानों को महत्त्व देती हैं और धर्म संस्कृति के महान केंद्र के रूप में उनकी स्थापनाओं का आकलन करती हैं। विभिन्न प्रांतों की सरकारों ने शिक्षा आदि कुछ प्रमुख विभागों के लोगों को शांतिकुंज में नैतिक शिक्षा के प्रशिक्षण शिविरों में समय-समय पर भेजा है। ❒

बुनताघर की स्थापना

श्रीराम चाहते थे हमारे देश का कोई भी नागरिक नंगा, भूखा न रहे। सभी के लिए आवश्यकता पूर्ति के साधन अवश्य उपलब्ध रहें। जब वे ग्रामवासियों के बीच राष्ट्रप्रेम की बात उठाते थे तो सभी उनकी बातों से सहमत हो जाते थे। कठिनाई वहाँ आ जाती थी, जब लोग कहते कि हम देश के लिए बहुत कुछ करना चाहते हैं पर हमारी आजीविका के साधन बहुत कमजोर हैं; हम ठीक से जीवनयापन के लिए समुचित साधन भी नहीं जुटा पाते। दैनिक आवश्यकता की पूर्ति ही नहीं हो पाती, हम देश के लिए कैसे कुछ करें?

श्रीराम ने इस समस्या को अच्छे से समझा और उन्होंने ग्रामवासियों के लिए स्वावलंबन के साधन जुटाने का निश्चय किया। कुटीर उद्योग के ऐसे बहुत-से साधन उपकरण जो कम मूल्य के और जिन्हें साधारण समझवालों को भी चलाना सरल-सहज हो, उनकी व्यवस्था करने में जुट गए। देखते-ही-देखते साधन जुटते चले गए और एक स्वावलंबन केंद्र बन गया, जिसे 'बुनताघर' नाम दिया गया। 'बुनताघर' की स्थापना उनके ही गाँव में नहीं हुई, और गाँवों में उनके तथा अन्यों के सहयोग से हुई।

'बुनताघर' जैसे रचनात्मक जनहित की स्थापनाओं को देखकर कृष्णदत्त पालीवाल, जगन प्रसाद रावत आदि ने श्रीराम की बहुत प्रशंसा की और अन्य कार्यकर्त्ताओं को भी इस दिशा में कार्य करने को कहा। श्रीराम नशा, दुर्व्यसन आदि नुकसानदेह प्रवृत्तियों को त्यागने के लिए ग्रामीणों से कहा करते थे, ताकि उनका पैसा और स्वास्थ्य दोनों बचें और वे स्वस्थता एवं समृद्धि की ओर बढ़ते चले जाएँ। ❒

हरिजन फंड के लिए अनुदान

श्रीराम अपने पिताश्री से भागवत कथा का बहुत अच्छा प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे, पर कथावाचन का कार्य अभी तक नहीं किया था। आगरा के एक मंदिर परिसर में उन्होंने एकमासीय कथा का कार्यक्रम 1934 में रखा।

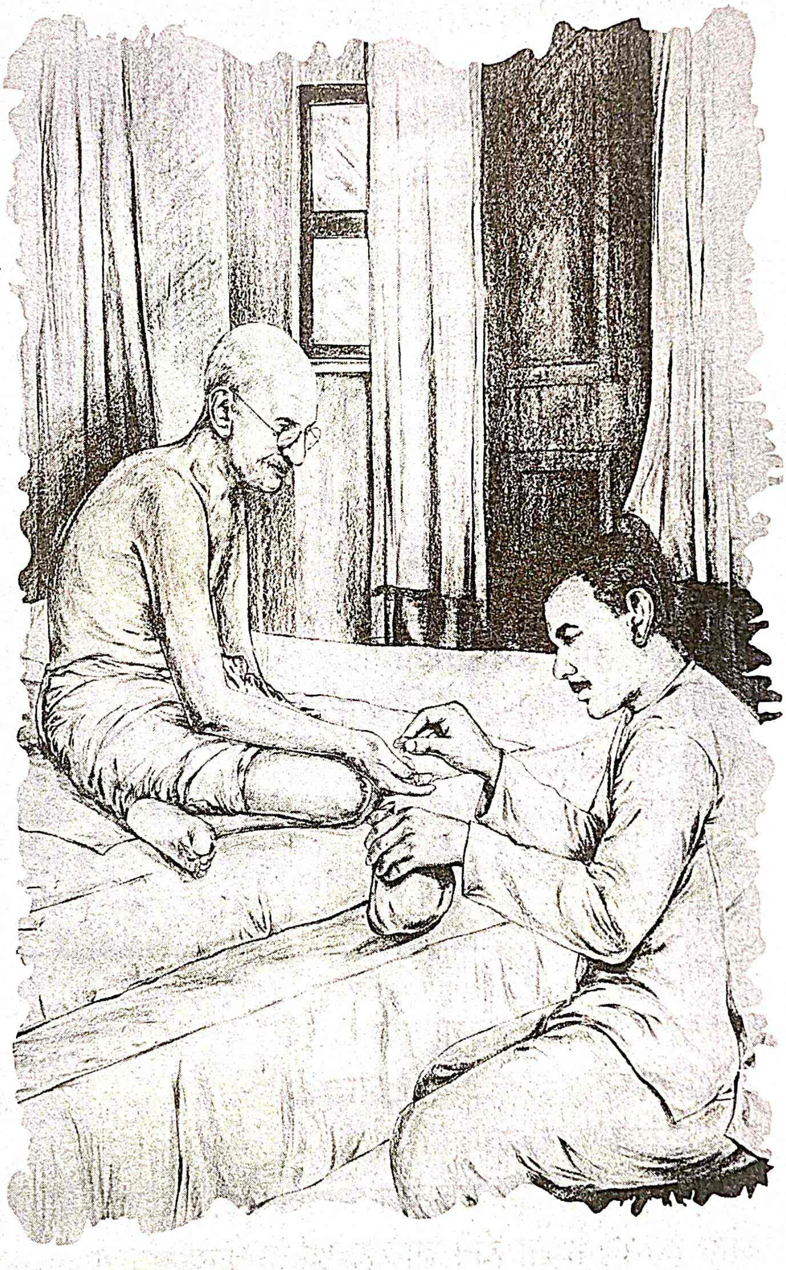

इस कथा का प्रमुख उद्देश्य यह था कि अछूत समझे जाने वाले वर्ग को सनातन धर्म की मुख्य धारा से जोड़कर हिंदू समाज के बिखराव को रोका जाए और एकता-समता को बढ़ावा दिया जाए। उन्होंने रुद्राभिषेक से लेकर कथा, हवन हर कार्य में दलितों को बराबरी का अवसर देना प्रारंभ किया।

कथा की समाप्ति पर जो दान-दक्षिणा की राशि आई, उसे गांधी जी को हरिजन कोष हेतु भेंट करने के लिए रख लिया। गांधी जी जब आगरा (1934 में) आए तो उन्होंने वह राशि भेंट की, साथ ही पिताजी के सोने के बटन एवं एक सिक्का भी सहर्ष उनके हाथों में रख दिया। गांधी जी श्रीराम के सामाजिक उत्थान एवं राष्ट्र की स्वतंत्रता हेतु किए गए कार्यों से बहुत संतुष्ट थे।

इसी कथा के कार्यक्रम में कथा सुनने बाबू गुलाब राय जी भी आते थे। उन्होंने श्रीराम की प्रखर वाणी को सुनकर उन्हें 'पंडित' जी कहकर संबोधित किया और कहा कि अब श्रीराम जी, श्रीराम मत्त और पं० श्रीराम शर्मा, दोनों ही नामों से जाने जाएँगे। ❐

अखण्ड ज्योति का शुभारंभ

अखण्ड ज्योति को इस युग की विश्व की सबसे महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक पत्रिका माना जाता है। यह आज कई भाषाओं में प्रकाशित होती है। उत्कृष्टता एवं प्रसार संख्या के हिसाब से भारत में यह सर्वोपरि धार्मिक पात्रिका है। अखण्ड ज्योति मात्र 250 प्रतियों के प्रकाशन के साथ 1937 में आरंभ हुई। आज हजारों गुना होकर यह लाखों की संख्या में अपने देश एवं विदेशों में पहुँचती है।

अखण्ड ज्योति का प्रकाश जहाँ-जहाँ पड़ता गया, वहाँ-वहाँ युगों-युगों से छाया अज्ञान का घोर अँधेरा दूर होता गया; वहाँ विवेकशीलता, विचारशीलता फैलती चली गई; वहाँ विचार क्रांति, आध्यात्मिक क्रांति भी फैलती चली गई।

पत्रिका का प्रकाशन आरंभ में कुछ अव्यवस्थित रहा, बाधित हुआ, पर जब 1940 से यह नए उत्साह, नई चेतना, सुदृढ़ मनोबल, प्रबल इच्छाशक्ति से प्रकाशित होना शुरू हुई तो आज तक निरंतर प्रकाशित होती चली आ रही है, जब इसके प्रथम अंक का विमोचन होने जा रहा था तो कार्यालय में न जाने कहाँ से एक देवी स्वरूपा देवकन्या आ गई। उसने अपना नाम गौरी बताया। गौरी के ही कर-कमलों से विमोचन हुआ। उसने अंक के ऊपर स्वस्तिक बनाया, अक्षत, पुष्प डाले और कुछ ही क्षणों में वहाँ से अदृश्य हो गई। बहुत ढूँढ़ने पर भी दोबारा वह नहीं दिखाई दी। ❒

मथुरा को कर्मस्थली बनाने का उद्देश्य

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवंतिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्ष दायिका॥

इन उपरोक्त सात पुरियों में अयोध्या एवं मथुरा दो ऐसी पुरियाँ हैं, जहाँ भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण ने अवतार लिया। भगवान श्रीकृष्ण अवतारों में अद्वितीय हैं इसीलिए उनके जन्म स्थान को भी अनुपम ही माना जाता है। मोक्ष के साथ प्रेम भक्ति प्रदान करने के कारण मथुरा को अति विशिष्ट माना गया है।

परमपूज्य गुरुदेव की मार्गदर्शक सत्ता ने भी पू० गुरुदेव की प्रथम कर्मस्थली के रूप में मथुरा का ही चुनाव किया। पू० गुरुदेव लिखते हैं—"मथुरा से ही उस विचार क्रांति अभियान ने जन्म लिया, जिसके माध्यम से करोड़ों व्यक्तियों के मन-मस्तिष्कों को उलटने का संकल्प पूरा कर दिखाने का हमारा दावा आज सत्य होता दिखाई देता है।"

मथुरा को अपनी आरंभिक कर्मस्थली बनाने के पीछे गुरुदेव का उद्देश्य यही था कि भगवान श्रीकृष्ण ने जिस भूमि से असुरता के निवारण का अभियान चलाया; भगवान श्रीकृष्ण के आदर्शों से प्रेरणा लेकर उसी भूमि से अनास्था के राक्षस की समाप्ति के लिए ज्ञानयज्ञ आंदोलन को चलाया जाए और पूरे विश्व में सतयुगी व्यवस्था की स्थापना को साकार किया जाए। भगवान श्रीकृष्ण मथुरा छोड़कर द्वारिका चले गए। पू. गुरुदेव भी मथुरा 1971 में छोड़ने के बाद फिर मथुरा वापस नहीं आए।

ऋषियुग्म द्वारा मथुरा में किए गए महत्त्वपूर्ण कार्य

- अखण्ड ज्योति संस्थान की स्थापना (1940)
- सत्य, प्रेम, न्याय पर आधारित सतयुग आंदोलन (1942)
- 24 लाख वाले 12 पुरश्चरणों को मथुरा में संपन्न करना (1940-52)
- अखण्ड ज्योति प्रेस की स्थापना (1947)
- 'गायत्री महाविज्ञान' का प्रकाशन (1951)
- गायत्री तपोभूमि के लिए जमीन लेना (1952)
- गायत्री तपोभूमि में 2400 तीर्थों का जल, रज एवं 2400 करोड़ हस्तलिखित गायत्री मंत्र की स्थापना (1953)
- 700 वर्ष से अधिक पुरानी हिमालय के सिद्ध धूनी की अखण्ड अग्नि
- प्रेरणादायी जय घोष एवं नारे 1953 की स्थापना (1953)
- गायत्री तपोभूमि निर्माण, गायत्री माता की प्राण-प्रतिष्ठा (1953)
- पूरे देश में गायत्री एवं यज्ञ का प्रचार (1953 से)
- प्रथम प्रशिक्षण शिविर (माता सरस्वती शिविर) (1954)

- विष्णु, रुद्र, चंडी, वेद, नवग्रह सरस्वती, लक्ष्मी आदि विशेष यज्ञों का आयोजन (1955)
- नरमेध यज्ञ (1956)
- अखिल भारतीय गायत्री परिवार प्रथम सम्मेलन (1957)
- सहस्त्र कुंडीय गायत्री महायज्ञ (1958)
- विभिन्न प्रकार के शिविरों का संचालन (1959)
- वेद, उपनिषद्, दर्शन, पुराण आदि आर्ष साहित्य का सरल सुंदर भाष्य (1961-62)
- युग निर्माण सत्संकल्प की घोषणा (1962)
- शत सूत्रीय युग निर्माण योजना का शुभारंभ (1963)
- पू. गुरुदेव ने पैतृक संपत्ति एवं निजी संगृहीत धन से जन्मभूमि आँवलखेड़ा आगरा में अपनी माताजी के नाम श्री दानकुँवरि इन्टर कॉलेज की स्थापना (1963)
- 'युग निर्माण योजना' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ (1964)
- 'लाइट आफ एशिया' की उपाधि (1964)
- भारत पाक-युद्ध में देश की सफलता के लिए प्रचंड आध्यात्मिक पुरुषार्थ (1965)
- गोरक्षा हेतु पुरश्चरण गायत्री परिवार द्वारा (1966)
- युग निर्माण विद्यालय (1967)
- अध्यात्मविज्ञान के समन्वय पर देश के 200 प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों से परामर्श उनके निष्कर्षों, अनुभवों का संकलन (1968)
- देश के पाँच स्थानों पोरबंदर, बहराइच, महासमुंद, जमशेदपुर टाटा नगर, भीलवाड़ा में सहस्त्रकुंडीय यज्ञों का आयोजन (1970-71)
- युग निर्माण प्रेस की स्थापना एवं विभिन्न भाषाओं उड़िया, मराठी, गुजराती, अँगरेजी, बंगाली आदि में पत्रिकाओं तथा पुस्तकों का प्रकाशन (1970-71)
- मथुरा निवास की अवधि में ही हजार से अधिक पुस्तकों का लेखन
- 1971 में विशाल विदाई समारोह का आयोजन (17-20 जून)
- ऋषियुग्म द्वारा अपनी संपत्ति का गायत्री मंदिर ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा को दान।

इन सब कार्यों के अतिरिक्त दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन एवं सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन के कार्यक्रम उन्होंने चलाए।

आस्तिकता संवर्द्धन, पर्व, त्योहार, संस्कार, नैतिक शिक्षा, रामायण, भागवत और गीता के द्वारा प्रेरणादायी सत्संग देव, दक्षिणा द्वारा बुराई का त्याग, अच्छाई का ग्रहण आदि कार्यक्रम भी प्रभावशाली ढंग से चले, जो आज भी चल रहे हैं। मथुरा में ही पूं. गुरुदेव को 'आचार्य' की उपाधि काल (काशी प्रयाग के पंडितों द्वारा) वेदमूर्ति की उपाधि (विनोबा जी द्वारा) तथा उनके वेद-उपनिषद् ज्ञान को सम्मान महामहिम राष्ट्रपति राधा कृष्णन द्वारा दिया गया।

शांतिकुंज के निर्माण की पृष्ठभूमि भी मथुरा में ही बनी। मथुरा से जाकर गुरुदेव ने 1968 में माताजी के धन से माताजी के नाम जमीन खरीदी एवं 1969 में निर्माण-कार्य का शुभारंभ कराया। ❒

साहित्य-लेखन का शुभारम्भ

पू० गुरुदेव आरंभ में हिंदी और ब्रजभाषा, दोनों में साहित्य-लेखन किया करते थे। किशोरावस्था से ही लेखन आरंभ हो गया था, जो गद्य एवं पद्य, साहित्य की दोनों विधाओं में हुआ करता था। उनको बचपन से जानने वाले, उनके संपर्क-सान्निध्य में रहने वाले लोग बताया करते थे कि 1940 से पहले उनकी बीस से अधिक छोटी-बड़ी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थीं।

फसलों को उगाने, उनके रखरखाव, अधिक उपज लेने, फसली बुखार,पशुओं के रोग, अच्छे स्वास्थ्य के नियम, जड़ी-बूटियों से उपचार आदि विषयों पर 1 पैसा मूल्य की 16 पुस्तकें उन्होंने प्रकाशित कीं। जातिभेद, मृतकभोज, खरचीली शादी, पंडावाद, अंधविश्वास एवं अन्य विषयों पर भी कई पुस्तकें तीस-चालीस के दशक में उन्होंने लिखीं। कुरीतियों और मूढ़मान्यताओं पर व्यंग्यात्मक शैली में लिखी उनकी पाँच पुस्तकें बड़ी प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय हुईं। उनमें से एक पुस्तक 'बेटा की तेरहवीं' ने तो लोगों को झकझोर कर रख दिया था। अंधविश्वास और पोंगा पंथी के प्रति भयानक आक्रोश जगा दिया था।

मई 1940 में मथुरा से प्रकाशित पहली पुस्तक 'मैं क्या हूँ' जब प्रकाशित हुई तो उसमें विवेचित आत्मज्ञान, आत्मबोध का उपनिषद्परक ज्ञान जो अत्यंत सरल-सहज भाषा में वर्णित हुआ था, वह पाठकों को बहुत पसंद आया, उसके बाद से प्रतिवर्ष बहुत सारी पुस्तकें प्रकाशित होती चली गईं, जिनमें मानवमात्र के लिए गुरुदेव का प्रखर चिंतन और उत्कृष्ट मार्गदर्शन भरा हुआ है। ❐

भुतहा मकान की बदल गई स्थिति

पू० गुरुदेव ने अखण्ड ज्योति के 1940 के अंकों का प्रकाशन आगरा से किया था। बाद में वे दिसंबर 1940 में मथुरा आ गए थे। मथुरा से वे अखण्ड ज्योति का प्रकाशन करने लगे। घीयामंडी वाला मकान पहले के मकानों से काफी बड़ा था। जब वह मकान लेने की बात चल रही थी, तभी आस-पास के रहने वालों में चर्चा चलने लगी कि यह मकान भुतहा है, शायद पंडित जी को मालूम नहीं है, इसलिए ले रहे हैं। दो-एक लोगों ने गुरुदेव के प्रति हमदरदी दिखाते हुए कहा—"आप इस मकान को किराये पर मत लीजिए। यह मकान भुतहा है, इसमें भूतों का वास है, जो भी इस मकान को लेता है, वह कुछ ही माह में नुकसान सहकर, छोड़कर चला जाता है।"

पू० गुरुदेव ने उन लोगों की बात को गंभीरता से नहीं लिया, लेते भी क्यों, इसके पहले वे ऐसी स्थिति का सामना सहज रूप से कर चुके थे। बात 1937 के पहले की है, जब वे आगरा रहते थे, तब केसकर जी के साथ रहकर काम करने का अवसर आया तो वे उनके साथ उस हवेली में रहने लगे, जिसे भुतही हवेली माना जाता था।

घीयामंडी वाले मकान में कुछ अतृप्त आत्माओं की उपस्थिति का जब आभास हुआ तो उन्होंने उनके लिए कुछ स्थान निश्चित कर उनकी शांति-मुक्ति का आध्यात्मिक उपचार किया, जिससे उनका उद्धार हो गया और घीयामंडी वाले मकान से अदृश्य, अतृप्त आत्माओं का वास, सदा-सदा के लिए मिट गया; क्योंकि वे अब शांति, सद्गति-मुक्ति को प्राप्त कर चुकी थीं। ☐

माताजी द्वारा गोसेवा, पत्राचार में सहयोग

विवाह के पश्चात वंदनीया माताजी के अखण्ड ज्योति संस्थान आ जाने से संस्थान का वातावरण बिलकुल बदल गया। जो नीरसता, खालीपन की एक स्थिति-सी बन गई थी,

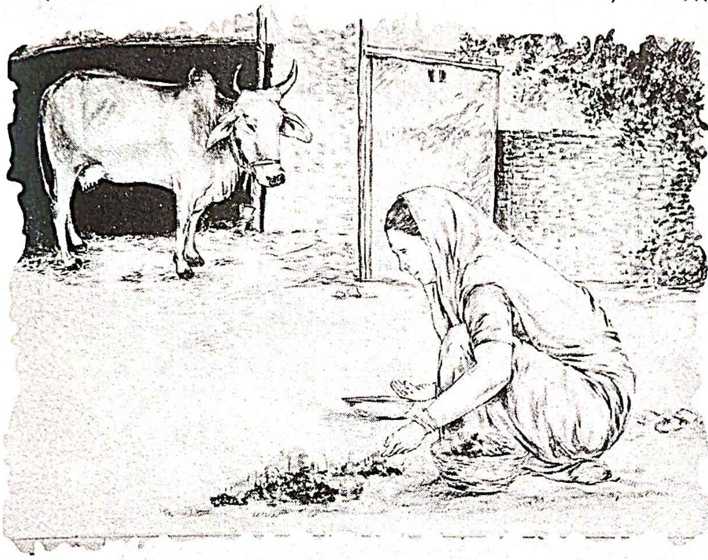

उसमें बदलाव हुआ, ममता, वात्सल्य, स्नेह की तरंगें घर के वातावरण में व्याप्त हो गईं। संस्थान में काम करने वाले सभी परिजनों को माताजी का स्नेह-दुलार मिलने लगा। माताजी गृहस्थी के हर कार्य को बड़ी कुशलता से पूरा करती थीं। कठिन परिश्रम करना, उनका सहज स्वभाव था।

गाय को जौ खिलाना उसके गोबर से जौ को निकालकर उसे अच्छी तरह धोना, सुखाना उनके हर दिन के कामों में एक प्रमुख काम था। पू० गुरुदेव उसी जौ की रोटी और छाछ का आहार लेते थे। वे पूरी तत्परता से अपने पुरश्चरणों को पूरा करने में लगे थे। पूजास्थान की दैनिक सफाई एवं व्यवस्था को माताजी ने सँभाला। अखंड दीपक की व्यवस्था को सँभालना और पूजा-व्यवस्था से जुड़े कार्यों को माताजी ही करतीं।

अखण्ड ज्योति पाठकों के पत्र किन्हीं-न-किन्हीं संदर्भों में बड़ी संख्या में आते रहते थे। माताजी उन्हें खोलकर पढ़ती थीं पूज्य गुरुदेव उसका जवाब लिखकर डाक से भेजा करते।

पू० गुरुदेव पत्रों के उत्तर देने में माताजी से परामर्श भी लेते थे। माताजी का परामर्श अति आत्मीयतापूर्ण, कृपापूर्ण होता था, जिसके चलते पूज्य गुरुदेव की शैली बदल जाती थी और पत्र पाने वाले को ज्ञान-समाधान के साथ असीम प्यार-दुलार भी मिलता अनुभव होता था। ❑

माताजी द्वारा प्रेस के कार्यों में गुरुदेव का सहयोग

वंदनीया माताजी के सेवाभाव से, समर्पण से प्रत्येक व्यक्ति को सीखना चाहिए कि अगर ये दो चीज सेवा और समर्पण आपके पास हों तो कुछ भी असंभव नहीं। माताजी हर कार्य को सेवा-समर्पण भाव से करती थीं।

परमपूज्य गुरुदेव के प्रेस का कार्य घर में चल रहा था और वंदनीया माताजी को अपने गृह-कार्यों में से जैसे ही समय मिलता तो वे गुरुदेव का सहयोग प्रेस के कार्यों में करने लगतीं। कभी पेपर की कटिंग करतीं, तो कभी किताबों की बाइंडिंग करतीं और साथ में बच्चों को पास बिठाकर पढ़ाती भी रहती थीं।

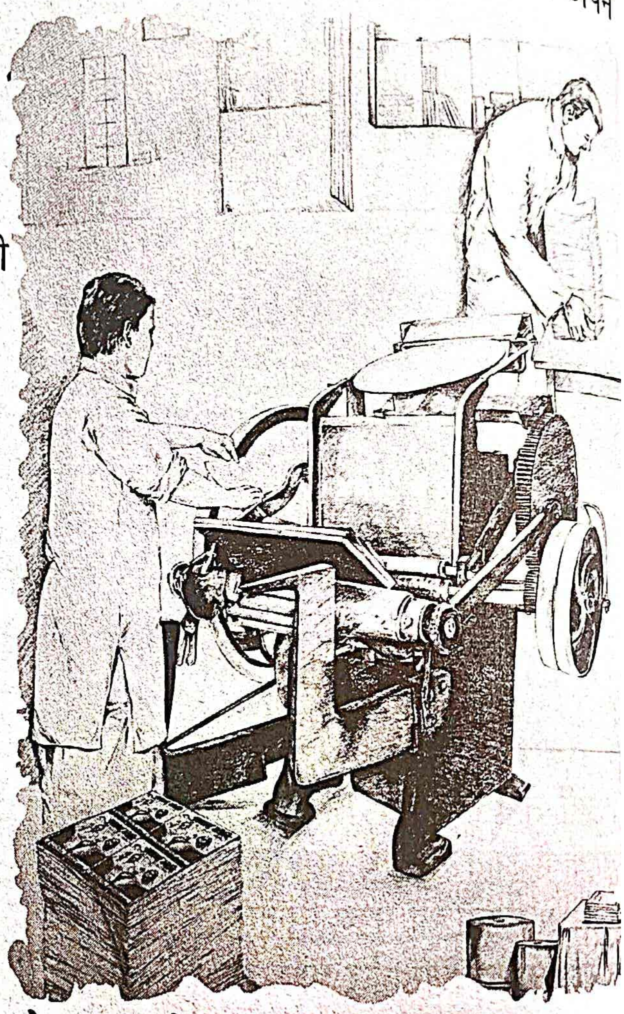

गुरुदेव कहते भी कि माताजी आप अपना भी ध्यान रखिए; ऐसे इतने सारे कार्यों को करने से तो आप बीमार हो जाएँगी, लेकिन माताजी कहतीं कि मेरे आराध्य का जब तक मैं हर कार्य में सहयोग न कर दूँ, मेरे चित्त को चैन नहीं।

वंदनीया माताजी ने अपने मायके में इस तरह का कोई कार्य नहीं किया था। लेकिन वह जिस कुशलता से कंपोजिंग करतीं तो लगता कि किसी कुशल कंपोजीटर के हाथ चल रहे हैं, जब वह प्रूफरीडिंग करतीं तो लगता कोई अनुभवी प्रूफरीडर हैं। जब वह मिसिल लगातीं तो उनके हाथ इतने फटाफट चलते कि सबको लगता जैसे जन्म से वह यही कार्य कर रही हैं।

माताजी मढ़ाई, कटिंग, किताब की सिलाई, पैकिंग, टिकट लगाना, पते लिखना, सब करतीं। गुरुदेव माताजी से कभी-कभी मजाक में कहते कि माताजी मुझे लगता है कि मेरा विवाह कोई कुशल छपाई कारीगर से हो गया है, तो वंदनीया माताजी हँसकर जवाब देतीं कि पत्नी ने अगर पति के हर कार्य के साथ अपने को नहीं ढाला तो उसको पत्नी कहलाने का अधिकार नहीं। ☐

अतिथि सत्कार

अतिथि भगवान का रूप होता है—**अतिथि देवो भव।** अतिथि सत्कार का गुण माताजी में बचपन से विद्यमान था। बचपन में लाली अपने पिताजी के पास आए लोगों के लिए भाग-भागकर पानी लातीं, तो किसी के लिए पास की दुकान से गरमागरम जलेबी लाना, तो किसी अतिथि के पैरों पर पानी डालकर धुलाना—ये सब कार्य लाली को बहुत पसंद थे और यह सिलसिला शादी के बाद समाप्त नहीं हुआ, बल्कि और बढ़ गया। माताजी भोजन बनातीं तो गुरुदेव डंडा लेकर बंदरों से रखवाली भी करते और घर आए मेहमानों को खाना भी परोसकर देते। घर में सब्जी, घी, तेल, राशन पर्याप्त मात्रा में रखतीं, ताकि मेहमानों की सेवा में कोई कमी न रह जाए।

मेहमानों के लिए खाट की व्यवस्था रखना, भले ही स्वयं वह नीचे जमीन पर सो जातीं। गरमी में मेहमानों के लिए छत पर पानी छिड़कना, उन्हें घुमाने ले जाना आदि कार्यों के साथ वंदनीया माताजी हर तरह से अतिथियों की सेवा में तत्पर रहतीं। घर आए मेहमानों के बच्चों को बाजार ले जाकर खिलौने दिलाना, उनको मिठाई आदि खिलाना, वंदनीया माताजी का स्नेह यहीं तक सीमित नहीं था, बल्कि घर आई अपने से उम्र में बड़ी परिवार की महिलाओं के पैरों में रात को वह तेल लगाने के साथ इतने अच्छे से पैर दबातीं कि उनकी सारी थकान दूर हो जाती।

हर किसी को यही लगता कि माताजी उनसे ही सबसे अधिक प्यार करती हैं। वंदनीया माताजी ने अपने स्नेह के धागों से ही पूरे गायत्री परिवार को बाँध लिया था। ❐

बिना धर्म-जाति के भेदभाव के सभी की सेवा

अखण्ड ज्योति संस्थान के कर्मचारी जब अपना भोजन नहीं लाते थे, तब वे माताजी के चौके का ही भोजन करते थे। एक अब्दुल लतीफ नाम का मुसलमान कर्मचारी अक्सर माताजी के चौके में ही भोजन करता था। माताजी उसे न केवल भोजन करातीं, बल्कि उसके जूठे बरतन भी धो देतीं। जब काम बहुत बढ़ गया, तब गुरुदेव ने माताजी के सहयोग के लिए एक महिला को रख दिया। वह महिला जब देखती कि एक मुसलमान का जूठा बरतन माताजी धोती हैं, तो उसे बहुत बुरा लगता। एक दिन उसने कहा—''माताजी मुझे आपका यह कार्य अच्छा नहीं लगता है। आप इतनी महान और सम्माननीय होकर मुसलिम कर्मचारी का बरतन धोती हैं।'' माताजी ने उत्तर दिया—''बेटा मैं जैसे सतीश (मृत्युंजय शर्मा) की माँ हूँ, वैसे ही लतीफ की भी माँ हूँ।'' जब 1947 में भारत-पाक विभाजन के बाद दंगे भड़के, तब उस समय घीयामंडी के कुछ मुसलमान परिवार अखण्ड ज्योति संस्थान में आश्रय लेने के लिए आए। माताजी एवं गुरुदेव ने उन्हें सहर्ष रखा। जब दंगे शांत हुए, तब उन्हें वापस उनके स्थान भेजा।

केवल मनुष्य नहीं, बिल्ली, कबूतर, बंदर, तोते आदि पशु-पक्षियों का भी माताजी बहुत खयाल रखतीं। उन्हें भोजन, जल आदि से तृप्त करतीं। कोई पालतू पशु-पक्षी बीमार हो जाता तो उसकी चिकित्सा भी करातीं। प्राणिमात्र के लिए उनके अंदर असीम करुणा थी, जो जीवनभर उनके व्यवहारों-क्रियाकलापों में परिलक्षित होती रही।

गायत्री तपोभूमि के लिए जेवर दान

जो बचपन में लाली थीं, वह भगवती से वंदनीया माताजी बन गईं तो उनके ऊपर सिर्फ अपने घर-परिवार की जिम्मेदारी ही नहीं थी, बल्कि पूरे समाज की भी जिम्मेदारी थी।

समाज के कल्याण के लिए ही गायत्री तपोभूमि का उन दिनों (1952-53) निर्माण हो रहा था। गायत्री तपोभूमि के निर्माण-कार्य में पू. गुरुदेव की आर्थिक परेशानी को जैसे ही वंदनीया माताजी ने जाना तो उनके मन में यही भाव आए कि मेरे तो भाग्य खुल गए, पता नहीं मेरे कितने जन्मों के पुण्य फलीभूत हुए हैं, जो मेरे जेवर इस योग्य हैं कि उन्हें गायत्री तपोभूमि के निर्माण कार्य हेतु लगा दिया जाए। उन्होंने बिना एक क्षण गँवाए अपने बक्से में रखी लाल सनील के कपड़े से बँधी दो थैली निकालीं, जिनमें एक में उनके मायके के गहने थे और एक में उनके ससुराल पक्ष के गहने थे। वह तुरंत उन दोनों थैलियों को एक थैले में रखकर गायत्री तपोभूमि में गुरुदेव के पास आईं; गुरुदेव जो उस समय निर्माण-कार्य देख रहे थे उनके चरणों में थैली को रख दिया।

पूज्य गुरुदेव ने वंदनीया माताजी द्वारा दिए गए जेवरों को तपोभूमि निर्माण-कार्य में उनकी राशि लगाने हेतु रख लिया। विश्व-वसुधा के कल्याण के लिए अपना सर्वस्व लगाने वाली वंदनीया माताजी द्वारा जेवर-दान अत्यंत सहजता से हो गया। उस समय तो किसी ने इस प्रसंग को जाना भी नहीं था, बाद में परिजनों को इसकी जानकारी हुई। ❐

बिड़ला जी का आग्रह अस्वीकार

आश्रम एवं मंदिर-निर्माण कार्य में बहुत-से लोग सहयोग दे रहे थे। सामान्य से लेकर विशेष तक सभी का अंशदान इसमें लग रहा था। पू० गुरुदेव एवं माताजी के हृदय में हर छोटे-बड़े दानदाता के प्रति समान रूप से आदर भाव था।

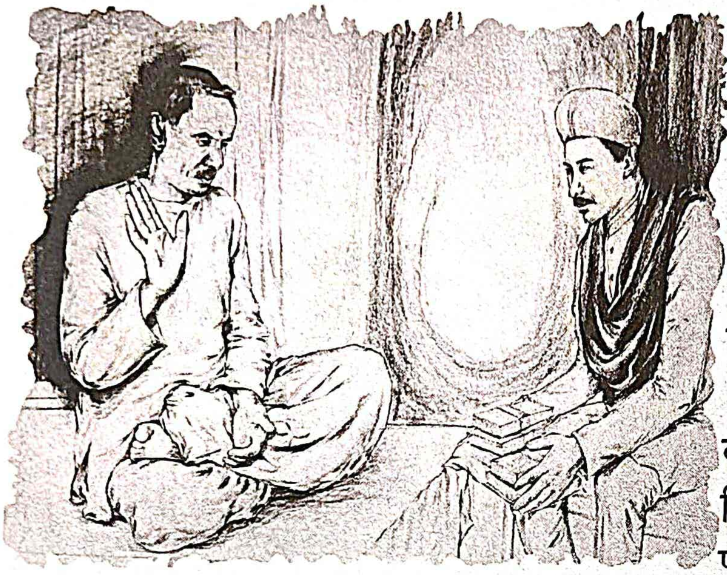

निर्माण के दिनों में ही बिड़ला जी तपोभूमि आए। पू० गुरुदेव से उन्होंने आग्रह किया कि हमारी हार्दिक इच्छा है कि इसमें जो खरच हो रहा है, वह पूरा खरचा हम अकेले ही दे दें।

गुरुदेव ने कहा—"आप एक बड़ी राशि भले दे सकते हैं, उसे निर्माण-कार्य में लगा दिया जाएगा, पर यह मंदिर तो जनता-जनार्दन के छोटे-बड़े अनुदानों से ही बनेगा, तभी उनकी आत्मीयता और प्रेम इसके प्रति होगा।" पू० गुरुदेव की बात से वे बहुत प्रभावित हुए और विनम्रता के साथ कुछ राशि मंदिर के लिए भेंट करके, अखण्ड ज्योति के सदस्य भी बने। उन्होंने गुरुदेव से निवेदन किया कि आपके जैसा निस्पृह तपस्वी, लोकसेवी ब्राह्मण हमने धरती पर नहीं देखा है। आप मेरे लिए भगवत्स्वरूप हैं। अत: जब मेरी मृत्यु हो, तब आप मेरे समीप अवश्य हों। पू० गुरुदेव ने कहा कि बिड़ला जी हमने बस ब्राह्मणत्व को धारण कर परमार्थ के लिए जीवन जीने का प्रयास किया है। रही बात आपके अंतिम समय में आपके समीप मेरी उपस्थिति की तो भगवान चाहेगा तो ऐसा अवश्य होगा।

सच में ऐसा हुआ भी 24 जून, 1967 को उन्होंने प्राण त्यागे; उस समय दिल्ली में उनके पास पूज्य गुरुदेव उपस्थित थे।

मिली आचार्य की उपाधि

परमपूज्य गुरुदेव की ख्याति निरंतर फैल रही थी। उन्हें एक ऐसे महामानव के रूप में देखा जाने लगा था जिनने देश, समाज, संस्कृति के लिए प्रचंड पुरुषार्थ किया था, जिनके द्वारा लोक-कल्याण के लिए अनुपम योगदान प्रस्तुत किए जा रहे थे। धर्म-अध्यात्म क्षेत्र के प्रतिष्ठित पुरोधा के रूप में लोग उन्हें देख रहे थे। ऐसे में न्यायप्रिय, विशाल हृदय, विद्वज्जन पू० गुरुदेव को सम्मानित करने से भला क्यों चूकते?

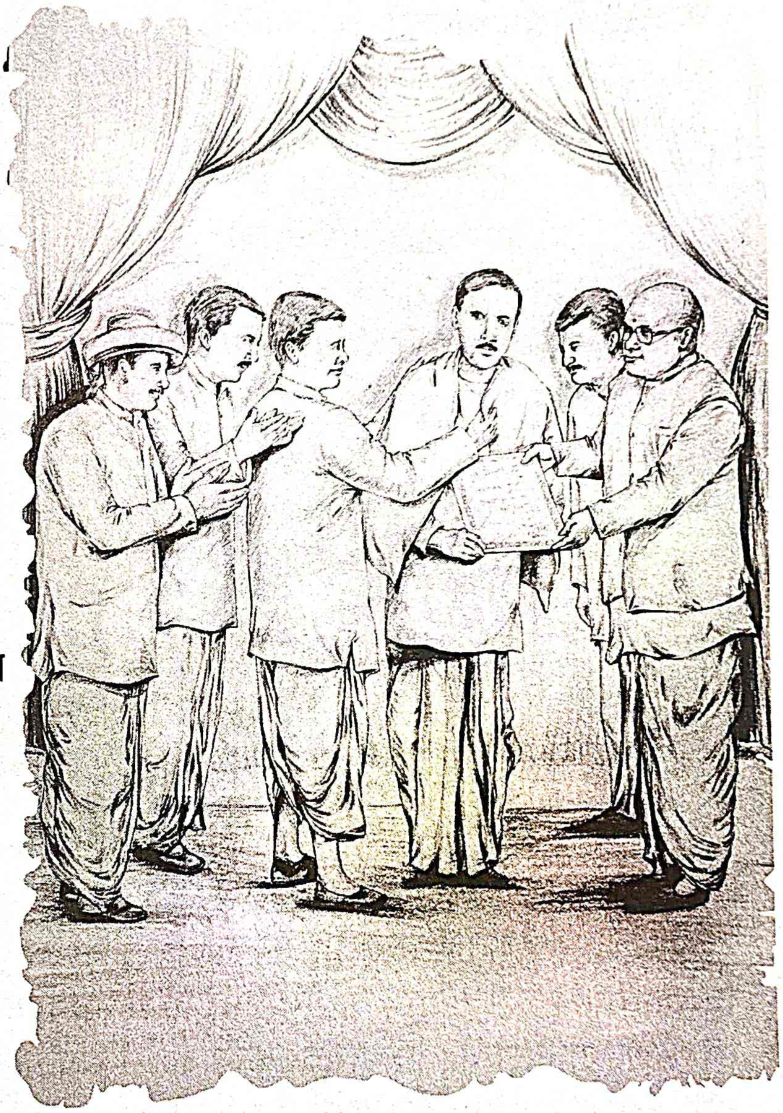

वाराणसी, प्रयाग और ऋषिकेश से आए पाँच मनीषी पंडितों द्वारा गुरुदेव का पट्टाभिषेक कर उन्हें 'आचार्य' घोषित किया गया। आए हुए विद्वानों में से एक स्वामी सच्चिदानंद जी ने कहा—

"हमारे देश में प्राचीनकाल से ही गुरुकुलों, आश्रमों का महत्त्व रहा है। इनके संचालकों को आचार्य के रूप में जाना जाता था। उनके सान्निध्य में लोग आत्मकल्याण एवं लोक-कल्याण के क्षेत्र में पूरी तत्परता से आगे बढ़ते थे। हमारे आदरणीय पंडित जी श्रीराम शर्मा जी ने भी धर्म, संस्कृति, समाज के लिए आदर्श कार्य किया है। अपने आचरण-व्यवहार से लाखों लोगों को सन्मार्ग पर चलाया है; हम सभी उन्हें 'आचार्य' के रूप में स्वीकार करते हैं।"

उनके वक्तव्य का समर्थन अन्य चारों विद्वानों—श्री शिव शंकर द्विवेदी, रामानुज उपाध्याय (काशी विद्वत् परिषद्), शैव साधु भोलेबाबा (काशी), पं० लक्ष्मी कांत (प्रयाग) के साथ उपस्थित पूरे जन-समुदाय ने किया। ❐

गायत्री तपोभूमि में गायत्री माता की प्राण-प्रतिष्ठा

गायत्री जयंती संवत् 2010 तदनुसार 22 जून, सन् 1953 को गायत्री माता की प्राण-प्रतिष्ठा का कार्यक्रम हुआ।

इस आयोजन में सम्मिलित होने के लिए विशेष याजकों-साधकों को ही आमंत्रित किया गया था, जो गायत्री-साधना में पारंगत थे। वैशाख पूर्णिमा से पूज्य गुरुदेव ने 24 दिन का जल-उपवास आरंभ किया, जो गायत्री जयंती के दिन पूरा हुआ। 2400 तीर्थों के जल-रज स्थापना में सम्मिलित करने के लिए 24 ब्रह्मचारिणी देवियों-कन्याओं जिन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य धारण का संकल्प लिया हो, उनके चरणों का जल भी मँगाया गया था। 2400 करोड़ मंत्र-लेखन की स्थापना भी हुई।

700 वर्ष से अधिक पुरानी अखण्ड यज्ञाग्नि जो हिमालय की सिद्धधूनी से लाई गई थी उसे यज्ञशाला में स्थापित कर यज्ञ संपन्न किया गया। चरित्रनिष्ठ, सुयोग्य पंडितों के कर्मकांड संचालन एवं निर्देशन में पू० गुरुदेव ने प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम देव-कन्याओं से संपन्न कराया। मुख्य कार्यक्रम वंदनीया माताजी के साथ उन्होंने स्वयं पूरा किया।

विद्वान पंडितों द्वारा जब प्राण-प्रतिष्ठा का विधिवत् कार्यक्रम संपन्न करा दिया गया, तब पू० गुरुदेव ने दीक्षा देने की घोषणा की। सर्वप्रथम वंदनीया माताजी को दीक्षा मिली। तत्पश्चात जो अन्य परिजन गुरुदीक्षा लेना चाहते थे, उन्होंने ली। गुरुदीक्षा के साथ अन्य संस्कार भी संपन्न हुए और बड़ी दिव्यता तथा भव्यता के साथ वह 4 दिवसीय (19-22 जून 1953) आयोजन संपन्न हो गया।

तपोभूमि में यज्ञ, संस्कार आदि का नियमित क्रम

वं. माताजी पू० गुरुदेव के प्रयत्नों से तपोभूमि आश्रम सतयुगकालीन आश्रमों के जैसा दिव्य स्वरूप ग्रहण कर रहा था। सुबह-शाम दैनिक आरती, यज्ञशाला की अखंड अग्नि में यज्ञ, विविध प्रकार के संस्कार नित्य संपन्न होते थे। भवनों के पास फूलों की क्यारियाँ, पेड़-पौधों की सुव्यवस्थित कतारें एवं तुलसी के नन्हे-नन्हे उपवन, पास के वृक्षों-कुंजों में विविध प्रकार के पक्षियों के कलरव, मोरों के मस्ती भरे नृत्य, सभी कुछ सहज ही देखने-सुनने को मिलते थे। उन दिनों तपोभूमि के आस-पास इक्का-दुक्का भवनों को छोड़कर बस्तियों का बिलकुल अभाव था। कोई शोरगुल नहीं, कोलाहल नहीं, सामने सड़क अवश्य थी, पर उस पर आने-जाने वाले बहुत कम ही हुआ करते थे। वाहन के नाम पर घोड़े से चलने वाला ताँगा ही उपलब्ध था, जो वृंदावन आने-जाने के लिए मुख्य साधन के रूप में था।

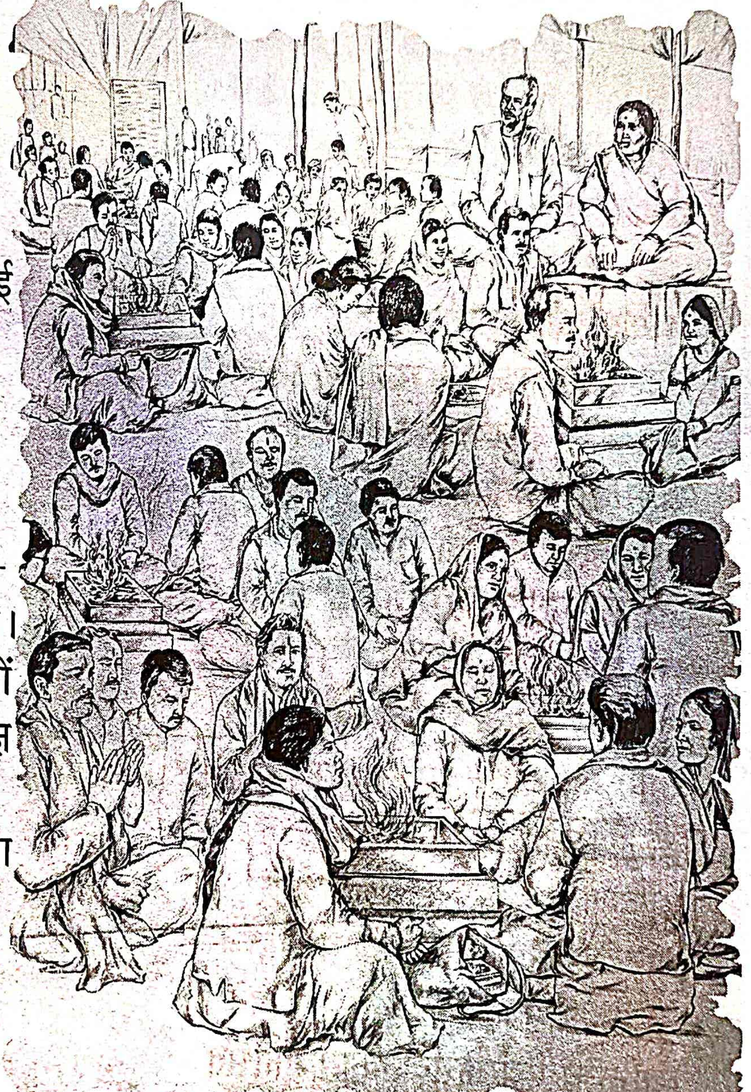

पू० गुरुदेव बहुत व्यस्तता के दिनों को छोड़कर अन्य दिनों में स्वयं ही यज्ञ और संस्कार कराते थे। प्रतिदिन गायत्री मंदिर परिसर में बैठकर वे प्रवचन दिया करते थे। वं. माताजी प्रवचन के पहले गीत दिया करती थीं। तपोभूमि में एक छोटा-सा औषधालय, प्याऊ, साहित्य बिक्री केंद्र एवं वाचनालय भी हुआ करता था। सायंकाल में कुछ समय के लिए परिजन यमुना के सुरम्य तट पर जाकर भ्रमण करते। उस समय यमुना जल शुद्ध एवं वातावरण शांत था।

परिजन साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा वाले आध्यात्मिक जीवन के चारों आयामों से अपने जीवन को ओत-प्रोत बनाकर गुरुकुल आरण्यकों में जियी जाने वाली आदर्श जिंदगी जीते थे और गुरुदेव की योजनाओं को आगे बढ़ाने में लगे रहते थे।

नरमेध यज्ञ का दिव्य आयोजन (1956)

पू० गुरुदेव ने 1956 अप्रैल में नरमेध यज्ञ करने की योजना बनाई। उनने नरमेध यज्ञ के संबंध में स्पष्टीकरण देते हुए 1956 जुलाई के अंक में 230 पृ० पर लिखा कि प्राचीनकाल में जो राष्ट्र समाज के लिए आदर्श रूप से समर्पित होते थे, उनकी त्याग, बलिदान और समर्पण-भावना से औरों को अवगत कराने, प्रेरणा देने के लिए नरमेध आयोजन होते थे। ऐसे ही आयोजन को हम करने जा रहे हैं।

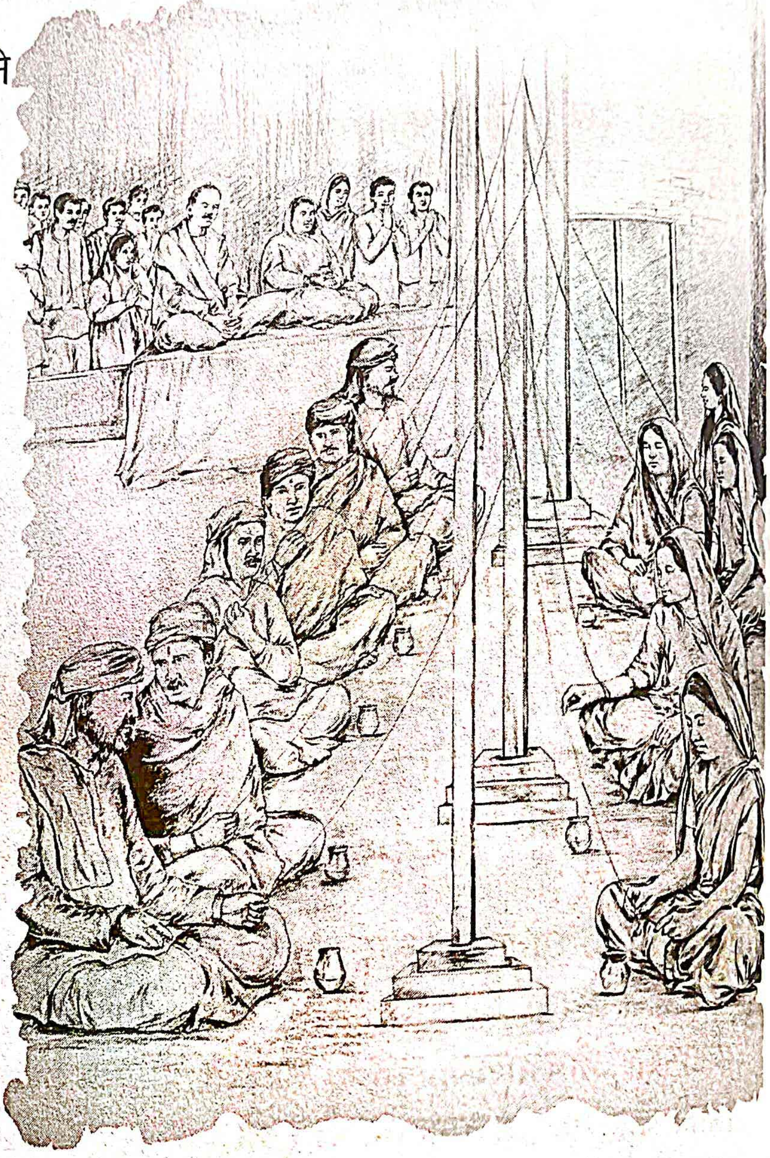

उनके द्वारा 20 से 23 अप्रैल, 1956 की अवधि में संपन्न होने वाला यह यज्ञ भी यज्ञाहुति प्रधान ही आयोजन था, पर इसमें विशेष क्रम नरमेध-प्रक्रिया के जुड़ने का था। खंभों में बँधी रस्सियों से नरमेध के लिए प्रस्तुत नर-नारियों को बाँधा गया था, जो बंधन इस बात का प्रतीक था कि अब उनका आगे का जीवन धर्म-अध्यात्म के अनुशासनों, त्याग-बलिदान के आदर्शों, सेवा-परमार्थ के उच्च मानदंडों से बँधा रहेगा। वे समाज के महान नररत्न के रूप में अपने व्यक्तित्व एवं कर्त्तव्य को विकसित करेंगे।

इस यज्ञ में लोकसभा अध्यक्ष **श्री अनंत शयनम् आयंगर**, प्रख्यात कथावाचक **पं० राधेश्याम कथावाचक, श्रीमती लक्ष्मी देवी (कन्या गुरुकुल हाथरस), श्री लक्ष्मी रमण आचार्य, डॉ० सीताराम कपूर, श्रीकृष्ण दत्त वाजपेयी** आदि गणमान्यों के साथ कई हजार की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। यज्ञ पूर्णतः सफल रहा।

गायत्री और यज्ञ की देशव्यापी महाक्रांति

1953 में गायत्री माता की प्राण-प्रतिष्ठा के साथ पूरे देश में पू० गुरुदेव के प्रवचनों, कार्यक्रमों की माँग उठने लगी। लोगों ने भारतीय संस्कृति के आधार गायत्री और यज्ञ की महत्ता, आवश्यकता को भली-भाँति समझ लिया था। वे चाहते थे कि पू० गुरुदेव उनके क्षेत्र में आएँ और अपनी अमृतवाणी से लोगों को धर्म-संस्कृति, यज्ञ और गायत्री की उत्कृष्ट-प्रेरणा देकर गायत्री परिवार से जोड़ें।

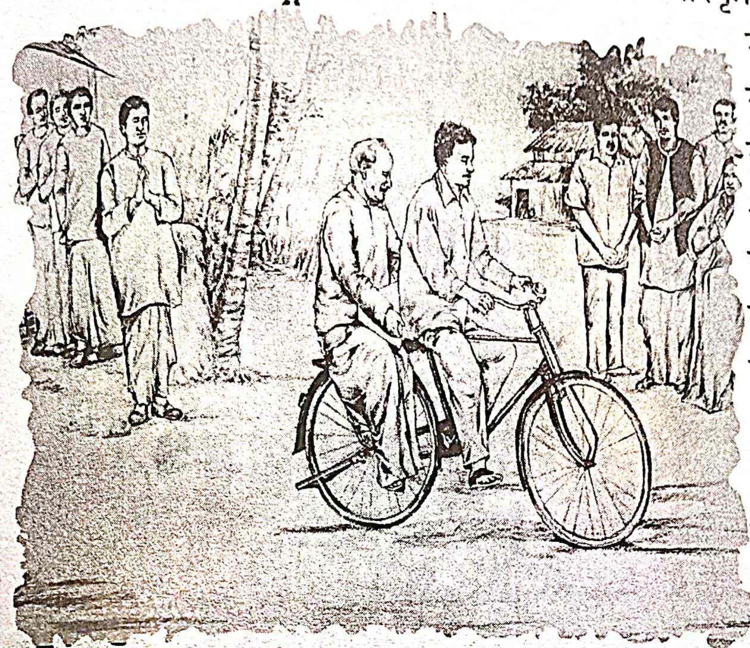

पूज्य गुरुदेव यज्ञ-आयोजनों को आधार बनाकर क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार के लिए जाने लगे। उनके साथ उस समय एक भजन गायक प्रेमानंद जी हुआ करते थे। कभी-कभी और कार्यकर्त्ता भी साथ हुआ करते थे। उन दिनों में आज के जैसे यात्रा के सुविधा-साधन बिलकुल नहीं थे।

स्टेशन या बस अड्डे से कई-कई किलोमीटर दूर जाना पड़ता था। गंतव्य तक जाने के लिए कभी साइकिल पर बैठकर जाते, कभी बैलगाड़ी आदि से पहुँचते, पर अपने प्रचार अभियान में तनिक भी शिथिलता नहीं आने देते।

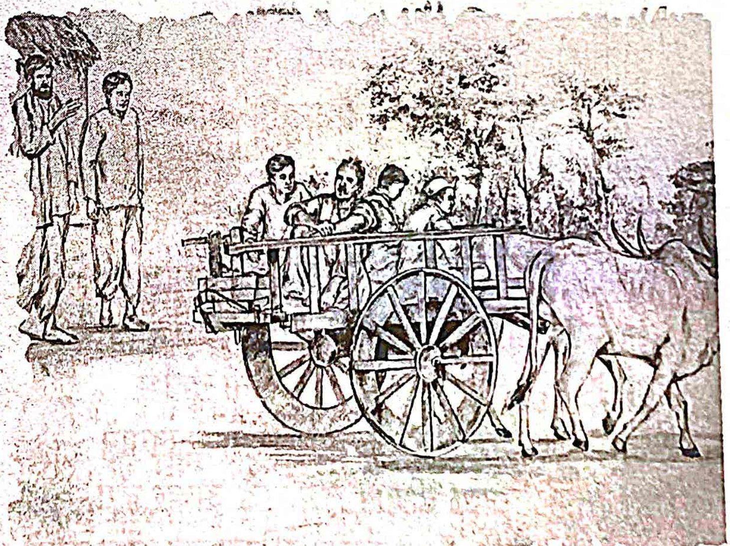

उनके परिश्रम का ही प्रतिफल था कि मात्र 4 वर्षों (1953 से 1957) में उत्तर भारत के अधिकांश स्थानों में गायत्री परिवार का संगठन बन गया। उनकी मेहनत से विकसित हुए गायत्री परिवार का 7 से 12 जून, 1957 की तिथियों में मथुरा में अखिल भारतीय स्तर का प्रथम सम्मेलन हुआ, जिसमें लाखों लोगों ने भाग लिया। ❐

सहस्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ आयोजन 1958

परमपूज्य गुरुदेव एवं माताजी ने मथुरा में 1958 में कार्तिक सुदी द्वादशी से पूर्णिमा अर्थात 23 नवंबर से 26 नवंबर के बीच विशाल सहस्त्रकुंडीय यज्ञ किया। इसके पहले 1955-56 में तपोभूमि में अनेक प्रकार के यज्ञ—विष्णु यज्ञ, लक्ष्मी यज्ञ, चंडी यज्ञ, रुद्र यज्ञ, वेद यज्ञ, सरस्वती यज्ञ, नवग्रह यज्ञ, महामृत्युंजय यज्ञ आदि लगभग डेढ़ वर्ष तक निरंतर चले थे। 1957 में विश्व-कल्याण के लिए पू० गुरुदेव ने लाखों परिजनों की सहभागिता से ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान संपन्न करवाया था। 1955-56 में हुए यज्ञों एवं ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान साधना की पूर्णाहुति स्वरूप सहस्त्रकुंडीय यज्ञ का यह आयोजन था।

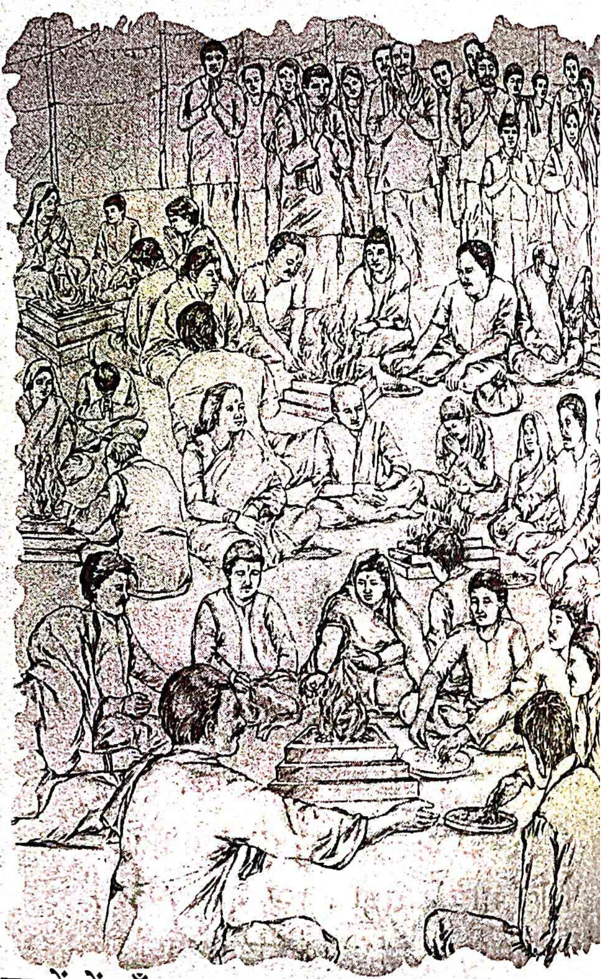

यज्ञ की चर्चा तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० नेहरू जी तक पहुँची, उन्होंने यज्ञ पर रोक लगाने का निश्चय कर लिया। उनकी सोच थी कि यज्ञ में सैकड़ों क्विंटल अनाज की आहुति होगी। उनकी इस धारणा से जब उ० प्र० के मुख्यमंत्री डॉ० संपूर्णानंद जी अवगत हुए तो उन्होंने जवाहरलाल नेहरू जी समझाया और बताया कि आचार्य जी के सारे यज्ञ औषधियों से होते हैं, जड़ी-बूटियों से होते हैं, अन्न से नहीं। उन्होंने आगे कहा—''आचार्य जी आजादी के संग्राम के एक महान योद्धा रहे हैं। उन्होंने देश-समाज के कल्याण के लिए बहुत सारा कार्य किया है। उन जैसा पवित्र चरित्र का राष्ट्र हेतु समर्पित व्यक्ति मिलना दुर्लभ है।'' तब नेहरू जी ने यज्ञ पर रोक लगाने का निर्णय टाल दिया। यज्ञ बड़े अच्छे ढंग से संपन्न हुआ। आयोजन परिसर को सात नगरों में बाँटा गया था। 8-8 कुंडों की 128 यज्ञशालाएँ (कुल 1024 कुंड) बनाई गई थीं, एक कुंड प्रधान कुंड था।

इस यज्ञ के संबंध में पू० गुरुदेव ने लिखा है—''इतना बड़ा आयोजन महाभारत के बाद आज तक नहीं हुआ।''

ऋषियुग्म का आदर्श गृहस्थ जीवन

देवी भगवती का मंगल परिणय श्रीराम के साथ बड़े ही सादगीपूर्ण, आदर्श रूप से हुआ। जिस दिन से माताजी ससुराल में आईं थीं उसी दिन से ही उनको यही अनुभव बार-बार होता कि इस जन्म के राम कई और जन्मों में भी साथ रहे हैं। ससुराल के प्रत्येक सदस्य के हृदय में जगह बनाने में गुरुदेव ने वंदनीया माता जी का खूब सहयोग किया। घर में किसको क्या पसंद है क्या नहीं, सब कुछ गुरुदेव ने माताजी को समझा दिया था। गुरुदेव की माताजी 'ताईजी' को तो वह अब अपने श्रीराम से भी ज्यादा प्यारी लगने लगी थीं ।

माताजी का हमेशा यही प्रयास रहता कि गुरुदेव को किसी कार्य में परेशानी न हो और गुरुदेव का भी यही प्रयास रहता कि अपना कार्य वह स्वयं ज्यादा-से-ज्यादा कर लें, क्योंकि माताजी के पास तो घर की भी बहुत जिम्मेदारियाँ थीं। अगर गुरुदेव सुबह माताजी के उठने से पहले उठ जाते तो वह स्वयं अपनी चाय बनाकर पी लेते और जब माताजी को यह पता चलता तो उनको बड़ा दु:ख होता ।

माताजी इधर-उधर काम में लगी होतीं तो गुरुदेव अपनी सुराही में पानी भरना, अपनी जूठी थाली स्वयं साफ कर लेना, अपने कमरे में जल्दी से झाड़ू लगा देना, अपने कपड़े स्वयं धो लेना—ये सब कार्य माताजी से छिपकर जल्दी से कर लिया करते। माताजी इस बात के लिए रोज गुरुदेव के सामने दु:खी होतीं कि ये तो मेरा कार्य है—अपने आराध्य की सेवा करने का आप मुझसे अधिकार क्यों छीन रहे हैं? तो गुरुदेव उनको समझाते कि तुम्हारा हमारे जीवन में आना हमारे लिए परम सौभाग्य है और तुमको तुम्हारा अधिकार जरूर मिलेगा। तुम चिंता मत करो। लेकिन तुम घर के सदस्यों के हर कार्य को करती हो। मेहमानों की देख-भाल घर में और जो कार्यकर्त्ता आते हैं सबके ही अतिथि-सत्कार का तुम ध्यान रखती हो। मेरा तुम्हारे इतने सारे कार्यों में थोड़ा-सा सहयोग तो बनता है।

घर आए अतिथि के बच्चे कभी-कभी शौचालय खाली न होने के कारण ऊपर छत पर शौच कर लेते थे तो माताजी और गुरुजी, दोनों मिलकर साफ करते। कभी गुरुदेव पानी डालते तो माताजी झाड़ू से साफ करतीं, तो कभी माताजी पानी डालतीं और गुरुदेव झाड़ू से साफ करते।

कई बार ऐसा होता कि घर पर अतिथियों के आने की संख्या बहुत हो जाती तो खाने के बरतनों की संख्या भी बहुत बढ़ जाती। ऐसे में परमपूज्य गुरुदेव का पूरा प्रयास यह रहता कि बरतन मँजवाने में वह माताजी का सहयोग कराएँ। गुरुदेव को जैसे ही समय मिलता, वह माताजी का घर के कार्यों में सहयोग करने के लिए उपस्थित हो जाते। माताजी मना करतीं तो गुरुदेव कहते कि माताजी बच्चे कैसे सीखेंगे, बच्चे जब हमको सहयोग करते देखेंगे, तब ही

सीखेंगे। गुरुदेव जब कार्यकर्त्ताओं की गोष्ठी लेते तो यही प्रश्न करते कि तुम घर के कार्यों में एकदूसरे का सहयोग करते हो या नहीं।

1946 के मध्य की बात होगी जिस महिला ने कभी सूती साड़ी न पहनी हो, वे गुरुदेव के उत्कृष्ट व्यक्तित्व के रंग में ऐसी रँगीं कि मोटी कन्ट्रौल की साड़ी पहनने लगीं। वंदनीया माताजी ने गुरुदेव की सादगी को ही अपना श्रृंगार, अपना गहना बना लिया था।

वंदनीया माताजी ने पहला सूत्र यह अपनाया कि अपनी इच्छाओं को अपने आराध्य से जोड़ लिया। जैसी गुरुदेव की इच्छा थी माताजी ने अपने जीवन को, अपने रहन-सहन को, उसी अनुसार ढाल लिया। यही उनके उत्कृष्ट सफल गृहस्थ जीवन का सूत्र भी रहा।

गुरुदेव ने एक आदर्श सहयोगी का कर्त्तव्य हमेशा निभाया। उनकी समाज के प्रति जो जिम्मेदारी थी, उनको उन्होंने जिस निष्ठा-समर्पण से निभाया वैसे ही उन्होंने अपने गृहस्थ जीवन में एक आदर्श कर्त्तव्यनिष्ठ, समर्पित, जीवनसाथी का दायित्व भी निभाया। माताजी कहतीं—"बेटा, हमने और गुरुजी ने इस गायत्री परिवार को अपने खून-पसीने से सींचकर खड़ा किया है।"

आदर्श जीवनसाथी के रूप में पूज्य गुरुदेव ने माताजी का साथ निभाया। उन्हें अपनी अर्द्धांगिनी के हर सुख-दुःख, कष्ट-कठिनाई का भी उतना ही ध्यान था; जितना उनको समाज सेवा, समाज निर्माण, समाज सुधार की चिंता और लगन थी।

1971 में जब वंदनीया माताजी अखण्ड ज्योति का संपादन कर रही थीं, तब जुलाई की अखण्ड ज्योति में उन्होंने लिखा—"मैं परमपूज्य गुरुदेव की धर्मपत्नी समझी जाती हूँ, पर यथार्थ यही है कि मैं उनकी सौभाग्यशाली शिष्या ही हूँ। मैंने उन्हें पतिरूप में नहीं, देवता रूप में देखा है।"

माताजी जब किसी कार्य को करते-करते थक जातीं तो बैठ जातीं, तब गुरुदेव तुरंत उठकर उनके लिए पानी ले आते। वंदनीया माताजी शांतिकुंज में जब शाम के समय ऊपर अपने कक्ष में जातीं तो गुरुदेव दरवाज़ा खोलकर उनको सीढ़ियों के पास खड़े मिलते और हाथ का सहारा देकर उनको ऊपर ले आते।

गुरुदेव ने अपनी अर्द्धांगिनी का अपने शरीर की तरह ध्यान रखा और हर कार्य में उनको स्थान देकर, उनकी सलाह लेकर सदैव उनका सम्मान बढ़ाया। परमपूज्य गुरुदेव ने हमेशा माताजी को यह अनुभव कराया कि वे गुरुदेव के लिए कितनी महत्त्वपूर्ण हैं।

परमपूज्य गुरुदेव का गृहस्थ जीवन एक उत्कृष्ट आदर्श गृहस्थ जीवन था। □

चारों ओर जब आग लगी हो और उसे बुझाने की अपेक्षा अपनी चैन की वंशी बजाने में जो संलग्न हो ऐसे प्रतिभावान, की सामर्थ्यवान की विकृत गतिविधियों पर विश्व मानव की घृणा ही बरसेगी। भावी पीढ़ियाँ उसे फटकारेंगी।

—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

माताजी की पाककला में दक्षता

जिस भोजन बनाने की शुरुआत लाली ने बचपन से कर्त्तव्य-निर्वाह के रूप में आरंभ की थी, अब विवाह के पश्चात उसने एक रुचि का रूप ले लिया था। इसमें उनका स्नेह भी छिपा हुआ था और था सबको खुश, प्रसन्न, संतुष्ट रखने का भाव भी। वंदनीया माताजी में अन्नपूर्णा का निवास था।

उनके बनाए हर भोजन में मसालों की मात्रा एकदम संतुलित होती थी। किस पकवान में, किस सब्जी में, मसाले तेज रखने हैं या किसमें कम। उनको इसमें पूर्ण दक्षता प्राप्त थी। भोजन 10 लोगों का हो या 100 लोगों का, उनकी पाककला की निपुणता भोजन के एक-एक कौर (ग्रास) में झलकती थी।

वंदनीया माताजी की भोजन बनाने की तत्परता और उस भोजन का स्वाद कभी कम न होता, चाहे आधी रात को गुरुजी से मिलने कोई अनजान व्यक्ति पहली बार ही क्यों न आया हो, उसको भी वे भोजन उसी समय चूल्हा जलाकर तुरंत कराया करती थीं। सेवाभाव से परिपूर्ण वंदनीया माताजी के जीवन में कई क्षण ऐसे भी आए, जब वह अपने बच्चों को उनका मनपसंद भोजन भी कराने में असमर्थ थीं। तब वह बच्चों को आटे में पानी, शक्कर मिलाकर उनको हलवा बताकर खिलातीं तो बच्चों को भी उसमें हलवे जैसा ही स्वाद आता था।

वंदनीया माताजी का भोजन बनाना भी भक्ति और साधना का ही एक अंग था। गीता कहती है—**योगः कर्मसु कौशलम्**। माताजी की रसोई इसका जीवंत उदाहरण थी। त्वरा थी, पर त्रुटि नहीं। जल्दी थी, पर गलती नहीं। ❐

संसार के सभी ईश्वर भक्तों, धर्मपरायणों, महामानवों और सत्पुरुषों को अपनी मनोभूमि के वास्तविकता की अग्नि परीक्षा देनी पड़ी है। जो ईंट भट्ठी में पकने से पहले इनकार कर दे, वह पानी की बूँद पड़ते ही गल जाने वाली निकम्मी चीज बनी रहेगी।

मजबूती प्राप्त करने के लिए तो आग को अपनाना ही होगा। कच्चा लोहा भट्ठियों में ही तो फौलाद बनता है। अनगढ़ ओछे और घिनौने, स्वार्थी और तृष्णा वासना ग्रसित मनुष्य को आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर होने के लिए त्याग और बलिदान का मार्ग सदा ही अपनाना पड़ा है। इसका और कोई विकल्प न तो था और न आगे हो सकता है।

—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

वाक्कला में निपुण वंदनीया माताजी

वंदनीया माताजी की वाणी में सरस्वती का निवास ऐसा कि जो कोई एक बार उनसे 'लल्लू' या 'लाली' सुन ले तो जीवन समर्पित करने को सहर्ष तैयार हो जाए।

हजारों विवाह माताजी ने बिना दहेज के और वो भी कुछ ही समय में करा दिए। वंदनीया माताजी से कोई मिलने आता और उनको पता चलता कि इनका लड़का भी साथ आया है और वह नौकरी भी सही कर रहा है, वेतन भी अच्छा है, परिवार भी समर्पित है तो तुरंत उनको इतने प्यार और अपनेपन से समझातीं कि लोग सिर्फ माताजी के दर्शन करने आए होते, पर वे अपने लड़के का आदर्श विवाह कराकर बहू लेकर साथ जाते। वं. माताजी जब विवाह योग्य लड़के-लड़कियों को आदर्श विवाह के लिए प्रेरित करतीं तो वे उनकी बात मानकर दांपत्य जीवन अंगीकार कर लेते।

वंदनीया माताजी की वाणी में इतना स्नेह और अपनापन था कि जो देवकन्याएँ सालभर के लिए आईं, वे सालों तक माताजी के पास ही रहीं, उनको माताजी की स्नेहभरी बातों के कारण न घर याद आता और न घरवाले।

कितनी बार ऐसा होता कि परिजन गुरुदेव के पास से किसी बात पर डाँट खाकर आते तो माताजी अपनी स्नेहयुक्त वाणी से उन्हें ऐसे समझातीं, ऐसे दुलारतीं कि परिजनों का डर, दुःख तुरंत खत्म हो जाता और माताजी कहतीं—"लाली, जा छोरा के लिए लड्डू लेकर आ, ये गुरुजी से डाँट खाकर आया है तो इसको लड्डू 2 की जगह 4 मिलेंगे।" और वह तुरंत उन कार्यकर्त्ताओं को हँसाकर भेज देतीं, जो कुछ समय पहले रोकर आए थे।

वंदनीया माताजी के प्रवचनों को सुनकर प्रत्येक व्यक्ति का अनुभव एक-सा ही था। उनके क्रांतिकारी विचार, उनके दहेज विरोधी विचार, उनके नारी उत्थान के विचार लोग सुनते तो उसी तरह अपने जीवन की दशा और दिशा बदलने को सहर्ष तैयार हो जाते।

माताजी के क्रांतिकारी विचारों को उनकी वाणी की ऐसी-ऐसी धार मिलती कि वह व्यक्तियों की बुराइयों पर कठोर कुठाराघात करतीं और सामान्य-सा व्यक्ति असामान्य व्यक्तित्व का धनी बनता चला जाता।

छोटे-बड़े सभी के लिए उनके हृदय में प्यार और स्नेह था। उनके हृदय का सद्भाव जब शब्द बनकर प्रकट होता था तो उन शब्दों के अमृत रस को पाकर परिजन परम तृप्ति और शांति का अनुभव करते। माताजी की अमृतमयी वाणी ने लाखों लोगों को कुमार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर चला दिया। □

शुद्ध व्यवहार और सदाचार समाज की सुदृढ़ स्थिति के दो आधार स्तंभ हैं। इनसे व्यक्ति का भाग्य और समाज का भविष्य विकसित होता है।

माताजी में समाहित थी उत्कृष्ट गायन-वादन कला

माताजी विवाह के पश्चात अपने परिवारीजनों के साथ ढोलक बजातीं तो सब उस ढोलक की तान पर सहर्ष नाचने को तैयार हो जाते। कोई घर में दूर से सुनता तो पूछता कि इतनी अच्छी ढोलक बजा कौन रहा है? जब माताजी हारमोनियम बजातीं तो लोग गुनगुनाने पर मजबूर हो जाते। उनको लगता कि इसके साथ तो हम कितने अच्छे-से गीत गा सकेंगे।

वंदनीया माताजी को गीत गाने का, ढोलक, हारमोनियम बजाने का शौक बचपन से ही था। बचपन में वह अपने पिताजी को हारमोनियम पर गाना गाकर सुनातीं तो कभी अपनी सहेलियों से कहतीं कि मैं ढोलक बजाती हूँ, तुम भजनों पर नृत्य करो, कभी स्वयं भजन गातीं तो सब उनके पिताजी से कहते कि लाली का गला कितना सुरीला है। ऐसा लगता है कि तुम्हारी बेटी में सरस्वती, लक्ष्मी, सावित्री, अन्नपूर्णा, दुर्गा सभी की छवि है।

माताजी जब देवकन्याओं की संगीत की कक्षा लेतीं तो वे कन्याएँ बार-बार माताजी से यही कहतीं कि माताजी ऐसी ढोलक हमको भी बजानी है, कब तक आ जाएगी? माताजी प्यार से थपकी देकर कहतीं—"लाली जब तुम संगीत को साधना की तरह समझोगी।"

वंदनीया माताजी के प्रेरणा और स्नेहभरे गीतों की मधुर ध्वनि परिजनों के स्मृति-पटल पर ही अंकित नहीं है, बल्कि प्रज्ञापुत्रों के नए दिन की शुरुआत होती थी—माताजी के गाए हुए प्रार्थना, आरती और गीतों से ही। दिन की शुरुआत आज भी ऐसी ही होती है। वं. माताजी ने बहुत सारे गीत, बड़ी भावना और तन्मयता से गाए हैं, जिनमें लगभग 130 गीतों की आडियो वर्तमान में उपलब्ध है। गायत्री शक्तिपीठों-मंदिरों में सुबह-शाम की आरती, प्रार्थनाएँ, चालीसा आदि वं. माताजी के स्वर में ही होते हैं। ❑

मैंने इतना दिया, पर इसके बदले मुझे क्या मिलेगा? ऐसे विचार करने में उतावली न कीजिए। बादलों को देखिए, वे सारे संसार पर जल बरसाते फिरते हैं। किसने उनके एहसान का बदला चुका दिया? हम पृथ्वी की छाती पर जन्म भर लदे रहते हैं और उसे मल-मूत्र से गंदी करते रहते हैं, किसने उसका मुआवजा अदा किया है? परोपकार स्वयं ही बदला है। त्याग करना आज आपको भले ही घाटे का सौदा प्रतीत होता हो, पर जब आप उपकार करने का अनुभव स्वयं करेंगे तो देखेंगे कि ईश्वरीय वरदान की तरह यह दिव्य गुण स्वयं ही कितना शांतिदायक है।

—माता भगवती देवी शर्मा

वंदनीया माताजी द्वारा गाए गीत

1. आदमी आराध्य सेवा...
2. अगर चाहते हो निज रक्षा...
3. आज मेरा मन तुम्हारे गीत...
4. आओ आगत आओ कब से...
5. आप हिमनद हैं हमें...
6. आप निज करुणा उड़ेले...
7. अक्षय कोष मिला जब...
8. अंधकारमय पथ पर चमको...
9. अंतर के निर्मल प्यार हो...
10. अपने भक्तों में हमको बिठा...
11. अपने लिए जिऊँ तो मेरा...
12. बंदे तू औरों के काम नहीं...
13. बंधनों से प्रीत कैसी...
14. बसाएँ एक नया संसार...
15. बाट जोह प्रभु नयन थके...
16. भगवान बसो इस मन में...
17. भगवान मेरी नय्या उस पार..
18. भले ही कहीं राह दिखती...
19. भटक रहा है हंसा भूखा...
20. बिना दर्शन किए तेरे...
21. ब्रह्मकमल से खिलकर...
22. चैन आता नहीं प्यार बाँटे...
23. चलो बदल दो राह समय...
24. चल रहा अंतःकरण में...
25. चर-अचर सभी जड़-चेतन में..
26. दरद तुम्हारा, प्यार तुम्हारा...
27. दीपक-सा तिल-तिल जलना..
28. दीप हूँ जलता रहूँगा मैं... ।।
29. देख खुला है द्वार पुजारी...
30. दें प्रभो वरदान ऐसा...
31. दिव्य अनुदान देने खड़े देवता
32. गँवा दिया हमने जीवन में.....
33. दुःखी चरण लंबी मंजिल से..
34. गायत्री माँ की उपासना...
35. घट-घट में श्रीराम रमे हैं...
36. है उदास कुछ अंतरतम यह..
37. है यह बात सखे स्थिर...
38. हम अपना सब कुछ सौंप...
39. हरिओम् तत् सत्...
40. हर विपदा में सृजनशिल्पियों
41. हे देव तुम्हारी पीड़ा में...
42. हे हंसवाहिनी जगदंबे...
43. हे नाथ याद तेरी हमको...
44. हे प्रभु मानव हृदय को...
45. हे प्रभु ध्यान में तुम समाये...
46. हो गए बहुत सुराख नाव में..
47. हो ईश्वर के अंश आत्मविश्वास
48. हृदय से लगा लो या आँचल
49. इनसान मेरा देवता....
50. इस अखिल ब्रह्मांड में....
51. जब-जब सौ-सौ बाँह पसारे...
52. जब स्वयं को विकल तुम...
53. जब तक है विश्वास लगन...
54. जल रहे हैं दीप हजारों...
55. जीवन का अनुदान बिंदु ने...
56. जीवन का आधार तुम्हीं हो...
57. झंझना दे चेतना के जड़...
58. झीनी-झीनी बनी चदरिया...
59. जीवन बन तू फूल समान...
60. जीवंत है जगत् में कण-कण...
61. जो हिमालय-सा उठे जीवन...
62. ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक...
63. कैसे दें हम तुम्हें विदाई...
64. कण-कण में मुस्काता है...
65. कण-कण में समाये हो...
66. किसी के काम जो आए...

67. कोठरी मन की सदा रख...
68. कौन, किसका है यहाँ पर...
69. क्यों रुके हो साधना के...
70. महामिलन की आशा मुझको
71. मैं ढूँढ़ता तुझे था जब कुंज...
72. मैंने तेरी गीता गाई...
73. मन मैला ही रहा अगर तो...
74. मत अंगार बिखेरो वसुधा...
75. मेरा परिचय क्या पूछ रहे हो...
76. मेरी अंतर आत्मा का यह...
77. मुझे अपनी शरण में ले लो...
78. मुझे चाहिए और कुछ भी...
79. न चाहें वरदान प्रभु जी...
80. न हो साधक तू लाचार...
81. न मैं धाम धरती न धन...
82. न मैं स्वर्ग मुक्ति न यश...
83. नयन-नयन में, हृदय-हृदय...
84. नए देश को मैं नई राह...
85. निंदिया वही घर जायो...
86. ओ ईश्वर के अंश आपकी...
87. ॐ भूर्भुवः स्वः (गायत्री मंत्र)
88. पर पीड़ा से द्रवित हो उठा...
89. पावन प्रीति लुटाते चले...
90. प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ...
91. प्रवासी रुक नहीं सकते...
92. प्रेमी भर तू प्रेम में ईश्वर के...
93. राही जाना पथ मत भूल...
94. राम का नाम लेकर न जो...
95. राम नाम का अर्थ यही है...
96. रात भर भोगा अँधेरा...
97. सदा मन हमारा रहे घर...
98. सांई के पंछी बोले रे...
99. सामने दिव्य आलोक साकार...
100. संपूर्ण सृष्टि मेरा विधान...
101. सविता महान आपसे वरदान...
102. सीख नहीं पाए चादर ओढ़ने...
103. सिहर-सिहर मन तुम्हें पुकारे...
104. स्नेह-से तुम दीप-सी मैं...
105. सूक्ष्म में रम गए हो...
106. इतना चिंतन किया तुम्हारा...
107. तेरा नूर सबमें समाया...
108. थोड़ी-सी साँसें पाई हैं...
109. तुझे मिला कंचन-सा जीवन...
110. तू केवल रखवाला तेरे साथ...
111. तुम्हारा देगा सब जग साथ...
112. तुम्हारे दिव्य दर्शन की...
113. तुम्हारे हैं हम प्रभु, तुम्हारे...
114. तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे...
115. तुम्हें ईश्वर मिलेगा...
116. तुम्हीं हो प्राण हम सबके...
117. तुम न घबराओ, न आँसू...
118. तूने हमें जनम दिया पालन...
119. वंदे उनके पद की धूल
120. विचार लो कि मृत्यु हो...
121. यह जीवन-पुष्प समर्पित...
122. यह करुणा की धार...
123. युग ऋषिवर है, जीवन का...
124. युग-युग पूजित गायत्री माँ ...
125. युग-युग तक जग याद करे...
126. हमने आँगन नहीं बुहारा...
127. पितु-मातु सहायक स्वामी सखा...
128. सुख चाहे यदि नर जीवन...
129. किए मंत्र जप मालाफेरी...

ये गीत निम्नलिखित मोबाइल एप पर उपलब्ध हैं—

1. Shantikunj Video
2. Gaana
3. Deezee
4. AWA
5. Spotiji
6. Hungama
7. Jio Saavn
8. Wynk Music

गुरुसत्ता द्वारा उद्घोषित नारे व जयघोष

गायत्री तपोभूमि की स्थापना के साथ ही गायत्री परिवार के आदर्श नारों एवं जयघोषों की परंपरा बनती-बढ़ती चली गई। गायत्री परिवार के कुछ नारों और जयघोषों को अन्य संस्थाओं/लोगों ने भी बड़े प्रेम से अपनाया। जयघोष एवं नारे दोनों बड़े ही प्रभावी, प्रेरणादायी और उत्कृष्ट भावों तथा विचारों से पूर्ण हैं।

1. गायत्री माता की—जय।
2. यज्ञ भगवान की—जय।
3. वेद भगवान की—जय।
4. भारतीय संस्कृति की—जय।
5. भारतमाता की—जय।
6. एक बनेंगे—नेक बनेंगे।
7. हम सुधरेंगे—युग सुधरेगा।
8. हम बदलेंगे—युग बदलेगा।
9. विचार क्रांति अभियान—सफल हो, सफल हो, सफल हो।
10. ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल—सदा जलेगी-सदा जलेगी।
11. ज्ञानयज्ञ की ज्योति जलाने—हम घर-घर में जाएँगे।
12. नया सवेरा, नया उजाला—इस धरती पर लाएँगे।
13. नया समाज बनाएँगे—नया जमाना लाएँगे।
14. जन्म जहाँ पर—हमने पाया।
15. अन्न जहाँ का—हमने खाया।
16. वस्त्र जहाँ के—हमने पहनें।
17. ज्ञान जहाँ से हमने पाया।
18. वह है प्यारा—देश हमारा।
19. देश की रक्षा कौन करेगा—हम करेंगे, हम करेंगे।
20. युग निर्माण कैसे होगा—व्यक्ति के निर्माण से।
21. माँ का मस्तक ऊँचा होगा—त्याग और बलिदान से।
22. नित्य सूर्य का ध्यान करेंगे—अपनी प्रतिभा प्रखर करेंगे।
23. मानवमात्र—एक समान।
24. जाति वंश सब—एक समान।
25. नर और नारी—एक समान।
26. नारी का सम्मान जहाँ है, संस्कृति का उत्थान वहाँ है।
27. जागेगी भाई जागेगी—नारी-शक्ति जागेगी।
28. हमारी युग निर्माण योजना—सफल हो, सफल हो, सफल हो।
29. हमारा युग निर्माण सत्संकल्प—पूर्ण हो, पूर्ण हो, पूर्ण हो।
30. इक्कीसवीं सदी—उज्ज्वल भविष्य।
31. वंदे—वेद मातरम्; वंदे देव मातरम्; वंदे विश्व मातरम्।

बेजबानों के प्रति अगाध प्रेम

परमवंदनीया माताजी तथा परमपूज्य गुरुदेव का अपनापन देखकर तोता, गौरैया चिड़िया, कबूतर, गिलहरी, बंदर आदि उनके संगी-साथी की तरह मित्रवत् रहते थे। वे नित्य पक्षियों के लिए दाना डालते थे। पूज्यवर के बारे में कहा जाता है—

''पशु-पक्षी तक भी उनको थे, प्राणों से भी प्यारे।''

वंदनीया माताजी तो स्वयं करुणा की मूर्ति थीं। वे स्वयं पशु-पक्षियों से असीम प्रेम रखती थीं। गाय, बिल्ली, तोता उनके सहचर थे। उनकी हर जरूरतें पूरी करना तथा उनके कष्टों को दूर करने का पूरा सरंजाम जुटाने के अनेकों मार्मिक प्रसंग हैं। पू. गुरुदेव जब भोजन करने बैठते तो थाली में परोसी गई खाद्य वस्तुओं को खाने के लिए थाली के निकट गिलहरी, चुहिया, गौरैया आ जाते और भोज्य पदार्थों को खाने तथा खींचकर ले जाने लग जाते।

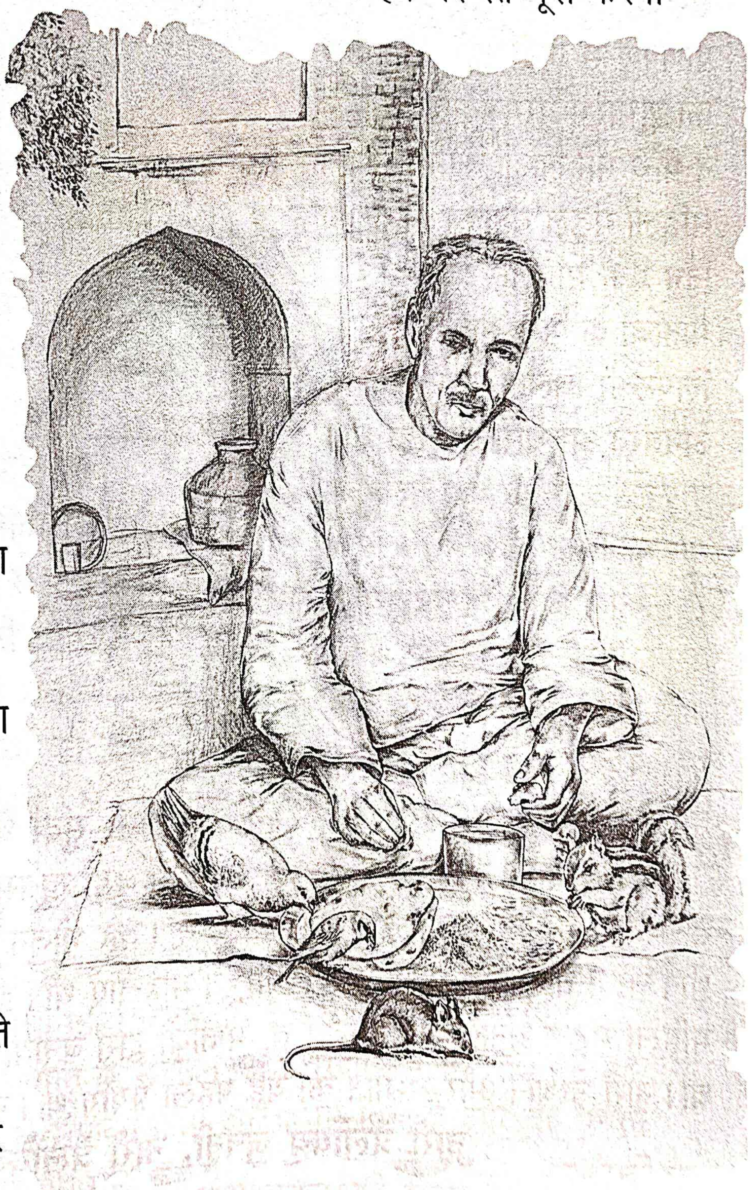

पशु-पक्षी सबके प्रति उनका (गुरुदेव तथा वंदनीया माताजी) प्रेम अगाध था। एक दिन एक तोता घायलावस्था में छत पर पड़ा था, पीड़ा से छटपटाता हुआ लुढ़क रहा था। गरदन के पीछे घाव था। वंदनीया माताजी ने हलदी पीसकर लेप किया। जल पिलाया, रक्षा के लिए पिंजरा मँगाया और तोते में नई जान आते देखकर, वंदनीया माताजी बड़ी खुश हुईं। जब पूर्ण स्वस्थ होकर तोता पिंजरे से छूटकर उड़ गया। वे प्रसन्नता से हँस पड़ीं, बोलीं—चलो सेवा काम कर गई। ❐

महिला संगठन का शुभारंभ

परमवंदनीया माताजी द्वारा नारी जागरण का बीजारोपण ही आज विराट वटवृक्ष के रूप में युग निर्माण योजना गायत्री परिवार के आँगन में पुष्पित-पल्लवित हो रहा है।

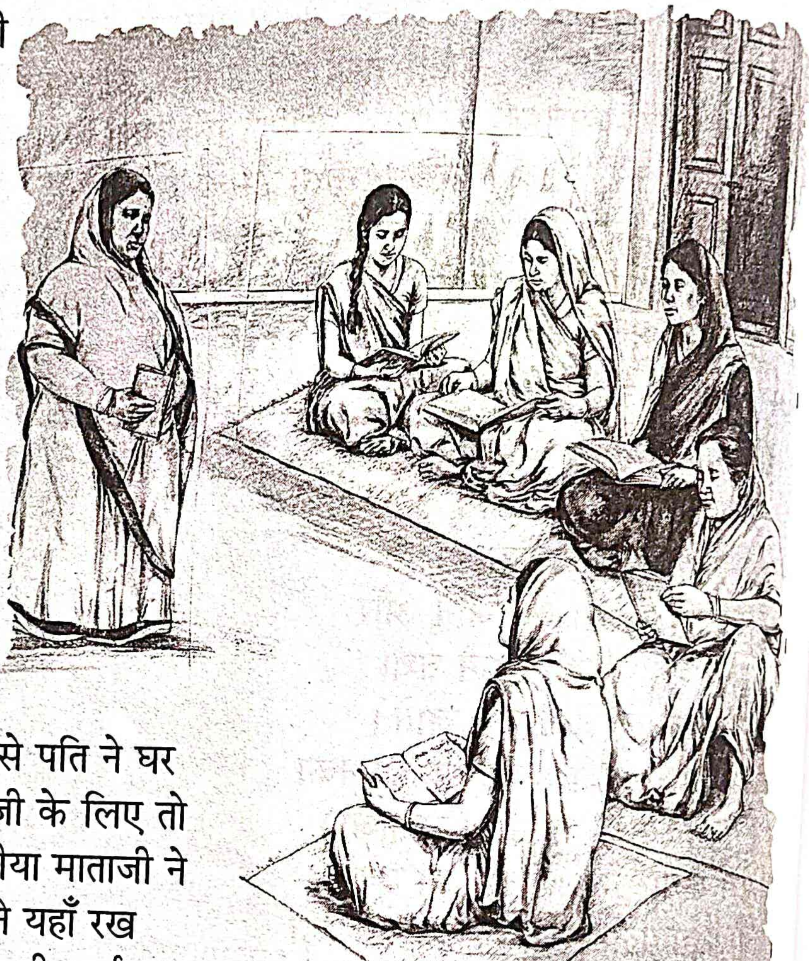

परमवंदनीया माताजी ने नारी मात्र के जीवन की हर पीड़ा को, वेदना को जाना और नारी सशक्तीकरण के लिए जीवनपर्यंत प्राणपण से जुटी रहीं। इस क्रम का शुभारंभ परमवंदनीया माताजी ने पाँच महिलाओं को लेकर एक महिला मंडल बनाकर किया। एक दिन एक महिला, वंदनीया माताजी के पास आकर उनसे लिपटकर विलाप करने लगी। अनवरत अश्रुधारा बह रही थी। पूछताछ करने पर पता चला कि मन मुताबिक दहेज न मिलने पर उसे पति ने घर से निकाल दिया है। वंदनीया माताजी के लिए तो उसका कष्ट अपना कष्ट था। वंदनीया माताजी ने कहा—"मैं तो हूँ न", उन्होंने अपने यहाँ रख लिया। इसी तरह एक अन्य महिला भी आई, वह तीसवर्षीया विधवा थी। उसकी लिखावट सुस्पष्ट, सुंदर थी। अतः वंदनीया माताजी ने उसे पत्राचार का कार्य सौंप दिया। वह अपना काम बड़ी खूबसूरती और निष्ठा से करती थी। तीसरी महिला की उम्र करीब पचास वर्ष थी। वह भोजन बनाने के लिए सहयोग करती थी। चौथी तथा पाँचवीं भी दुःखी-पीड़ित महिलाएँ थीं। इन पाँच महिलाओं को लेकर एक महिला मंडल बनाया गया। स्वयं वं. माताजी द्वारा बनाया गया यह पहला महिला मंडल था। नारी उत्थान और सम्मान का यह पहला प्रयोग था। नारी सम्मान में कहा गया है—

नारी त्रैलोक्य जननी, नारी त्रैलोक्यस्वरूपिणी।
नारी त्रिभुवनाधारा, नारी शक्तिस्वरूपिणी॥

माताजी द्वारा संपादन कार्य एवं लेखन

अक्टूबर, 1959 से ही परमवंदनीया माताजी द्वारा अखण्ड ज्योति पत्रिका के संपादन का दायित्व सँभाल लिया गया, जिससे परमपूज्य गुरुदेव के हिमालय प्रवास के समय

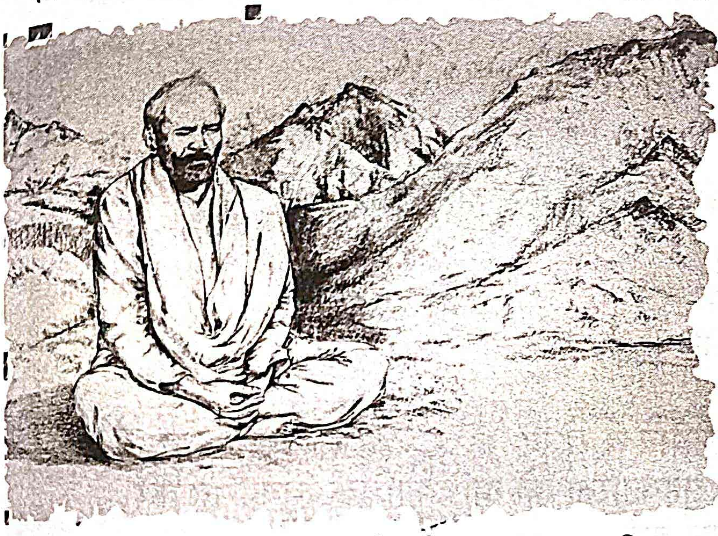

मिशन की सभी गतिविधियाँ सुचारु रूप से निर्बाध चलती रहीं।

भोजन व्यवस्था, डाक पढ़ना, जवाब देना, डाक टिकट चिपकाना, डिस्पैच का प्रबंध करना ही नहीं, इनके साथ उन्होंने जब लेखनी सँभाली तो लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। पत्रिका संपादन, लेखन, प्रकाशन तथा गायत्री तपोभूमि आश्रम की गतिविधियों का प्रबंधन तथा कार्यकर्त्ताओं का मार्गदर्शन, साधना-प्रशिक्षण शिविरों का संचालन सँभालने के साथ पीड़ितों, शिष्यों, भक्तों की आध्यात्मिक शक्ति से सहायता करने की जिम्मेदारी भी बखूबी निभाती थीं। परिजनों से गुरुदेव यह कह देते थे कि अपनी समस्या माताजी को बता देना, वे सब हल कर देंगी। गुरुदेव और माताजी को अलग-अलग नहीं समझा जा सकता। वे दो शरीर में एक प्राण थे। उनके अज्ञातवास जाने के बाद वंदनीया माताजी ने पूरे गायत्री परिवार को एक स्नेह-सूत्र में बाँधकर रखा और सभी कार्य चमत्कारिक ढंग से सुसंपन्न किए।

अक्टूबर, 1959 से अखण्ड ज्योति के संपादन का उत्तरदायित्व सँभालते हुए वंदनीया माताजी ने लिखा है—"इस अंक से संपादन कार्य आरंभ कर दिया है और यह प्रयत्न करूँगी कि पत्रिका में गए हुए लेखों के साथ वह प्रेरणा भी जुड़ी हो, जिससे उन लेखों का प्रभाव पाठक की अंतरात्मा पर निश्चित रूप से हो।"

वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी द्वारा लिखित, संपादित पुस्तकों की सूची

1. परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट कृति—नारी
2. आधी जनशक्ति, अपंग न रहे
3. नारी उत्थान में समाज का उत्तरदायित्व
4. नारी की महिमा गिराने में घाटा-ही-घाटा
5. नारी की महानता को पहचानें
6. नारी शृंगारिकता नहीं, पवित्रता है
7. सुसंस्कृत परिवार की पृष्ठभूमि
8. जागो शक्तिस्वरूपा नारी
9. मातृशक्ति के अमृत वचन
10. अभिभावकों और संतानों के बीच भावनात्मक आदान-प्रदान
11. सम्मान के पात्र—हमारे वयोवृद्ध
12. बच्चों के शासक नहीं, सहायक बनें
13. बच्चों की शिक्षा ही नहीं, दीक्षा भी आवश्यक
14. वंदनीया माताजी के प्रवचन
15. देव संस्कृति व्यापक बनेगी, सीमित न रहेगी
16. पारिवारिक सद्भावनाओं और सहकारिता को अधिकाधिक विकसित करें
17. अभीष्ट क्षमता हो तो ही प्रजनन करें
18. स्वास्थ्य संरक्षण इस तरह संभव होगा
19. शांतिकुंज द्वारा महिला जागरण अभियान का सूत्र-संचालन
20. इस प्राणतत्त्व को प्रखर बनाया जाए
21. लोक-शिक्षण के लिए धर्म परंपरायुक्त प्रचार-प्रक्रिया
22. अगले दिनों कड़े कदम उठाने होंगे
23. प्राणवान संगठनों की सुनियोजित प्रक्रिया प्रारंभ हो
24. बहुत खो चुके अब और न खोएँ
25. आदर्श के निर्वाह में नर-नारी पीछे न रहें
26. नारी दलित, प्रताड़ित न रहे, न रहने दें
27. नारी को उसका उचित स्थान देना ही होगा
28. नारी को प्रतिबंधित करके किसने क्या पाया
29. नारी मीनार से खाई में कैसे जा गिरी
30. प्रथम चरण का उत्तरदायित्व पुरुषों पर
31. भारतीय संस्कृति में नारी का उच्च स्थान
32. सामाजिक कर्त्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करें
33. विवाह-शादियों में हमारा दृष्टिकोण साफ रहे
34. स्वर्ण जयंती साधना का प्रसार और विस्तार

35. साधना स्वर्ण जयंती वर्ष का विशेष साधना क्रम
36. पूज्य गुरुदेव की हीरक जयंती
37. अपनों से अपनी बात
38. वह जो प्रज्ञापुत्रों को अभी ही करना है
39. सिद्धिदायक साधनाओं के परीक्षित प्रयोग।
40. नमो वेदमाता, नमो विश्वमाता
41. मातृवाणी
42. जागो शक्तिस्वरूपा नारी
43. प्रौढ़ महिला शिक्षा के लिए विशेष प्रबंध किया जाए
44. परिवार को स्वस्थ परंपराओं का प्रशिक्षण-क्रेंद्र बनाया जाए
45. भारतीय संस्कृति में नारी का उच्च स्थान
46. नारी की क्षमता का सदुपयोग हो
47. समाधान के लिए ठोस प्रयास हों
48. महिला जागरण अभियान की संगठन प्रक्रिया
49. लड़ाई बीमारी से है, बीमार तो हमारा अपना है
50. नारी उत्थान सबसे बड़ी आवश्यकता
51. गृह-व्यवस्था के सूत्र
52. नारी को रचनात्मक दिशा दी जाए
53. सतत विकास की क्रमिक व्यवस्था
54. सुसंतति का निर्माण
55. मातृशक्ति गायत्री
56. प्रौढ़ महिला शिक्षा योजना
57. नारी उत्कर्ष के लिए स्वयं आगे बढ़ें

संपादित पुस्तकों की सूची

1. यजुर्वेद संहिता
2. ऋग्वेद संहिता
3. सामवेद संहिता
4. अथर्ववेद संहिता
5. सांख्य एवं योगदर्शन
6. न्याय एवं वैशेषिक दर्शन
7. वेदांत दर्शन
8. मीमांसा दर्शन
9. 108 उपनिषद् 'साधनाखंड'
10. 108 उपनिषद् 'ब्रह्म विद्याखंड'
11. 108 उपनिषद् 'ज्ञानखंड'
12. योगवासिष्ठ 'प्रथम खंड'
13. योगवासिष्ठ (निर्माण प्रकरण) द्वितीय खंड

14. दुर्लभ 108 उपनिषद् 'प्रथम खंड'
15. दुर्लभ 108 उपनिषद् 'द्वितीय खंड'
16. मनुस्मृति
17. सहगान कीर्तन

वंदनीया माताजी के द्वारा लिखित, संपादित कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकें जो 'जन्म शताब्दी सदग्रंथमाला—2026' के सेट के रूप में प्रकाशित की गई हैं, वे निम्नलिखित हैं—

मातृशक्ति जन्मशताब्दी सद्ग्रंथमाला—2026

1. चतुर्वेद परिचय
2. औपनिषदिक परिचय
3. षड्दर्शन परिचय
4. दोहा-अंत्याक्षरी
5. श्रीरामायण कीर्तन
6. मातृवाणी भाग-1
7. मातृवाणी भाग-2
8. मातृवाणी भाग - 3
9. परमपूज्य गुरुदेव जैसा मैंने देखा-समझा
10. परमपूज्य गुरुदेव के जयंती वर्ष
11. शक्तिपीठों के प्राण प्रतिष्ठात्मक कर्मकांड
12. आश्वमेधिक दिग्विजय अभियान
13. आश्वमेधिक यज्ञीय कर्मकांड (विधि-विधान)
14. गायत्री एवं यज्ञ की प्रेरणा
15. जागो प्रहरी
16. जागृति गान
17. युग-गायन
18. काव्य कैलास
19. नारी जागरण अभियान
20. शिक्षित नारी आगे आएँ
21. नारी अपनी क्षमता को पहचाने
22. नारी की सनातन गरिमा अक्षुण्ण रहे
23. न्याय नारी को मिलना ही चाहिए
24. मातृशक्ति अपना उत्थान स्वयं करें
25. नारी उत्कर्ष के लिए आगे बढ़ें
26. महिला जागरण—उद्देश्य एवं कार्यक्रम
27. नारी सशक्तीकरण अति आवश्यक
28. महिला जागरण अभियान की रूपरेखा
29. महिला जागरण की दिशाधारा
30. परिवार निर्माण के आधारभूत सूत्र

31. नारी का सम्मान करें
32. आदर्शमय पारिवारिक जीवन
33. विवाह दो आत्माओं का पवित्र मिलन
34. पत्नी का सम्मान गृहस्थ का उत्थान
35. बच्चों को प्यार एवं अपनत्व दें
36. बच्चों को भावनात्मक पोषण दें
37. सुगृहिणी की गृह-व्यवस्था
38. वैधव्य-समस्या एवं समाधान
39. कुरीतियों का कुचक्र तोड़ें
40. अंध परंपराएँ छोड़ें एवं तोड़ें
41. नारी-समस्याओं का समाधान
42. सामाजिक, नैतिक, बौद्धिक परिवर्तन
43. प्रतिभाएँ आगे आएँ
44. मातृवाणी (माताजी के अमृत वचन, भाग-1)
45. अनुकंपा (माताजी के अमृत वचन, भाग-2)
46. वात्सल्य (माताजी के अमृत वचन, भाग-3)

वंदनीया माताजी द्वारा संपादित पत्रिकाएँ

1. अखण्ड ज्योति

* अक्टूबर 1959 से अक्टूबर 1961 तक
* 1971 (जुलाई) से 1990 तक (सन् 1990 के अगस्त, सितंबर, अक्टूबर, नवंबर को छोड़कर)
* 1991 जनवरी से मई, सितंबर से दिसंबर तक
* 1992 जनवरी से मई, अगस्त, सितंबर, अक्टूबर, दिसंबर
* 1993, 1994 (जनवरी से सितंबर तक)

2. युग निर्माण योजना—मासिक

जुलाई 1971 से 1976 तक

1981 (जनवरी) से 1994 (सितंबर) तक

युग निर्माण योजना—पाक्षिक

1971 सितंबर से अगस्त 1975 तक

युग निर्माण योजना—साप्ताहिक

1980 सितंबर से दिसंबर

1981 जनवरी

3. महिला जागृति अभियान

जुलाई 1975 से सितंबर 1980 अंतिम अंक तक

4. युग शक्ति गायत्री (हिंदी)

जुलाई 1978 से जुलाई 1980 तक

5. प्रज्ञा अभियान—मासिक

जनवरी 1981 से 1983 तक

❐

गुरुदेव का अज्ञातवास
(हिमालय प्रवास 1960-61)

तीसरी बार दादागुरु सर्वेश्वरानंद जी के बुलावे पर हिमालय गए। गोमुख से नंदनवन तक जाने के लिए उनको पूर्व यात्रा की तरह ही छायापुरुष की सहायता मिली। इस बार की

हिमालय यात्रा में संपूर्ण आर्षग्रंथों के अनुवाद का जटिल कार्य भी हिमालय में रहकर पूरा किया। इस बार उनकी मार्गदर्शक सत्ता सर्वेश्वरानंद जी ने बहुत सारे कार्य सौंपे। जिसमें ऋषियों के कार्यों को आगे बढ़ाया जाना था। ऋषि विश्वामित्र परंपरा के अंतर्गत गायत्री महामंत्र की शक्ति से जन-जन को अवगत कराना था एवं एक सिद्धपीठ गायत्रीतीर्थ का निर्माण करना था। व्यास परंपरा में आर्ष साहित्य का सृजन। पतंजलि परंपरा में योग-साधना के तत्त्वज्ञान का विस्तार। परशुराम परंपरा में अनीति उन्मूलन हेतु जनमानस के परिष्कार के लिए वातावरण निर्माण। भगीरथ परंपरा के अंतर्गत ज्ञान-गंगा को जन-जन तक पहुँचाना। चरक परंपरा के अंतर्गत वनौषधियों का पुनर्जीवन और वैज्ञानिक अनुसंधान। याज्ञवल्क्य परंपरा में यज्ञ से मनोविकारों का शमन द्वारा समग्र चिकित्सा पद्धति का निर्धारण। जमदग्नि परंपरा में साधना-आरण्यक का निर्माण एवं

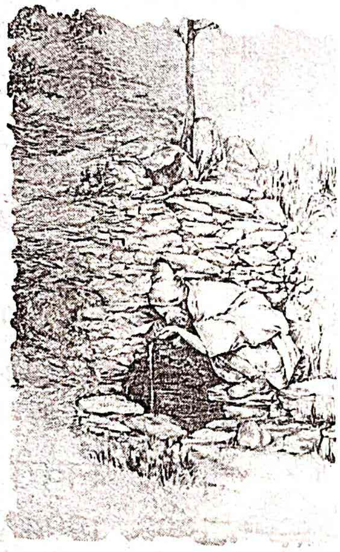

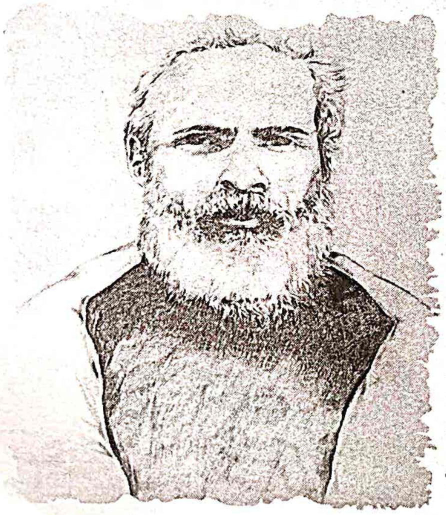

संस्कारों का बीजारोपण, नारद परंपरा में सत्परामर्श, परिव्रज्या के माध्यम से धर्मचेतना का विस्तार, वसिष्ठ परंपरा में धर्मतंत्र के माध्यम से राजतंत्र का मार्गदर्शन, शंकराचार्य परंपरा के अंतर्गत स्थान-स्थान पर प्रज्ञा-संस्थानों का निर्माण। पिप्पलाद परंपरा के अंतर्गत आहार-कल्प के माध्यम से समग्र स्वास्थ्य-संवर्द्धन एवं सूत-शौनक परंपरा में स्थान-स्थान पर प्रज्ञायोजनों द्वारा लोक-शिक्षण की रूपरेखा के सूत्र बताए गए। अथर्ववेदीय विज्ञान परंपरा में कणाद ऋषिप्रणीत वैज्ञानिक अनुसंधान पद्धति के आधार पर ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की रूपरेखा बनी।

वेदों के भाष्य का सम्मान

परमपूज्य गुरुदेव ने हिमालय प्रवास से आने पर चारों वेद, 108 उपनिषद्, अठारह पुराणों, छह दर्शन, बीस स्मृतियाँ, 24 गीताओं सहित समस्त आर्ष साहित्य का सरल,

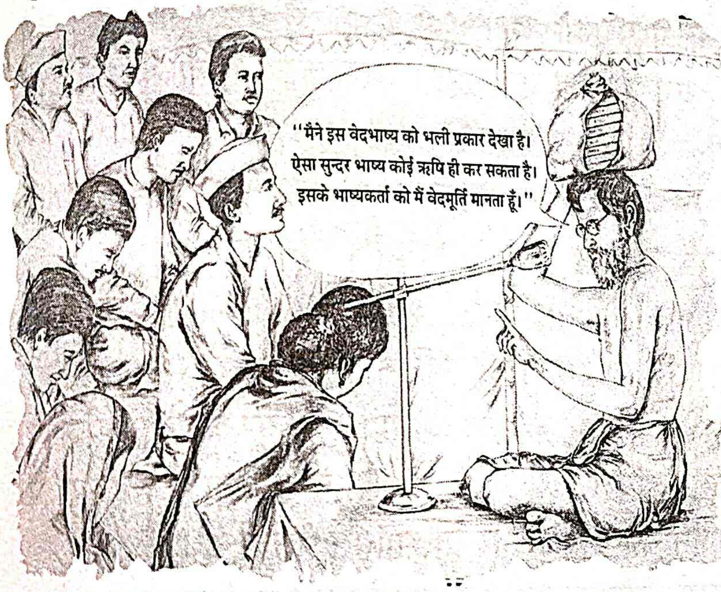

सुबोध भाष्य प्रकाशित किया। 1961 जून माह में गायत्री जयंती पर्व के अवसर पर वेदों का प्रकाशन हुआ। उपनिषद् एवं पुराण बाद में प्रकाशित हुए।

ग्वालियर के एक कार्यक्रम में आचार्य विनोबा जी पधारे थे। पं० लीलापत शर्मा जी उन दिनों डबरा (ग्वालियर) ही रहते थे। उन्होंने गायत्री तपोभूमि से गुरुदेव के भाष्य किए नवप्रकाशित वेद लेकर विनोबा जी को भेंट किए तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए तथा यह कहा कि रात को इनका अध्ययन करूँगा। कल के कार्यक्रम में उपस्थित रहना। दूसरे दिन उन्होंने मंच पर वेदों को सिर पर रखकर अपने उद्‌गार प्रकट किए—"मैं इतने सुंदर, सरल, सुबोध भाष्य से अभिभूत हूँ। आज इनकी आवश्यकता है, उन्होंने आचार्य जी (गुरुदेव) के लिए ढेर सारी शुभकामनाएँ व्यक्त कीं।" आचार्य विनोबा भावे जी ने कहा—"मैंने इस वेदभाष्य को भली प्रकार देखा है। ऐसा सुंदर भाष्य कोई ऋषि ही कर सकता है। इसके भाष्यकर्त्ता को मैं **वेदमूर्ति** मानता हूँ।" उपनिषदों का भाष्य जब भारत के महामहिम राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने पढ़ा तो उनकी अभिव्यक्ति यही थी कि यदि यह ज्ञान नवनीत साहित्य मुझे पहले मिल गया होता तो मैं आचार्य जी के चरणों में बैठकर, अध्यात्म दर्शन का शिक्षण ले रहा होता। ❐

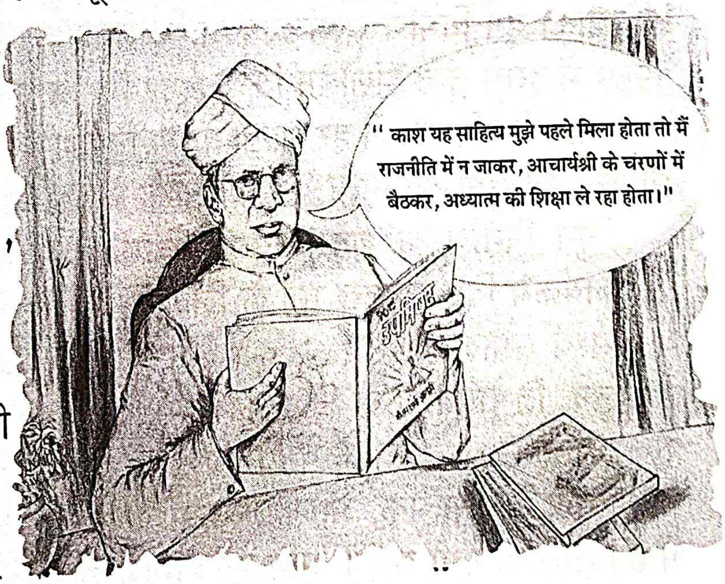

युग निर्माण योजना का सत्संकल्प एवं शत सूत्रीय कार्यक्रम (1962-63)

अखण्ड ज्योति मार्च, 1962 के प्रथम पृष्ठ पर सत्संकल्प का प्रथम बार प्रकाशन हुआ। वस्तुतः युग निर्माण युग परिवर्तन का उद्घोष क्रांतिकारी स्तर का विचारक ही कर सकता है। मूढ़मान्यताओं, कुरीतियों और सड़ी-गली परंपराओं से घिरे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को प्रगतिशील, अध्यात्मवादी बनाने के लिए युग निर्माण का महान सत्संकल्प पूज्य गुरुदेव द्वारा नवयुग की गीता तथा दिव्य संविधान के रूप में लाया गया।

पूज्यवर के द्वारा युग निर्माण सत्संकल्प को व्यापक बनाने के लिए प्रतिदिन प्रातः यज्ञादि कार्यक्रमों में, शुभ अवसरों पर नित्य सामूहिक पाठ करने का निर्देश दिया गया।

सत्संकल्प में ईश्वरीय अनुशासन, एकता, समता, ममता, शुचिता, सहिष्णुता, स्वाध्याय, संयम, सेवा और साधना तथा पुरुषार्थ का परिचय सहज ही लक्षित होता है। सत्संकल्प ने ही वर्गभेद, जातिभेद, लिंगभेद जैसे अनुपयुक्त भेदभाव को समाप्त किया। पूज्य गुरुदेव ने सत्संकल्प में 'सबके हित में अपना हित है।' यह महान संदेश दिया है। संकीर्ण स्वार्थपरता से हटकर 'मैं नहीं हम' की बात सोचने के लिए जन-जन को प्रेरित और प्रोत्साहित किया है।

मनुष्य को अपने भाग्य का निर्माता स्वयं बताकर उन्होंने पुरुषार्थी बनने के लिए तथा अपना भविष्य स्वयं निर्मित करने का संदेश दिया है। युग निर्माण सत्संकल्प की व्याख्या को लेकर एक पुस्तक भी गायत्री तपोभूमि द्वारा प्रकाशित की गई है, जिसका नाम है—इक्कीसवीं सदी का संविधान। युग निर्माण सत्संकल्प आरंभ से ही बहुत प्रभावशाली था, फिर भी पू० गरुदेव ने 1989 में इसमें कुछ संशोधन किया।

गायत्री परिवार की हर शाखा में युग निर्माण सत्संकल्प को गीता के 18 अध्यायों की तरह मानकर 18 सूत्रों का नित्य यज्ञ की साक्षी में पाठ कराया जाता है।

युग निर्माण के शतसूत्रीय कार्यक्रमों में परमपूज्य गुरुदेव ने स्वस्थ शरीर के लिए 20 कार्यक्रम दिए। स्वच्छ मन के लिए, अशिक्षा दूर करने के लिए 20 कार्यक्रम दिए हैं तथा शेष सभ्य समाज के लिए 60 कार्यक्रम, जिसमें सभ्य समाज की स्वस्थ रचना, कुरीतियों का उन्मूलन, विभूतिवानों के लिए कार्यक्रम, कला का सदुपयोग, सद्भावनाएँ बढ़ाने के प्रयास, राजनीति और सच्चरित्रता, युग निर्माण की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के कार्यक्रम सम्मिलित हैं। रचनात्मक, सृजनात्मक, आध्यात्मिक सभी कार्यक्रम युग निर्माण योजना के शतसूत्रीय कार्यक्रम में हैं। शतसूत्रीय योजना के साथ युग निर्माण योजना का शुभारंभ 1963 में हुआ। समस्त गायत्री परिवार युग निर्माण योजना की शतसूत्रीय योजनाओं को क्रियान्वित करने में उसी समय से लग गया। लोक-कल्याण के लिए अब तक ऐसी योजना किसी ने नहीं बनाई थी। गुरुदेव का यह प्रयत्न अपनी तरह का अद्वितीय प्रयत्न था। ☐

युग निर्माण सत्संकल्प

- ✧ हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
- ✧ शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
- ✧ मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
- ✧ इंद्रियसंयम, अर्थसंयम, समयसंयम और विचारसंयम का सतत अभ्यास करेंगे।
- ✧ अपने आप को समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
- ✧ मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
- ✧ समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
- ✧ चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
- ✧ अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
- ✧ मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
- ✧ दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।
- ✧ नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
- ✧ संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य-प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
- ✧ परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
- ✧ सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
- ✧ राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
- ✧ मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है—इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
- ✧ 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा', 'हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा' इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

युग निर्माण योजना का 1963 में घोषित शत सूत्रीय कार्यक्रम

1. स्वस्थ शरीर

व्यक्तिगत

1. दो बार भोजन, शेष पेय
2. भोजन को ठीक तरह चबाना
3. भोजन अधिक न खाना
4. स्वाद की आदत का परित्याग
5. शाक-फलों का अधिक प्रयोग
6. पकवान, मिठाई आदि हानिकारक पदार्थों से दूर
7. भाप का पकाया हुआ भोजन ही खाएँ
8. स्वास्थ्य रक्षा के लिए सफाई आवश्यक (घर, वस्त्र, शरीर)
9. खुली व शुद्ध वायु में रहना
10. ब्रह्मचर्य का पालन कड़ाई से करना

सामूहिक प्रयास

11. वनस्पति उत्पादन
12. पकाने की पद्धतियों में सुधार
13. सात्त्विक आहार की पाक विद्या
14. आस-पास की गंदगी दूर करना
15. नशेबाजी का त्याग
16. व्यायाम, सूर्य-नमस्कार उसका प्रशिक्षण
17. साप्ताहिक उपवास
18. बड़ी दावतें व जूठन पर प्रतिबंध
19. संतान की सीमा, मर्यादा रखना
20. प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी

2. स्वच्छ मन

अशिक्षा दूर हो

21. छात्र-वृद्धि-अभियान, अशिक्षा दूर हो
22. शिक्षितों की पत्नियाँ भी शिक्षित हों
23. प्रौढ़ पाठशालाओं का आयोजन
24. प्रौढ़ महिलाओं की शिक्षा-व्यवस्था
25. शिक्षा के साथ दीक्षा भी
26. जनसहयोग से नए विद्यालय
27. रात्रि पाठशालाएँ
28. शिक्षित ज्ञान-ऋण चुकाएँ
29. पुस्तकालय-वाचनालय
30. अध्ययन की रुचि जगाई जाए

आस्तिकता बढ़े

31. आस्तिकता में आस्था
32. स्वास्थ्य की साधना
33. संस्कारित जीवन
34. पर्व और त्योहारों का संदेश
35. जन्मदिवस समारोह
36. व्रतशीलता की धर्मधारणा
37. मंदिर जनजागरण के केंद्र बनें
38. युग निर्माण के ज्ञान मंदिरों की स्थापना
39. साधु-ब्राह्मण भी कर्त्तव्यपालन करें
40. वानप्रस्थ का पुनर्जीवन

3. सभ्य समाज

सभ्य समाज की स्वस्थ रचना

41. सम्मिलित कुटुंब प्रथा
42. पारिवारिक विचारगोष्ठी
43. सत्प्रवृत्ति का अभ्यास
44. संतान और उसकी जिम्मेदारी
45. सत्कार्यों का अभिनंदन
46. सज्जनता का सहयोग
47. नैतिक कर्त्तव्यों का पालन
48. सहयोग और सामूहिकता

49. कंजूसी और विलासिता छूटे
50. श्रम का सम्मान

कुरीतियाँ उन्मूलन

51. वर्ण व्यवस्था का शुद्ध स्वरूप
52. उपजातियों का भेदभाव मिटे
53. नर-नारी का भेदभाव मिटे
54. अश्लीलता का प्रतिकार
55. विवाहों में अपव्यय समाप्त हो
56. बाल विवाह एवं अनमेल विवाह पर प्रतिबंध
57. भिक्षा व्यवसाय की भर्त्सना
58. मृत्युभोज की व्यर्थता
59. जेवरों में धन की बरबादी
60. भूत-पलीद, बलि-प्रथा का अंत

विभूतिवान व्यक्ति यह करें

61. लेखकों और पत्रकारों से अनुरोध
62. युगसाहित्य के नवनिर्माता
63. प्रत्येक भाषा में प्रकाशन
64. अनुवाद-कार्य का विस्तार
65. पत्रिकाओं की संख्या में वृद्धि
66. प्रकाशन की सुगठित शृंखला
67. युग निर्माण प्रेस
68. कविताओं की रचना व प्रसार

कला का सदुपयोग

69. संगीत शिक्षा का प्रबंध
70. गायकों का संगठन
71. चित्रकला का आयोजन एवं उपयोग
72. प्रदर्शनियों का आयोजन
73. अभिनय और लीलाएँ
74. नाटक, एकांकी, नृत्य आदि
75. वक्तृत्व कला का विकास
76. कला के वैज्ञानिक माध्यम टेप रिकार्ड, रिकार्ड प्लेयर, प्रोजैक्टर आदि

सद्भावनाएँ बढ़ाने का प्रयास

77. सेवा-कार्यों में अभिरुचि, नि:शुल्क चिकित्सा शिविर
78. स्काउट शिक्षा, एन० सी० सी०
79. सार्वजनिक उपयोग के उपकरणों का सदुपयोग
80. सम्मेलन-संगोष्ठियाँ
81. नवरात्र के शिक्षण शिविर
82. पदयात्रा द्वारा धर्म-प्रचार
83. आदर्श वाक्य-लेखन
84. छोटे स्थानीय शिक्षण सत्र
85. संजीवनी विद्या का विधिवत् प्रशिक्षण

राजनीति और सच्चरित्रता

86. गीता के माध्यम से जनजागरण
87. मतदान और मतदाता
88. कुरीतियों का उन्मूलन
89. अपराधों के प्रति कड़ाई
90. शिक्षापद्धति का स्तर
91. सस्ता, शीघ्र और सरल न्याय
92. अधिकारियों की प्रामाणिकता
93. आर्थिक विषमता घटे

युग निर्माण की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि

94. गायत्री-उपासना
95. यज्ञ की आवश्यकता
96. समयदान
97. आत्मचिंतन और सत्संकल्प
98. अविच्छिन्न दान-परंपरा
99. सत्याग्रही स्वयंसेवक सेना
100. बौद्धिक क्रांति की तैयारी

आचार्य जी पर शोध प्रबंध

बहुआयामी जीवन को जीने वाले पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने विज्ञान, दर्शन, कला, साहित्य, संगीत, ज्योतिष, कर्मकांड, पराविज्ञान, वेद-पुराण, उपनिषद् आर्ष ग्रंथों का सरल भाष्य एवं विभिन्न सामाजिक समस्याओं तथा अध्यात्म एवं विज्ञान के समन्वय आदि विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है।

विभिन्न विश्वविद्यालयों से अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी के जीवनवृत्त एवं कर्तृत्व पर शोधकार्य संपन्न किया गया है। आशा है कि शोधकर्त्ताओं के इस प्रयास से आचार्य जी के बहुआयामी व्यक्तित्व को समझने में अधिक सहायता मिलेगी।

1. **डॉ० मंदाकिनी शर्मा** श्री रामकृष्ण परमहंस एवं आचार्य श्रीराम शर्मा के दार्शनिक विचारों का तुलनात्मक और विवेचनात्मक अध्ययन (भीमराव आंबेडकर, विश्वविद्यालय)

2. **डॉ० सुशीला गुप्ता** प्रज्ञा पुराण—एक अध्ययन (मेरठ विश्वविद्यालय)

3. **डॉ० गोविंद मिश्रा** पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य में उपासना, साधना और आराधना (गोरखपुर विश्वविद्यालय)

4. **डॉ० पूनम सिंह** पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य में युगचेतना (जौनपुर विश्वविद्यालय)

5. **डॉ० मंदाकिनी श्रीमाली** प्रज्ञापुरुष का समग्र दर्शन (आगरा विश्वविद्यालय)

6. **डॉ० मृणालिनी शर्मा** आचार्य श्रीराम शर्मा का समाज दर्शन भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा।

7. **डॉ० दीनदयाल शर्मा** प्रज्ञा पुराण का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन (मेरठ विश्वविद्यालय)

8. **डॉ० वर्षा वानखेड़े** पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य में नारी संवेदना (सागर विश्वविद्यालय)

9. **डॉ० उमा अग्रवाल** पं० श्रीराम शर्मा आचार्य एवं संत कबीर के साहित्य में दार्शनिक मान्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन (मेरठ विश्वविद्यालय)

10. **डॉ० उषा खंडेलवाल** आध्यात्मिक मान्यताओं का वैज्ञानिक प्रतिपादन (पं० श्रीराम शर्मा के संबंध में) (जबलपुर विश्वविद्यालय)

11. **डॉ० गायत्री किशोर त्रिवेदी** गायत्री-सावित्री एक अध्ययन (कानपुर विश्वविद्यालय)

12. **डॉ० सविता द्विवेदी** पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षादर्शन का आलोचनात्मक अध्ययन (फैजाबाद अवध विश्वविद्यालय)

13. डॉ० शशिकांत त्रिपाठी संस्कार परंपरा द्वारा समाजोत्थान की दिशा में गायत्री परिवार की भूमिका (जौनपुर विश्वविद्यालय)

14. डॉ० रमेश परमार पं० श्रीराम शर्मा आचार्य का शिक्षण-चिंतन (सूरत विश्वविद्यालय)

15. डॉ० सुलोचना शर्मा पं० श्रीराम शर्मा आचार्य का समाज-दर्शन (गढ़वाल विश्वविद्यालय)

16. डॉ० हेमाद्रि साव Physiological and Behavioral Responses of Human Subjects following JapaYagya (Yajna) and Selected Yogic Exercised. (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय)

17. डॉ० कृष्णा झरे मानवतावाद एक दार्शनिक अनुशीलन, आचार्य श्रीराम शर्मा के विशेष संदर्भ में (हेमवती नंदन बहुगुणा, गढ़वाल विश्वविद्यालय)

18. डॉ० आलोक कुमार Rural Social Transformation A Study of the Impact of Yug Nirman Movement (चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)

19. डॉ० इंद्रेश, पथिक वैदिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

20. डॉ० विजय कुमार मिश्र हिंदी पत्रकारिता में पं० श्रीराम शर्मा आचार्य का योगदान (लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ)

21. डॉ० जे० जे० चौहान पं० श्रीराम शर्मा आचार्य का राजनीतिक एवं सामाजिक योगदान एक मूल्यांकन (अमरावती विश्वविद्यालय)

22. श्रीमती अंजली सिंह पत्रकारिता में अखण्ड ज्योति का योगदान (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

23. श्री अजय कुमार मिश्र उपनिषद् परंपरा में पं० श्रीराम शर्मा आचार्य रचित प्रज्ञोपनिषद् की प्रासंगिकता (लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ)

24. श्रीमती विजयलक्ष्मी निगम आध्यात्मिक पत्रकारिता में 'अखण्ड ज्योति' का योगदान (कानपुर विश्वविद्यालय)

25. श्रीमती विद्योत्तमा रस्तोगी प्राचीन भारत में सूर्योपासना एक विवेचन (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

26. सुश्री रश्मि शुक्ला पं० श्रीराम शर्मा आचार्य का युगीन कर्मकांड एक विवेचन (कानपुर विश्वविद्यालय)

27. श्रीमती महिमा माहेश्वरी पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य में लोक-मंगल की भावना (जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर)

28. श्री ओंकारनाथ पाण्डेय Social Changes and Yug Nirman Movement of Shantikunj—A Geographical Study (गोरखपुर विश्वविद्यालय)

29. सुश्री भावना द्विवेदी पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के वाङ्मय में मानव चेतना एक समीक्षात्मक अध्ययन (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

30. श्रीमती ममता अरोड़ा पं० श्रीराम शर्मा आचार्य का सर्वांग शिक्षादर्शन एवं उनके शिक्षण-प्रशिक्षण संबंधी प्रयोगों का मूल्यांकन (दयानंद महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, कानपुर)

31. श्री राजीव कुमार वर्मा पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के सामाजिक विचार समाजशास्त्रीय अध्ययन (डॉ० भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा)

32. श्री गोविंद शुक्ला पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के संदर्भ में अभिनव समाज के नवनिर्माण में गायत्री परिवार की भूमिका एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय सेमरिया, रीवां)

33. श्री गुलाबराव पान्से पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के दर्शन में मृत्युपरक जीवन परिदृश्य पर आधारित दार्शनिक अनुशीलन (हमीदिया कॉलेज भोपाल, विश्वविद्यालय)

34. श्रीमती शशिकला पं० श्रीराम शर्मा आचार्य का आचार दर्शन आधुनिक दार्शनिक संदर्भ में एक अध्ययन (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

35. श्री सुशील शर्मा पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य में अध्यात्म एवं विज्ञान का समन्वय—एक अनुशीलन (विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन)

उपर्युक्त शोध प्रबंधों के अतिरिक्त देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज हरिद्वार से भी निम्न शोधार्थियों द्वारा निम्न विषयों पर शोधकार्य किए गए—

36. सुश्री रजनी रौतेला आचार्य पं० श्रीराम शर्मा की योग-साधनाओं का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

37. सुश्री शालिनी देवी महर्षि पतंजलि एवं युगऋषि आचार्य श्रीराम शर्मा की यौगिक प्रक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन एवं विवेचन

38. श्री सुनील कुमार देशमुख आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा प्रतिपादित प्रज्ञा योग एवं प्राणाकर्षण प्राणायाम का बाल अपराधियों के मनोवैज्ञानिक स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

39. श्री अविनाश विहारिया युग निर्माण मिशन का जीवनशैली एवं मूल्य उन्मुखीकरण पर प्रभाव का अध्ययन

40. श्री कृष्ण चौधरी आचार्य पं० श्रीराम शर्मा की ज्ञान-मीमांसा एक अध्ययन

41. श्री शिवनारायण प्रसाद भारतीय संस्कृति के प्रसार में संगीत की भूमिका (विशेष संदर्भ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य)

इनके अतिरिक्त और भी लोगों के द्वारा शोधकार्य निरंतर चल रहे हैं। ☐

अखण्ड ज्योति पत्रिका के संबंध में अभिमत

"तुम और तुम्हारी पत्रिका अखण्ड ज्योति, दोनों सदा यशस्वी बने रहेंगे।"

—आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

(हिंदी के महान विद्वान सरस्वती पत्रिका के संपादक)

"अखण्ड ज्योति पत्रिका के स्पर्श से ही मुझे आपकी प्राणचेतना का स्पर्श मिल गया था। विचारों की जिस दिव्यकक्षा से अखण्ड ज्योति अवतीर्ण हुई है, उसका अनुभव मुझे आपसे मिलकर हो गया। विचारों की दिव्यकक्षा में स्वयं प्रतिष्ठित होना अलग बात है और एक बड़े समूह को उस ओर लेकर चल पड़ना बिलकुल अलग कार्य है। विचारों की दिव्यकक्षा में स्वयं की प्रतिष्ठा अब तक अनेक लोग कर चुके हैं, पर बड़े व्यापक समूह को उस परम कक्षा की ओर ले चलने का साहस सिर्फ आप कर रहे हैं।"

—पं. गोपीनाथ कविराज

(संस्कृत के प्रकांड विद्वान, तपस्वी एवं महान दार्शनिक)

"अरे! वे तो महादेव हैं, उन्हें महादेवी का सहयोग प्राप्त है। उन्होंने स्वयं को आवरण में छिपा रखा है। व्यावहारिक रूप से तो किसी भी तरह उनका यथार्थ परिचय प्राप्त होना संभव नहीं है, लेकिन इस पत्रिका के माध्यम से उनके संदेश भी मिलते हैं और उनका परिचय भी बड़ी सहजता से प्राप्त होता है। हालाँकि, यह भी पात्रभेद के अनुसार ही हो पाता है।"

—माता आनंदमयी

(महान संत, तपस्वी)

"यही है सच्चा अध्यात्म, जो लेखक के हृदय से छलक रहा है।" "इसे कहते हैं एक उत्कृष्ट शब्दशिल्पी। इस लेखन में एक-एक शब्द का वही महत्त्व है, जो किसी विशाल अट्टालिका की प्रत्येक ईंट का होता है। उसकी एक ईंट जरा-सी सरका दी जाए तो पूरी अट्टालिका गिर जाएगी। बस, यही बात अखण्ड ज्योति के लेखों की है; एक भी शब्द इधर-से-उधर कर देने पर सब कुछ अव्यवस्थित और सौंदर्यविहीन होने का भारी खतरा है। इस अनूठी पत्रिका की एक बात यह भी है कि इसके ज्यादातर लेख स्वयं संपादक द्वारा लिखे जाते हैं। पूरी पत्रिका पढ़ने पर लगता है कि कहीं ज्वालामुखी की तरह आग उगलता अंतर्मन है, तो कहीं दार्शनिक विचारशीलता की गंगा की शीतल लहरें। कहीं प्रचंड पौरुष की हुंकार है, तो कहीं करुणा भरी पुकार। सच कहें तो यही है, संपादकीय-संवाद की संवेदनशीलता।"

—माखनलाल चतुर्वेदी

(महान साहित्यकार, प्रभा, कर्मवीर और प्रताप के संपादक)

"संपादकीय में लिखे गए ये शब्द, लेखनी से नहीं, बल्कि लिखने वाले के दिल की गहराई को चीरकर निकले हैं। इन्हें कोई सबसे अपना ही कह सकता है और कोई सबसे अपना

ही समझ सकता है। इसलिए अखण्ड ज्योति में लिखा जाने वाला संपादकीय संवाद की संवेदनशीलता की पराकाष्ठा है।''

—धर्मवीर भारती

(पत्रकार-साहित्यकार, धर्मयुग के संपादक)

''अखण्ड ज्योति के लेख भी भगवान की वाणी की तरह हैं। इस पर किसी व्यक्ति विशेष की कोई छाप संभव नहीं है। इसमें जो कुछ भी है, सब-का-सब आचार्य जी का है। किसी और का कोई स्वत्व इसमें नहीं है। इसलिए जो इसे पढ़ेगा, इस पर विचार-मंथन करेगा, वह सीधे उनकी पराचेतना से जुड़ जाएगा। भले ही वह उनसे मिला हो अथवा न मिला हो।''

—देवरहा बाबा

(महान तपस्वी, दिगंबर संत)

''अखण्ड ज्योति पत्रिका तुम पढ़ा करते हो, उसके संचालक आचार्य जी चिंतनशील होने के साथ कर्त्तव्यनिष्ठ हैं। मैं तो उन्हें आधुनिक भारत का परशुराम कहता हूँ। अपने विचारों व कर्मनिष्ठा का धारदार परशु लिए निकल पड़े हैं—देश की बुराइयों को जड़ से काटने। पता नहीं उनके लिखे का, उनके किए का महत्त्व देश कब समझेगा और किस तरह समझेगा, पर वह है सचमुच ही महत्त्वपूर्ण। अखण्ड ज्योति के लेखों में चिंतन है, विश्लेषण है, मानव के सही स्वरूप की खोज है। इसमें छपने वाली कहानियाँ प्रेरक हैं, उद्दीपक हैं। इसमें प्रकाशित होने वाली लघु कथाएँ बिहारी के दोहों की तरह—'देखन में छोटे लगें, घाव करें गंभीर' हैं और इनकी कविताएँ, युगधर्म का बोध कराती हैं।''

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

(राष्ट्रकवि, इतिहास, दर्शन, राजनीति के विद्वान)

''अखण्ड ज्योति की विचारशैली, भारत की संस्कृति, यहाँ की सामाजिक संरचना, परिवार के रिश्तों की बुनावट के सबसे अनुकूल है। इस संबंध में दूसरी बात यह है कि आध्यात्मिक पत्रिका होते हुए भी इसमें घर-परिवार, रिश्ते-नातों का पूरा सम्मान है। तीसरी बात जो इस संदर्भ में विशेष महत्त्वपूर्ण है, वह यह कि केवल यही एक ऐसी पत्रिका है, जिसने घर-परिवार को, गृहस्थ जीवन को तपोवन की संज्ञा दी है। गृहस्थ जीवन की ऐसी परिभाषा कहीं अन्यत्र देखने-सुनने को नहीं मिलती।''

—आशा रानी व्होरा

(प्रसिद्ध साहित्यकार एवं समाजसेवी)

''लोकसेवा-समाजसेवा के प्रशिक्षण को आचार्य जी ने आध्यात्मिक दृष्टि दी है। इसे उन्होंने जीवन-साधना, आध्यात्मिक साधना का स्वरूप प्रदान किया है। आचार्य जी और उनकी अखण्ड ज्योति तो लोकसेवा प्रशिक्षण की पाठशाला है।''

—हीरालाल शास्त्री

(प्रथम मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार, प्रसिद्ध शिक्षाविद, समाजसुधारक)

''आचार्य जी ने अखण्ड ज्योति के माध्यम से न केवल वैज्ञानिक अध्यात्म को नया आयाम दिया, बल्कि लोगों को घर बैठे जीवन जीने की कला का शिक्षण भी दिया।''

—स्वामी आत्मानंद

(रामकृष्ण आश्रम, रायपुर)

''सुधा बीज बोने से पहले कालकूट पीना होगा।
पहन मौत का मुकुट विश्वहित, मानव को जीना होगा॥''

इन पंक्तियों को पढ़कर लगा अभी भी हिंदी साहित्य में शिवत्व शेष है।

—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(हिंदी साहित्य के यशस्वी प्रकाशपुंज)

''ज्ञान वितरण की अनूठी व्यवस्था अखण्ड ज्योति को भी आध्यात्मिक, वैचारिक क्रांति के प्रतीक-रूप में देश और विदेश में घर-घर पहुँचाना चाहिए।'' ***—राजा महेंद्र प्रताप सिंह***
(दानवीर, महान क्रांतिकारी, शिक्षाविद्, समाजसुधारक)

''साहित्य शिल्प का अनूठापन झलकता है अखण्ड ज्योति में। इसे किसी दायरे में तो नहीं बाँधा जा सकता, लेकिन अपने आप ही अनेकों दायरे इसमें सिमट जाते हैं।''

''उनके शब्द भी केवल अक्षरों का समूह नहीं हैं, बल्कि विचारों की ऐसी संरचना हैं, जो उद्देश्य व आवश्यकता के अनुरूप स्वयं को निरंतर प्रकाशित, परिवर्तित एवं परिवर्द्धित करती है और अँधियारे कोने में उजाला उँडेलने के लिए प्रयत्नशील रहती है। उनके साहित्य में जो सबसे विलक्षण बात मुझे लगी, वह यह है कि वह पढ़ने वाले की संवेदना और उसके पराक्रम को एक साथ झकझोरता है। अनेकों अंश भरे पड़े हैं आचार्य जी के साहित्य में, जो उनके साहित्य की बुनावट व बनावट को दरसाते हैं।''

''उनका साहित्य-लेखन सरल है और कठिन भी, कोमल है और कठोर भी। उनके थोड़े अक्षरों में अनंत अर्थ हैं। इस बारे में सबसे बड़ी बात तो यह है कि उन्होंने आध्यात्मिक पत्रकारिता का नया अध्याय प्रारंभ किया।''

—अमृतलाल नागर
(प्रसिद्ध साहित्यकार)

''मैं समझता हूँ कि जिन्होंने भी ये पंक्तियाँ (अखण्ड ज्योति) लिखी हैं, वे सचमुच ही ऋषि हैं। उन्हें इन पंक्तियों को लिखते समय अवश्य पता था कि देश की स्वाधीनता सुनिश्चित है और स्वाधीन भारत को वैज्ञानिक अध्यात्म के रूप में चिंतन, दर्शन के सर्वथा नए आयाम की आवश्यकता है।''

—डॉ० राजा रमन्ना
(परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक)

''घर बैठे जीवन जीने की कला का शिक्षण आज के दौर की सबसे बड़ी जरूरत है। हर आयु के लोगों के लिए, हर परिस्थिति में जीने वालों के लिए इस आवश्यकता को पूरा करने का काम अखण्ड ज्योति कर रही है। यह पत्रिका अपने आप में पत्रिका के रूप में विलक्षण तो है ही, लेकिन साथ में और भी बहुत कुछ है। मैं तो इसे जीवन जीने की कला की प्राथमिक पाठशाला, माध्यमिक पाठशाला, महाविद्यालय और यहाँ तक कि जीवन जीने की कला का विश्वविद्यालय तक मानता हूँ। यह बात सुनने वालों को कितनी ही अटपटी क्यों न लगे, पर अनुभव किया हुआ सच है। जिनकी जितनी योग्यता है, जो जितना सीखेंगे, जानने में सक्षम हैं, उसके अनुरूप यह पत्रिका उन्हें सिखा देती है।''

—स्वामी केशवानंद
(शिक्षा संत)

''मुझे भारी प्रसन्नता है कि कोई तो है, किसी ने तो पुरातन शास्त्रों के ज्ञान को समझने व समझाने की कोशिश की है।''

''यह पत्रिका यथार्थ में पुरातन शास्त्रों की सामयिक व्याख्या है।'' ''अखण्ड ज्योति के लेखों में न केवल पुरातन ज्ञान का सामयिक प्रस्तुतीकरण है, बल्कि उसका विधिपूर्वक शिक्षण भी है। फिर इन सभी को गायत्री के तत्त्वदर्शन में पिरोया भी गया है।''

—पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

(महान क्रांतिकारी, संस्कृत के उद्‌भट विद्वान, लेखक, मनस्वी, मनीषी)

''मुझे अखण्ड ज्योति में प्रतिपादित किया जाने वाला समाज दर्शन व अध्यात्म दर्शन एक साथ संवेदित और प्रेरित करता है। इसमें एकता, समता और शुचिता का जो प्रतिपादन है, उसने मार्क्सवाद को बड़े ही मौलिक व नैसर्गिक ढंग से आध्यात्मिक बना दिया है। इसमें आर्थिक, सामाजिक, नैतिक ऐसे आयाम हैं, जो शोध का महत्त्वपूर्ण बिंदु बन सकते हैं। हो सके तो मेरी इन बातों को शोधकर्मियों तक अवश्य पहुँचाना। इसका एक तथ्य और भी है, जो सतत प्रेरित करता है, वह यह है कि इसका साहित्यिक प्रतिपादन विश्वदर्शन का आधार बन सकता है।''

—रांगेय राघव

(महान साहित्यकार)

''अब जब इस समय अपने जीवन की समीक्षा करता हूँ तो पाता हूँ, मैंने अपने जीवन में कई कार्य ऐसे किए, जिन्हें आचार्य जी ने अखण्ड ज्योति के पृष्ठों पर लिखा था। इन कार्यों के बारे में सोचने पर अब लगता है, जैसे कि किसी अदृश्य प्रेरणा ने मुझसे वह सब करवा लिया और मुझे श्रेय व सम्मान का उपहार दिया। मैं यह स्पष्ट कहता हूँ कि मैंने अपने जीवन में जो भी श्रेष्ठ किया, वह मेरे मार्गदर्शक की लेखनी, वाणी एवं उनके द्वारा ही दी गई अंत:प्रेरणा के कारण हो सका।''

—भैरोंसिंह शेखावत

(भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति)

''अखण्ड ज्योति को इसके पाठकों की पीढ़ियाँ पढ़ेंगी और सँजोकर धरोहर की तरह रखेंगी। इसमें तथ्य है, सत्य है, विचार प्रेरणाएँ हैं; इन सबके साथ इसमें एक सबसे वेशकीमती बात और भी है—आचार्य जी का तप, जिसके कारण इसका जितना सामयिक महत्त्व है, उतना ही शाश्वत महत्त्व भी है।''

—सत्यभक्त

(क्रांतिकारी लेखक, सतयुग, प्रणवीर, प्रताप, चाँद पत्रिकाओं के संपादक)

(भारत में कम्युनिष्ट पार्टी के संस्थापक सदस्य)

''इस पत्रिका में शब्द किसी के द्वारा और कहीं भी क्यों न लिखे जाते हों, पर इसके चेतना सूत्र हिमालय से जुड़े हुए हैं। जो भी इस पत्रिका के विचारों, लेखों से स्वयं को जोड़ता है, इन पर चर्चा व चिंतन करता है, वह अनजाने में ही हिमालय के डिवाइन मास्टर्स से जुड़ जाता है, फिर वे उसे स्वयं ही सुरक्षा-संरक्षण व मार्गदर्शन तथा सहायता देने लगते हैं।''

—जे० कृष्णमूर्ति

(महान अध्यात्मवेत्ता, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक)

''मुझे यह सुखद लगा कि अखण्ड ज्योति भारतवासियों को उनकी भाषा से और इस देश की संस्कृति, परंपरा व गरिमा से परिचित करा रही है। मैं स्वयं भी ऐसे कई लोगों को जानता हूँ जिन्होंने अखण्ड ज्योति पढ़ने के लिए हिंदी सीखी। अखण्ड ज्योति का पठन-पाठन और प्रचार करते रहो। यह भारत, भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा के लिए जरूरी है। देर-सवेर यही भारतीय जनमानस पर आध्यात्मिक साम्यवाद की दस्तक दे सकेगी।''

—फादर कामिल बुल्के

(हिंदी, संस्कृत, अँगरेजी के महान विद्वान लेखक, पद्मभूषण से सम्मानित)

''आध्यात्मिक साधनाओं का मार्गदर्शन करने के लिए तेरे पास अखण्ड ज्योति है न, उसके लेखों से प्रकाश प्रवाहित होता है, उसी से तेरा कल्याण होगा।'' ''अखण्ड ज्योति के प्रति श्रद्धा तुम्हारी चेतना को उनसे जोड़ देगी, फिर सब कुछ स्वतः मिलता रहेगा। मैं जो कह रहा हूँ, उसे स्वीकारोगे तो अखण्ड ज्योति का जीवन-दर्शन तुम्हें स्वयं जीवन के सत्य स्वरूप का दर्शन करा देगा।''

—बाबा नीम करौरी

''मानव कल्याण किसमें है? मानव कल्याण है, मानव के विकास और परिष्कार में। यह स्वर अखण्ड ज्योति का है, आध्यात्मिक मानवतावाद का है, उसके प्रणेता आचार्य जी का है।''

—राजेंद्र माथुर

(प्रसिद्ध पत्रकार, नवभारत टाइम्स के प्रधान संपादक)

''अखण्ड ज्योति पत्रिका प्रेरक है, इसके लेखों में विचारों को दिशा देने की क्षमता है। धार्मिक-आध्यात्मिक पत्रिका होने के बावजूद इसमें सामाजिक कर्त्तव्यों के प्रति उत्तरदायित्व का बोध है। सबसे बड़ी बात यह कि इसके लेख पढ़ने से लगता है मानो इसके लेखक और संपादक नारी-संवेदना से संवेदित होते हैं। उनका हृदय नारी के दरद से द्रवित होता है और वह इसे दूर करने के लिए प्रयत्नशील भी हैं। जहाँ तक नारी अभ्युदय के नवयुग की बात है, तो इसकी सच्चाई पर मुझे भरोसा होता है। मुझे भी लगता है, भारतमाता को स्वाधीन कराने वाला परमेश्वर नारी जीवन को भी स्वाधीनता देगा। आज की पराश्रित नारी आने वाले समय में आश्रयदाता की भूमिका का निर्वाह करेगी।''

—महादेवी वर्मा

(महान कवयित्री, लेखिका, पद्मभूषण, ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि अनेक सम्मान प्राप्त)

''मैं इसके लेख पढ़ती हूँ, इसलिए नहीं कि इसे किसी बड़े विद्वान ने लिखा है, बल्कि इसलिए, क्योंकि इसके लेखक ने तब से लेकर आज तक अपनी क्रांतिकारी भावना पर आँच नहीं आने दी। अभी भी उनके अंदर क्रांति की वही ज्वाला धधक रही है और वह अपने अनुगामियों को इसके लेखों के माध्यम से क्रांति के धधकते हुए अँगारे दे रहे हैं।''

—दुर्गा भाभी

(महान क्रांतिकारी)

''आध्यात्मिक चिकित्सा की औषधि है—अखण्ड ज्योति पत्रिका। जो इसे पढ़ते हैं, इसके विचारों पर चिंतन करते हैं, इन्हें स्वयं के जीवन में उतारने की कोशिश करते हैं, वे सभी इस सच्चाई को जरूर महसूस करते होंगे। कम-से-कम मेरा अपना अनुभव तो यही है। लंबे समय से मेरा इसका साथ रहा है।''

—डॉ० इंद्रसेन

(भारतीय एवं पाश्चात्य मनोविज्ञान के महान विद्वान)

''राजनीतिक जीवन का मटमैलापन हमेशा ही अपने व्यक्तित्व व अस्तित्व से लिपटा रहता है। स्वयं अपने मन में भी अनेकों इच्छाएँ, कामनाएँ हैं, जो जीवन को इधर-उधर घुमाती-घसीटती रहती हैं।''

''ऐसी स्थिति में संबल बनती है—अखण्ड ज्योति। इसके माध्यम से जो आचार्य जी के विचारों की फुहार आती है, उससे अशांति, असंतोष, संताप की तपिश क्षीण हो जाती है। मन को, जीवन को ताजगी मिलती है, सकारात्मक विचारों की ऊर्जा से फिर नए काम का जोश जगता है। उलझनों में, संकटों में नई राहें खुलती हैं। मैं समझता हूँ कि मैं ही क्यों, यही स्थिति औरों की, अनेकों की होगी।''

—हरदेव जोशी

(राजस्थान के मुख्यमंत्री असम, मेघालय और पश्चिमी बंगाल के राज्यपाल)

''आचार्य जी आपके लेखों को पढ़कर ऐसा लगता है, जैसे यह गंगा की कल-कल करती जलधारा है; ऐसी अभूतपूर्व शब्द-सरिता है, जिसमें विचार प्रवाहित होते हैं। इसमें भावनाओं की ऐसी भँवरें बनती हैं, जो बरबस ही पढ़ने वालों को अपने में समेटते हुए अंदर डुबो देती हैं और यह डूबना बड़ा ही सुखकारी और आनंददायक होता है।''

''कोई अखण्ड ज्योति को किस रूप में अनुभव करता है, मुझे नहीं पता, पर मुझे इसमें साहित्य व दर्शन के नए-नए रंगों की अनुभूति होती है। साथ ही इसमें सर्वथा नए संदेश की झलक मिलती है।''

—नरेंद्र मोहन

(प्रसिद्ध पत्रकार, दैनिक जागरण के प्रधान संपादक, उत्तर प्रदेश संगीत नाट्य अकादमी व प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के चेयरमैन)

❒

पूज्य गुरुदेव की दृष्टि में वंदनीया माताजी

मिशन को बढ़ाने में माताजी ने हमारे बाएँ या दाएँ हाथ की तरह नहीं, हृदय की भूमिका निभाई है। उन्हीं की भावनाओं के संचार से मिशन फलता और बढ़ता रहा है। औरों की तरह हम भी उनका प्यार-दुलार पाकर धन्य हुए हैं, अन्यथा इतने आघातों के चलते कौन जाने हम कब टूट-बिखरकर चकनाचूर हो गए होते। वह भावमयी हैं, प्यार तो जैसे उनके रोम-रोम में बसता है। उन्हें हमारी तरह बातें बनाना तो नहीं आता, पर ममत्व लुटाने में वह हमसे बहुत आगे हैं।

आचार्य जी को 'लाइट ऑफ एशिया' की उपाधि

सन् 1964 में लुधियाना (पंजाब) में 'सर्व धर्म सम्मेलन' का आयोजन किया गया। आयोजन समिति की ओर से एक सनातनधर्मी, आर्यसमाजी श्री मुनिलाल मित्तल जी,

पू० गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी को उसमें सम्मिलित होने के लिए निमंत्रण देने गायत्री तपोभूमि मथुरा आए। उस कार्यक्रम में पंजाब के शिक्षामंत्री श्री प्रबोध चंद्र शर्मा एवं संत कृपाल सिंह भी आमंत्रित थे। अन्य बहुत-से संतों-महापुरुषों को भी निमंत्रण मिला हुआ था। सभी संतों, विद्वानों के प्रवचन हुए। जब पू० गुरुदेव ने अपना प्रवचन 'धर्म-अध्यात्म का सच्चा स्वरूप और उसकी आवश्यकता-उपयोगिता' विषय पर दिया, तब उपस्थित जन-समुदाय जयघोष करने लग गया। धर्म की जय, आचार्य जी की जय, भारतीय संस्कृति की जय आदि के जयघोषों से आयोजन स्थल गूँज उठा।

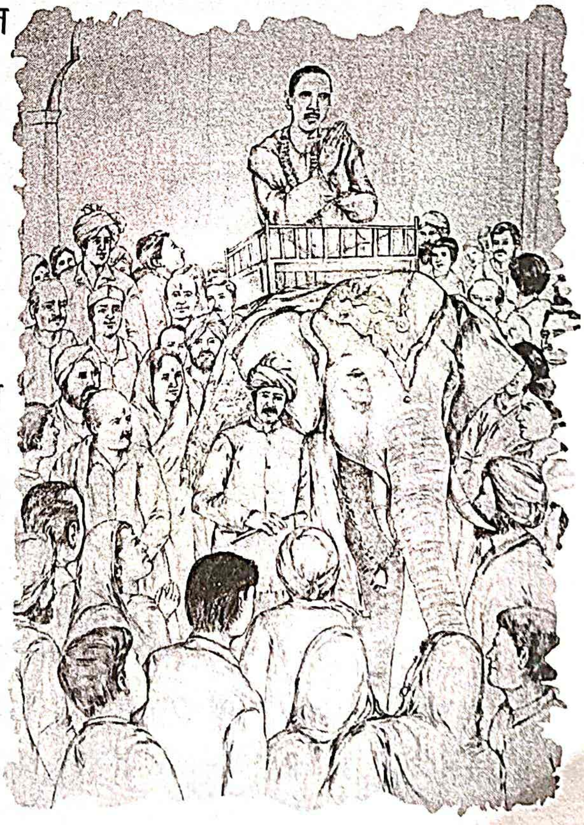

परमपूज्य गुरुदेव के प्रवचन को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया। उन्हें सर्वोच्च सम्मान स्वरूप 'लाइट ऑफ एशिया' का स्वर्णपदक प्रदान कर शाल उढ़ाकर, हाथी पर बिठाकर जलूस निकाला गया। स्थानीय समाचारपत्रों ने इस समाचार को प्रमुखता से छापते हुए संपादकीय भी प्रकाशित किए। श्री मुनिलाल जी मित्तल के सुपुत्र श्री सत्यपाल मित्तल जो उस समय 20-22 वर्ष के थे। वे बताते हैं कि ऐसा दिव्य एवं भव्य कार्यक्रम उस क्षेत्र में पहले कभी नहीं हुआ था, वे स्पष्ट करते हैं कि 'लाइट ऑफ एशिया' का ही सम्मान था। लाइट ऑफ इंडिया तो अज्ञानतावश लोगों ने कहना शुरू कर दिया। ❐

गोरक्षा हेतु महापुरश्चरण (1966)

भारत के सच्चे सनातनी, धर्मनिष्ठ साधु-संत से लेकर सामान्य नागरिक तक सभी गोमाता से प्रेम करते हैं। गोरक्षा के अभियान को गति देने के लिए लाखों लोग सदैव तत्पर भी रहते हैं। गोमाता के संरक्षण-संवर्द्धन के लिए, कत्लखानों में कटने से बचाने के लिए सरकार पर भी समय-समय पर दबाव डाला जाता रहा है।

स्वामी करपात्री जी के नेतृत्व में 'सर्वदलीय गोरक्षा महा अभियान समिति' द्वारा 1966 में आंदोलन चलाया जा रहा था, जिसमें प्रभुदत्त ब्रह्मचारी और पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव तीर्थ ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। संतों के आह्वान पर 7 नवंबर, 1966 गोपाष्टमी के दिन संसद भवन के सामने आंदोलन हेतु जुटी लाखों की भीड़ पर तत्कालीन केंद्र सरकार ने गोलियाँ चलवा दी थीं, जिससे सैकड़ों लोग हताहत हुए थे। इस घटना की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए तत्कालीन गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा जी ने अपने पद से 7 नवंबर को ही त्यागपत्र दे दिया था।

पू० गुरुदेव ने भी इस गोरक्षा आंदोलन को बल देने के लिए इस घटना से लगभग 25 दिन पहले शरद् पूर्णिमा 1966 से गोरक्षार्थ, गायत्री मंत्र में 'ह्रीं' बीज मंत्र का विशेष संपुट लगाकर परिजनों द्वारा सामूहिक पुरश्चरण साधना आरंभ करा दी थी, जो एक वर्ष तक निरंतर चलती रही।

कुछ लोगों का मानना है कि 7 नवंबर, 1966 घटना वाले दिन जिस हिसाब से सरकार दमन करने पर उतारू हो गई थी, उसमें हजारों लोग मारे जा सकते थे, पर ईश्वर की इच्छा कहा जाए या आचार्य जी द्वारा देशभर में कराए जा रहे गोरक्षार्थ पुरश्चरण का दैवी प्रभाव कि स्थिति भयानकतम होने से बच गई। ❒

युग निर्माण विद्यालय

केवल किताबी ज्ञान देने वाली शिक्षा से पू० गुरुदेव संतुष्ट नहीं थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि विद्यालय ऐसे हों, जो अभीष्ट विषयों की जानकारी के साथ स्वावलंबन एवं संस्कार वाली विद्या प्रदान करते हों। नैतिकता, शालीनता, शिष्टता, सुसंस्कारिता के ज्ञान से रहित बच्चे अपने व्यक्तित्व का निर्माण सही ढंग से नहीं कर पाते हैं। शिक्षा स्वावलंबन प्रधान न हो तो उसे पढ़ने वाले बहुत पढ़कर आजीविका कमाने तक में विफल रहते हैं। स्वावलंबन और संस्कार दोनों को ध्यान में रखकर उन्होंने 1967 में तपोभूमि परिसर में ही 'युग निर्माण विद्यालय' का शुभारंभ किया।

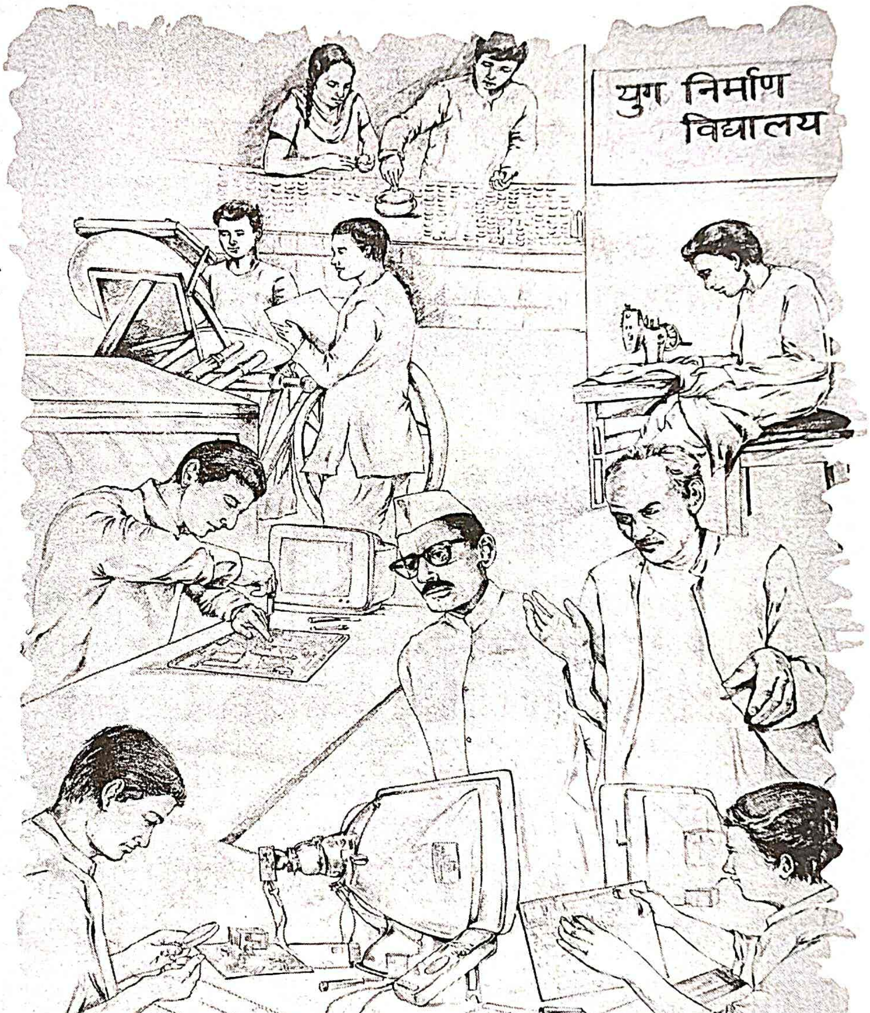

भारत के दो बार कार्यवाहक प्रधानमंत्री रह चुके श्री गुलजारी लाल नंदा भी कभी-कभी मथुरा आते थे। 1967 में युग निर्माण विद्यालय खुलने के बाद जब वे गायत्री तपोभूमि आए और विद्यालय व्यवस्था को देखा तो बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा—''यह विद्यालय शिक्षा विद्या का अनुपम केंद्र है। यहाँ सद्ज्ञान, संस्कार, स्वावलंबन, संस्कृति, साधना, सेवा और आधुनिक शिक्षा का अद्भुत मिलन हो रहा है।''

विद्यालय आवासीय था, 100 से कम ही विद्यार्थी हर सत्र में होते थे, पर वे जब सत्र पूरा कर निकलते थे तो अपने व्यक्तित्व में स्वर्णिम परिवर्तन पाते थे। ❑

शांतिकुंज निर्माण की प्रक्रिया-महत्ता

परमपूज्य गुरुदेव जब 1960-61 की हिमालय यात्रा में अपने मार्गदर्शक गुरुसत्ता से मिले, तभी उनकी गुरुसत्ता ने हरिद्वार में सप्तर्षि (सप्तसरोवर) क्षेत्र में शांतिकुंज आश्रम बनाने का संकेत कर दिया था। पूज्य गुरुदेव आश्रम-निर्माण के लिए जमीन देखने हेतु 1967-68 में कई बार हरिद्वार गए और उस क्षेत्र में जमीन की तलाश की, जहाँ आश्रम बनना था। लगभग डेढ़ वर्ष की खोज-बीन के बाद सप्तर्षि क्षेत्र में ही मनचाही जमीन मिली, जिसकी रजिस्टरी वंदनीया माताजी के नाम 20 जून, 1968 को हुई। वं. माताजी ने त्याग, तप, संयम-सादगी से भरे अपने पारिवारिक जीवन खरच से बची राशि से इस जमीन के लिए पैसा दिया। जमीन दलदली दिखाई पड़ती थी। लोगों ने कहा—यह जमीन आश्रम के लिए उपयुक्त नहीं है, पर पूज्य गुरुदेव ने उस भूमि के सूक्ष्म संस्कारों को देखते हुए अपने निर्णय को नहीं बदला।

जमीन खरीदने के कुछ माह बाद निर्माण-कार्य भी आरंभ हो गया। कुछ कमरे, एक हाल, यज्ञशाला आदि 20 जून, 1971 (पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी के पहुँचने से पहले) तक बन चुके थे। पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी को शांतिकुंज से बहुत ही महत्त्वपूर्ण कई कार्य करने थे, जिनमें प्रमुख थे—ऋषि परंपरा का बीजारोपण, आध्यात्मिक विशिष्ट साधनाओं का प्रशिक्षण, वैज्ञानिक अध्यात्म का प्रयोग-प्रस्तुतीकरण, नारी जागरण, वानप्रस्थ परंपरा का पुनर्जागरण, आयुर्वेद, योग, प्राणायाम, ध्यान आदि विधाओं का परीक्षण-प्रसार आदि।

शांतिकुंज का आरंभिक स्वरूप साधारण आश्रम जैसा ही थी। कम संख्या में लोग आते थे, जिसके कारण पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी से प्रत्यक्ष संपर्क-परामर्श का अवसर अधिक मिल जाता था। जब आश्रम के कार्यों-गतिविधियों का बहुत विस्तार होता चला गया और उस समय बहुत अधिक संख्या में लोग आने लगे, तब पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी से प्रत्यक्ष संपर्क का अवसर भी कम होता गया। फिर भी ऋषियुग्म अभीष्ट कार्यों के लिए उत्कृष्ट मार्गदर्शक परिजनों को देते रहे।

शांतिकुंज पूज्य गुरुदेव, वं. माताजी की एक महान स्थापना है, जो पूरे विश्व में उनके विचारों-आदर्शों को पहुँचाने के लिए बहुमुखी प्रयत्नों को पूरे वेग से चला रही है। पूरी दुनिया के लोगों तक मानवमात्र के लिए उपयोगी धर्म, संस्कृति, शिक्षा, संस्कार, साधना, सेवा की उत्कृष्ट विद्या का प्रसार कर रही है। ❐

मथुरा से ऋषियुग्म की भावभरी विदाई

पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी ने मथुरा छोड़ने से पूर्व अपने गृहस्थ जीवन की सभी जिम्मेदारियों को पूरा कर लिया। पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी गायत्री परिवार कार्यक्रमों में अत्यधिक व्यस्त चल रहे थे, क्योंकि उन्हीं दिनों 1970–71 में देश के पाँच स्थानों (भीलवाड़ा, पोरबंदर, महासमुंद, टाटा नगर एवं बहराइच) में सहस्रकुंडीय यज्ञायोजन संपन्न हो रहे थे।

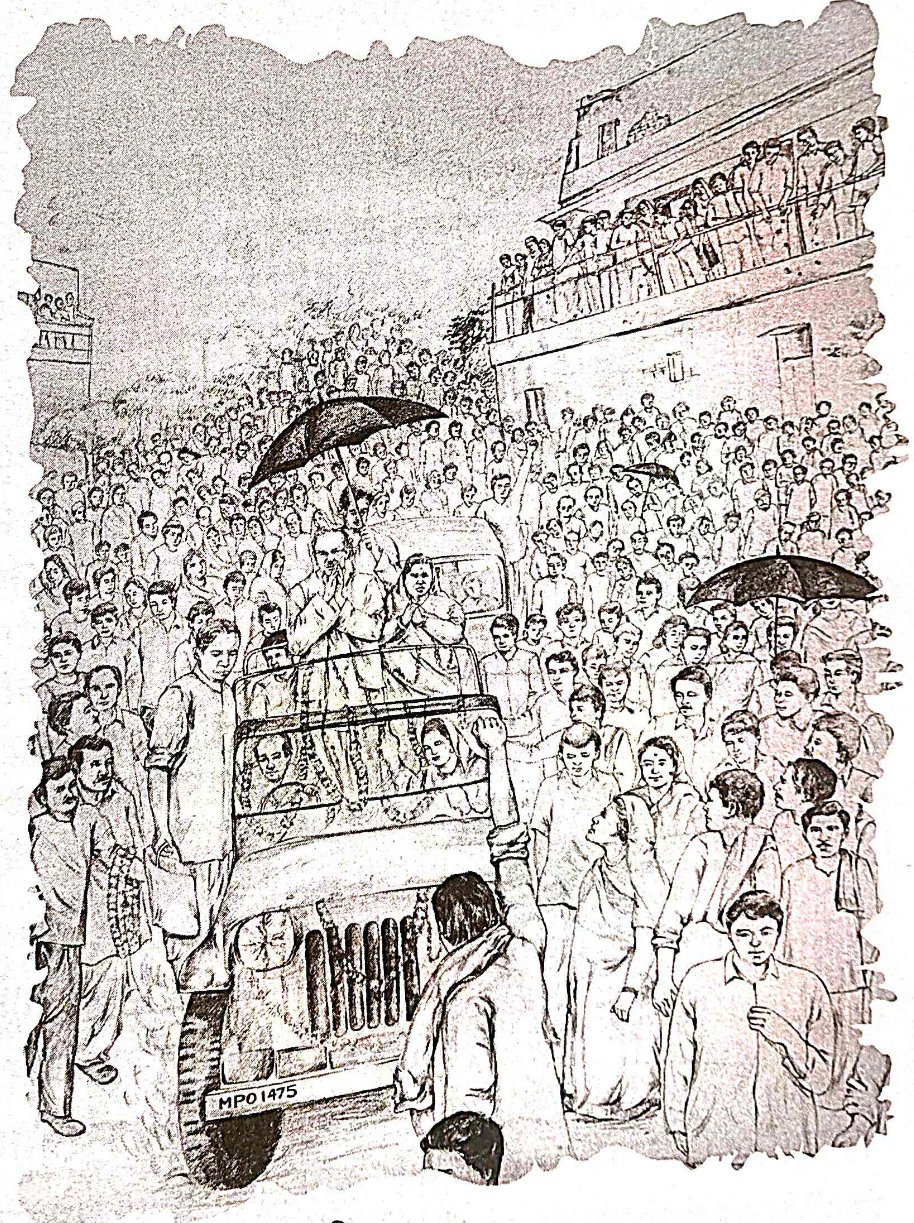

वंदनीया माताजी के साथ पूज्य गुरुदेव इन सभी आयोजनों में गए। वे भली भाँति संपन्न हुए। एक कार्यक्रम विलासपुर में चल रहा था, तभी उन्हें समाचार मिला कि ताईजी नहीं रहीं। ताईजी ने अपना शरीर 12 फरवरी, 1971 को छोड़ दिया। उनकी अंत्येष्टि आदि का कार्य मथुरा में हुआ। पूज्य गुरुदेव कार्यक्रम कराकर जब मथुरा आए, तब मरणोत्तर श्राद्ध का अन्य कर्मकांड पूरा किया।

तपोभूमि की सारी व्यवस्था पूज्य गुरुदेव ने वरिष्ठ अनुभवी कार्यकर्त्ताओं को सौंप दी। ट्रस्ट का गठन तपोभूमि में पहले से ही हो चुका था।

जब लोगों ने सुना कि पू. गुरुदेव, वं. माताजी सदैव के लिए मथुरा छोड़कर हरिद्वार जा रहे हैं, तब बहुत से परिजनों को दु:ख हुआ कि पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी का दर्शन एवं परामर्श उनके लिए अब सहज-सुलभ नहीं रह जाएगा। पूज्य गुरुदेव ने जाने से पूर्व 4-4 दिन के भेट-परामर्श शिविर चलाए, जिसमें पूरे देश से गायत्री परिजन गुरुदेव माताजी से मिलने के लिए आते रहे। 17 से 20 जून, 1971 विदाई समारोह का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें लाखों लोग सम्मिलित हुए। सभी ने गुरुदेव, माताजी को मथुरा में अंतिम प्रणाम निवेदन किया।

20 जून की दोपहर में एक खुली जीप में बैठकर गुरुदेव, माताजी ने मथुरा से हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया। लोगों के नेत्रों से आँसू बह रहे थे। जैसे भगवान कृष्ण मथुरा छोड़कर द्वारका चले गए, वैसा कुछ लग रहा था। अवतारी चेतना का कार्यक्षेत्र एक जगह तक सीमित नहीं होता, उन्हें अपने जीवन में बहुत कुछ करना होता है; कई विशेष कार्य पूरे करने होते हैं और योजनाएँ सफल बनानी होती हैं तो उनका कार्यक्षेत्र परिवर्तन उनके जीवन का सहज क्रम माना जाता है।

गायत्री तपोभूमि में पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी की पहनी हुई खड़ाऊँ गायत्री माता के बगल के कक्षों में स्थापित कर दी गईं। उसे ही अपने आराध्य गुरुसत्ता का प्रतीक मानकर आने वाले परिजन एवं तपोभूमि निवासी कार्यकर्त्ता दर्शन-प्रणाम करते हैं। गुरुदेव, माताजी स्थूलरूप से मथुरा से जा चुके थे, पर उनकी तप एवं प्राण-ऊर्जा की तरंगें सभी को सतत संरक्षण एवं मार्गदर्शन देने में तत्पर रहती थीं, आज भी हैं। परमपूज्य गुरुदेव, परमवंदनीया माताजी उसी दिन (20 जून को ही) रात्रि 10 बजे के लगभग शांतिकुंज हरिद्वार अपने नवनिर्मित आश्रम में पहुँच गए। कुछ लोग उनके साथ यहाँ से गए थे, वे आश्रम-व्यवस्था की विभिन्न जिम्मेदारियों को सँभालने में लग गए। पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी ने वहाँ उपस्थित परिजनों से 21 जून से 29 जून की अवधि में 9 दिवसीय साधना अनुष्ठान संपन्न कराया। इस प्रथम अनुष्ठान द्वारा गायत्री-उपासना का बीज आश्रम भूमि में डाला गया, जो कालांतर में अगणित गुना विशालता धारण कर अध्यात्म-पथ के लाखों पथिकों को आज शीतल छाया प्रदान कर रहा है। ❑

हमारे विचार क्रांति के बीज हैं, जो अगले दिनों धमारा करेंगे। तुम हमारा काम करो, हम तुम्हारा काम करेंगे। क्रांति के बीज किसी महान् विचारक के दिमाग में जन्मते हैं। वहाँ से फल-फूल कर क्रांतिधर्मी-साहित्य के रूप में बाहर आते हैं, संक्रामक रोग की तरह अन्य दिमागों में उपजकर बढ़ते हैं। सिलसिला जारी रहता है। क्रांति की उमंगों की बाढ़ आती है। सब ओर क्रांति का पर्व मनने लगता है। चिनगारी से आग और आग से दावानल बन जाता है। बुरे-भले सब तरह के लोग उसके प्रभाव में आते हैं। कीचड़ और दलदली क्षेत्र में भी आग लग जाती है।

—परमपूज्य गुरुदेव

देवकन्याओं द्वारा
जप–साधना एवं जनजागरण

मथुरा से चलकर 20 जून, 1971 रात्रि 10 बजे शांतिकुंज पहुँचने के बाद पू० गुरुदेव तो दस दिन रहकर तप–साधना के लिए हिमालय चले गए। वंदनीया माताजी ने शांतिकुंज

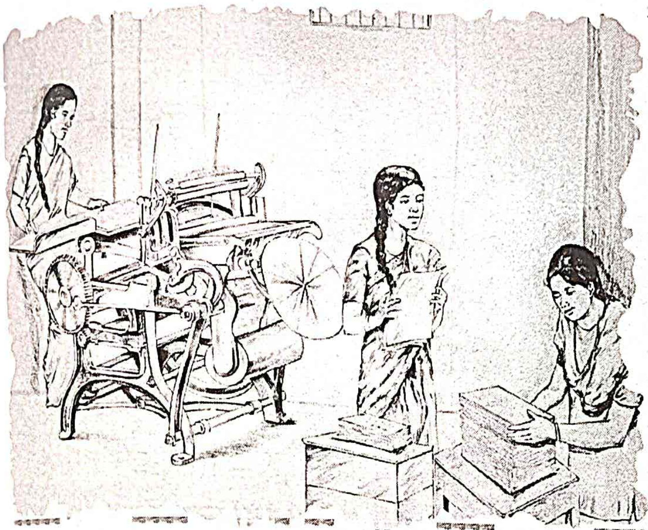

में नारी शक्ति के अभ्युदय के लिए अनवरत साधना का क्रम अपनाया। अखंड दीप के समक्ष अखंड जप की व्यवस्था की गई। कन्याओं की संख्या पहले चार थी, बाद में चौबीस और बढ़ते–बढ़ते सौ से अधिक हो गई।

साधना के साथ उनके शिक्षण का काम भी वंदनीया माताजी संपन्न करती रहीं। औपचारिक शिक्षा के साथ ही कर्मकांड तथा वक्तृत्व कला को भी समुचित स्थान दिया गया। परमवंदनीया माताजी द्वारा चौबीस लक्ष के चौबीस महापुरश्चरण भी इन कन्याओं के द्वारा सामूहिक साधना के रूप में संपन्न कराए गए। इन्हीं साधिकाओं को देवकन्याओं का संबोधन मिला। इन्हीं सुसंस्कारी विभूतियों द्वारा देशभर में नारी जागरण का बिगुल बजा।

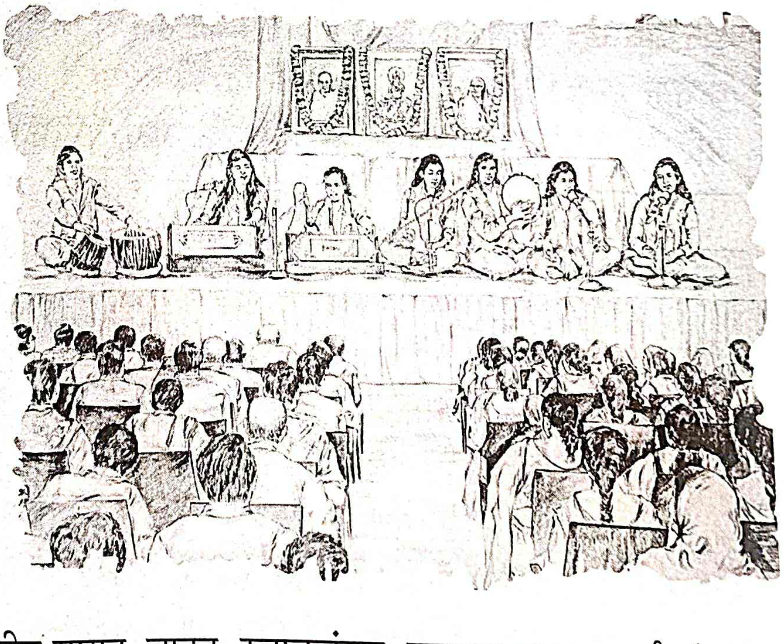

पू० गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी ने विधिवत् देवकन्या प्रशिक्षण विद्यालय आरंभ किया, जिसकी मुख्य अधिष्ठात्री भी माताजी स्वयं थीं। इसे प्रारंभ करते हुए वंदनीया माताजी ने कहा—"हमारे नारी जागरण का मतलब है—संवेदनाओं का जागरण और भावनाओं का विकास।

देवकन्याओं के प्रशिक्षण में संगीत गायन–वादन, स्वावलंबन, वक्तृत्व कला, कर्मकांड आदि विषय थे। प्रशिक्षित देवकन्याओं ने सारे देश में कार्यक्रम संपन्न करके नए कीर्तिमान स्थापित किए। ❐

नारी शक्ति के परमहितैषी गुरुदेव, माताजी

पू० गुरुदेव एवं माताजी नारी शक्ति के जागरण, उत्थान, विकास की बात सदैव सोचते थे और सुव्यवस्थित कार्यक्रम बनाकर उसे संपन्न कराते थे। वे हमेशा कहते थे—जिस देश की आधी जनसंख्या नारी, पिछड़ी, गिरी, दयनीय दशा में होगी, उस देश का समग्र विकास नहीं हो सकता।

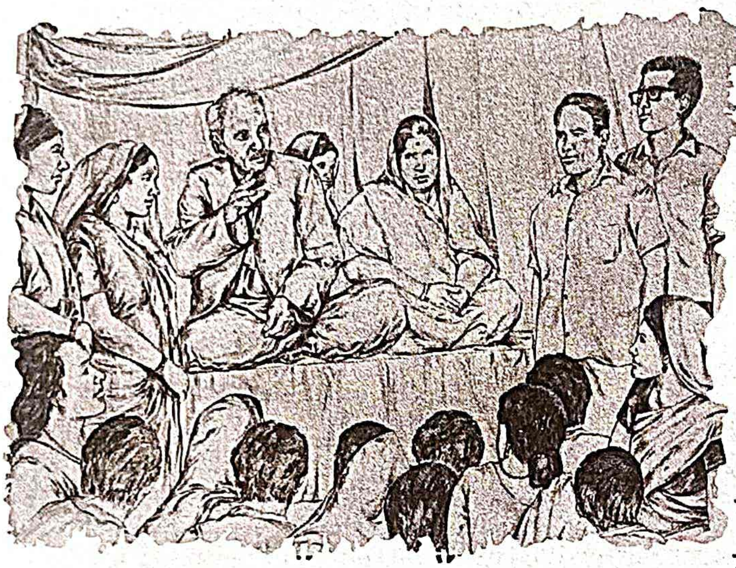

पू. गुरुदेव ने पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों में नारी को पुरुष के बराबर बिठाया; कहीं-कहीं पुरुषों से ऊपर ऊँचा स्थान दिया। वं. माताजी कहती थीं कि नारी शक्ति का उत्थान हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है। नारी को तरह-तरह से लांक्षित, तिरस्कृत कर उसे घरों की चहारदीवारी में कैद कर दिया गया है। आज भी उसके साथ कई-तरह का भेदभाव एवं अत्याचार होता है। नारी को उसका प्राचीन गौरवमयी स्वरूप पुनः उपलब्ध कराना होगा। नारी ने समाज को दिया-ही-दिया है, उसने लिया बहुत कम है। गुरुदेव ने महिला जागरण हेतु प्रवचन, साहित्य के अलावा विशिष्ट शिविर भी चलाए। कभी-कभी गुरुदेव माताजी दोनों साथ ही उनकी गोष्ठी लिया करते थे, कभी माताजी अकेले इस काम को करती थीं। देवकन्याओं के लिए भी अपना समय निकालकर वे अपने हृदय का स्नेह, प्यार, दुलार एवं उत्कृष्ट मार्गदर्शन उन्हें दिया करती थीं।

माताजी एवं पू. गुरुदेव से जुड़े उनके पास रहे जो लोग आज जीवित हैं, वे बताते हैं कि माताजी एवं गुरुदेव ने महिला जागरण के क्षेत्र में जो कार्य कर दिया है; नारी जागरण के अनेकों मंच (संगठन) मिलकर सम्मिलित रूप से भी उतना नहीं कर पाते। ❐

शक्तिपीठों की स्थापना शिलान्यास एवं उद्घाटन

पू. गुरुदेव एवं वं. माताजी गायत्री तपोभूमि से बहुत प्यार करते थे। जब वे यहाँ से गए तो मात्र सात वर्ष ही हुए थे, 1978 का वर्ष आया, जो तपोभूमि की स्थापना का रजत जयंती

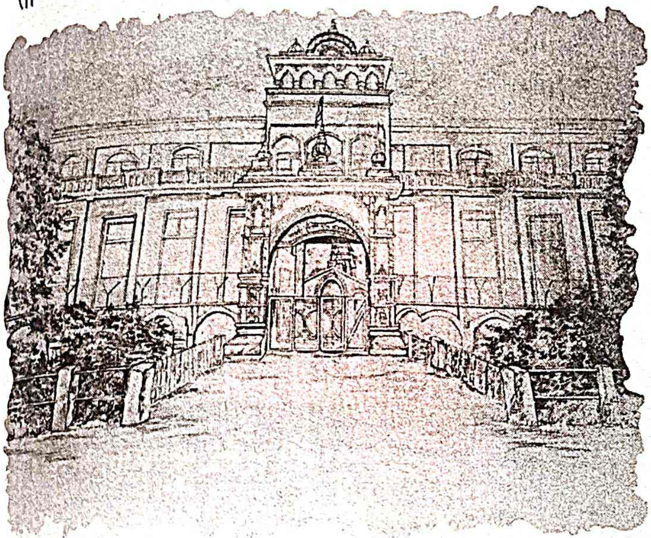

वर्ष था। तपोभूमि की स्थापना के 25 वर्ष, गायत्री जयंती 1978 को पूरे हुए थे। इस उपलक्ष्य में ऋषियुग्म कुछ विशेष करना चाहते थे।

'अपनों से अपनी बात' (अखण्ड ज्योति अगस्त, 1978) में वं. माताजी लिखती हैं—''युग निर्माण योजना (गायत्री तपोभूमि स्थापना) का वर्तमान रजत जयंती वर्ष हर्षोत्सवों के, खुशी बधाइयों के, धन्यवाद-अभिनंदनों के रूप में नहीं मनाया जाएगा, वरन उसमें कुछ ऐसे ठोस कदम उठाए जाएँगे, जिनके आधार पर नवयुग के अवतरण की गति में तीव्रता आ सके।''

शक्तिपीठों के निर्माण की पृष्ठभूमि की ओर इंगित करती हुई माताजी आगे लिखती हैं—''रजत जयंती वर्ष में गायत्री तीर्थ (शक्तिपीठ) निर्माण का संकल्प 24 तक सीमित किया गया है...... आगे इनकी संख्या 108 और उससे भी अधिक हो सकती है।''

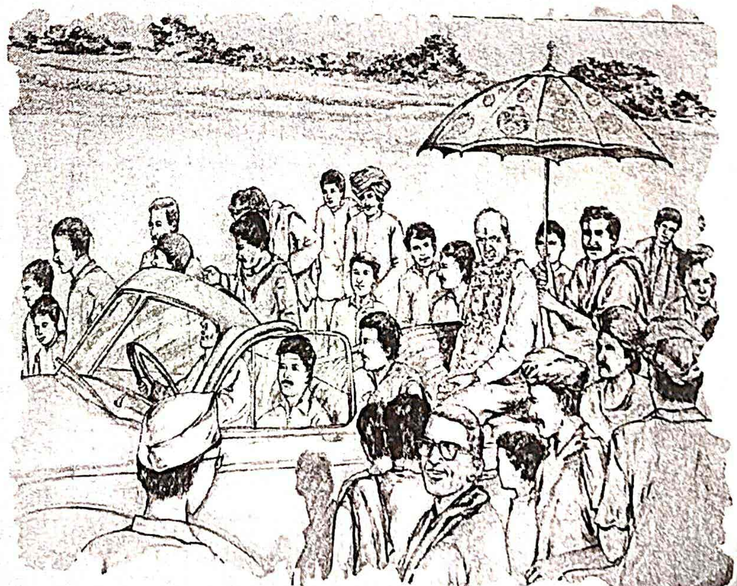

हम सभी देख रहे हैं कि पू० गुरुदेव, वं. माताजी के शक्तिपीठों के निर्माण का संकल्प मत्स्यावतार की तरह 24 से 108, 108 से 240 फिर 2400 से भी आगे फैलता गया। आज देश-विदेश में हजारों शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ आदि स्थापित होकर लोक-मंगल के कार्य करने में संलग्न हैं। ❒

नवयुग के संबंध में
ऋषियुग्म की भविष्यवाणी

पू. गुरुदेव, वं. माताजी ने सतयुगी व्यवस्था के लिए मानव को जो करना है, उसका मार्गदर्शन दिया, ताकि मनुष्य किसी सौभाग्य, चमत्कार आदि के भरोसे न रहकर अपने पुरुषार्थ द्वारा अपने उज्ज्वल भविष्य का, सतयुग का निर्माण कर सके। साथ ही उन्होंने उज्ज्वल भविष्य संबंधी भविष्यवाणी भी की, ताकि मनुष्य आश्वस्त हो सके कि इस दिशा में किया गया उसका प्रयत्न-पुरुषार्थ व्यर्थ नहीं जाएगा; सतयुग आना-ही-आना है, उज्ज्वल भविष्य होना-ही-होना है। यह मानव की आकांक्षा और परमात्मा की इच्छा है।

गुरुदेव ने 'हमारी वसीयत और विरासत' पुस्तक पृ. 155 में लिखा है—''समस्त संसार के मूर्द्धन्यों, शक्तिवानों और विचारवानों की आशंका एक ही है कि विनाश होने जा रहा है। हमारा अकेले का कथन यह है कि उलटे को उलटकर सीधा किया जाएगा.....विनाश की घटाओं को प्रचंड तूफानी प्रवाह अगले दिनों में उड़ाकर कहीं ले जाएगा और अँधेरा चीरते हुए प्रकाश से भरा वातावरण दृष्टिगोचर होगा।''

इसके पहले वे लिखते हैं कि असुरता द्वारा उत्पन्न हुई विभीषिकाओं को सफल नहीं होने दिया जाएगा। परिवर्तन इस प्रकार होगा कि जो लोग महाविनाश में संलग्न हैं, उसकी संरचना कर रहे हैं, वे उलट जाएँगे या उनको उलट देने वाले नए पैदा हो जाएँगे। विश्वशांति में भारत की निश्चित ही कोई बड़ी भूमिका होगी।

पूज्य गुरुदेव ने कहा है—प्रज्ञायुग निश्चित आएगा और उसकी विशेषताएँ कुछ इस तरह होंगी—

प्रज्ञायुग के नागरिक बड़े आदमी नहीं, महामानव बनने की महत्त्वाकांक्षा रखेंगे। सच्ची प्रगति इसी में समझी जाएगी कि गुण-कर्म-स्वभाव की दृष्टि से किसने अपने आप को कितना श्रेष्ठ, समुन्नत बनाया।

प्रज्ञायुग में चिंतन, आचरण एवं व्यवहार के सभी पक्षों में कायाकल्प जैसा ही रूप होगा।

प्रज्ञायुग में हर व्यक्ति सामाजिक नीति-मर्यादाओं को महत्त्व देगा। ऐसा कोई भी कार्य न करेगा, जिससे मानवीय गरिमा एवं समाज-व्यवस्था को आँच आती हो।

प्रज्ञायुग में सभी संतोषी नीतिवान, उदार एवं सरल-सौम्य जीवनपद्धति अपनाएँगे। मिल-बाँटकर खाएँगे, हँसती-हँसाती जिंदगी जिएँगे।

'परिवर्तन के महान क्षण' पुस्तक में (पृ. 32) पू. गुरुदेव ने नारी के लिए लिखा है—''नारी प्रधान इक्कीसवीं सदी का वातावरण ऐसा होगा, जिसे सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा की संयुक्त शक्ति का क्रियाकलाप कहा जा सके।''

इक्कीसवीं सदी, उज्ज्वल भविष्य भाग-2, पृ. 56 पर पूज्य गुरुदेव लिखते है—

''यों अड़ंगा अटकाने और प्रतिगामिता बनाए रहने वाले दुराग्रहियों की भी सर्वथा कमी न रहेगी, पर अंततः जीतेगा सृजन ही, सतयुग की वापसी होकर रहेगी।'' ❒

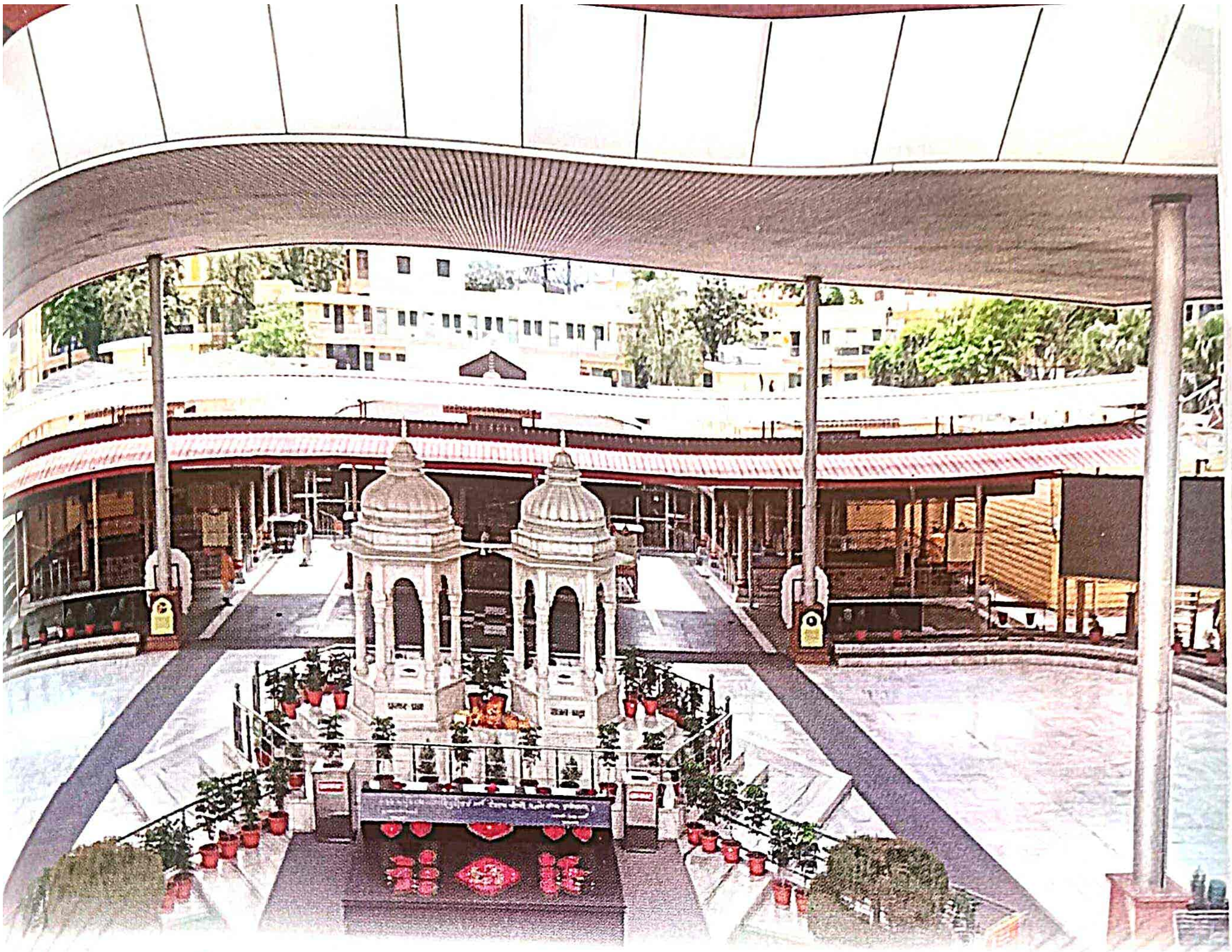

शांतिकुंज स्थित पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी के पावन प्रतीक
प्रखर प्रज्ञा - सजल श्रद्धा

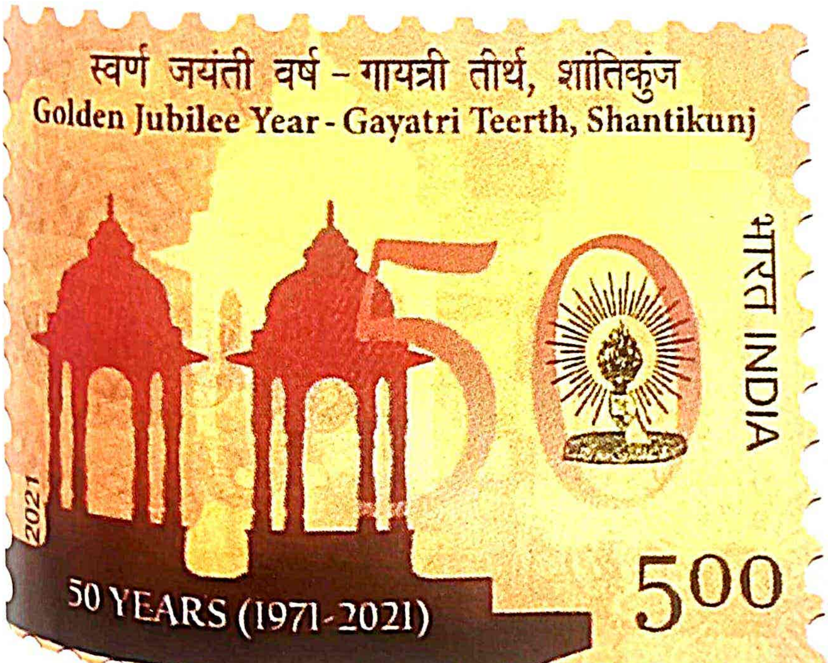

शांतिकुंज के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में भारत सरकार द्वारा ₹ 5 का डाक टिकट 2021 में जारी किया गया।

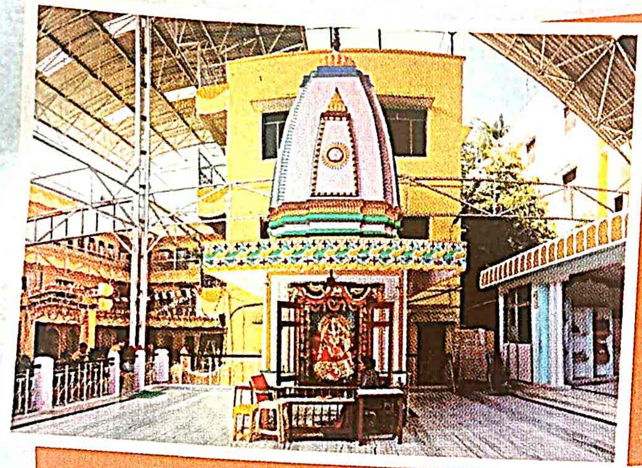

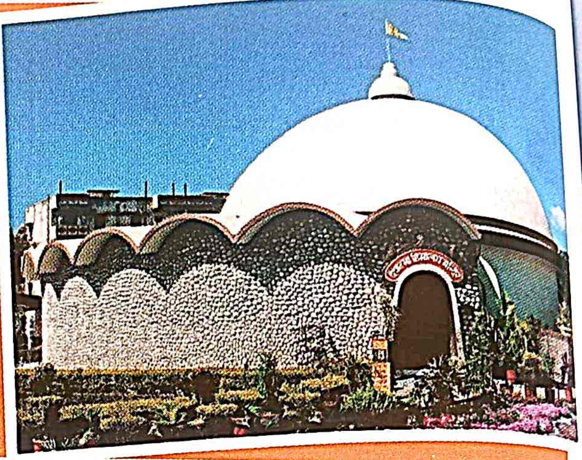

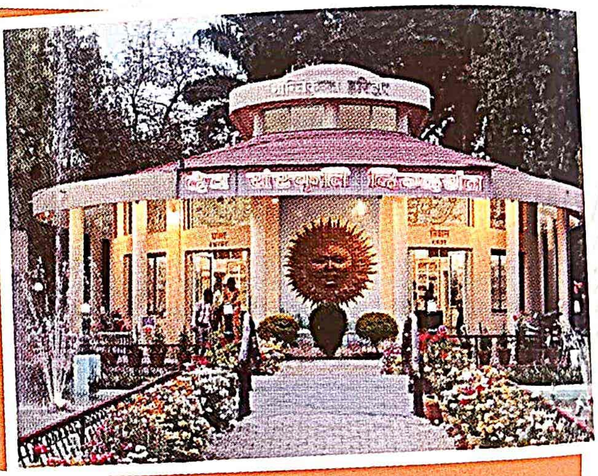

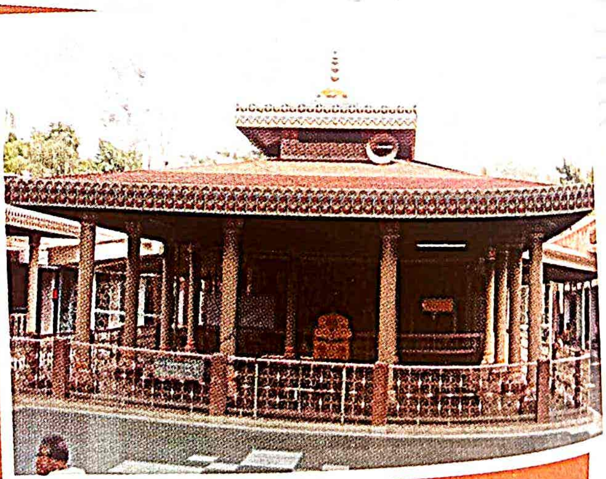

अध्यात्म जगत का महाकेंद्र शांतिकुंज बनाया।
ऋषि परम्परा, सेवा-साधना सारे जग में फैलाया।।

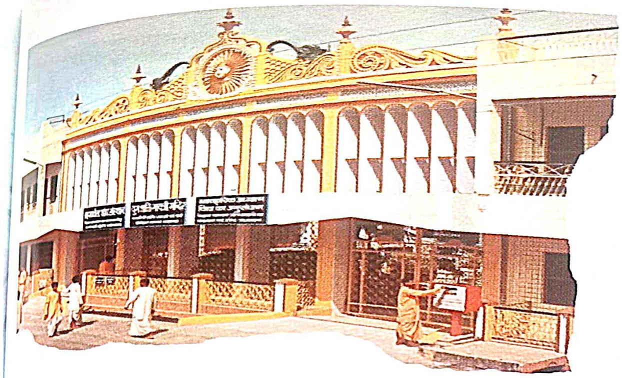

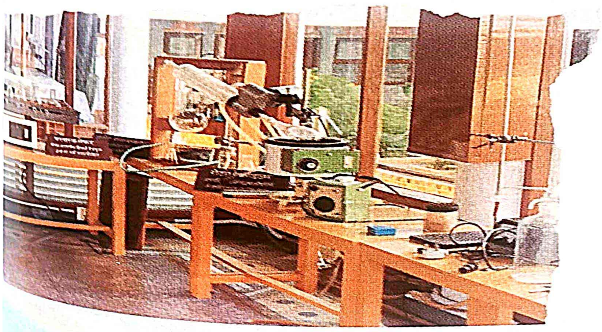
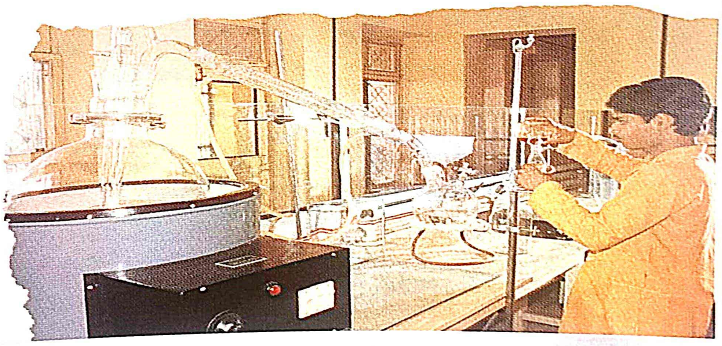

अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय तथा शोध का अद्वितीय केंद्र - ब्रह्मवर्चस (शांतिकुंज, हरिद्वार)

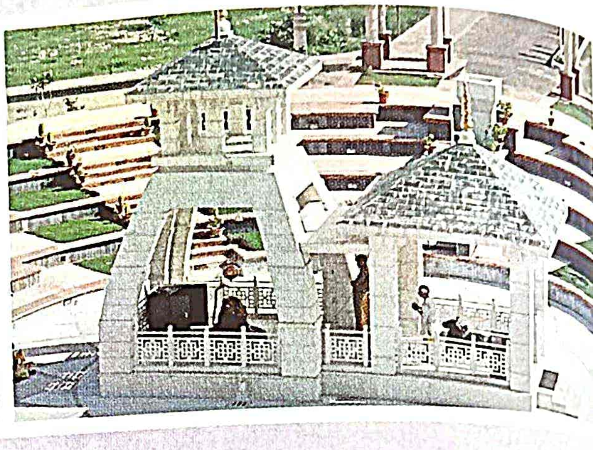

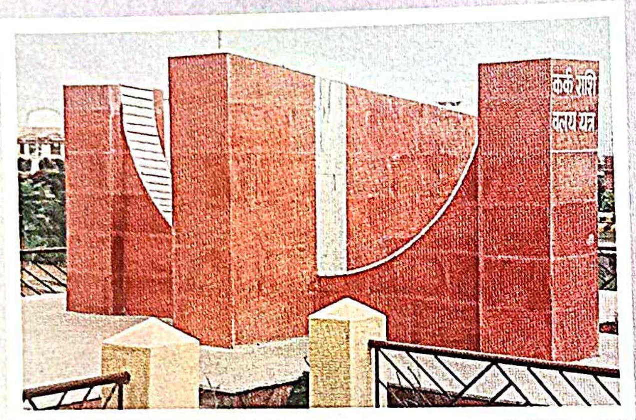

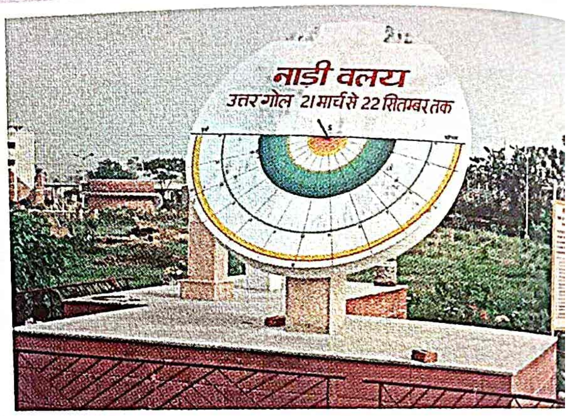

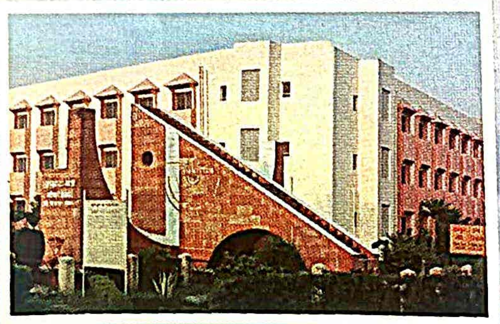

पूज्य गुरुदेव की दिव्य शिक्षा केंद्र की आदर्श आकाँक्षा को मूर्त रुप देत देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

भारत सरकार द्वारा महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पूज्यवर को 15 अगस्त 1988 को ताम्रपत्र भेंट किया गया।

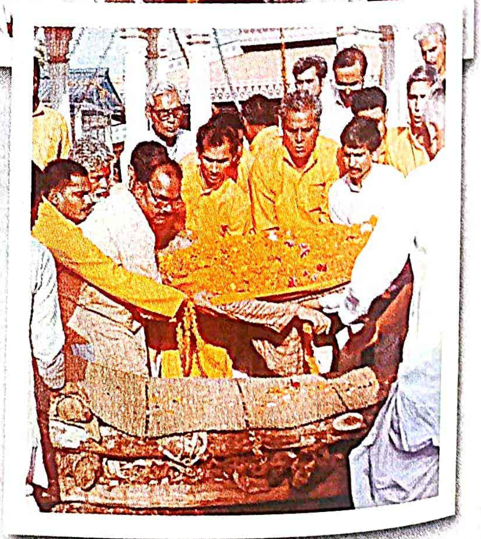

गायत्री जयंती 2 जून 1990 को पूज्यवर का महाप्रयाण

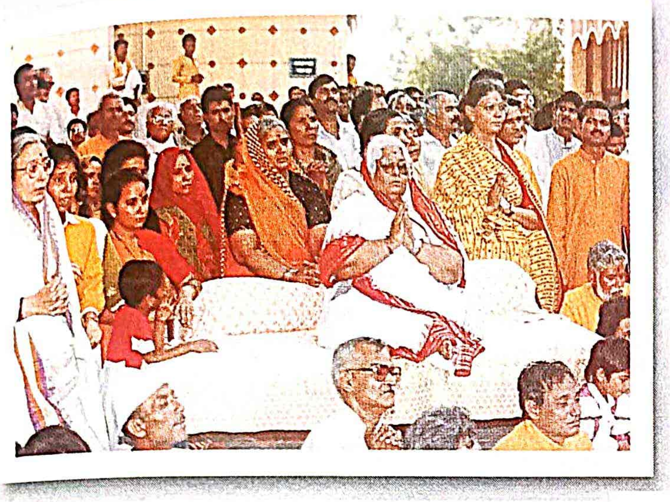
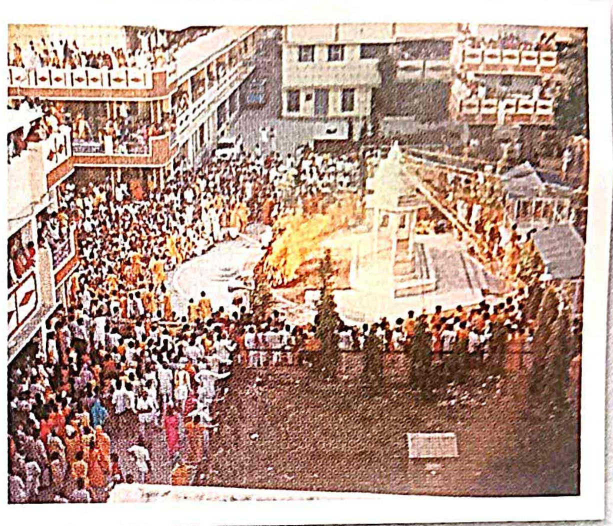
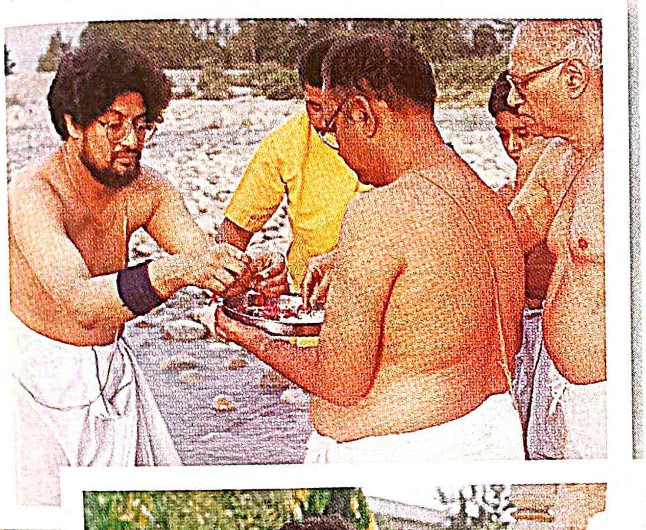

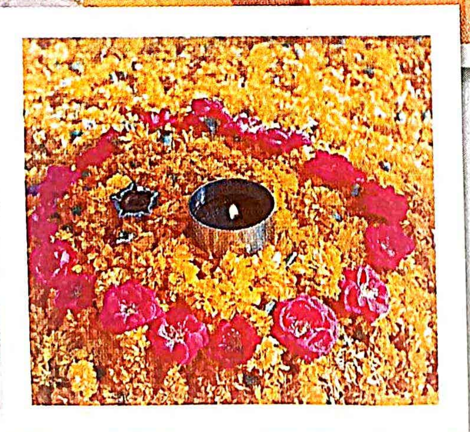

गायत्री जयंती 2 जून 1990
को पूज्यवर का महाप्रयाण

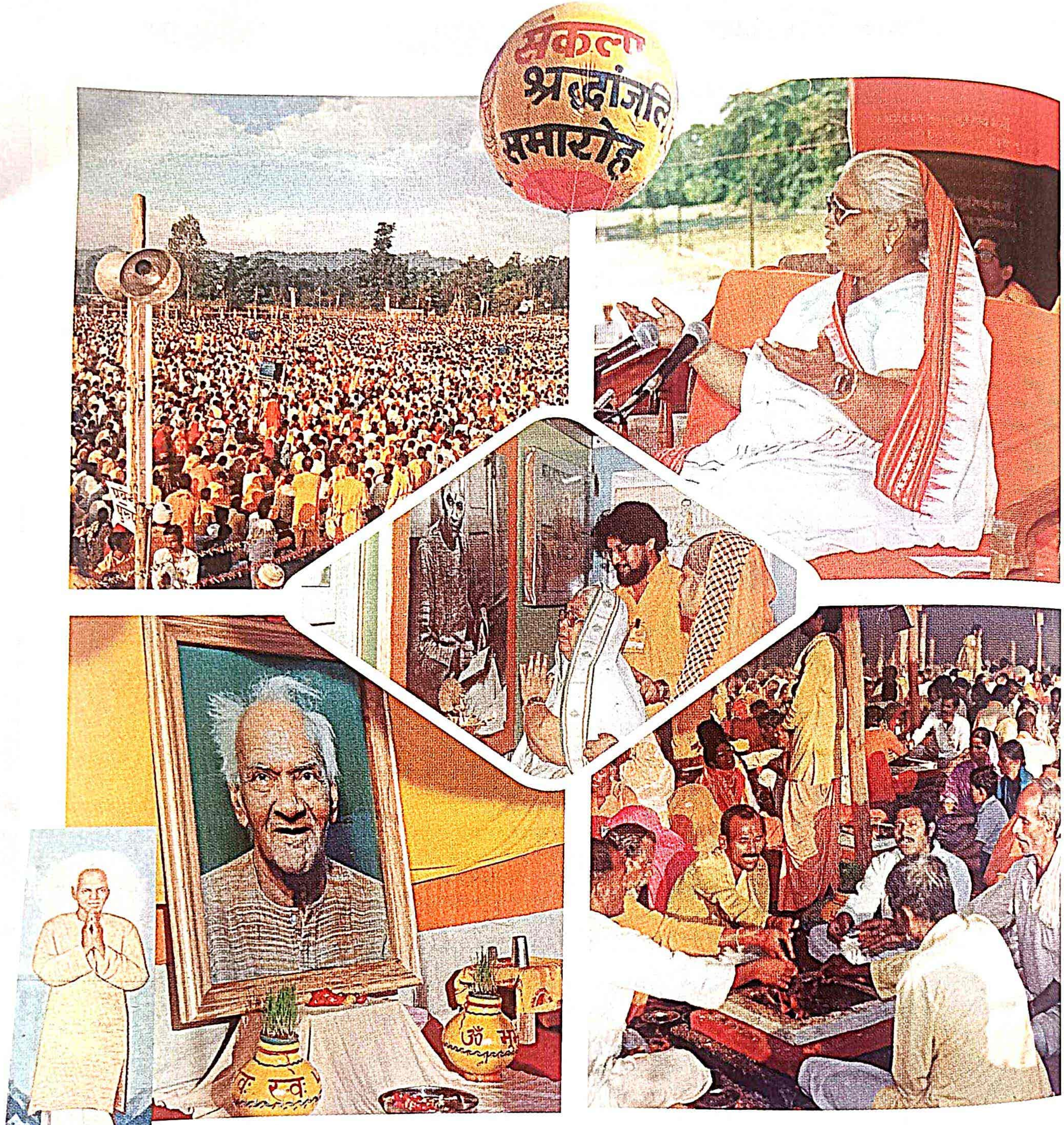

वंदनीया माताजी के संरक्षण में हरिद्वार में आयोजित विराट श्रद्धांजलि समारोह (1-4 अक्टूबर 1990)

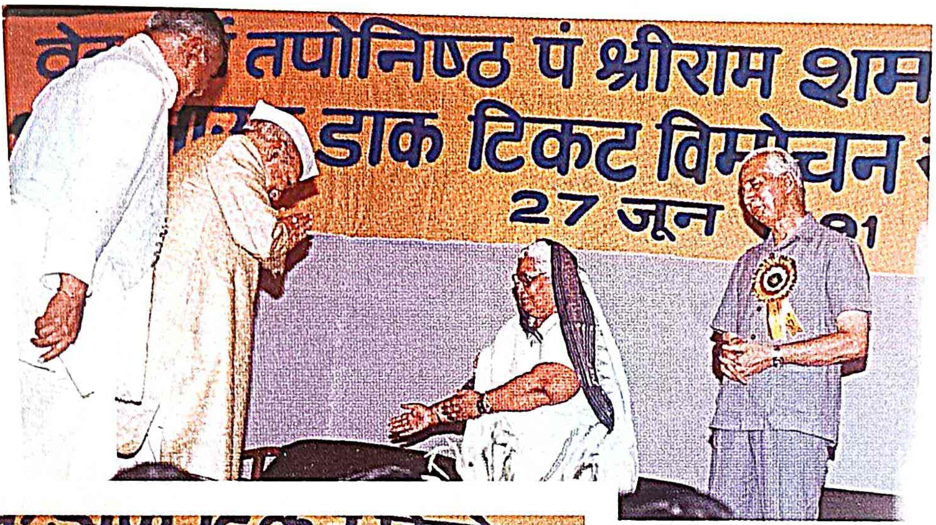

महामहिम उपराष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा जी ने पूज्य आचार्य जी के सम्मान में 27 जून 1991 में 1 रु. के डाक टिकट का विमोचन किया ।

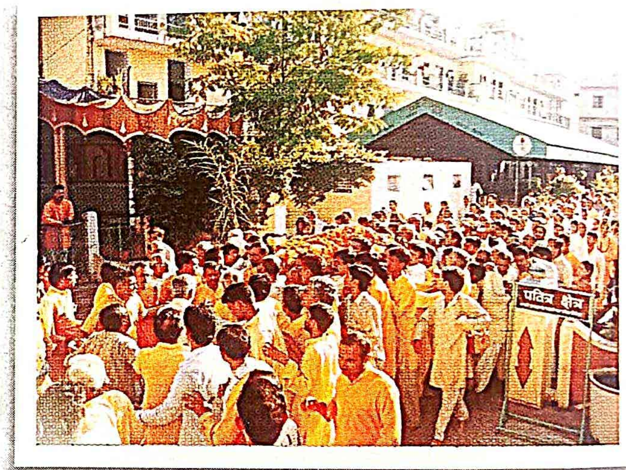

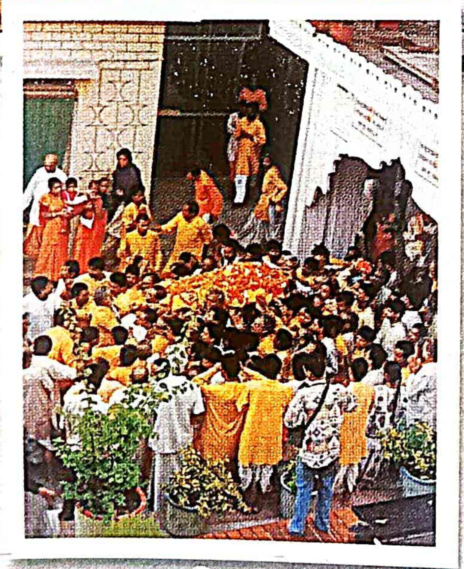

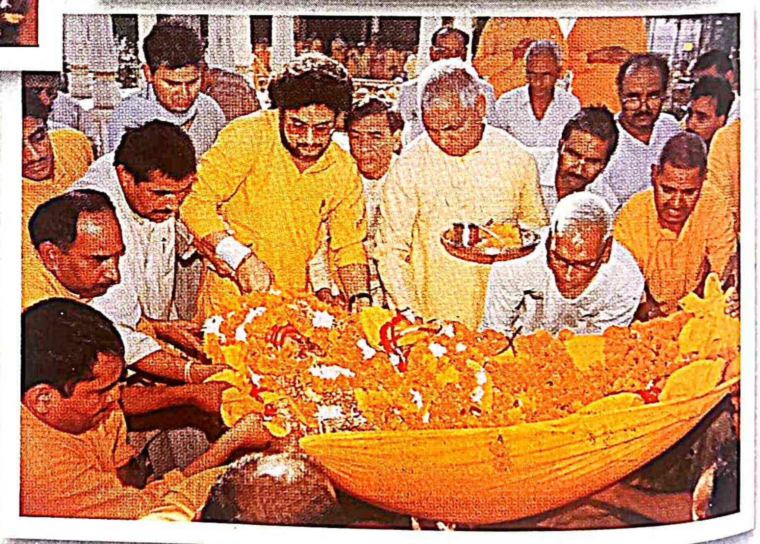

वंदनीया माताजी का महाप्रयाण भाद्रपद पूर्णिमा (महालया)
19 सितम्बर 1994

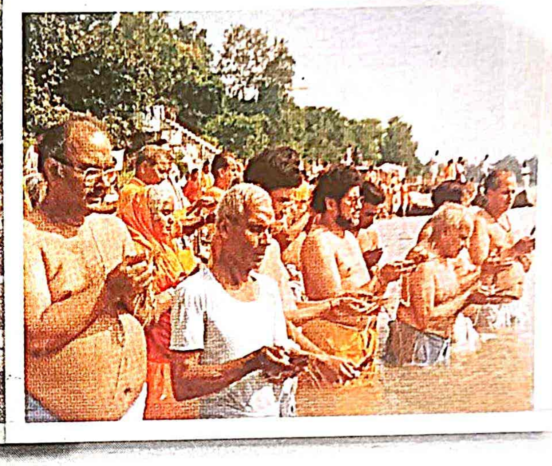

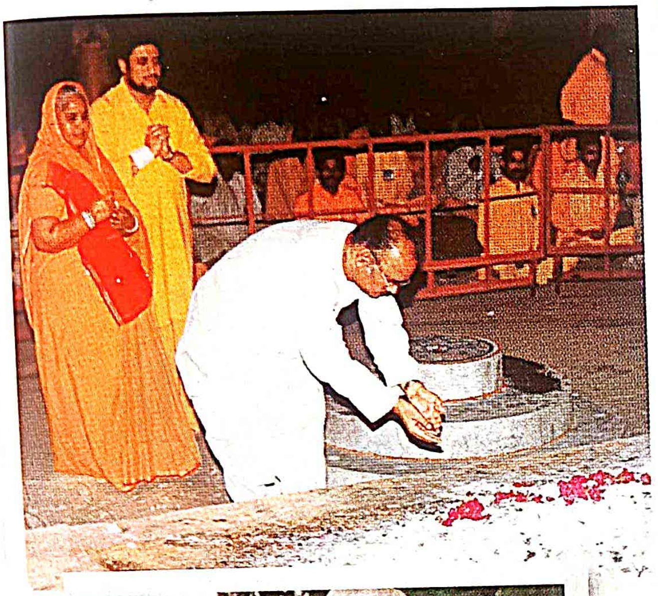

वंदनीया माताजी का महाप्रयाण
भाद्रपद पूर्णिमा (महालया)
19 सितम्बर 1994

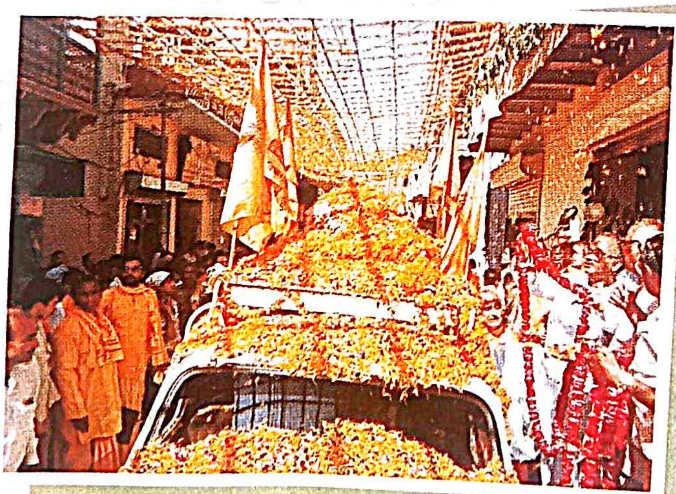

वंदनीया माताजी को दिल्ली, गायत्री तपोभूमि एवं अखण्ड ज्योति संस्थान में भावभरी श्रद्धांजलि दी गई।

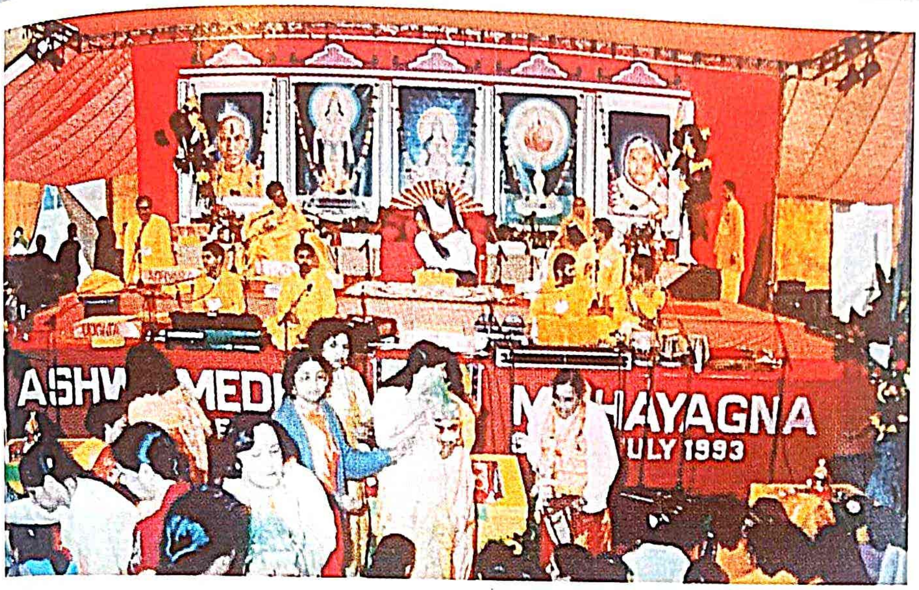

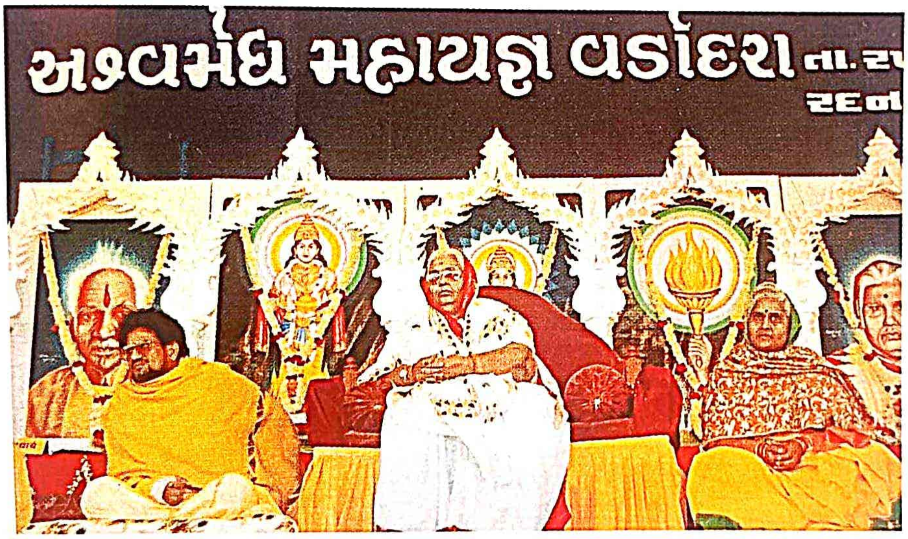

वंदनीया
माताजी
के दिव्य
संरक्षण
में
संपन्न
हुए
अश्वमेध
यज्ञों
की
श्रृंखला
के कुछ दृश्य

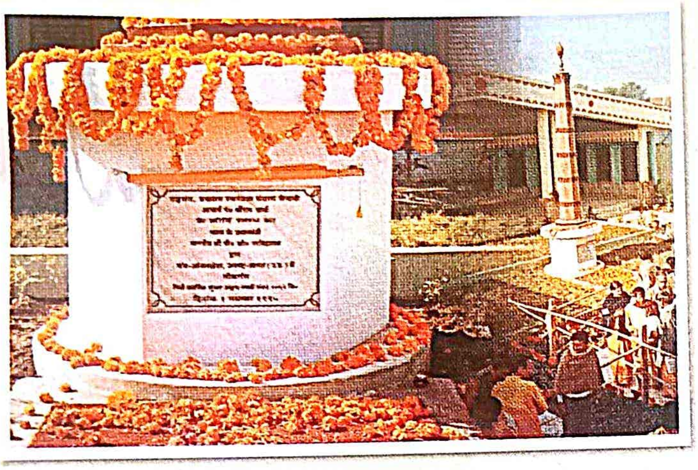

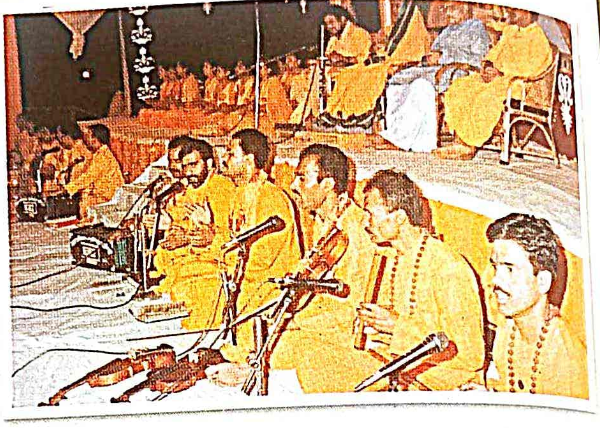

प्रथम पूर्णाहुति एवं संकल्प श्रद्धांजलि (वंदनीया माताजी) समारोह तथा भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री पी. वी. नरसिम्हा राव द्वारा पूज्य गुरुदेव के कीर्तिस्तम्भ का लोकार्पण 3 से 7 नवम्बर 1995

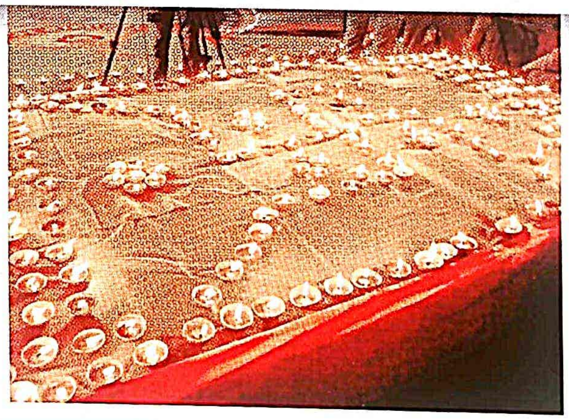

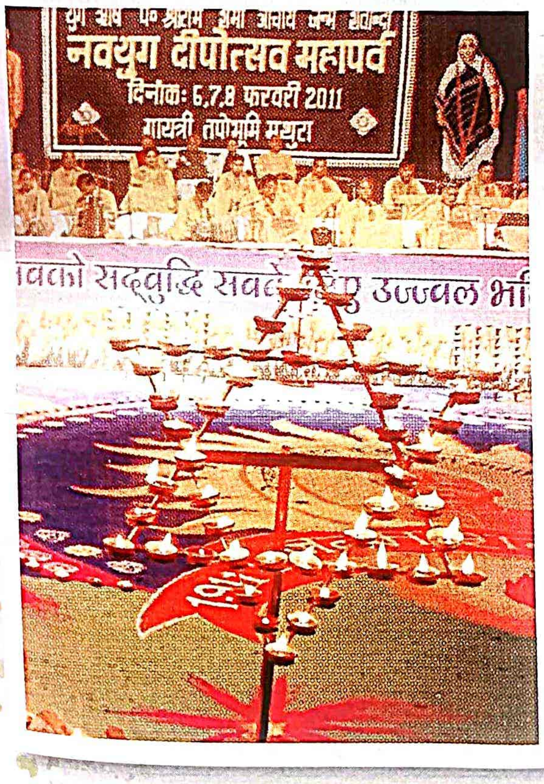

परम पूज्य गुरुदेव के पावन
जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में
गायत्री तपोभूमि मथुरा में आयोजित
शताब्दी समारोह कार्यक्रम
बसंत पर्व 6,7,8 फरवरी 2011

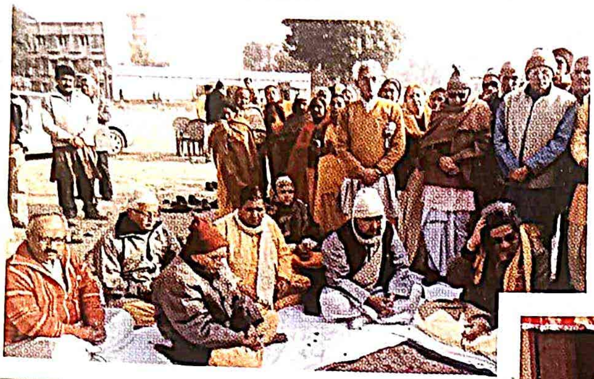

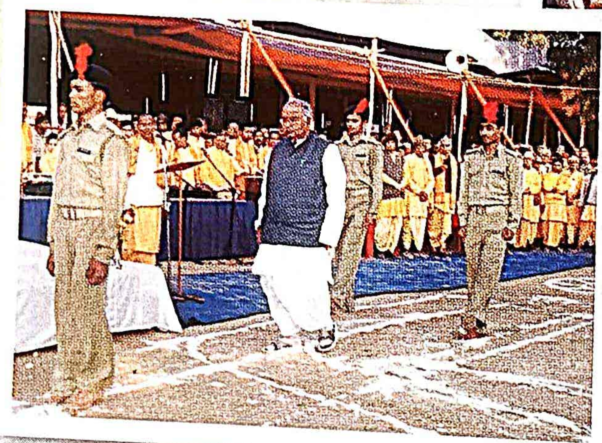

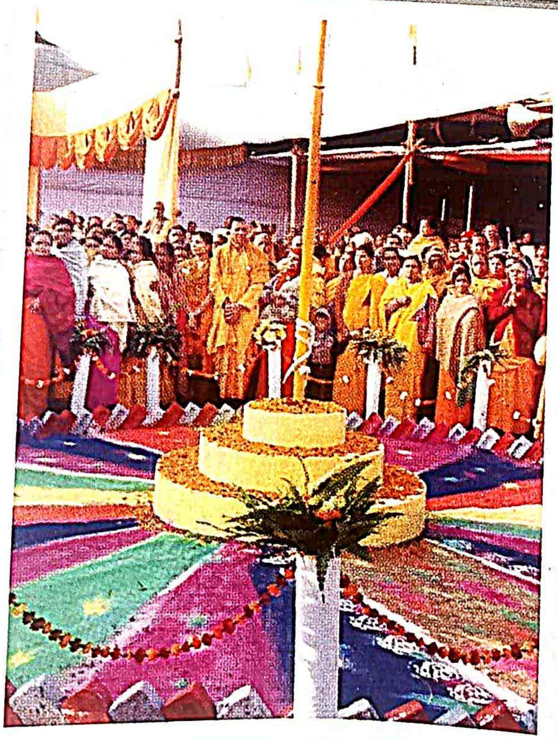

परम पूज्य गुरुदेव के पावन जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में गायत्री तपोभूमि मथुरा में आयोजित शताब्दी समारोह कार्यक्रम बसंत पर्व 6,7,8 फरवरी 2011

सूक्ष्मीकरण साधना एवं हीरक जयंती समारोह

परमपूज्य गुरुदेव शक्तिपीठों के शिलान्यास एवं उद्घाटन के कार्यक्रमों में अप्रैल, 1982 तक गए। उसके बाद उन्होंने शांतिकुंज से बाहर जाना बंद कर दिया। पू. गुरुदेव ने 1984 से शांतिकुंज जाने वालों से मिलने का क्रम भी लगभग बंद-सा कर दिया। अप्रैल, 1984 रामनवमी से वे सूक्ष्मीकरण साधना में चले गए।

लोगों के द्वारा दर्शन देने हेतु आग्रह पर उन्होंने कहा—कार्य की विशिष्टता को देखते हुए एकांतवास अनिवार्य हो गया है, जिसके चलते भेट-परामर्श का पहले जैसा क्रम अब नहीं चल पाएगा। जिन्हें जरूरी मार्गदर्शन देना होगा, उन्हें हम सूक्ष्मरूप से मार्गदर्शन अवश्य देंगे।

पू. गुरुदेव ने जून 1984 की पत्रिका के लेखों में अपने जीवन के उन सिद्धांतों का विवेचन प्रस्तुत किया, जिन्हें अपनाकर वे महान बनते चले गए। उनके जीवन दर्शन को जानने से लोगों को बड़ी प्रसन्नता हुई एवं प्रेरणा मिली, फिर भी परिजन उनके जीवन परिचय को अच्छे-से जानने की उत्सुकता में थे। परिजनों की भावना को देखकर पूं० गुरुदेव ने अप्रैल, 1985 के अखण्ड ज्योति के अंक को 'जीवन वृत्तांत विशेषांक' के रूप में लिखा, जिसके प्रकाशन से सभी को बहुत संतोष मिला। अपने आराध्य की जीवनगाथा हर कोई अच्छे से जानना चाहता है। गायत्री परिजनों में भी यही बात थी। नवंबर, 1985 में 'हमारी वसीयत और विरासत' का प्रकाशन कराकर गुरुदेव ने परिजनों का हृदय आनंद से भर दिया।

1986-87 में पूज्यवर की हीरक जयंती मनाई गई। पूरे देश में विशाल यज्ञों के साथ राष्ट्रीय एकता सम्मेलन हुए, जिसके द्वारा राष्ट्र-प्रेम से भरा आध्यात्मिक वातावरण उत्पन्न हुआ, जिसके प्रभाव से लाखों लोग, राष्ट्रीय एकता, समता और राष्ट्र उत्थान के कार्यों को करने के लिए संकल्पित हुए।

इसी बीच पू. गुरुदेव ने राष्ट्र कुंडलिनी जागरण-साधना भी संपन्न की और उद्घोष न किया कि भारत राष्ट्र की कुंडलिनी जाग्रत हो चुकी है। यह देश निकट भविष्य में ही हर क्षेत्र में अभीष्ट प्रगति करता हुआ, अपने महान गौरव को पुनः प्राप्त करने हेतु सतत अग्रसर होता जाएगा।

विश्व की समस्त समस्याओं और उनके उत्कृष्ट समाधान को लेकर पू. गुरुदेव ने लंबे समय तक चिंतन-मनन किया था। विश्वमानवता को उत्कृष्ट शिखर पर ले जाने वाले आधारों-सिद्धांतों को भी उन्होंने वर्षों से ढूँढ़ा था। उन सबको जन-जन तक पहुँचाने के लिए 1988 से 1990 के बीच उनका उत्कृष्टतम लेखन-कार्य संपन्न हुआ। क्रांतिधर्मी साहित्य इसी काल का नवनीत है, जो समस्त मानव जाति के लिए इस युग का मार्गदर्शक साहित्य है। ❐

अंतिम संदेश परम पूज्य गुरुदेव

अस्सी वर्ष जी गई लंबी सोद्देश्य शरीर-यात्रा पूरी हुई। इस अवधि में परमात्मा को हर पल अपने हृदय और अंत:करण में प्रतिष्ठित मानकर एक-एक क्षण का पूरा उपयोग किया है। शरीर अब विद्रोह कर रहा है। यों उसे कुछ दिन और घसीटा भी जा सकता है, पर जो कार्य परोक्ष मार्गदर्शक सत्ता ने सौंपे हैं, वे सूक्ष्म और कारणशरीर से ही संपन्न हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में कृशकाय शरीर से मोह का कोई औचित्य नहीं ।

'ज्योति बुझ गई' यह भी नहीं समझा जाना चाहिए। अब तक के जीवन में जितना कार्य इस स्थूलशरीर ने किया है, उससे सौ गुना सूक्ष्म अंत:करण से संभव हुआ है। आगे का लक्ष्य विराट है। संसार भर के छह अरब मनुष्यों की अंतश्चेतना को प्रभावित और प्रेरित करने, उनमें आध्यात्मिक प्रकाश और ब्रह्मवर्चस् जगाने का कार्य पराशक्ति से संभव है। परिजन, जिन्हें हमने ममत्व के सूत्र से बाँधकर परिवार के रूप में विस्तृत रूप दे दिया है, संभवत: स्थूल नेत्रों से हमारी काया को नहीं देख पाएँगे, पर उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि इस शताब्दी के अंत तक, जब तक सूक्ष्मशरीर कारण के स्तर तक न पहुँच जाए, हम शांतिकुंज परिसर व प्रत्येक परिजन के अंत:करण में विद्यमान रहकर, अपने बालकों में नवजीवन और उत्साह भरते रहेंगे। उनकी समस्या का समाधान उसी प्रकार निकलता रहेगा, जैसा कि हमारी उपस्थिति में उन्हें उपलब्ध होता। हमारे आपसी संबंध अब और भी प्रगाढ़ हो जाएँगे, क्योंकि हम बिछड़ने के लिए नहीं जुड़े थे। हमें एक क्षण के लिए भुला पाना आत्मीय परिजनों के लिए कठिन हो जाएगा। ब्रह्मकमल के रूप में हम तो खिल चुके, किंतु उसकी शोभा और सुगंधि के विस्तार हेतु ऐसे अगणित ब्रह्मबीज-देवमानव उत्पन्न करने जा रहे हैं, जो खिलकर समूचे संस्कृति-सरोवर को सौंदर्य-सुवास से भर सकें, मानवता को निहाल कर सकें।

ब्रह्मनिष्ठ आत्माओं का उत्पादन, प्रशिक्षण एवं युग निर्माण के महान कार्यों में उनका नियोजन बड़ा कार्य है। यह कार्य हमारे उत्तराधिकारियों को करना है। शक्ति हमारी काम करेगी तथा प्रचंड शक्ति-प्रवाह अगणित देवात्माओं को इस मिशन से अगले दिनों जोड़ेगा। उन्हें संरक्षण, स्नेह देने और सँवारने का कार्य माताजी संपन्न करेंगी। हम सतयुग की वापसी के सरंजाम में जुट जाएँगे। जो भी संकल्पनाएँ नवयुग के संबंध में हमने की थीं, वे साकार होकर रहेंगी। इसी निमित्त कायपंजर का सीमित परिसर छोड़कर हम विराट घनीभूत प्राण-ऊर्जा के रूप में विस्तृत होने जा रहे हैं ।

देवसमुदाय के सभी परिजनों को मेरा कोटि-कोटि आशीर्वाद, आत्मिक प्रगति की दिशा में अग्रसर होने हेतु अगणित शुभकामनाएँ।

—श्रीराम शर्मा आचार्य

युगऋषि का महाप्रयाण

गायत्री जयंती के पावन पर्व के दिन प्रात: 8:00 बजे परमवंदनीया माताजी पूज्यवर को प्रणाम कर अपने उद्‌बोधन के लिए शांतिकुंज के प्रवचन हॉल पहुँचीं; देवकन्याओं द्वारा युग संगीत चल रहा था—'माँ तेरे चरणों में हम, शीश झुकाते हैं।' इन्हीं पंक्तियों के स्वर मानो पूज्यवर को सुनाई दिए और वे उसी क्षण 'आद्यशक्ति गायत्री माता' की चेतना में समाहित हो गए।

उन्होंने अपना स्थूलशरीर त्यागने और सूक्ष्मशरीर में जाने के संकेत अपनी लेखनी से पहले ही दे दिए थे। परमपूज्य गुरुदेव का स्पष्ट निर्देश था कि मेरे जाने के बाद कोई भी कार्यक्रम न रुके। दैनिक यज्ञ, पूजन, आरती, ध्यान, नादयोग आदि ज्यों-के-त्यों चलते रहें। पू. गुरुदेव के शरीर छोड़ने की खबर शांतिकुंज क्षेत्र से आए परिजनों को तब दी गई, जब वे भोजन प्रसाद प्राप्त कर चुके थे। महाप्रयाण की खबर पूरे देश में कुछ ही घंटों में फैल गई। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन दोनों ने इस समाचार को प्रमुखता से प्रसारित किया, समाचारपत्रों ने भी महाप्रयाण के समाचार को प्रमुखता से छापा। क्षेत्रीय परिजनों को शांतिकुंज आने से मना किया, उन्हें ब्रह्मदीप यज्ञों की तैयारी में जुटने को प्रेरित किया गया।

इस प्रकरण में उल्लेखनीय प्रसंग यह है कि पूज्यवर ने 7-8 जून, 1990 को देश के छह स्थानों पर विराट ब्रह्मदीप यज्ञ की घोषणा दिनांक 30 अप्रैल, 1990 को कर यह कहा था—"मैं सभी जगह में जाऊँगा।" प्रश्न यह उठता रहा कि सभी जगह एक साथ, एक दिन कैसे जाएँगे? समाधान मिला कि उनका 'अस्थिकलश' लेकर सभी स्थानों पर पूज्यवर के प्रतिनिधि पहुँचेंगे। प्रज्ञावतार की लीला को जानकर सभी अभिभूत थे। ❐

वंदनीया माताजी द्वारा परिजनों को मार्गदर्शन

2 जून, गायत्री जयंती के दिन जब महाप्रयाण का समाचार सभी परिजनों को इस संदेश के साथ मिला कि अपने-अपने क्षेत्रों में आयोजित विराट ब्रह्मदीप यज्ञों की तैयारी में लोग लगे रहें? पू० गुरुदेव के शरीर का अंतिम दर्शन करने का मोह छोड़ दें। कुछ अति भावनाशील परिजनों को छोड़कर सभी ने वंदनीया माताजी के आदेश को शिरोधार्य किया। ब्रह्मदीप यज्ञ के सभी छह आयोजन पूरी सफलता के साथ संपन्न हुए। परिजनों को गुरुद्वारा शांतिकुंज आकर अपनी आराध्य गुरुसत्ता को श्रद्धांजलि देने का मन हो रहा था। अतः उनकी भावनाओं को देखते हुए वंदनीया माताजी ने श्रद्धांजलि समारोह (1-4 अक्टूबर, 1990) की घोषणा कर दी।

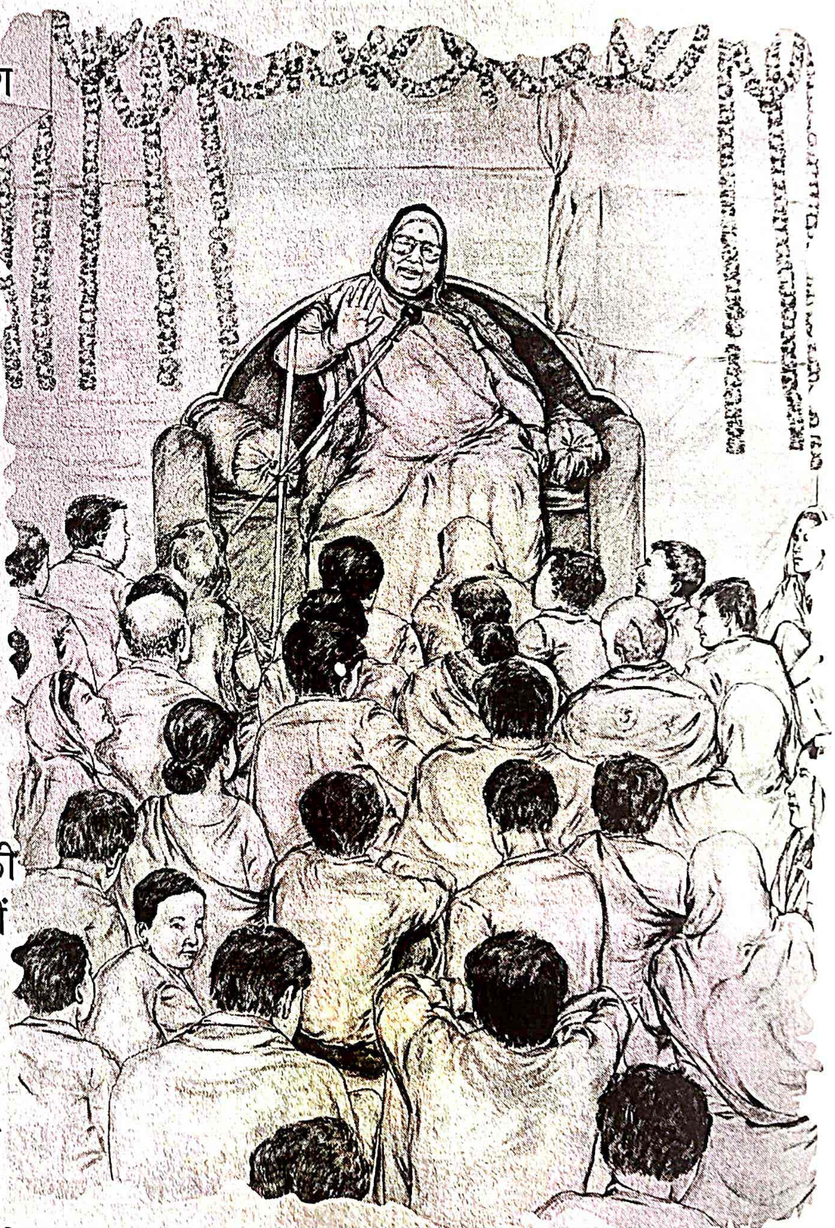

उन दिनों जो परिजन शांतिकुंज आते, उन्हें वंदनीया माताजी ढाढ़स बँधातीं। उन्हें अधीरता से बचने, धैर्य अपनाने की प्रेरणा देतीं। वे कहतीं गुरुदेव कहीं गए नहीं हैं। गायत्री परिजनों के समीप ही सदैव हैं, जो उनसे संरक्षण, प्यार, मार्गदर्शन की माँग सच्चे हृदय से करेगा, उसे अवश्य ही मिलेंगे। शांतिकुंज और क्षेत्र से आए परिजनों की जब-कभी गोष्ठी होती वं. माताजी उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देतीं। वंदनीया माताजी का आश्वासन था कि तुम लोगों की यह माँ सदैव तुम सभी के लिए अपने तथा गुरुदेव के हिस्से का भी प्यार-दुलार तुम सब पर लुटाती रहेगी। तुम्हें कर्त्तव्य-पथ पर आगे बढ़ाती रहेगी। तुम्हारे ऊपर कोई आँच नहीं आने देगी। ❒

श्रद्धांजलि समारोह

महाप्रयाण के पश्चात श्रद्धालुओं, गायत्री परिवार के परिजनों और पू० गुरुदेव से परिचित लाखों नागरिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करने का सुयोग बना, श्रद्धांजलि समारोह के

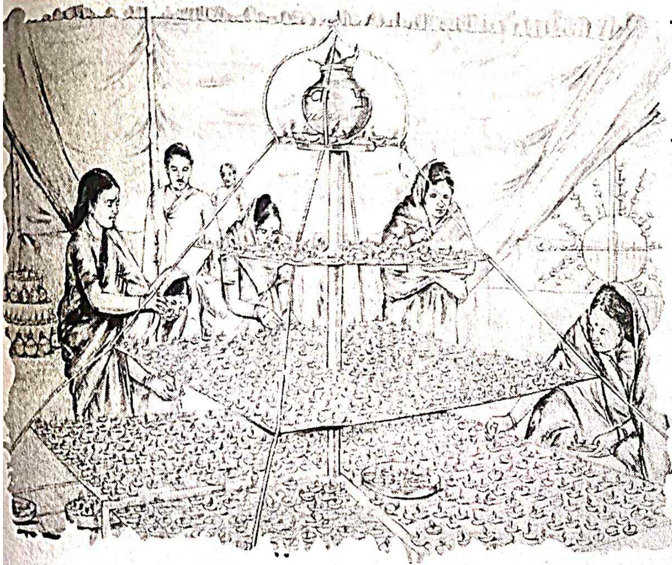

विराट आयोजन में, जो 1 से 4 अक्टूबर, 1990 की तिथियों में हरिद्वार में आयोजित किया गया। इस आयोजन के पूर्व श्रद्धांजलि अर्पित करने के छोटे-बड़े कई आयोजन जगह-जगह गायत्री परिवार के परिजनों और अन्य लोगों के द्वारा हो चुके थे।

श्रद्धांजलि देने का एक आयोजन 4 अगस्त, 1990 को आगा खाँ आडोटोरियम दिल्ली में रखा गया था, जिसमें डॉ० शंकर दयाल शर्मा सहित कई विशिष्ट प्रतिनिधि सम्मिलित हुए इस कार्यक्रम में दिल्ली एवं आस-पास के नगरों के हजारों परिजनों ने अपने भाव-पुष्प अर्पित किए। श्रद्धांजलि समारोह जब हुआ, तो उसमें परिजनों की माँग को देखते हुए गुरुदेव की 1940-1960 के बीच की लिखी लगभग 150 पुस्तकों का पुनः प्रकाशन कर विक्रय हेतु उपलब्ध कराया गया।

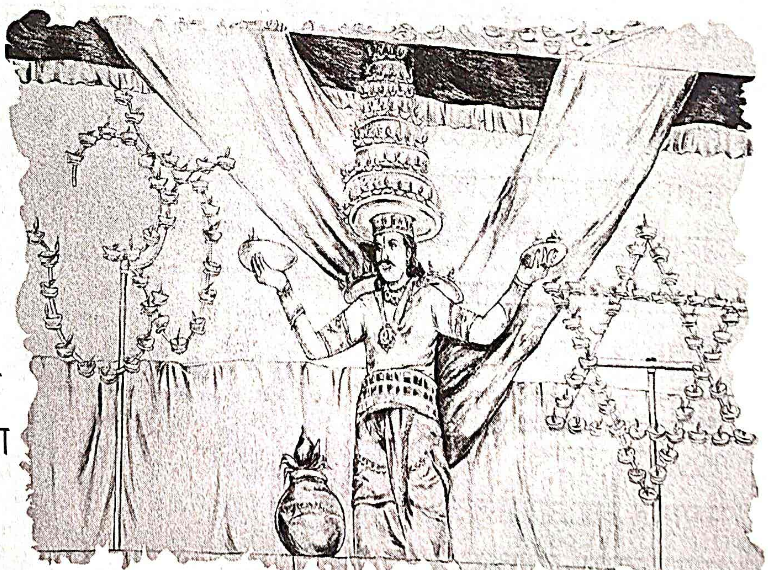

श्रद्धांजलि समारोह की भव्यता की तुलना लोग हरिद्वार में लगने वाले कुंभ से कर रहे थे। इतना विशाल कार्यक्रम किसी एक संगठन द्वारा आयोजित किया जाना किसी आश्चर्य से कम नहीं था। इस आयोजन में लाखों की संख्या में परिजन सम्मिलित एवं मिशन को आगे बढ़ाने के लिए संकल्पित हुए। तत्कालीन राज्यपाल (उ०प्र०) माननीय श्री सत्यनारायण रेड्डी जी इस आयोजन के विशिष्ट अतिथि थे, जिन्होंने गुरुदेव के समाज-निर्माण के कार्यक्रम को एक युगांतरकारी अभियान बताया। ❐

वंदनीया माताजी की हिमालय यात्रा

पू० गुरुदेव के स्थूलशरीर छोड़ने के बाद वंदनीया माताजी ही करोड़ों शिष्य-संतानों के लिए प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित अभिभावक थीं; उनमें परिजन आध्यात्मिक माता ही नहीं, पिता का भी दर्शन करते थे। गुरु का प्रखर मार्गदर्शन उनके द्वारा शिष्यों-साधकों को सतत मिल रहा था।

एक दिन वंदनीया माताजी ने निकटवर्ती स्वजनों को बताया कि उन्हें हिमालय यात्रा के लिए इष्ट सत्ता द्वारा संकेत मिला है। उन्होंने कहा—"मुझे हिमालय कुछ विशेष कारण से कुछ ही अवधि के लिए जाना है। मैं वहाँ से आकर तुम सबके बीच ही रहूँगी। मिशन-कार्य आगे बढ़ाऊँगी। हिमालय के कई महत्त्वपूर्ण स्थानों पर वे गईं, वहाँ आवश्यक तप, ध्यान, साधना की विशिष्ट प्रक्रियाओं को उन्होंने पूरा किया। वहाँ उन्हें राष्ट्र को समर्थ और सशक्त बनाने के लिए अश्वमेध महायज्ञ का महानुष्ठान करने का संकेत मिला।

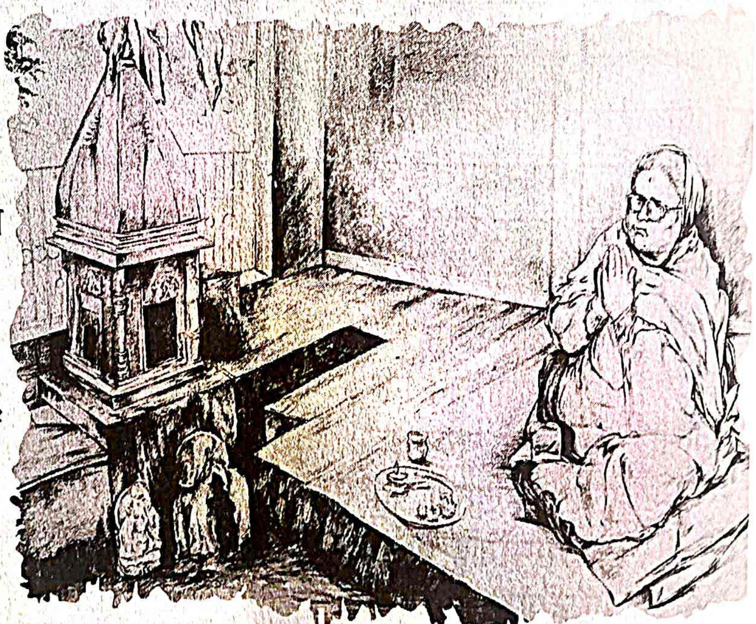

वंदनीया माताजी ने हिमालय से वापस आकर पू० गुरुदेव की द्वितीय पुण्यतिथि पर 1992 में जून के मध्य शपथ समारोह का आयोजन शांतिकुंज में रखा, जिसमें देशभर से लाखों प्राणवान परिजन सम्मिलित हुए। वंदनीया माताजी ने सभी को राष्ट्र एवं विश्व के कल्याण के लिए समर्पित होकर पूरी शक्ति-सामर्थ्य से कार्य करने का संकल्प दिलाया।

अश्वमेध यज्ञों का आयोजन

वंदनीया माताजी ने शपथ समारोह में ही अश्वमेध यज्ञ आयोजनों की घोषणा कर दी थी। नवंबर 1992 से अपने महाप्रयाण सितंबर, 1994 के बीच संपन्न हुए 18 अश्वमेध यज्ञों में से 16 में वे गईं, जिनमें भारत के अलावा विदेश में होने वाले अश्वमेध यज्ञ भी सम्मिलित थे। जयपुर से उनकी यह यात्रा आरंभ हुई और चित्रकूट के अश्वमेध तक चलती रही। जयपुर और चित्रकूट के बीच में भिलाई (छ०ग०), गुना (म०प्र०), भुवनेश्वर (उड़ीसा), लेस्टर (यू०के०), टोरन्टो (कनाडा), लास एंजिल्स (यू०एस०ए०), लखनऊ (उ०प्र०), बड़ौदा (गुजरात), भोपाल (म०प्र०), नागपुर (महा०), ब्रह्मपुर (उड़ीसा), कोरबा (छ०ग०), पटना (बिहार), कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के अश्वमेध यज्ञों में वे गईं। उनके स्थूल जीवन काल में ही भिंड (म०प्र०) और शिमला (हिमाचल प्रदेश) दो स्थानों पर अश्वमेध यज्ञ और हुए थे। जिसमें स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण वे उपस्थित नहीं हो सकीं।

अश्वमेध यज्ञों के द्वारा देश एवं विदेशों में जो सांस्कृतिक, आध्यात्मिक क्रांति हुई, वह विश्व के इतिहास की अमूल्य धरोहर बन गई। देव संस्कृति दिग्विजय की आश्वमेधिक यज्ञों की शृंखला ने कई करोड़ लोगों को गायत्री, यज्ञ, संस्कार एवं धर्म अध्यात्म के महत्त्वपूर्ण सूत्रों से जोड़ा। सनातन धर्म संस्कृति के वर्चस्व, वैभव, उसकी उपयोगिता-आवश्यकता से बहुत बड़ा जनसमुदाय परिचित-प्रेरित हुआ।

वंदनीया माताजी ने इन यज्ञों में पू० गुरुदेव का संदेश बड़े प्रभावशाली ढंग से पहुँचाया। लाखों लोगों ने दीक्षा ली एवं विशिष्ट क्षेत्रों, वर्गों, संगठनों, समाजों की हजारों विभूतियों ने गायत्री परिवार से, गुरुदेव के सिद्धांतों से अपने को जोड़ा। वंदनीया माताजी का सभी को असीम प्यार, दुलार एवं मार्गदर्शन मिला। वंदनीया माताजी द्वारा चलाई गई देव संस्कृति दिग्विजय अभियान की विजय-यात्रा अभी भी जारी है। इसके अंतर्गत 50 अश्वमेध यज्ञ आयोजन सफलता के साथ संपन्न हो चुके हैं, जिनमें 18 आयोजनों का नाम ऊपर आ चुका है। उनके बाद के हुए आयोजनों की जानकारी निम्नलिखित है—

बुलंदशहर (उ०प्र०), हलदीघाटी (राज०), राजकोट (गुज०), जबलपुर (म०प्र०), कोटा (राज०), इंदौर (म०प्र०), शिकागो (यू०एस०ए०), आँवलखेड़ा (उ०प्र०), मोंट्रेरियल (कनाडा), गोरखपुर (उ०प्र०) न्यूजर्सी (यू०एस०ए०), हरिद्वार (उत्तराखंड), तिरुपति (आं०प्र०), सिडनी (ऑस्ट्रेलिया), मदुरई (तमिलनाडु), जोहान्सबर्ग (दक्षिण अफ्रीका), लुधियाना (पंजाब), काशीपुर (उत्तराखंड), ऑकलैंड (न्यूजीलैंड), हरिद्वार (उ०प्र०) बैंगलोर (कर्नाटक), ब्रिसबेन (ऑस्ट्रेलिया), हैदराबाद (आंध्र० प्र०), कन्याकुमारी (तमिलनाडु) और मुंबई (महाराष्ट्र)। ❒

वंदनीया माताजी का अंतिम संदेश

जिन चरणों में अपने आप को समर्पित किया, उनके बिना जीवन का एक-एक क्षण पीड़ा के पहाड़ की तरह बीत रहा है। जिस दिन उनके पास आई, उस दिन का पहला पाठ था– पीड़ित मानवता की सेवा और देव संस्कृति का पुनरोदय, सो अपने आप को उसी में घुला दिया। पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण के पश्चात एकाकी जीवन जीने में यद्यपि असह्य वेदना थी, तथापि महाप्रयाण से पूर्व परमपूज्य गुरुदेव की आज्ञा थी कि अपने उन बालकों की उँगली पकड़कर उन्हें मिशन की सेवा के मार्ग पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ा दूँ, जिन्हें अगले दिनों उत्तरदायित्व सँभालने हैं। पिछले चार वर्षों में मिशन जिस तरह आगे बढ़ा, वह सबके सम्मुख है, जो मैं देख रही हूँ। आगे का भविष्य तो इतना उज्ज्वल है, जिसे कल्पनातीत और चमत्कार कहा जा सकता है। उसके लिए जिस पुरुषार्थ की आवश्यकता है, हमारे बालक अब उसमें पूर्णतया प्रशिक्षित हो गए हैं।

शरीर-यात्रा अब कठिन हो रही है। उनके जाने के पश्चात से आज तक एक क्षण भी ऐसा नहीं बीता, जब वे आँखों से ओझल हुए हों। घनीभूत पीड़ा अब आँसू रोक नहीं पा रही, सो मुझे उन विराट तक पहुँचना अनिवार्य हो गया है। यह न समझें कि हम स्वजनों से दूर हो जाएँगे। परमपूज्य गुरुदेव की सूक्ष्म और कारण सत्ता में विलीन होकर हम अपने आत्मीय कुटुंबियों को अधिक प्यार बाँटेंगे, उनकी सुख-सुविधाओं में अधिक सहायक होंगे।

हमारा कार्य अब सारथी का होगा। दुष्प्रवृत्तियों से महाभारत का मोर्चा अब पूरी तरह हमारे कर्त्तव्यनिष्ठ बालक सँभालेंगे। सभी क्रियाकलाप न केवल पूर्ववत् संपन्न होंगे, वरन विश्व के 6 अरब लोगों के चिंतन, जीवन, व्यवहार, दृष्टिकोण में परिवर्तन और मानवीय संवेदना की रक्षा के लिए और अधिक तत्पर होकर कार्य करेंगे। हम तब तक रुकें नहीं, जब तक धरती पर स्वर्ग और मनुष्य में देवत्व का अभ्युदय स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर न होने लगे।

—भगवती देवी शर्मा

"वर्तमान समय विश्व इतिहास से अद्भुत एवं अभूतपूर्व स्तर का है। इसमें एक ओर महाविनाशी प्रलयंकारी तूफान अपनी प्रचंडता का परिचय दे रहा है, तो दूसरी ओर सतयुगी नवनिर्माण की उमंगें भी उछल रही हैं। विनाश और विकास एकदूसरे के प्रतिद्वंद्वी हैं, तो भी उनका एक ही समय में अपनी-अपनी दिशा में चल सकना संभव है। इन दिनों आकाश में सघन तमिस्त्रा का साम्राज्य है, तो दूसरी ओर ब्रह्ममुहूर्त का आभास भी प्राची में उदीयमान होता दीख पड़ता है।"

—परमपूज्य गुरुदेव

महाशक्ति का महाप्रयाण

महाशक्ति के साकार विग्रह के रूप में वंदनीया माताजी की उपस्थिति इस धरा-धाम में 68 वर्ष की रही, जिसमें लगभग 50 वर्ष उन्होंने अपनी गुरुसत्ता के लिए पूर्णरूप से

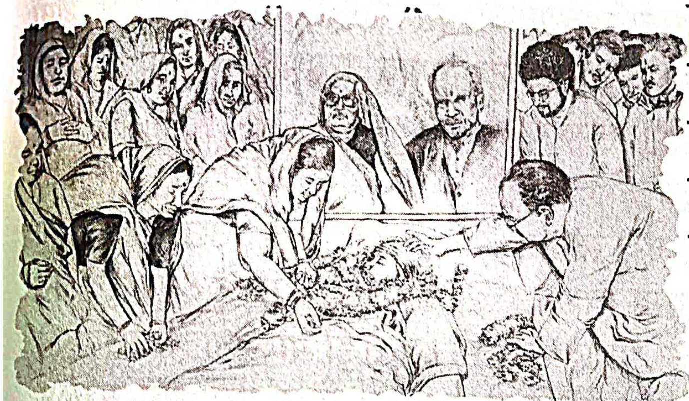

समर्पित होकर कार्य किया। विशेषकर पू० गरुदेव के महाप्रयाण के पश्चात 1990 से 1994 के चार वर्षों में उन्होंने वह महापराक्रम कर दिखलाया, जो सामान्य रूप से 40 वर्षों में किया जा सकता था।

भाद्रपद पूर्णिमा 19 सितंबर, 1994 को उन्होंने अपना शरीर छोड़ा। ऐसा लगा कि जो महाशक्ति भौतिक आवरण ओढ़कर इस संसार का कल्याण करने आई थी, उसने आवरण का त्याग करके अपने को अपने इष्ट में समाहित कर दिया।

वंदनीया माताजी ने शरीर छोड़ने के पूर्व कहा था, कि वे कभी भी अपनी संतानों से दूर नहीं होंगी। उनका सदैव खयाल रखेंगी और अभीष्ट मार्गदर्शन देंगी।

30 अक्टूबर, 1994 को उनके प्रति श्रद्धांजलि के निमित्त दिल्ली के कार्यक्रम में माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शिवराज पाटिल, सांसद नरेंद्र मोहन आदि के साथ अन्य हजारों परिजन थे।

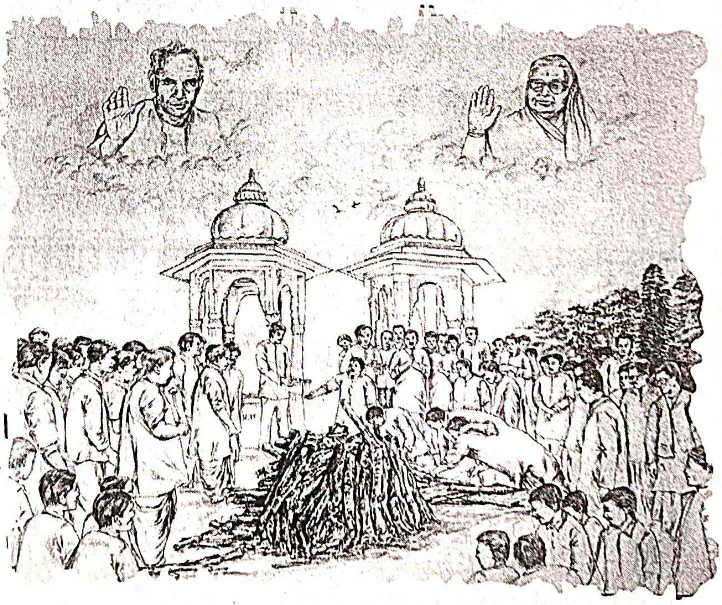

अस्थिकलश जब अखण्ड ज्योति संस्थान एवं गायत्री तपोभूमि लाया गया तो उसके समक्ष दोनों संस्थानों में स्वजनों द्वारा भावभरी श्रद्धांजलियाँ अर्पित की गईं।

वंदनीया माताजी के अस्थि अवशेषों को लेकर मातृस्मृति कलशयात्रा शांतिकुंज से आरंभ हुई थी। दिल्ली एवं मथुरा आदि स्थानों पर होते हुए आँवलखेड़ा पहुँची; जहाँ कलश को स्थापित कर पूरे वर्ष तक अखंड जप-साधना का क्रम चलाया गया, जो मातृसत्ता के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप ही था। ❑

वंदनीया माताजी की पावन जन्मस्थली

भगवान श्रीराम की जन्मभूमि की तरह माँ सीता की जन्मस्थली को भी बहुत ही श्रद्धा और सम्मान के भाव से देखा जाता है। भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि और राधा रानी की जन्मस्थली के प्रति लोगों की गहन आस्था-श्रद्धा है। अवतारी चेतनाओं महामानवों, संतों, विशिष्ट जनों आदि की जन्मभूमि से भावनाशील जनसमुदाय को विशेष लगाव स्वाभाविक रूप से हुआ करता है। इसी तरह पू० गुरुदेव की जन्मभूमि आँवलखेड़ा आगरा अब करोड़ों परिजनों के लिए विशेष आस्था का केंद्र बन चुकी है। पू० गुरुदेव की जन्मभूमि के लाखों लोगों ने दर्शन भी किए हैं। हजारों लोग प्रतिवर्ष वहाँ जाकर शिविर, एवं साधना आदि का लाभ भी उठाते हैं। पूज्य गुरुदेव एवं वं. माताजी से जुड़े परिजनों की तरह विशेष इच्छा यह रही है कि पू० गुरुदेव की जन्मभूमि की तरह माताजी की जन्मस्थली का भी विकास हो। करोड़ों परिजनों के लिए जो परम श्रद्धा-भावना का केंद्र है, उसे उपेक्षित जैसी स्थिति से उबारकर दिव्य एवं भव्य स्वरूप दिया जाए।

1992-93 के दिनों में जब पूरे भारत में देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के अंतर्गत रजवंदन समारोह गायत्री परिवार द्वारा हुआ था, उस समय माताजी की जन्मभूमि की रज का भी पूजन एवं संग्रह किया गया था। तभी से एक महासंकल्प उभरकर अपनी स्मृति बार-बार दिला रहा था कि इस जन्मभूमि का जीर्णोद्धार हो और इसे दिव्यतम स्वरूप दिया जाए।

आगरा शहर की शीतला गली का वह मकान जब परिवारीजन कम थे तो सभी का आश्रय-स्थल था, बाद में जब परिवार बढ़ने लगा तो लोग अन्यत्र जाकर, मकान बनाकर बसने लग गए। धीरे-धीरे वह स्थल वीरान-सा हो गया। मकान की देख-रेख और मरम्मत समुचित रूप से न हो पाने के कारण वह जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पहुँच गया।

जहाँ वंदनीया माताजी ने अपना प्यारा बचपन बिताया हो। बाल्यकाल की दिव्य लीलाओं (महत्त्वपूर्ण जीवन-प्रसंगों) को पूरा किया हो, जहाँ अनेकों आदर्श क्रियाकलाप उनके द्वारा संपन्न हुए हों, जहाँ उनके तप-ऊर्जा की तरंगें और साधना के संस्कार अभी भी यथावत् जाग्रत और जीवंत हों, लोगों को दिव्य जीवन के सूक्ष्म संकेत देते हों, ऐसे स्थल को नवनिर्मित स्वरूप देने का निश्चय अब साकार होने की दिशा में बढ़ चला है।

उस मुख्य स्थली और उसके आस-पास की जमीन को लेकर वंदनीया माताजी की महान महिमा-गरिमा के अनुरूप भव्य निर्माण की योजना बन गई है। इसके प्रथम चरण के अंतर्गत अभी पास की भूमि का क्रय और आरंभिक निर्माण की प्रक्रिया चल पड़ी है। आशा है कि निकट भविष्य में ही करोड़ों परिजनों की परमश्रद्धेया वंदनीया माताजी की जन्मभूमि पर दिव्य संस्थान विनिर्मित दिखाई देगा। ❒

साहित्य का विशाल परिमाण में सृजन

पू० गुरुदेव ने मानव-जीवन के सभी पक्षों पर इतना उत्कृष्ट साहित्य इतने बड़े परिमाण में लिखा है, जिसकी समता में दुनिया के और किसी भी विद्वान, साहित्यकार या लेखक का साहित्य उपलब्ध नहीं होता। आर्ष वाङ्मय के भाष्य से लेकर मानव-जीवन के हर विषय पर लिखी उनकी छोटी-बड़ी 3200 पुस्तकें विश्व मानवता के लिए बहुत बड़ी धरोहर हैं। उन्होंने व्यक्ति-निर्माण, परिवार निर्माण एवं समाज-निर्माण को क्रेंद्र बनाकर जो साहित्य-सृजन किया, वह सामान्य व्यक्तियों-से लेकर संतों, विद्वानों, मार्गदर्शकों, महामानवों आदि सभी के लिए उपयोगी है।

आर्ष वाङ्मय (वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि) के भाष्य, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, यज्ञ चिकित्सा, आहार चिकित्सा, स्वस्थ जीवनशैली, प्राण चिकित्सा विज्ञान, व्यक्ति-निर्माण, परिवार-निर्माण, समाज-निर्माण, नारी जागरण, बाल-निर्माण साहित्य, व्यक्तित्व निर्माण, प्रतिभा परिष्कार, धर्म-अध्यात्म, गायत्री, यज्ञ, संस्कार, संस्कृति, पर्व-त्योहार, तनाव प्रबंधन, प्रेरक विचार एवं सूक्तियाँ, युग निर्माण, राष्ट्र निर्माण, महापुरुषों की जीवनियाँ, कर्मकांड, कथा-साहित्य, संगीत, शिक्षा-विद्या, स्वावलंबन, ग्राम विकास, हरीतिमा संवर्द्धन, पर्यावरण संरक्षण, व्यसन मुक्ति, कुरीति उन्मूलन, नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक क्रांति, वैज्ञानिक अध्यात्मवाद, ज्योतिष, परलोक, पुनर्जन्म, योग, तप, प्राणायाम, उपासना, साधना, आराधना आदि जीवनोपयोगी सभी विषयों पर पू० गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी ने उत्कृष्टतम स्तर का साहित्य-सृजन किया है।

उनकी लेखनी किशोरावस्था से ही चली और पूरे जीवनभर चलती रही। कोई भी दिन ऐसा नहीं रहा, जिस दिन उन्होंने लेखनरूपी ज्ञानयज्ञ न किया हो। उनके लिखे साहित्य को यदि तौला जाए तो एक आदमी के वजन से अधिक ही उनका वजन होगा, कम नहीं होगा। पू० गुरुदेव ने स्वयं कहा है—"मैं व्यक्ति नहीं, विचार हूँ, मेरा स्वरूप मेरे साहित्य में (वाङ्मय में) छिपा है; मुझे पूजने की नहीं, पढ़ने की आवश्यकता है।"

पू० गुरुदेव ने गायत्री-उपासना पर सैकड़ों पुस्तकें लिखीं और गायत्री महाविज्ञान तीन भागों में लिखकर गायत्री ज्ञान का विश्वकोश मानवमात्र के लिए प्रस्तुत किया। युगपुराण के रूप में प्रज्ञापुराण की उन्होंने रचना की। 'समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान' पुस्तक में उन्होंने पूरे विश्व के लिए भारत की देन का तथा विश्वभर में फैली भारतीय संस्कृति और उसके प्रभावों का वर्णन किया है। यह पुस्तक इस विषय की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक मानी जाती है। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर लिखी गई उनकी पुस्तकें बहुत अच्छे पढ़े-लिखे, समझदारों, वैज्ञानिक बुद्धि

एवं तर्कवालों को झकझोरती हैं। उन्हें ईश्वरीय सत्ता-व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास करने को सहमत करती हैं।

रामायण, गीता, भागवत आदि पर लिखा गया उनका साहित्य जनसामान्य से लेकर मूर्द्धन्य मनीषियों, कथाकारों, प्रवचनकर्त्ताओं को युगानुकूल दिव्य मार्गदर्शन प्रदान करता है। कर्मकांडों की सरल, सुंदर, सटीक व्याख्या एवं संक्षिप्त किंतु अपने आप में समग्र उत्कृष्ट विधान देकर पू० गुरुदेव ने उन्हें न केवल जीवित रखा है, बल्कि आधुनिक पढ़े-लिखे समाज के लिए, सुसंस्कृत मानव निर्माण के लिए आवश्यक एवं अत्यंत उपयोगी बनाया है। उन्होंने अपने साहित्य में जहाँ मूढ़मान्यताओं, कुरीतियों, अंधविश्वासों, पाखंडों का खंडन किया है, वहीं सभ्यता, संस्कृति, संस्कारपूर्ण देव जीवन के लिए आवश्यक ज्ञान का पोषण भी दिया है।

सामान्य जन से लेकर राष्ट्र एवं विश्व के उज्ज्वल भविष्य के लिए उत्कृष्ट चिंतन का महासागर जो उनके साहित्य में समाया है, वह खारा बिलकुल नहीं है। उसमें संजीवनी रस-अमृत रस भरा है, जो संपूर्ण मानव जाति के लिए अत्यंत लाभकारी है।

पू० गुरुदेव ने पुस्तकों के लेखन के अलावा अखण्ड ज्योति, युग निर्माण आदि पत्रिकाओं के माध्यम से अपना अमृत-चिंतन करोड़ों लोगों तक पहुँचाया है। उन्हें उनकी ज्ञान-क्षमता को लेकर पंडित, आचार्य, वेदमूर्ति, युग व्यास, युगऋषि आदि कहा जाता है, पर यदि सच में देखा जाए तो इस क्षेत्र में मानवता के लिए उनका योगदान आकलन से परे है।

पू० गुरुदेव ने अपने जीवन के अंतिम दो वर्षों में इक्कीसवीं सदी और आगे की अनेकों सदियों के लिए उत्कृष्ट क्रांतिकारी मार्गदर्शन हेतु क्रांतिधर्मी साहित्य लिखा। इस साहित्य को उन्होंने अपने लिखे समस्त साहित्य में सर्वोपरि महत्त्व का बताया।

पू० गुरुदेव 'विचार परिवर्तन से युग परिवर्तन' की बात करते थे। उन्होंने अपनी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' में लिखा है—"युग परिवर्तन लोहे और लहू से नहीं, अच्छे विचारों से बुरे विचारों की काट द्वारा होगा।" विचार परिवर्तन से युग परिवर्तन का उनका अभियान करोड़ों लोगों तक फैल चुका है। यह सुनिश्चित लगता है कि यह अभियान समस्त मानव जाति को प्रभावित करेगा और उन्हें श्रेष्ठ जीवन, सुंदर विश्व की ओर ले जाएगा। ❒

अखण्ड दीप के सौ वर्षों का
ज्योतिर्मय अनुदान

वसंत पर्व 1926 को अखण्ड दीप पू० गुरुदेव की साधनास्थली में स्थापित हुआ, तभी से लेकर आज तक वह जगत् को दिव्य प्रेरणा-प्रकाश से आलोकित करता आ रहा है। अनुष्ठान, पुरश्चरण आदि में साधक दीपक की स्थापना अवश्य करते हैं। अग्नि (दीपक) और जल (कलश) की उपस्थिति में ही जप-पूजा और उच्चस्तरीय साधनाएँ संपन्न हुआ करती हैं। पू० गुरुदेव ने भी अपने मार्गदर्शक की आज्ञा से इसे अखण्ड रूप से स्थापित कर लिया। प्रतिदिन इसी के सामने अपने गायत्री पुरश्चरण की 66 माला का नित्य जप करते थे।

जैसे-जैसे समय बीतता गया अखण्ड दीपक दिव्य प्रेरणाओं और अंत:प्रकाश का घनीभूत पुंज बनता चला गया। अखण्ड दीपक की स्थापना का लगभग एक दशक व्यतीत हो चुका था। दीपावली सन् 1937 संवत् 1994 का महापर्व, जिसमें धरती पर करोड़ों दीपक अपना प्रकाश धरा पर बिखेर रहे थे, उन सभी के बीच अखण्ड दीपक की ज्योति से एक प्रेरणा निकलकर आई—'अखण्ड ज्योति' पूज्य गुरुदेव ने उस प्रेरणा को स्वीकार कर अखण्ड ज्योति संस्थान की स्थापना उन्हीं क्षणों में पहले अपने अंत:करण में कर डाली। बाद में स्थूलजगत् में उसका स्वरूप उभरकर आया।

अखण्ड ज्योति संस्थान 'अखण्ड ज्योति' के द्वारा सारे संसार में सद्ज्ञान के दिव्य प्रसार हेतु बनाया गया। 'अखण्ड ज्योति पत्रिका' का प्रकाशन आरंभ हुआ, जिससे अखण्ड ज्योति परिवार ने छोटे स्वरूप में जन्म लेकर धरती के महान आध्यात्मिक संगठन गायत्री परिवार का स्वरूप धारण कर लिया। ज्ञानरूपी परमात्मा का यह मत्स्यावतार असंभव को भी संभव करता चला गया।

सन् 1959 अक्टूबर माह में जब वंदनीया माताजी ने अखण्ड ज्योति का संपादन कार्य सँभाला, तब उन्होंने पत्रिका (पृ० 7) में लिखा—पूज्य गुरुदेव ने मुझे तीन काम सौंपे हैं—

(1) अखण्ड घृत दीपक जो यहाँ जलता है, वह 24 पुरश्चरणों के लिए था। वह कार्य पूरा हो जाने पर भी उसका विसर्जन न हो। उसे अभी दस वर्ष और प्रज्वलित रखा जाए। जिस प्रकार 40 दिन में एक गायत्री अनुष्ठान पूरा हो जाता है, उसी प्रकार 40 वर्ष तक जलते रहने पर अखण्ड घृत दीपक भी 'सिद्ध ज्योति' बन जाता है। जब 30 वर्ष से अधिक यह दीपक जल चुका है। सारे परिवार ने क्रमशः 24 घंटे जागरूक रहकर उसे जलाए रखा तो अब दस वर्ष और भी जलाकर इसे 'सिद्ध ज्योति' क्यों न बनाया जाए!

(2) इस दीपक के सम्मुख अब अखण्ड जप का आयोजन किया जाए और आगे के दस वर्षों में 24 लक्ष के 24 महापुरश्चरण और संपन्न किए जाएँ।

(3) अखण्ड दीप, अखण्ड जप जहाँ होता रहे, वहाँ के संस्कार (प्रभाव-प्रेरणा) लेकर अखण्ड ज्योति निकले।

उनकी आज्ञा को मैंने शिरोधार्य किया है। अखण्ड दीपक को निरंतर प्रज्वलित बनाए रखने की जिम्मेदारी मैंने अपने ऊपर ले रखी है।

वंदनीया माताजी नवंबर, 1959 पृ. 5 पर लिखती हैं—जिस प्रकार अखण्ड अग्नि की स्थापना पर उस अग्नि का भोजन यज्ञरूप में नित्य होना आवश्यक है। उसी प्रकार अखण्ड दीपक के आगे भी 60 माला जप नित्य होना आवश्यक है। अखण्ड दीप के सम्मुख अभी आचार्य जी और हम मिलकर 60 माला जप अवश्य कर लेते हैं। आचार्य जी की अनुपस्थिति में कन्याओं द्वारा यह कार्य कराए जाने की व्यवस्था बन चुकी है।

अखण्ड दीपक जो केवल उस समय के हिसाब से 40 वर्षों के लिए था, वह अब एक सौ वर्ष पूरे कर चुका है और इन सौ वर्षों में एक भी दिन ऐसा नहीं गया है, जिस दिन उसके समीप 60 माला से अधिक गायत्री महामंत्र का जप नहीं हुआ हो। अखण्ड जप सामूहिक व्यवस्था के हिसाब से तो जपमाला की संख्या 200 से भी ऊपर एक दिन में पहुँच जाती रही है।

वह अखण्ड दीपक, जिसके समक्ष 24 लक्ष गायत्री मंत्र के सैकड़ों महापुरश्चरण संपन्न हुए हों। संपन्न करने वालों में स्वयं पू० गुरुदेव, वंदनीया माताजी तथा अन्य उच्चकोटि की साधिकाएँ एवं साधक हों उसकी गरिमा-महत्ता का, उसकी शक्ति-सामर्थ्य का, उसकी भव्यता-दिव्यता का आकलन भी कर पाना अत्यंत कठिन है। अखण्ड दीपक की अलौकिक ज्योति से पू० गुरुदेव, वंदनीया माताजी ने प्रेरणा लेकर इस मिशन को आगे बढ़ाने में बहुत महत्त्वपूर्ण सफलताएँ पाईं हैं। परिजनों के जीवन में भी अखण्ड दीप ने दिव्य प्रेरणा तथा सामर्थ्य का संचार किया है।

अखण्ड दीपक दिव्य प्रकाशरूपी परमात्मा का आलोक स्वरूप तो है ही, यह पू० गुरुदेव वं. माताजी के अस्तित्व द्वारा तप से पोषित, जाग्रत देवसत्ता है, इसमें पू. गुरुदेव व वंदनीया माताजी के सूक्ष्मसत्ता के एक अंश की जीवंत उपस्थिति है। ऋषियुग्म का कहना था—जो भी परिजन आत्मकल्याण एवं लोक-कल्याण के लक्ष्य-पथ पर अभीष्ट मार्गदर्शन एवं शक्ति-सामर्थ्य की सच्चे हृदय से अखण्ड दीपक के समक्ष माँग करेगा, उसकी पूर्ति अवश्य ही समुचित रूप से होगी।

मथुरा से पू० गुरुदेव व वंदनीया माताजी जब विदाई के समय 1971 में अखण्ड दीपक को शांतिकुंज हरिद्वार साथ ले गए, उससे पूर्व उसकी ज्योति-से-ज्योति प्रज्वलित कर गायत्रीमाता मंदिर गायत्री तपोभूमि में भी अखण्ड दीपक स्थापित कर दिया गया, जो निरंतर प्रज्वलित है, जिसके सान्निध्य में तपोभूमिवासी एवं बाहर से प्रतिदिन आने वाले हजारों दर्शनार्थी तथा अतिथिगण दिव्य प्रेरणा-ऊर्जा प्राप्त करते हैं। ❒

साधना शुभारंभ के स्वर्णिम सौ वर्ष

सन् 1926 में पू० गुरुदेव को स्वामी सर्वेश्वरानंद जी का पूजा की कोठरी में ज्योतिपुंज के मध्य दर्शन हुआ था। सूक्ष्मदेहधारी 800 वर्ष से अधिक उम्र के महान सिद्धपुरुष ने पू० गुरुदेव को मात्र 15 वर्ष की उम्र में आत्मबोध के साथ कर्त्तव्य-बोध कराकर बहुत बड़ी जिम्मेदारियाँ सौंप दी थीं, जिनको पूज्य गुरुदेव ने आजीवन निभाया।

इस वर्ष 2026 में आध्यात्मिक जन्म के 100 वर्ष पूरे हुए हैं। हम सभी को पुन: अपनी शक्ति-सामर्थ्य को सँजोकर, प्रतिभा-पुरुषार्थ को प्रखर बनाकर पू० गुरुदेव, वंदनीया माताजी के कार्यों को पूरा करने में पूरी लगन से लग जाना है।

पू० गुरुदेव अपने आध्यात्मिक जन्मदिवस को बहुत अधिक महत्त्व देते थे। उन्होंने वसंत पर्व 1926 से गायत्री जयंती 1990 के बीच समस्त विश्व के कल्याण के लिए बहुत सारे कार्य किए और कराए। उनके सभी महत्त्वपूर्ण कार्यों-योजनाओं का शुभारंभ वसंत पर्व के पावन दिन ही हुआ करता था। आध्यात्मिक बोध के शताब्दी वर्ष—2026 तक उनके द्वारा प्रत्यक्ष-परोक्ष जितना कुछ किया गया है, उसका लेखा-जोखा कर सकना भी अत्यंत कठिन है। इन 100 वर्षों में पू० गुरुदेव एवं उनके मिशन का जो योगदान मानवता के लिए रहा है, उसे अब तक के मानव इतिहास में सर्वोपरि स्तर का कहा जा सकता है। 15 वर्ष की उम्र से 36 वर्ष की उम्र तक अर्थात 1947 तक पू० गुरुदेव ने स्वतंत्रता संग्राम में देश के लिए बहुत कठिन संघर्ष किया। पिटाई सहने, बार-बार जेल जाने, जेल की यातना भोगने से लेकर अनेकों महत्त्वपूर्ण संघर्ष उन्होंने अपने जीवन के लगभग दो दशकों में किए।

देश आजाद होने के बाद चाहे 1962 का भारत-चीन युद्ध हो या 1965 और 1971 का भारत-पाक युद्ध हो, सभी में पू० गुरुदेव अपने देश के साथ पूरी निष्ठा-तत्परता से अपने परिजनों सहित खड़े रहे। आपातकाल का विरोध किया। स्काईलैब जैसी आपदा से देश को बचाने के लिए सामूहिक जप पुरश्चरण कराया। 1986-87 में जब उनका हीरक जयंती वर्ष मनाया जा रहा था, तब शतकुंडीय, सहस्त्रकुंडीय, 24 कुंडीय, 51 कुंडीय यज्ञों के साथ राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों को जोड़कर राष्ट्र की चेतना को झकझोर कर एकता, समता, अखंडता को बढ़ाने एवं शांति, प्रगति का वातावरण बनाने का कार्य किया।

पू० गुरुदेव ने मानव-कल्याण के लिए प्रचुर परिमाण में साहित्य लिखा। यज्ञ और गायत्री के साथ संस्कार एवं पर्व-त्योहार परंपरा के उत्कृष्ट स्वरूप को जन-जन तक पहुँचाया। गायत्री मंत्र को सार्वजनिक, सार्वभौमिक बना दिया। धर्मतंत्र से लोक-शिक्षण का उनका चलाया गया अभियान अब तक करोड़ों लोगों को प्रेरणा-प्रकाश दे चुका है। उनके द्वारा प्रवाहित की गई ज्ञान-

गंगा अखण्ड ज्योति संस्थान एवं गायत्री तपोभूमि मथुरा के गोमुख-गंगोत्तरी से निकलकर आगे बढ़कर विश्व के 100 से अधिक देशों में ज्ञान का दिव्य अमृत रस प्रवाहित कर रही है। पू० गुरुदेव-माताजी ने धर्मक्षेत्र की विकृतियों को हटाकर सतयुगकालीन-ऋषिकालीन धर्म अध्यात्म को समाज में प्रतिष्ठित किया।

पू० गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी यहीं नहीं रुके, दोनों ने वसिष्ठ-अरुंधती का जीवन जीकर ऋषियुग्म का आदर्श समाज के सामने रखा और समस्त ऋषियों—भगीरथ, चरक, व्यास, नारद, वसिष्ठ, विश्वामित्र, पतंजलि, पिप्पलाद, सूत-शौनक, कणाद, याज्ञवल्क्य, परशुराम, जमदग्नि आदि की परंपराओं-कार्यों को पुनर्जाग्रत एवं प्रतिष्ठापित किया।

शंकराचार्य, रामकृष्ण, महर्षि अरविंद, महर्षि रमण, स्वामी दयानंद, समर्थ गुरु रामदास, तुलसी, कबीर, संत तिरुवल्लुवर, संत ज्ञानेश्वर आदि महापुरुषों, संतों, मनीषियों के कार्यों को आगे बढ़ाया। आचार्य सायण, महीधर आदि की परंपरा में वेदों का उत्कृष्ट समग्र भाष्य, व्यास परंपरा में प्रज्ञापुराण लेखन एवं विशाल साहित्य का सृजन, आर्यभट, वाराहमिहिर परंपरा में ज्योतिष-खगोल अनुसंधान, चरक, सुश्रुत परंपरा में आयुर्वेद जड़ी-बूटी, स्वास्थ्य विज्ञान के नियमों का अन्वेषण, नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय की रूपरेखा, योग एवं साधना पद्धतियों पर गहन शोध, वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का प्रयोग-परीक्षण, करोड़ों लोगों का संगठन, निर्माण, लाखों परिव्राजक, युगशिल्पी, युग पुरोहित व्यवस्था, कई हजार की संख्या में प्रज्ञापीठ, प्रज्ञा संस्थान, आँवलखेड़ा, अखण्ड ज्योति, गायत्री तपोभूमि, शांतिकुंज, ब्रह्मवर्चस, देव संस्कृति विश्वविद्यालय जैसी विश्वस्तरीय स्थापनाएँ—ये सब कुछ ऋषियुग्म के प्रत्यक्ष-परोक्ष, शक्ति-सामर्थ्य एवं अनुदानों, प्रेरणाओं से ही संभव हुआ है।

अवतारी शक्तियों ने अपने समय में जनहितार्थ जो कुछ किया था, उस पुरुषार्थ की एक सुंदर झलक ऋषियुग्म के प्रबल पुरुषार्थ में दिखाई देती है। सौ सालों में इतना सब कुछ प्रत्यक्षतः हुआ है, जिसका हिसाब-किताब करना भी अत्यंत कठिन है। परोक्ष के क्रियाकलापों, योगदानों का तो विवेचन असंभव ही है।

करोड़ों लोगों की बुराइयाँ छुड़ाना, उनको सन्मार्ग पर चला देना, नारी शक्ति के उत्कर्ष के लिए प्रबल पुरुषार्थ, बिना किसी भेदभाव के मानवमात्र को, धर्म के हर कार्य में समान रूप से सम्मिलित करना। इक्कीसवीं सदी को उज्ज्वल भविष्य की सदी घोषित कर, सभी को निराशा-नकारात्मकता से बचाकर मंगलमय जीवन के पथ पर अग्रसर करना आदि कार्यों से जो ऋषियुग्म ने मानवमात्र के लिए दिव्य अनुदान प्रस्तुत किया है, वह अतुल्य ही है।

ये 100 साल बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहे हैं। वंदनीया माताजी एवं पू० गुरुदेव ने अपने व्यक्तित्व और कर्तृत्व से जो सब कुछ समाजरूपी भगवान के लिए अर्पित किया है, वह अवर्णनीय है, अनुपम है, अद्वितीय है। ❐

जन्मभूमि आँवलखेड़ा, आगरा

आँवलखेड़ा ग्राम आगरा से लगभग 20 कि०मी० दूर जलेसर रोड पर अवस्थित है, जहाँ युगपुरुष पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी का आश्विन कृष्ण त्रयोदशी, संवत् 1968 (20 सितंबर, सन् 1911) में जन्म हुआ। एक श्रीमंत ब्राह्मण परिवार संस्कारों से अनुप्राणित, पिता भागवत के प्रकांड पंडित।

आँवलखेड़ा गाँव की पावन माटी को गौरव मिला, इतिहास पुरुष—अवतारी सत्ता आचार्य श्रीराम शर्मा को जन्म देने का। यह गाँव ईश-चेतना के अवतरण की पुण्यस्थली बना है। पू० गुरुदेव जन्म से 30 वर्ष की उम्र तक आँवलखेड़ा रहे। उनके बचपन, किशोरावस्था, युवावस्था के बहुत सारे महत्त्वपूर्ण कार्य यहीं से संपन्न हुए। यहीं उनके पूर्व जन्मों के मार्गदर्शक स्वामी सर्वेश्वरानंद जी का उन्हें साक्षात्कार हुआ।

श्री दानकुँवरि इंटर कॉलेज—गुरुदेव एवं माताजी ने माता दानकुँवरि जी के नाम पर क्षेत्र की पहली शिक्षण संस्था दानकुँवरि इंटर कॉलेज की आधारशिला जुलाई, सन् 1963 में रखी।

गायत्री शक्तिपीठ—सन् 1981 में बनी गायत्री शक्तिपीठ में वेदमाता गायत्री की भव्य प्रतिमा प्रतिष्ठापित है। बाईं तरफ लक्ष्मी जी एवं दाहिनी तरफ दुर्गा जी विराजमान हैं।

बालिका उच्चतर माध्यमिक एवं महाविद्यालय—ग्रामीण क्षेत्र में बालिकाओं को शिक्षित करने के उद्देश्य से राजकीय बालिका इंटर कॉलेज तथा राजकीय महिला महाविद्यालय स्थापित किया गया है।

माँ भगवती देवी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र—स्वास्थ्य-संवर्द्धन को मूर्तरूप में विकसित करने के लिए अक्टूबर, 1995 में माता भगवती देवी चिकित्सालय की आधारशिला रखी गई। प्रदेश सरकार ने इसे माँ भगवती देवी राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, आँवलखेड़ा के रूप में घोषित किया।

गोशाला—गौ-संरक्षण एवं प्रशिक्षण हेतु सौ से अधिक गायों की एक व्यवस्थित गोशाला है। गोबर गैस प्लांट भी है। विभिन्न प्रकार के गौ-उत्पाद भी यहाँ उपलब्ध हैं।

जन्मस्थली—गुरुदेव की जन्मस्थली गाँव के मध्य में बनी एक प्राचीनशैली की जमींदारी गढ़ी के अंत:कक्ष में है, जिसका स्वरूप उसी रूप में रखा गया है। जन्मस्थली के पश्चिमी भाग में एक भव्य कीर्तिस्तंभ स्मारक का निर्माण किया गया है, जिसका लोकार्पण नवंबर, सन् 1995 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव जी ने किया था। उसी स्थान पर एक भव्य सूर्य मंदिर तथा आकर्षक ब्रह्मकमल के आकार का साधना-केंद्र भी बना हुआ है, जहाँ बैठकर साधक साधना करते हैं।

संपर्क सूत्र—गायत्री शक्तिपीठ, आँवलखेड़ा, आगरा (उ०प्र०) 282001
फोन नं. 0562-2752022, 24, 25
मो० 9927784820, 9359734000

अखण्ड ज्योति संस्थान

परमपूज्य गुरुदेव सन् 1940 में मथुरा आए और घीयामंडी में अखण्ड ज्योति संस्थान की स्थापना की। यही वह स्थान है, जहाँ आकर अगणित दुःखी, समस्याग्रस्त व्यक्तियों ने गुरुदेव के स्पर्श से नए प्राण पाए तथा उनके व परमवंदनीया माताजी के हाथों से भोजन-प्रसाद पाकर उनके अपने होते चले गए। गायत्री-साधना का प्रचार-प्रसार यहीं से किया गया। सभी के लिए गायत्री-साधना सुलभ बनाने की प्रक्रिया यहीं से प्रारंभ हुई।

हाथ से बने कागज पर छोटी ट्रेडिल मशीनों द्वारा यहीं पर 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका छापी जाती थी। बगल की एक छोटी-सी कोठरी में अखण्ड दीपक जलता था, जहाँ पूज्य आचार्य जी गायत्री महापुरश्चरण की साधना करते थे, लगभग 12 पुरश्चरण उन्होंने यहाँ ही पूरे किए। 30 वर्ष का साधनाकाल-लेखनकाल पूज्यवर का घीयामंडी के भवन में छोटी-छोटी दो कोठरियों में गहन तपश्चर्या के साथ बीता। तपोभूमि निर्माण की पृष्ठभूमि यहीं बनी। 1958 के सहस्रकुंडीय यज्ञ की आधारशिला यहीं रखी गई; यहीं ऋषियुग्म की सारी योजनाएँ बनीं एवं विधिवत् गायत्री परिवार बनता चला गया। अखण्ड ज्योति संस्थान का पुराना स्वरूप हटाकर अब वहाँ परमपूज्य गुरुदेव व परमवंदनीया माताजी की पावन-स्मृति में भव्य स्मारक बनाया जा रहा है।

शांतिकुंज की स्थापना का विशिष्ट कार्य ऋषियुग्म ने यहीं रहते इसी साधनास्थली से आरंभ कर दिया था। ऋषियुग्म स्थायी रूप से इस घर से सन् 1971 की 20 जून को विदा लेकर शांतिकुंज, हरिद्वार चले गए।

नित्य लेखन इसी स्थान से प्रारंभ किया गया। लाखों की संख्या में अखण्ड ज्योति पत्रिका के प्रकाशन, विस्तार, डिस्पैच आदि का एक विराट तंत्र यहीं से संचालित हुआ। परमपूज्य गुरुदेव द्वारा लिखा गया, बोला गया एक-एक शब्द यहाँ से प्रकाशित 108 बड़े ग्रंथों (वाङ्मय) का प्रकाशन एवं प्रसार-वितरण यहीं से होना आरंभ हुआ।

अखण्ड ज्योति पारमार्थिक औषधालय—पीड़ित और गरीबों की सेवा के लिए यहाँ एक औषधालय चलाया जा रहा है। हजारों परिजन स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त करते हैं।

संपर्क सूत्र—अखण्ड ज्योति संस्थान, बिरला मंदिर के सामने मथुरा-वृंदावन रोड, जयसिंह पुरा, मथुरा (उ० प्र०) 281003

फोन नंबर : (0565) 2403940, 2972449, 2412272-73

मोबाइल नंबर : 9927086291, 7534812036-37-38-39

ई-मेल : akhandjyoti@akhandjyotisansthan.org

व्हाट्स एप नं. 9927086290

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

आगंतुक परिजन पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी से मिलने तथा भोजन करने अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामंडी, मथुरा वाले मकान में जाते थे। आगंतुकों की बढ़ती भीड़ देखकर अब एक ऐसे सुसंस्कारित स्थान की आवश्यकता अनुभव हो रही थी, जहाँ वे अपने महापुरश्चरण की पूर्णाहुति कर सकें तथा साथ ही सामूहिक साधना शिक्षण व संगठन के उद्देश्य को भी पूरा कर सकें। इसी पृष्ठभूमि में गायत्री तपोभूमि का जन्म हुआ। मथुरा में वृंदावन रोड पर जो दुर्वासा ऋषि की तपस्थली रही थी, ऐसे स्थान को चुना गया।

गायत्री तपोभूमि परमपूज्य गुरुदेव की चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर सन् 1953 में की गई स्थापना है। इस संस्थान का निर्माण गायत्री परिवाररूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया था। इसकी स्थापना के साथ चौबीस सौ तीर्थों के जल व रज को संगृहीत करके यहाँ उनका पूजन एवं स्थापन किया गया।

पूज्य गुरुदेव की साधनास्थली व प्रातःकाल की लेखन-साधना की कोठरी अखण्ड ज्योति संस्थान में थी और उनकी जन-जन से मिलने, साधनाओं द्वारा मार्गदर्शन देने की कर्मभूमि गायत्री तपोभूमि थी। यहीं पर सन् 1953 में पहली बार पूज्यवर ने साधकों को मंत्र-दीक्षा दी।

वसंत पंचमी सन् 1955 से 15 माह तक निरंतर यज्ञशाला में गायत्री महायज्ञ के साथ-साथ विशेष सरस्वती यज्ञ, रुद्र यज्ञ, महामृत्युंजय यज्ञ, विष्णु यज्ञ, शतचंडी यज्ञ, नवग्रह यज्ञ, चारों वेदों के मंत्र यज्ञ, ज्योतिष्टोम, अग्निष्टोम आदि यज्ञ एक-एक माह तक होते रहे। इन यज्ञों की पूर्णाहुति 20-4-1956 से 24-4-1956 तक नवरात्र के समय चल रहे 108 कुंडीय (नरमेध यज्ञ) महायज्ञ से हुई। इसमें 5-6 हजार व्यक्तियों द्वारा 125 लाख आहुतियाँ दी गईं तथा पूर्णरूप से लोक-मंगल के लिए जीवनदानियों की शृंखला इसी महायज्ञ से आरंभ हुई। इसी अवसर पर गुरुदेव माताजी द्वारा अपनी नकदी एवं पुस्तक, प्रेस, जमीन आदि सब कुछ गायत्री माता को दान कर दिए।

23-11-1958 से 26-11-1958 तक इस युग के महानतम सहस्रकुंडीय गायत्री यज्ञ का आयोजन संपन्न हुआ, जिसमें 10 लाख व्यक्तियों ने भाग लिया। 24 लाख गायत्री मंत्र की आहुतियाँ दी गईं, सवा करोड़ गायत्री मंत्रलेखन, 24 करोड़ गायत्री मंत्रजप एवं सवा लाख गायत्री चालीसा पाठ किए गए।

हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्यश्री ने 1962 में युग निर्माण सत्संकल्प तथा 1963 में युग निर्माण योजना के शतसूत्रीय कार्यक्रम की घोषणा की; गायत्री तपोभूमि, मथुरा में युग निर्माण विद्यालय 1967 से आरंभ किया गया।

20 जून, 1971 को पूज्य गुरुदेव एवं माताजी मथुरा से विदा होकर शांतिकुंज हरिद्वार प्रस्थान कर गए। गायत्री तपोभूमि की जिम्मेदारी यहाँ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं को सौंप गए।

पूज्य गुरुदेव की कृपा एवं उनके दिव्य संरक्षण से गायत्री तपोभूमि का कार्य निरंतर आगे बढ़ता चला गया। पत्रिकाओं का अन्य भाषाओं में प्रकाशन शुरू हुआ। युग निर्माण योजना कई वर्षों तक मासिक के साथ-साथ पाक्षिक तथा साप्ताहिक भी प्रकाशित होती रही। युग शक्ति गायत्री मासिक (हिंदी) व प्रज्ञा अभियान (मासिक) आदि पत्रिकाओं का प्रकाशन कुछ वर्षों तक हुआ। युग शक्ति गायत्री (गुजराती) का प्रकाशन यहाँ से निरंतर हो रहा है।

सन् 1997 में गायत्री तपोभूमि परिसर में प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा पावन प्रतीकों की स्थापना हुई।

सन् 2002 में गायत्री तपोभूमि का स्वर्ण जयंती समारोह मनाया गया। गायत्री मंदिर परिसर में परमपूज्य गुरुदेव परमवंदनीया माताजी की मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा हुई। 2002 के बाद प्रगतिक्रम बहुत तेजी से चला। बिरला मंदिर के पास जमीन लेकर भवन बनाया गया। जहाँ आज युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट द्वारा गुरुदेव का कार्य हो रहा है।

सन् 2011 में गायत्री तपोभूमि में पूज्य गुरुदेव का जन्मशताब्दी समारोह संपन्न किया गया। 1971 के बाद मथुरा में यह सबसे बड़ा आयोजन था, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने उन्हें अपनी भाव पुष्पांजलि अर्पित की।

गायत्री तपोभूमि का ऐतिहासिक स्वर्ण जयंती समारोह 2002-2003

जब तपोभूमि स्थापना के 25 वर्ष पूरे हुए थे, तब पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी ने रजत जयंती समारोह घोषित कर, अनेकानेक कार्यक्रम चलाए थे। उनमें जो सबसे महत्त्वपूर्ण था— शक्तिपीठों के निर्माण का संकल्प। उसी संकल्प का परिणाम है कि आज पूरे देश एवं विदेशों में 6000 से अधिक शक्तिपीठें खड़ी हो गई हैं। गुरुदेव के कार्यों को गति देने में लगी हैं।

तपोभूमि की स्थापना के पचास वर्ष पूरे होने पर जब 2002-2003 में स्वर्ण जयंती समारोह का समय आया तो अक्टूबर 2002 की 20-21-22 की तारीखों में विराट कार्यक्रम करना तय हुआ। इस आयोजन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसमें पू० गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी की भव्य मूर्तियों की स्थापना शरद् पूर्णिमा 21 अक्टूबर, 2002 को गायत्री मंदिर में गायत्री माता के बगल वाले कक्षों में हुई।

तीन दिन के आयोजन में कलश यात्रा से लेकर 151 कुंडीय गायत्री यज्ञ, विराट दीपयज्ञ, बड़ी संख्या में सभी संस्कार संपन्न हुए। 21 अक्टूबर को शपथ समारोह हुआ, जिसमें कई हजार की संख्या में परिजनों ने शपथ ली कि हम युग निर्माण योजना एवं गायत्री परिवार की जन्मस्थली तपोभूमि के लिए अभीष्ट रूप से समयदान, अंशदान का अनुबंध अपनाकर पू० गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी के कार्यों को आगे बढ़ाने में प्राणपण से लगे रहेंगे। ❐

गायत्री तपोभूमि के कार्यक्रम एवं प्रकल्प

गायत्री माता का मंदिर एवं महाकाल का मंदिर

गायत्री तपोभूमि सिद्धपीठ में गायत्री माता के मंदिर की स्थापना की गई है तथा मंदिर के अगल-बगल के कक्ष में पूज्यवर गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी की प्रतिमाओं एवं चरण पादुकाओं की स्थापना हुई है। पूज्य गुरुदेव के कक्ष में 2400 तीर्थों का जल, रज रखा गया है। इसके साथ ही वंदनीया माताजी के कक्ष में 2400 करोड़ मंत्रलेखन की स्थापना है। मंदिर के प्रांगण में प्रातः आरती एवं यज्ञशाला में यज्ञ तथा सायं आरती के क्रम नियमित चलते रहते हैं। प्रज्ञा नगर में अति प्राचीन महाकालेश्वर का भव्य मंदिर भी है।

युगऋषि सभागार

सत्संग की व्यवस्था के लिए आश्रम परिसर में ही विशाल सभागार निर्मित किया गया है। इस सभागार को युगऋषि सभागार नाम दिया गया है। बालकनी में भी बैठने की व्यवस्था है, कुल 900-1000 के बीच परिजन यहाँ सत्संग का लाभ एक साथ ले सकते हैं। गायत्री तपोभूमि में चलने वाले सभी शिविरों तथा वसंत पंचमी, गायत्री जयंती, गुरुपूर्णिमा आदि पर्व-त्योहारों का कार्यक्रम यहीं संपन्न किया जाता है ।

शिविरों का आयोजन

गायत्री तपोभूमि प्राचीनकाल से ऋषियों की तपस्थली रही है। अतः यहाँ के दिव्य वातावरण में साधना करने का लाभ अधिक मिलता है। यहाँ तीन नौ दिवसीय साधना-शिविर प्रत्येक माह की 1 से 9, 11 से 19 तथा 21 से 29 तक की तारीखों में लगते हैं; जिनमें साधकों को प्रतिदिन जीवन जीने की कला, साधना, धर्म-अध्यात्म, स्वास्थ्य आदि विषयों पर प्रवचन सुनने का लाभ मिलता है। विद्यालयों के ग्रीष्मावकाश में छात्र-छात्राओं एवं युवक-युवतियों के 7 दिवसीय माता सरस्वती शिविर भी आयोजित किए जाते हैं। समय-समय पर अन्य शिविरों का भी आयोजन किया जाता है। शिविरों की सूचना युग निर्माण योजना मासिक में नियमित प्रकाशित होती रहती है।

पर्व-त्योहार आयोजन

गायत्री को तपोभूमि में प्रमुख सभी पर्व—त्योहार मनाए जाते हैं। प्रत्येक पूर्णिमा को सुबह दस स्नान एवं सायंकाल दीपयज्ञ होता है।

वसंत पंचमी, महाशिवरात्रि, होली, नवरात्र, श्रीराम नवमी, गायत्री जयंती/(गंगा दशहरा) महाप्रयाण दिवस गुरुदेव का, गुरु पूर्णिमा/मुड़िया पूनौ, श्रावणी/रक्षाबंधन, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, वंदनीया माताजी का महाप्रयाण दिवस, पूज्य गुरुदेव का अवतरण दिवस, वंदनीया माताजी का

अवतरण दिवस, पितृपक्ष श्राद्धतर्पण आदि पर्वों-त्योहारों पर हजारों लोग सम्मिलित होकर दिव्य प्रेरणा अनुदान लेकर यहाँ से जाते हैं, ।

निःशुल्क संस्कार—गायत्री तपोभूमि में प्रतिदिन पुसंवन, अन्नप्राशन, नामकरण, विद्यारंभ, यज्ञोपवीत-दीक्षा, मुंडन, श्राद्ध-तर्पण आदि संस्कार निःशुल्क होते हैं। संस्कार कराने के लिए पहले से स्वीकृति लेना आवश्यक है।

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य पारमार्थिक चिकित्सालय

आश्रम में आश्रमवासियों, गरीबों, असहायों के लिए पं० श्रीराम शर्मा आचार्य पारमार्थिक चिकित्सालय है। कार्यकुशल एवं योग्य चिकित्सक तथा सहायकों के द्वारा इलाज किया जाता है। चिकित्सालय में निम्नलिखित व्यवस्थाएँ हैं—

आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, ई० सी० जी०, होम्योपैथी, फिजियोथेरेपी, पैथोलॉजी, एलोपैथी, दंत रोग, एक्स-रे, ।

माता भगवती भोजनालय—गायत्री तपोभूमि में माता भगवती भोजनालय सभागार के ऊपर स्थित है। यहाँ परिजनों, अतिथियों के लिए शुद्ध, सात्त्विक भोजन प्रसाद नियमित रूप से दोपहर एवं सायंकाल मिलता है।

माँ भगवती प्राकृतिक चिकित्सालय

यहाँ प्रत्येक माह की 1-7, 11-17, 21-27 की तिथियों में प्राकृतिक चिकित्सा के शरीर-शोधन-शिविर चलते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा के अंतर्गत योगासन-प्राणायाम, टहलना, सूर्यकिरण चिकित्सा, धूपस्नान, मिट्टी की पट्टी, सर्वांग मृदालेपन, उष्ण स्नान, हस्त-पादस्नान, भापस्नान, ठंढा कटिस्नान, गरम-ठंढा कटिस्नान, सारे शरीर की लपेट, स्थानीय लपेट, गरम-ठंढी सेंक, इंफ्रारेड, वाइब्रेटर, शिरोधारा, वस्ति, मालिश, नस्य, जलनेति, एक्यूप्रेशर, पथ-भ्रमण आदि उपचार उपलब्ध हैं। इन शिविरों में भाग लेने वाले हजारों परिजनों को आशातीत लाभ हुआ है। आप भी इन शिविरों का लाभ उठा सकते हैं एवं अपने संपर्क क्षेत्र के परिजनों को इसके लिए प्रेरित कर सकते हैं।

गायत्री मंदिर का पुनर्निर्माण कार्य प्रगति पर

गायत्री मंदिर के पुनर्निर्माण का कार्य आज से लगभग 7 वर्ष पूर्व 2019 से पू० गुरुदेव, वंदनीया माताजी की प्रेरणा से आरंभ कर दिया गया था, जो निरंतर चल रहा है।

मंदिर का प्रथम तल जो जमीन से लगभग 20 फीट ऊँचा है, उसके मध्य भाग में विशाल मंदिर का निर्माण चल रहा है। इस मंदिर के मध्य में आदिशक्ति गायत्री माता की मूर्ति स्थापित होगी। गायत्री माता के दाहिनी ओर के कक्ष में पू० गुरुदेव एवं बाईं ओर के कक्ष में वंदनीया माताजी की प्रतिमा लगेगी। गायत्री मंदिर के सामने बाईं ओर महाकाल मंदिर तथा दाईं ओर प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा का निर्माण कार्य चल रहा है।

गायत्री मंदिर से दाईं ओर सभागार जैसा विशाल मंडप बनाया गया है, जिसमें गायत्री की 24 शक्तियों के दिव्य विग्रह स्थापित किए जाएँगे। इसी परिसर में श्रीराम पंचायतन एवं श्री राधा-कृष्ण की प्रतिमाएँ भी स्थापित होंगी। गायत्री मंदिर के बाएँ भाग में भव्य यज्ञशाला का निर्माण किया गया है।

जमीन वाले तल में साधना-ध्यान कक्ष आदि की व्यवस्था के साथ संगमरमर पत्थर पर बहुत ही सुंदर रूप से उकेरे गए पू० गुरुदेव व वंदनीया माताजी के जीवन-प्रसंगों के भित्ति चित्र होंगे। भित्ति चित्रों की यह प्रदर्शनी पूरे विश्व में अपनी तरह की अकेली प्रदर्शनी होगी, जिसमें पू० गुरुदेव व वंदनीया माताजी का पूरा जीवन तथा युग निर्माण मिशन का समग्र इतिहास अत्यंत उत्कृष्टता और समग्रता के साथ प्रस्तुत किया जाएगा।

यह मंदिर मानवता के कल्याण के लिए युग निर्माण मिशन के प्रेरणादायी ऐतिहासिक क्रियाकलापों एवं योगदानों का परिचय देता रहेगा। लोग जान सकेंगे कि किस तरह ऋषियुग्म पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा जी ने डूबती मनुजता को उबारने और मनुष्य में देवत्व तथा धरती पर स्वर्ग लाने का कितना महान पुरुषार्थ किया था। यह मंदिर नहीं, विश्व मानवता के शुभचिंतकों का एक आदर्श प्रेरणा-केंद्र है, जो जगत् को युगों-युगों तक सन्मार्ग पर चलने-चलाने की प्रेरणा और आत्मबल प्रदान करता रहेगा।

संपर्क सूत्र—युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फो. नं. (0565) 2530115, 2530128, 2530399,

मो. 09927086287, 09927086289

ई.मेल yugnirman@yugnirmanyojna.org

व्हाट्सएप नं. 7055514422

फेसबुक : Yug Nirman Yojna Mathura

यू-ट्यूब : Youtube.com/@yugnirmanyojna.official

Website : www.yugnirmanyojna.org

सन् 1968 के अक्टूबर माह का प्रसंग है। इंदौर के क्रिश्चियन कालेज में दर्शन विभाग द्वारा संपन्न हो रहे समारोह में गुरुदेव को वक्तृता देनी थी। उनकी सीधी-सादी वेशभूषा, चेहरे की सरलता देखकर महाविद्यालय के प्राचार्य विश्वास न कर सके कि वे विषय के अधिकारी विद्वान हो सकते हैं। अतएव पास आकर बोले—"आप कम समय में अपनी बात कह लीजिएगा। विषय से इधर-उधर भटक जाने में परेशानी होगी।"

इस समारोह में व्यावहारिक जीवन से कोसों दूर होती जा रही दार्शनिकता पर कटाक्ष करते हुए पू. गुरुदेव ने कहा—"जो विचार या सिद्धांत मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सहायक हों उन्हीं के चिंतन-प्रतिपादन क्रियान्वयन में दर्शन की सार्थकता है।" उनने पूर्वी पश्चिमी दर्शन में समन्वय की स्थापना करते हुए बहुत ही सुंदर व्याख्या दी। व्याख्या की सामाप्ति पर प्राध्यापकों समेत प्राचार्य महोदय के हाथ जुड़े थे। प्राचार्य महोदय भावपूर्ण स्वर में बोले—"मैं आपको समझ नहीं सका था। डॉ. राधाकष्णन को सुनने के बाद मुझे सभी फीके लगते थे। पर आज आपको सुनकर लगा कोई उससे भी एक कदम आगे हैं, जो न केवल दर्शन की सार्थकता समझा सकता है, बल्कि स्वयं के जीवन में दर्शन को सार्थक कर रहा है।"

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज हरिद्वार

हरिद्वार के सप्तसरोवर क्षेत्र में ऋषिकेश रोड पर स्टेशन से 6 कि०मी० दूर महर्षि विश्वामित्र की तप:स्थली पर युगऋषि परमपूज्य आचार्य पं० श्रीराम शर्मा एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा ने अपनी प्रचंड तप-साधना से विशाल, दर्शनीय, जीवंत तीर्थ शांतिकुंज का निर्माण 1971 में किया।

स्थापनाएँ—युगतीर्थ में दिव्य प्राण-ऊर्जा का प्रचंड प्रवाह बनाए रखने के लिए स्थापित हैं—

हजारों-करोड़ों गायत्री मंत्र जप से अनुप्राणित अखण्ड दीप।

हजारों नैष्ठिक साधकों द्वारा नित्य आहुतियों से पुष्ट 'अखण्ड अग्नि'।

युगशक्ति गायत्री का प्राणवान मंदिर, दिव्य जीवन विद्या के मूर्द्धन्य 'सप्तर्षियों की प्रतिमाएँ, तीर्थ-चेतना के स्रोत 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' के प्रतीक। आध्यात्मिक ऊर्जा के सनातन केंद्र देवात्मा हिमालय का भव्य मंदिर, मनुष्य में देवत्व जगाने वाले सभी धर्म-संप्रदायों के पवित्र प्रतीक चिह्न, जड़ी-बूटियों की दुर्लभ वाटिका और गायत्री परिवार की स्थापना से लेकर अब तक की गतिविधियों पर आधारित प्रदर्शनी आदि।

गतिविधियाँ—युगतीर्थ, आध्यात्मिक सैनोटोरियम कहे जाने वाले इस आश्रम में व्यक्ति, परिवार एवं समाज-निर्माण की अनेक प्रभावशाली गतिविधियाँ नियमित रूप से चलती रहती हैं। जैसे—जीवन जीने की कला के नौ दिवसीय सत्र (प्रतिमाह तीन)।

लोकसेवियों के युगशिल्पी सत्र (प्रतिमास 1 से 29 तारीख तक)। ग्राम्य विकास प्रशिक्षण, कुटीर उद्योग प्रशिक्षण, नैतिक शिक्षा हेतु शिक्षण-प्रशिक्षण, ग्राम स्वास्थ्यसेवियों के विशेष सत्र, विविध प्रशासनिक अधिकारियों के लिए व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आदि। सभी प्रशिक्षण नि:शुल्क है। नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रांति के अभियान का संचालन केंद्र।

देश-विदेश में स्थापित हजारों गायत्री शक्तिपीठों, प्रज्ञापीठों का मार्गदर्शन केंद्र, पत्राचार विभाग एवं साधकों-लोकसेवियों के लिए प्रेरणा-परामर्श आदि की व्यवस्था है। सैकड़ों उच्च शिक्षित सेवाभावी स्वयंसेवक सारी गतिविधियों को संचालित करते हैं। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जन्मशताब्दी चिकित्सालय, मिशन की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का संपादन/प्रकाशन, भव्य साहित्य केंद्र, विदेश विभाग, स्वावलंबन विद्यालय, मल्टीमीडिया आदि स्थापनाएँ हैं। शांतिकुंज स्थापना के स्वर्ण जयंती वर्ष-2021 के अवसर पर भारत सरकार द्वारा 5 रु. का डाक टिकट जारी किया गया है।

संपर्क सूत्र—

शांतिकुंज हरिद्वार (उत्तराखंड) 249411

फोन नंबर : (01334) 325876, 260602, 260403, 261485, 261955, 260309

फैक्स : (91-1334) 260866

ई-मेल : shantikunj@awgp.org

विस्तृत जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइट www.awgp.org देखें। ❐

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान

पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी ने शांतिकुंज को विस्तार देने के लिए वहाँ और जमीन लेकर गायत्री नगर की। स्थापना की महर्षि कणाद की तपस्थली पर उनके द्वारा सन् 1979 में ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना हुई, जहाँ विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयात्मक प्रतिपादनों पर शोधकार्य किया जाने लगा। अदृश्य जगत् के अनुसंधान से लेकर मानव की प्रसुप्त क्षमता के जागरण तक, साधना से सिद्धि एवं दर्शन, धर्म विज्ञान, मंत्र चिकित्सा, यज्ञोपैथी एक विज्ञानसम्मत विधा आदि पर शोध करने हेतु ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान का निर्माण किया गया।

मानव मस्तिष्क प्रायः हर बात को वैज्ञानिक संदर्भ से ही समझने का अभ्यस्त हो गया है, इसलिए पूज्यवर ने जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक सूत्रों को वैज्ञानिक आधार पर समझाने—स्थापित करने के लिए इस शोधकेंद्र का शुभारंभ सन् 1979 की गायत्री जयंती पर किया। यह संस्थान अपने अनोखेपन के कारण विश्वस्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करता गया।

गायत्री तीर्थ, शांतिकुंज के मुख्य परिसर से आधा किलोमीटर दूर गंगातट पर अवस्थित यह संस्थान अपनी भव्यता के कारण सहज ही ध्यान आकर्षित करता रहता है। भूतल पर आधुनिक सुसज्जित यज्ञशाला विनिर्मित है। चौबीस कक्षों में गायत्री महाशक्ति की चौबीस मूर्तियाँ बीजमंत्रों, फलश्रुतियों के सहित स्थापित हैं। प्रथम तल पर अत्याधुनिक वैज्ञानिक प्रयोगशाला है, जहाँ ऐसे उपकरण स्थापित हैं, जिनसे साधकों की साधनाकाल में जाँच-पड़ताल की जाती है। साधना से पूर्व व पश्चात, यज्ञादि मंत्रोच्चार के पूर्व व पश्चात क्या-क्या परिवर्तन शारीरिक व मानसिक स्तर पर होते हैं; इसकी जानकारी के आधार पर साधकों को साधना संबंधी प्रगति के लिए परामर्श दिया जाता है।

यहाँ पर सैकड़ों वनौषधियों का विश्लेषण भी किया जाता है। यहाँ ऊर्जा, मंत्रशक्ति का प्रभाव साधक की मस्तिष्कीय तरंगों, जैव विद्युत पर क्या पड़ा, यह देखा जाता है। विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी यहाँ किए जाते हैं। द्वितीय तल पर एक विशाल संदर्भ ग्रंथागार है, जहाँ वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर विश्वभर के शोधग्रंथ एकत्रित किए गए हैं। यहाँ प्रायः 45000 से अधिक पुस्तकें ग्रंथागार में हैं। पुरातन पांडुलिपियाँ भी हैं। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के निमित्त स्थापित यह संस्थान अपने आप में अनूठा है।

संपर्क सूत्र—

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान (उत्तराखंड) 249411
फोन नंबर : (01334) 325876, 260602, 260403, 261485, 261955, 260309
फैक्स : (91-1334) 260866
ई-मेल : bss@awgp.org
विस्तृत जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइट www.awgp.org देखें। ❑

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

प्राचीन गुरुकुल परंपरा पर आधारित ऋषियों की प्राण-ऊर्जा एवं सांस्कृतिक चेतना से ओत-प्रोत महामानव गढ़ने हेतु संकल्पित एक स्थापना है—देव संस्कृति विश्वविद्यालय। जो उत्तराखंड सरकार के अधिनियम द्वारा स्थापित एवं श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा संचालित है।

पूज्य गुरुदेव की आकांक्षा की पूर्ति हेतु देव संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना राष्ट्र के युवाओं को निखार-सँवारकर उन्हें श्रेष्ठतम नागरिक, समर्पित स्वयंसेवक, प्रखर राष्ट्रभक्त एवं विषय विशेषज्ञ बनाने के साथ-साथ महामानव और देवमानव बनाने के पावन उद्देश्य से की गई है।

विश्वविद्यालय के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. देव संस्कृति के विकास हेतु अथक प्रयास।

2. देव संस्कृति पर आधारित ज्ञान की धाराएँ—धर्म, दर्शन, संस्कृति आदि पर आधारित पाठ्यक्रमों का शिक्षण एवं इनके सम-सामयिक बिंदुओं पर शोध।

3. देव संस्कृति पर आधारित विज्ञान की धाराओं—गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, मंत्र विज्ञान, योग विज्ञान, मनोविज्ञान आदि से संबंधित पाठ्यक्रमों का अध्यापन एवं इनके सम-सामयिक बिंदुओं पर वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में शोध।

4. गुरुदेव के विचारों पर आधारित नवीन सामाजिक संरचना के लिए आवश्यक रोजगारपरक पाठ्यक्रमों का शिक्षण, आपदा प्रबंधन, ग्राम प्रबंधन, विद्यालयी प्रबंधन आदि अध्यापन एवं शोध।

शिक्षा, स्वास्थ्य, साधना और स्वावलंबन—इन चारों संकायों के अंतर्गत मनोविज्ञान, योग, संगीत, पत्रकारिता, ग्रामीण प्रबंधन, स्वास्थ्य संरक्षण आदि विषयों पर पाठ्यक्रम चल रहे हैं।

विश्वविद्यालय के प्रमुख पाठ्यक्रम

बी.ए., बी.एस-सी., बी.सी.ए. स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम, पंचवर्षीय इन्टीग्रेटड कोर्स, डिप्लोमा पाठ्यक्रम, थ्री डी कंप्यूटर ग्राफिक्स, बी.एस-सी. एनिमेशन, बी.ए. पत्रकारिता एवं जन-संचार बी.एड. एवं प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम आदि विस्तृत जानकारी को संपर्क करें—

संपर्क सूत्र—देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार
फोन नं. (01334) 260723, 261367
फैक्स नं. : 91-1334-260866
ई-मेल : Registrar@dsvv.org
वेबसाइट : www.dsvv.ac.in

गायत्री परिवार के सात आंदोलन

(1) साधना—साधना ही युग निर्माण मिशन का मूल प्राण है। इसी आधार पर गायत्री परिवार खड़ा है।

* जीवन साधना से जोड़कर स्वाध्याय, संयम, सेवा में लगाना।
* मंत्रजप, मंत्रलेखन, संस्कार, देवस्थापना, बलिवैश्व यज्ञ, धार्मिक आयोजन, तुलसी आरोपण आदि प्रत्येक व्यक्ति करे।
* परमपूज्य गुरुदेव द्वारा कराई गई विभिन्न ध्यान-साधनाओं में से किसी एक को गहराई में उतारें।

(2) शिक्षा—ऐसे आंदोलन के रूप में गति दिया जाना है, जिसमें न केवल समूचा राष्ट्र साक्षर हो सके, बल्कि सुसंस्कारित व आत्मावलंबी भी बने।

* शिक्षा का प्रसार।
* पुस्तकालय, वाचनालय, प्रौढ़ शिक्षा, रात्रि पाठशालाएँ।
* शिक्षा विद्या के साथ जुड़े।
* विद्यालयों में विचारक्रांति।
* बाल संस्कारशालाएँ।
* कामकाजी विद्यालय योजना।
* स्वयं को जीवन के श्रेष्ठ मूल्यों के लिए प्रेरित करें।
* युगसाहित्य का स्वाध्याय एवं सत्संग करें।
* ज्ञान आचरण में कितना उतरा ? समीक्षा करें।
* भारतीय संस्कृति ज्ञानपरीक्षा एवं विद्यालयों में संस्कृति मंडल का गठन।

(3) स्वास्थ्य—रुग्णता रोकने के उपाय—जीवनशैली में परिवर्तन कर स्वस्थ जीवन विकसित करना, इस आंदोलन का उद्देश्य है—

* सुख को स्वास्थ्य पर हावी न होने दें।
* स्वास्थ्य के सूत्रों को अभ्यास में लाएँ।
* आहार-विहार, चिंतन-चरित्र, श्रम-विश्राम का संतुलन बनाएँ।
* योग, व्यायाम, प्राणायाम आदि को दिनचर्या में लाएँ।
* संयम बरतें एवं जड़ी-बूटी चिकित्सा अपनाएँ।
* स्वच्छता बढ़ाएँ।
* शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्यों को साधें।

(4) स्वावलंबन—हमारे कृषिप्रधान देश में आर्थिक क्रांति ग्राम केंद्रित करके बनाई गई योजनाओं द्वारा ही आएगी।

* स्वावलंबन की मनोवृत्ति।
* श्रम का सम्मान।
* स्वयं सहायता, बचत समूह, कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग, गोपालन।
* कमजोर वर्ग का शोषण न हो, श्रम और कौशल का लाभ मिले। समझदार और समर्थ उन्हें प्रेरणा दें।

(5) पर्यावरण—हरीतिमा-संवर्द्धन और कचरे की व्यवस्था।

* प्रकृति के यज्ञीय चक्र (इकोलॉजिकल बैलेंस) के प्रति आस्था, अनगढ़ सुख-व्यसन, फैशन के लिए प्रकृति पर चोट न हो।
* कचरे का निस्तारण।
* दैवी आपदाएँ, बाढ़, भूकंप, दुर्भिक्ष को कम करने के लिए वृक्ष लगाना, यज्ञ द्वारा प्रदूषण को कम करना, शिक्षकों, छात्रों को प्रशिक्षण, स्मृति उपवन की स्थापना।

सामाजिक जागरूकता, प्रशिक्षण एवं व्यवस्था तंत्र विकसित करें।

(6) नारी जागरण—महिलाओं में आत्मगौरव का जागरण, उनका परिपूर्ण शिक्षण।

* योग्यता का विकास।
* स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलंबन, सुरक्षा और सुसंस्कार।
* आत्मगौरव का बोध, आत्मविश्वास।
* सोने की जंजीरों से मुक्ति।
* बेटा-बेटी को एक जैसा मानें।
* बेटी-बहू का अंतर मिटे।
* नारी की नारी के प्रति संवेदना जागे।
* क्षेत्रीय नारी संगठन बनें, नारी को आगे बढ़ाएँ।
* जगह-जगह सार्थक आयोजन हों, जिनकी पूरी व्यवस्था महिलाएँ सँभालें।

(7) व्यसन मुक्ति, कुरीति उन्मूलन—तंबाकू, शराब, पान मसाला, गुटखा, मादक औषधियों का प्रचलन रोकें।

* व्यसन से बचाएँ-सृजन में लगाएँ, युवाशक्ति को राष्ट्र-निर्माण में लगाएँ।
* कुरीतियों, व्यसनों से समय, श्रम, साधन, स्वास्थ्य बचाएँ, सृजन में लगाएँ।
* त्याज्य परंपराएँ क्यों पनप रही हैं, विचार करें।
* उपजाति का भेद मिटे।
* भिक्षा व्यवसाय समाप्त हो।
* मृतक भोज, जेवर का प्रचलन बंद हो, दहेज, फजूलखरची जैसी कुरीतियाँ बंद हों।
* व्यसनों से हानि का बोध।
* बुराई छोड़ने का संकल्प।
* औषधियाँ और सामाजिक दबाव का प्रयोग हो।
* महिलाएँ, बच्चों को प्रेरित करें, सत्याग्रह करें।
* विद्यालयों, विभिन्न सामाजिक संगठनों, संप्रदायों को प्रेरित सक्रिय करें।

युग निर्माण योजना पत्रिका के बारे में

पूज्य गुरुदेव वंदनीया माताजी का अभिमत

पू० गुरुदेव ने गायत्री परिवार के कार्यों को तेजी प्रदान करने के लिए युग निर्माण योजना पत्रिका का प्रकाशन जुलाई, 1964 से आरंभ किया। इसके प्रकाशन का मुख्य उद्‌देश्य यह था कि युग निर्माण आंदोलन को व्यावहारिक मागदर्शन देकर मिशन के प्रचार–प्रसार में तीव्रता पैदा की जाए। 'अखण्ड ज्योति' उच्च ज्ञान एवं आदर्श चिंतन को प्रस्तुत करने वाली पत्रिका है, उसमें व्यावहारिक क्रियाकलापों से संबंधित लेखन को उतना नहीं सम्मिलित किया जा सकता, जितनी माँग होती है। अतः उसकी सहयोगी पूरक पत्रिका 'युग निर्माण योजना' का प्रकाशन आरंभ किया गया। पू० गुरुदेव अखण्ड ज्योति और युग निर्माण योजना दोनों की आवश्यकता, उपयोगिता और महत्ता को स्पष्ट करते हुए अखण्ड ज्योति, 1964 के अंकों में लिखते हैं—

अखण्ड ज्योति और युग निर्माण योजना दोनों एकदूसरे की पूरक हैं। इस महान मिशन को आगे बढ़ाने में दोनों से ही उत्कृष्ट योगदान मिलेगा। *—अगस्त, पृ० 57*

अखण्ड ज्योति जिस विचार धारा का प्रतिपादन सैद्धांतिक रूप से करती है, उसका व्यावहारिक स्वरूप क्या हो सकता है; इसका क्रियात्मक मार्गदर्शन करने के लिए 'युग निर्माण योजना' पत्रिका है। युग निर्माण परिवार के प्रत्येक सदस्य को ये दोनों ही पढ़नी चाहिए, ताकि अध्यात्मवाद के सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों ही पक्ष समझने की आवश्यकता पूरी हो सके। *—अक्टूबर, पृ० 57*

हर नगर में जहाँ अखण्ड ज्योति पहुँचती है, वहाँ युग निर्माण योजना पत्रिका का पहुँचना भी आवश्यक है। *—दिसंबर, पृ० 56*

पू० गुरुदेव अखण्ड ज्योति वर्ष, 1966 के जनवरी अंक के पृ० 48 पर लिखते हैं—

युग निर्माण योजना पत्रिका अपने नव–निर्माण आंदोलन का प्राण है। अखण्ड ज्योति रूपी कृष्ण के संदेश को कार्यान्वित करना, इसी अर्जुन का काम है। दोनों की जोड़ी ही अभीष्ट प्रयोजन पूरा कर पाती है।

परम वं० माताजी ने युग निर्माण योजना पत्रिका का संपादन लगभग दो दशक तक किया। वे अखण्ड ज्योति के साथ युग निर्माण योजना पत्रिका के विस्तार पर हमेशा बल दिया करती थीं। युग निर्माण योजना वर्ष—1986 जनवरी अंक में वे लिखती हैं—''हमारे परिजन संकल्प लें कि प्रत्येक घर में युग निर्माण योजना पत्रिका पहुँचे। यह प्रयास सभी परिजनों को तीव्रता के साथ करना है। युग निर्माण योजना पत्रिका की विचारधारा गुरुदेव के विचार–मंथन का ही नवनीत है।......

वंदनीया माताजी का परिजनों के लिए विशेष संदेश

यदि आपने युग निर्माण योजना पत्रिका की विचारधारा को पसंद किया है ? यदि आप युग निर्माण योजना के माध्यम से चलने वाले क्रियाकलापों को अग्रगामी बनाना चाहते हैं तो इतना अनुग्रह और करें कि उसे अधिक व्यापक क्षेत्र में सेवाकार्य करने और अधिक व्यक्तियों तक पहुँचने का अवसर प्रदान करें। *—युग निर्माण योजना, वर्ष दिसंबर 1988*

ऋषियुग्म के अभियान का संक्षिप्त परिचय

1.	पूज्य गुरुदेव का जन्म	– आश्विन कृ० त्रयोदशी संवत् 1968, 20 सितंबर, 1911
2.	यज्ञोपवीत दीक्षा संस्कार	– 1921
3.	गुरुसत्ता से साक्षात्कार	– वसंत पंचमी
	अखंड दीप स्थापना	– 18 जनवरी
	24-24 लाख के 24 महापुरश्चरण का शुभारंभ	– 1926
4.	वंदनीया माताजी का जन्म	– आश्विन कृ० चतुर्थी संवत् 1983 सन् 1926
5.	स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी	– 1927–1937
6.	प्रथम हिमालय यात्रा	– 1927
7.	पत्रकार की भूमिका का, कलम से क्रांति का शुभारंभ	– 1928
8.	स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में पहली गिरफ्तारी	– 14 अप्रैल, 1930
9.	श्रीराम को 'मत्त' का संबोधन	– 1930 से
10.	'सैनिक' समाचार के माध्यम से राष्ट्र सेवा	– 1930
11.	दूसरी गिरफ्तारी (जेल)	– 1932
12.	'बुनताघर' की स्थापना, आँवलखेड़ा, आगरा	– 1932
13.	पहला सामूहिक यज्ञ लगानबंदी के निमित्त (बरौदा, आगरा)	– 20 दिसंबर, 1932
14.	तीसरी गिरफ्तारी	– 1933
15.	बाबू गुलाबराय द्वारा पंडित की उपाधि	– 1934
16.	हरिजन फंड के लिए गांधी जी को कथा की राशि एवं पिताजी के सोने के बटन का दान	– 1934
17.	श्री अरविंद, श्री माँ, रमण महर्षि आदि महापुरुषों से भेंट-परामर्श	– 1934–1937
18.	नारी जागरण हेतु पहला लेख (कहानी) 'माँ की समाधि' का 'सैनिक' में प्रकाशन	– 18 अगस्त, 1936
19.	दूसरी हिमालय यात्रा	– 1937
20.	अखण्ड ज्योति पत्रिका का शुभारंभ	– 1937
21.	घीयामंडी में अखण्ड ज्योति संस्थान की स्थापना	– 1940
22.	मथुरा से पुस्तक 'मैं क्या हूँ' का प्रकाशन	– 1940
23.	सतयुग आंदोलन का शुभारंभ	– 1942
24.	सबसे पहला शिविर-कर्मयोग सत्संग शिविर	– 1945

25.	'गायत्री की चमत्कारी साधना' का प्रकाशन	– 1945
26.	वं० माताजी का पू० गुरुदेव से शुभविवाह	– फाल्गुन शु. सप्तमी संवत् 2002, 10 मार्च, 1946
27.	अखण्ड ज्योति प्रेस स्थापना	– 1947
28.	गायत्री महाविज्ञान का प्रथम बार प्रकाशन	– 1951
29.	गायत्री परिवार की स्थापना की घोषणा	– 1951
30.	क्षेत्रों में सामूहिक गायत्री-साधना का शुभारंभ	– 1951
31.	दुराग्रहियों के लिए सशर्त शास्त्रार्थ की चुनौती	– 1952 अक्टूबर
32.	गायत्री तपोभूमि के लिए जमीन का क्रय	– 1952 गीता जयंती
33.	वं० माताजी द्वारा ज़ेवर दान	– 1952
34.	गायत्री तपोभूमि आश्रम का निर्माण	– 1953
35.	गायत्री मंदिर में गायत्री माता की प्राण-प्रतिष्ठा	– गायत्री जयंती संवत् 2010 22 जून 1953
36.	गायत्री मंदिर गायत्री तपोभूमि में 2400 तीर्थों के जल-रज एवं 2400 करोड़ हस्तलिखित मंत्रलेखन की स्थापना	– 1953
37.	अखण्ड अग्नि (700 वर्ष से अधिक पुरानी) की यज्ञशाला में स्थापना	– 1953
38.	दीक्षा देने का शुभारंभ (प्रथम दीक्षा माताजी को) एवं सामूहिक संस्कारों का क्रम आरंभ	– 1953
39.	गायत्री तपोभूमि में प्रथम बार (आश्विन नवरात्र) एवं सामूहिक साधना का शुभारंभ	– 1954 तक
40.	जीवन-साधना शिविर प्रथम बार (शिविरों का शुभारंभ) गायत्री तपोभूमि में	– 27 सितंबर से 6 अक्टू०, 1954
41.	पू० गुरुदेव द्वारा पूरे देश में गायत्री एवं यज्ञ का प्रचार	– 1954-1958
42.	गायत्री तपोभूमि में विशिष्ट यज्ञों (रुद्र यज्ञ, लक्ष्मी यज्ञ, चंडी यज्ञ, वेद यज्ञ, नवग्रह यज्ञ आदि) को संपन्न कराना	– 1955
43.	नरमेध यज्ञ	– (22 से 24 अप्रैल) 1956
44.	पू० गुरुदेव वं० माताजी द्वारा अपनी संपत्ति का गायत्री तपोभूमि को दान	– 1956 (नरमेध अवसर पर)
45.	अखिल भारतीय गायत्री परिवार का प्रथम सम्मेलन	– 7 से 12 जून, 1957
46.	'गायत्री परिवार' पत्रिका का प्रकाशन आरंभ	– जून 1958
47.	सहस्रकुंडीय विशाल गायत्री महायज्ञ	– कार्तिक शु. द्वादशी से पूर्णिमा तक 23 से 26 नवंबर, 1958
48.	एक करोड़ गायत्री चालीसा का वितरण (सहस्रकुंडीय यज्ञ में)	– 1958
49.	'जीवन यज्ञ' पत्रिका का आरंभ	– फरवरी 1959 से
50.	माताजी द्वारा अखण्ड ज्योति का संपादन (प्रथम बार)	– अक्टूबर 1959 से
51.	पशुबलि विरोध आंदोलन	– 1960
52.	प्राकृतिक चिकित्सा व्यवस्था	– 1960
53.	तीसरी हिमालय यात्रा	– 1960-61

54. वेदों एवं उपनिषदों के भाष्य का प्रथम बार प्रकाशन – 1960-61
55. 'सुनसान के सहचर' पुस्तक का प्रकाशन – 1961
56. युग निर्माण सत्संकल्प का प्रथम बार प्रकाशन – 1962 मार्च अखण्ड ज्योति
57. भारत-चीन युद्ध में देशहित समुचित योगदान – 1962
58. कल्प-चिकित्सा शिविरों का शुभारंभ गायत्री तपोभूमि में – अप्रैल 1962
59. तपोभूमि विशेष स्वास्थ्य-शिविरों का शुभारंभ – 1962
60. शतसूत्रीय युग निर्माण योजना का प्रस्तुतीकरण – जून 1963
61. युग निर्माण योजना के शुभारंभ की घोषणा (गुरुपूर्णिमा) – 6 जुलाई, 1963
62. आँवलखेड़ा, आगरा में माता दानकुँवरि विद्यालय की स्थापना – 1963
63. युग निर्माण योजना पत्रिका का शुभारंभ – जुलाई, 1964
64. परमपूज्य गुरुदेव को 'लाइट ऑफ एशिया' की उपाधि – 1964
65. 1965 भारत-पाक युद्ध में भारत की सफलता के लिए विशेष साधना एवं सहयोग – 1965
66. विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय-अनुसंधान की योजना – 1965
67. प्रगतिशील जातीय सम्मेलनों का शुभारंभ – जून, 1965
68. गायत्री तपोभूमि में चांद्रायण-साधना आरंभ – 1965
69. वानप्रस्थ शिविर (गायत्री तपोभूमि) – 1965
70. समयदान घंटा/अंशदान एक आना (6 नए पैसे) का शुभारंभ – 1965
71. विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन – जुलाई, 1965
72. गोरक्षा महा अनुष्ठान – 1966
73. प्रज्ञायोग (हर दिन जन्म-हर दिन मौत) का शुभारंभ – 1967
74. गायत्री तपोभूमि में युग निर्माण विद्यालय की स्थापना – 1967
75. वैज्ञानिक अध्यात्मवाद विषय पर भारत के दो सौ वैज्ञानिकों से परामर्श उनके अभिमत संग्रह – 1968
76. वं० माताजी द्वारा शांतिकुंज की जमीन का क्रय – 20 जून, 1968
77. क्रिश्चियन कालेज इंदौर में 'दर्शन' पर ऐतिहासिक व्याख्यान – 1968
78. शांतिकुंज के निर्माण-कार्य का आरंभ – 1969 (गुरुपूर्णिमा)
79. विनोबा जी द्वारा 'वेदमूर्ति' का संबोधन – 1970
80. पाँच सहस्रकुंडीय विशाल यज्ञ, युग निर्माण सम्मेलन (भीलवाड़ा, टाटानगर, बहराइच, पोरबंदर, महासमुंद) – 1970-71
81. माता दानकुँवरि (ताई जी) का स्वर्गवास – 12 फरवरी, 1971
82. गायत्री तपोभूमि से अन्य भाषाओं (गुजराती, उड़िया, मराठी, अँगरेजी आदि भाषाओं) में कुछ पुस्तकें तथा पत्रिकाओं का प्रकाशन – 1971
83. मथुरा में विदाई कार्यक्रम में सामूहिक विवाह – 17 से 20 जून, 1971
84. विदाई के पूर्व गायत्री मंदिर (तपोभूमि मथुरा) में ऋषियुग्म के चरण पादुकाओं की स्थापना – 20 जून, 1971
85. मथुरा से ऋषियुग्म की भावभरी विदाई – 20 जून, 1971
86. शांतिकुंज में ऋषियुग्म का प्रवेश – 20 जून, 1971 (रात्रि 10 बजे)
87. चौथी हिमालय यात्रा – 1971-72

88.	भारत-पाक युद्ध 1971 के समय भारत की विजय के लिए आध्यात्मिक पुरुषार्थ	– 1971
89.	शांतिकुंज में ऋषि परंपरा का बीजारोपण	– 1972
90.	विदेश यात्रा (अफ्रीकी देशों में धर्म-संस्कृति का प्रचार)	– 1972-73 (दिसंबर 1972 से फरवरी 1973 तक)
91.	प्राण-प्रत्यावर्तन सत्र (शांतिकुंज)	– 1973
92.	महिला जागरण का शंखनाद	– 1973
93.	वानप्रस्थ, लेखन, संगीत आदि के विशेष सत्र	– 1974
94.	करपात्री जी द्वारा आचार्य जी के कार्यों की प्रशंसा (हरिद्वार कुंभ)-	1974
95.	'समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान' का प्रकाशन	– 1975
96.	'महिला जागृति अभियान' पत्रिका प्रकाशन	– जुलाई 1975 से 1980 तक
97.	देव कन्याओं द्वारा राष्ट्र जागरण	– 1973-79
98.	शांतिकुंज को 'संस्कृत परिषद्' की सदस्यता	– 1976
99.	साधना शुभारंभ (वसंत पर्व, 1926) का स्वर्ण जयंती वर्ष	– 1976-77
100.	गायत्री नगर (शांतिकुंज का शिलान्यास)	– वसंत पर्व 1978
101.	'युग शक्ति गायत्री' हिंदी पत्रिका का प्रकाशन	– जून 1978 से सितंबर 1980 तक
102.	ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना	– 1979 गायत्री जयंती
103.	शाक्तिपीठों के निर्माण की घोषणा	– 1979
104.	यान संकट (स्काई लैब) निवारण के लिए सुरक्षा अनुष्ठान कराना	– 1979
105.	शक्तिपीठों का शिलान्यास उद्घाटन गायत्री प्रज्ञापीठ-चरणपीठ की स्थापना आरंभ	– 1980-82
106.	गायत्री विद्यापीठ शांतिकुंज की स्थापना	– 1980
107.	आँवलखेड़ा शक्तिपीठ की स्थापना	– 1981
108.	प्रज्ञापुराण लेखन	– 1979 से 81
109.	'प्रज्ञा अभियान' मासिक का प्रकाशन	– 1981-83
110.	शांतिकुंज में प्रखर प्रज्ञा—सजल श्रद्धा की स्थापना	– 30 जनवरी, 1982 (वसंत पर्व)
111.	स्वाध्याय मंडलों के गठन का शुभारंभ	– 1983
112.	सूक्ष्मीकरण साधना में प्रवेश	– रामनवमी 1984 से
113.	पू० गुरुदेव की हीरक जयंती वर्ष	– 1985-86
114.	'हमारी वसीयत और विरासत' का प्रकाशन	– 1985
115.	राष्ट्रीय एकता सम्मेलन एवं यज्ञ-शृंखला	– 1986-87
116.	राष्ट्र कुंडलिनी जागरण एवं सावित्री-साधना	– 1986-87
117.	इक्कीसवीं-सदी उज्ज्वल भविष्य का उद्घोष	– फरवरी, 1987
118.	दीपयज्ञों की शृंखला वसंत पर्व से प्रारंभ	– 1988
119.	12 वर्षीय युगसंधि महापुरश्चरण साधना का शुभारंभ	– आश्विन नवरात्र 1988 से
120.	क्रांतिधर्मी साहित्य का लेखन	– 1988-89
121.	पू० गुरुदेव का महाप्रयाण	– गायत्री जयंती 2 जून, 1990
122.	देश के 6 स्थानों में विराट लक्ष वेदीय ब्रह्मदीप यज्ञ	– 7-8 जून, 1990 ज्येष्ठ पूर्णिमा

123. पू० गुरुदेव का भस्मावशेष शांतिकुंज स्थित 'प्रखर प्रज्ञा' प्रतीक में स्थापित – 13 जून, 1990
124. दिल्ली में पू० गुरुदेव को गणमान्यों द्वारा श्रद्धांजलि – 4 अगस्त, 1990
125. 'स्मृति विशेषांक' का प्रकाशन – 1990 अखण्ड ज्योति अगस्त +सित. अंक
126. विराट संकल्प श्रद्धांजलि समारोह – 1 से 4 अक्टूबर, 1990
127. देव स्थापना कार्यक्रम – 1991
128. पू० गुरुदेव के सम्मान में भारत सरकार द्वारा डाक टिकट जारी – 27 जून, 1991
129. प्रज्ञा अभियान पाक्षिक का प्रकाशन आरंभ – जुलाई, 1991
130. वं० माताजी द्वारा हिमालय यात्रा – सितंबर, 1991
131. ऐतिहासिक शपथ समारोह – 8 से 10 जून, 1992
132. अश्वमेध यज्ञ घोषणा – 10 जून, 1992
133. रजवंदन समारोह – 1992
134. देव संस्कृति द्रग्विजय अंक का प्रकाशन – नवंबर, 1992 (अखण्ड ज्योति)
135. प्रथम अश्वमेध जयपुर – 8–10 नवंबर, 1992
136. वं० माताजी द्वारा अंतिम अश्वमेध यज्ञ–भागीदारी (चित्रकूट) – 16 से 20 अप्रैल, 1994
137. वं० माताजी का महाप्रयाण – 19 सितंबर, 1994 भाद्रपद, पूर्णिमा
138. वं० माताजी के भस्मावशेष की शांतिकुंज स्थित 'सजल श्रद्धा' में स्थापना – 1994, 23 सितंबर
139. वं० माताजी को श्रद्धांजलि (दिल्ली, मथुरा) – 30–31 अक्टूबर, 1994
140. भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का शुभारंभ – 1994
141. पू० गुरुदेव के सम्मान कीर्तिस्तंभ का माननीय प्रधानमंत्री नरसिम्हाराव द्वारा लोकार्पण – 1 नवंबर, 1995
142. प्रथम पूर्णाहुति आयोजन – 1 से 7 नवंबर, 1995
143. शांतिकुंज स्थापना का रजत–जयंती वर्ष आयोजन कार्यक्रम – 1996
144. गायत्री तपोभूमि में प्रखर प्रज्ञा की स्थापना – गायत्री जयंती 1997
145. विराट विभूति ज्ञानयज्ञ कार्यक्रम (दिल्ली) – 8 अक्टूबर, 2000
146. महापूर्णाहुति शांतिकुंज सृजन संकल्प विभूति महायज्ञ – 6 से 11 नवंबर 2000
147. गायत्री तपोभूमि के स्वर्ण जयंती समारोह में पू० गुरुदेव, वं० माताजी की मूर्तियों की स्थापना – अक्टूबर, 2002
148. देव संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना – 2002
149. पू० गुरुदेव जन्मशताब्दी समारोह (गायत्री तपोभूमि) – वसंत पर्व 6–8 फरवरी, 2011
150. आचार्य 'श्रीराम शर्मा जन्मशताब्दी महोत्सव शांतिकुंज – 6–10 नवंबर, 2011
151. युग निर्माण योजना का स्वर्ण जयंती वर्ष कार्यक्रम – 2013
152. शांतिकुंज की स्वर्ण जयंती के अवसर पर सरकार द्वारा 5 रु० का डाक टिकिट जारी किया – 2021
153. वं० माताजी एवं अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष का कार्यक्रम हरिद्वार – 19 से 23 जनवरी 2026
154. वं० माताजी के जन्मस्थली निर्माण का शुभ संकल्प – 2026
155. वं० माताजी पर डाक टिकट प्रस्तावित – 2026

आत्मीय अनुरोध

श्रद्धांजलि-संकल्प

परमपूज्य गुरुदेव का जन्म आश्विन कृष्ण 13 सन् 1911 में हुआ। दस वर्ष की आयु में महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी ने काशी में यज्ञोपवीत संस्कार कराया और उसी वर्ष वे हिमालय जाने को घर से निकल पड़े, पर घरवालों की तलाश में निकट के बरहन रेलवे स्टेशन पर ट्रेन की प्रतीक्षा करते हुए मिल गए तो उन्हें आँवलखेड़ा वापस ले जाया गया। वसंत पर्व (18 जनवरी, 1926) को ब्राह्ममुहूर्त में उनके पूजाकक्ष में दीपक की लौ बढ़ती गई और उस प्रकाशपुंज के मध्य एक महान गुरु की आकृति उभरी, जिसने अपना परिचय बताया और अखण्ड दीप के समक्ष बैठकर भोजन संबंधी कठोर अनुशासन के साथ चौबीस-चौबीस लाख के चौबीस गायत्री महामंत्र के महापुरश्चरणों के संपन्न करने का आदेश दिया। गुरु के अंतर्धान होते ही किशोरवय के श्रीराम ने अखण्ड दीप के सम्मुख महापुरश्चरण का शुभारंभ कर दिया।

आपद्धर्म को प्रमुखता—उन्हीं दिनों जब सारे युवा महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश को स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से पुलिस के डंडे खाते-जेल भरते दिखे, तो वे स्वयं को रोक न पाए, घर से भागकर 1927 में आगरा जाकर, स्वाधीनता संग्राम सैनिक के रूप में भरती हो गए। सन् 1927 में ही वे पहली बार हिमालय की यात्रा पर गए। सन् 1928-37 की अवधि में उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में बहुत सक्रिय रूप से भाग लिया। स्वतंत्रता का संदेश आम लोगों तक उपलब्ध कराने के लिए उन्होंने आगरा के 'दैनिक सैनिक' समाचारपत्र में पत्रकार के रूप में काम किया। 'मत्त' उपनाम से उनकी कविताएँ सतयुग, चाँद, मस्ताना विश्वमित्र, सन्मार्ग, विद्यार्थी आदि पत्रिकाओं में छपने लगीं। ये स्वतंत्रता सेनानियों के अंदर जोश भरने का काम करती थीं। स्वतंत्रता सेनानी की भूमिका में रहते वे तीन बार गिरफ्तार किए गए। पहली बार 14 अप्रैल, 1930 को गिरफ्तार करके आगरा कारागार में रखा गया; दूसरी बार सन् 1932 में गिरफ्तार किया गया और आगरा जेल में रखा तथा तीसरी बार 1933 में गिरफ्तार करके आसनसोल जेल में रखा गया। आगरा में बाबू गुलाबराय एक प्रतिष्ठित साहित्यकार हो चुके हैं, उन्होंने युवा श्रीराम को पं० श्रीराम शर्मा कहना शुरू किया। इसके बाद पूज्यवर पं० श्रीराम शर्मा के नाम से प्रख्यात हुए।

हिमालय यात्रा—पहली हिमालय यात्रा 1927, दूसरी 1937, तीसरी 1960-61 और चौथी जून, 1971-72 में की। उद्देश्य था हिमालयवासी गुरु सर्वेश्वरानंद जी के सान्निध्य में बैठकर, उनका निर्देश पाकर, जीवन की गतिविधियों को उसी ओर मोड़ देना। वे हिमालय को धरती का स्वर्ग कहते थे और हिमालय के ध्रुवकेंद्र में ही उनका जाना-आना होता था। हिमालय यात्रा के वृत्तांत को उन्होंने 'सुनसार के सहचर' पुस्तक में लिखा, जो अतिलोकप्रिय पुस्तक है।

अखण्ड ज्योति जो अब ज्वाला बन चुकी है—उनके द्वारा प्रज्वलित, पूजित, आराधित ज्योति अब ज्वाला बन चुकी है। जिस ज्योति ने किशोरवय के श्रीराम को वेदमूर्ति तपोनिष्ठ, युगप्रवर्तक बनाया उसी के आशीर्वाद से उसी के प्राण से पोषित सन् 1937 से प्रारंभ हुई 'अखण्ड ज्योति' बाद में प्रकाशित 'युग निर्माण योजना', 'प्रज्ञा अभियान पाक्षिक' तथा अन्य बहुतेरी भाषाओं में प्रकाशित पत्रिकाओं के समूह ने करोड़ों हृदयों को झकझोरकर एक इतना बड़ा अभियान खड़ा कर दिया है कि 'युग परिवर्तन' अब स्पष्ट होता हुआ दिखाई देने लगा है।

गायत्री तपोभूमि—1941 में अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा से निकला यह ज्ञानयज्ञ का अभियान गायत्री जयंती, 1953 में उन्हीं के द्वारा मथुरा में स्थापित गायत्री तपोभूमि से युग निर्माण योजना मिशन के माध्यम से विस्तार पाकर अब विश्वव्यापी अभियान बनु चका है। इसके लिए अब 'नियमित लेखन' द्वारा पत्रिकाओं तथा 3200 पुस्तकों का विराट ज्ञान-कलश मानवता के कल्याणार्थ वे सौंप चुके हैं।

प्रतिदिन 6 घंटों का मंत्रजप और ढाई से चार घंटे लेखन में लगते थे। इसके बाद ही जल ग्रहण करते थे। उनके शिष्यों ने उनके इस तप-अध्यवसाय को समझा है और उन्होंने 'पुस्तक मेले' लगाने तथा घर-घर जाकर पत्रिका वितरण, झोला-पुस्तकालय चलाने को अपने दैनिक क्रम में डालना शुरू कर दिया है।

जन-संपर्क—पूज्यवर ने स्वयं जन-संपर्क किया और शिष्यों को भी इसके महत्त्व को समझाया। इसी माध्यम से छोटे-छोटे एक कुंडीय, पाँच कुंडीय यज्ञों का प्रचलन बढ़ा, जो अब 'गृहे-गृहे यज्ञ अभियान' में बदल चुका है। पूज्यवर ने सस्ते साहित्य का प्रकाशन कर अपने विचारों को जन-जन तक पहुँचाया।

भगवान ने दिया है देने के लिए—परमपूज्य को उनके निष्काम भाव से किए मंत्रजप के फलस्वरूप उनकी उपास्य गायत्री माता और गुरुदेव के आशीर्वाद से जो ज्ञान की राशि मिलती थी; उसे लिखकर, छपाकर पत्रिकाओं और 3200 पुस्तकों की थाती वे हमें सौंप गए हैं, हम भी उसे घर-घर पहुँचाने को संकल्पित हैं।

अखण्ड ज्योति के पाठकों के आग्रह पर जब तपोभूमि के निर्माण की बात चली तो भूमि क्रय परमपूज्य ने अपने निजी पैसे से किया। निर्माण के लिए हाथ खाली था; जैसे ही यह परम वं० माताजी को पता चला, उन्होंने अपने गहने इस ईश्वरीय कार्य हेतु समर्पित कर दिए। पू० गुरुदेव के गुरु तथा उपास्य गायत्री माता के प्रताप से पत्रिका पाठकों के मनीआर्डरों की राशि और संख्या बढ़ी तो नींव पूजन कर निर्माण आरंभ हुआ और गायत्री तपोभूमि की प्राण-प्रतिष्ठा 1953 की गायत्री जयंती को संपन्न हो गई। 1956 में नरमेध यज्ञ तथा 1958 में प्रथम सहस्रकुंडीय महायज्ञ मथुरा में किया। यह एक ऐतिहासिक आयोजन था, जिसमें हिमालय की बहुत सारी ऋषिसत्ताओं ने भागीदारी की और 4-5 लाख व्यक्तियों ने भाग लेकर अपना जीवन धन्य किया। 1962 में उन्होंने युग निर्माण सत्संकल्प की घोषणा की। आचार्य विनोबा भावे ने

सन् 1970 में परम पू० को 'वेदमूर्ति' कहकर संबोधित किया। जून, 1971 में उन्हें मथुरा से विदा होकर शांतिकुंज होते हुए हिमालय जाना था। इसके पूर्व लगभग एक वर्ष वे पूरे भारत में स्थित गायत्री परिजनों से यज्ञों में मिले। इस अवधि में बहराइच (उ०प्र०), टाटानगर (झारखंड), महासमुंद (छ०ग०), पोरबंदर (गुज०) तथा भीलवाड़ा (राज०) में सहस्त्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ संपन्न किए, जिनमें परम वं० माताजी भी उनके साथ गईं। इसी अवधि में ताईजी (गुरुदेव की माताजी) का 12 फरवरी, 1971 को स्वर्गवास हो गया। 20 जून, 1971 को वे मथुरा से विदा होकर शांतिकुंज होते हुए हिमालय गए। मथुरा यह चार दिनों का विदाई समारोह एक ऐतिहासिक कार्यक्रम था, जिसे युगों तक याद रखा जाएगा।

शांतिकुंज से नए अध्याय का शुभारंभ—परम वं० माताजी कुमारी कन्याओं के साथ गायत्री-साधना में पूरे समय जुटी रहीं। संयोग से 1972 में उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। पूज्यवर हिमालय से शांतिकुंज को आए और परिस्थितिजन्य समस्याओं को सुलझाकर मिशन को गतिमान कर पुनः वापस चले गए।

नए कार्यक्रम—पूर्वी अफ्रीका में भारतीयों का जीवन संकट में आ गया था; समाधान के लिए पू० गुरुदेव दिसंबर, 1972 में गए और फरवरी, 1973 में वापस आए। शांतिकुंज में प्राण-प्रत्यावर्तन सत्रों का शुभारंभ हुआ। परम वं० माताजी की सक्रियता और संरक्षण में कन्याओं का भी प्रशिक्षण शुरू हुआ। गुरुपूर्णिमा 1975 के अवसर पर 'महिला जागृति अभियान' मासिक पत्रिका का शुभारंभ हुआ और उसी वर्ष नारी जागरण अभियान का शंखनाद हुआ। पूरे शांतिकुंज की व्यवस्था, शिविरार्थियों से संबंधित सारे कार्य परम वं० माताजी के संरक्षण में ही होते थे।

पूज्यवर के मार्गदर्शन में शेष गतिविधियाँ—गायत्री जयंती 3 जून, 1979 को हरिद्वार के सप्तर्षि क्षेत्र में गंगातट पर 'ब्रह्मवर्चस' शोध संस्थान की स्थापना हुई। पूरे देश में गायत्री शक्तिपीठों के निर्माण का बिगुल सन् 1979 में बजा और अब तक लगभग हजारों छोटे-बड़े प्रज्ञा संस्थान बन चुके हैं। उन्हीं दिनों उन्होंने आयुर्वेद आधारित चिकित्सा पद्धति के पुनर्जागरण पर जोर दिया और प्रज्ञायोग तथा एकौषधि चिकित्सा और प्रज्ञापेय को प्रयोग में लाया। 1 जून, 1980 को शांतिकुंज में निवास करने वाले कार्यकर्त्ताओं के बच्चों के लिए गायत्री विद्यापीठ की स्थापना हुई और अगले वर्ष 1981 में पूज्य गुरुदेव के जन्मस्थान आँवलखेड़ा में गायत्री शक्तिपीठ स्थापित हुआ।

जब-जब देववर्ग सच्चिंतन और सत्कर्म के माध्यम से समाज को अग्रगामी बनाने का प्रयास करता है; तब-तब असुर वर्ग अवरोध खड़ा करता है। इसके अनेक उदाहरण हैं। ऐसा सदा से होता आया है। देवत्व को पराजित होने से बचाने के लिए पूज्यवर ने रामनवमी-1984 से वसंत पर्व-1986 तक सूक्ष्मीकरण साधना की। अक्टूबर, 1988 में उन्होंने 12 वर्षीय युगसंधि महापुरश्चरण की घोषणा की। इन्हीं दिनों 1988-89 में उन्होंने क्रांतिधर्मी साहित्य की रचना की। 1990 में उन्होंने 30 अप्रैल को अहमदाबाद, जयपुर, लखनऊ, मुजफ्फरपुर,

भोपाल और कोरबा में ब्रह्मदीप यज्ञों के आयोजन की घोषणा की और 2 जून, 1990 को गायत्री जयंती पर्व पर महाप्रयाण कर गए। ज्येष्ठ पूर्णिमा को उपरोक्त छह स्थानों में दीप यज्ञों की एक साथ पूर्णाहुति संपन्न हुई। 1-4 अक्टूबर, 1990 में शांतिकुंज विराट संकल्प श्रद्धांजलि समारोह में परमपूज्य गुरुदेव को उनके शिष्यों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

परम वं० माताजी के नेतृत्व में अश्वमेध—परमपूज्य गुरुदेव से शक्ति और मार्गदर्शन प्राप्त कर परम वं० माताजी ने शिष्यों को आश्वस्त किया कि उन पर माता का वरदहस्त है और रहेगा और पूरी ताकत के साथ मिशन की विभिन्न गतिविधियों के संचालन में वे सक्रियता से जुट गईं। 7-10 जून, 1992 को उन्होंने शांतिकुंज में ऐतिहासिक शपथ समारोह में देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के अंतर्गत अश्वमेध यज्ञों की घोषणा की और प्रथम अश्वमेध महायज्ञ जयपुर में 7-10 नवंबर, 1992 में संपन्न हुआ। उसके बाद भिलाई, गुना, भुवनेश्वर, लेस्टर (यू०के०), टोरोंटो (कनाडा), लखनऊ, लॉस एंजेलिस (यू०एस०ए०), बड़ौदा, भोपाल, नागपुर, ब्रह्मपुर, कोरबा, कुरुक्षेत्र और चित्रकूट तक परम वं० माताजी स्वयं गईं। अब तक 50 से अधिक स्थानों पर ये यज्ञ संपन्न हुए हैं। परम वं० माताजी का महाप्रयाण भाद्रपद पूर्णिमा, 1994 (19 सितंबर) को हुआ।

26 सितंबर, 2026 (पूर्णिमा) को उनकी पुण्यतिथि है और 30 सितंबर, 2026 (भाद्रपद कृष्ण 4) को जन्मदिन है। जिस प्रकार पूज्य गुरुदेव एवं परम वं० माताजी ने मिलकर विराट गायत्री परिवार का पालन-पोषण किया है, उसी प्रकार हम सभी सपरिवार उनके द्वारा घोषित 'युग निर्माण सत्संकल्प' के 18 सूत्रों पर चलते हुए गुरुसत्ता के अनुशासन को अपने-अपने जीवन में उतारेंगे। हम सभी परिजन सप्तक्रांति के सूत्रों (साधना, शिक्षा, स्वाध्याय, स्वावलंबन, पर्यावरण, व्यसन मुक्ति, कुरीति उन्मूलन) को प्रचारित-प्रसारित करते रहेंगे।

हमारा विश्वास है कि गुरुसत्ता के चरण-चिह्नों पर चलकर मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण अवश्य होगा; व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र का निर्माण होगा, हम शरीर से स्वस्थ होंगे, हमारा मन स्वच्छ होगा तथा समाज सभ्य और सुसंस्कृत होगा। हे गुरुदेव! हे माताजी! हम सब आपके बच्चे आपको आश्वस्त करना चाहते हैं कि आपके द्वारा 1963 में घोषित युग निर्माण योजना का शतसूत्रीय कार्यक्रम अवश्य सफल होगा। आपके आशीर्वाद से आप द्वारा घोषित—'इक्कीसवीं सदी—नारी सदी' आज पूर्ण रूप से सफल होता दिखाई दे रहा है। आप के द्वारा घोषित दूसरा कार्यक्रम—'इक्कीसवीं सदी—उज्ज्वल भविष्य' था। इस शताब्दी का चतुर्थ भाग पूरा हो चला है; अभी तीन-चौथाई शेष है। सकारात्मक सोच वालों को तथा भविष्य में झाँकने वालों को स्पष्ट रूप से दिख रहा है कि आपकी घोषणा सफल हो रही है। नकारात्मक सोच रखने वाले भी अब बदल रहे हैं।

हम सुधरेंगे—युग सुधरेगा।
हम बदलेंगे—युग बदलेगा।
गुरुसत्ता के चरणों में मानस-पुत्रों का कोटि-कोटि नमन! ❐

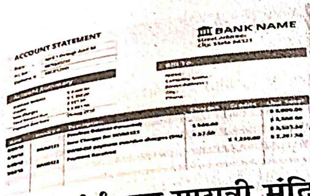

गायत्री तपोभूमि के बैंक खातों का विवरण

1. धर्मार्थ दान गायत्री मंदिर :
   * दैनिक व्यवस्था, संस्कार
   * अखण्ड दीप, पर्व-त्योहार
   * अनुष्ठान, विभिन्न प्रकार के शिविर
   * अन्नक्षेत्र (भोजन-व्यवस्था)
   * गायत्री मंदिर जीर्णोद्धार एवं पुनर्निर्माण

   PAN-AAATG0704D
   Bank A/C-Gayatri Mandir Trust,
   * **IOB Branch :** Yug Nirman Tapobhoomi, Mathura
     IFSCODE-IOBA-0001441,
     A/C No.-144102000000003,
   * **PNB Branch :** Jawahar Inter College, Govind Nagar, Mathura,
     IFSCODE - PUNB0497600
     A/C No. - 4976005700000080
   * **SBI Branch :** Vrindavan Gate, Mandi Ram Das, Mathura,
     IFSCODE - SBIN0002503
   * **YES Bank Branch :** Dampier Nagar, Mathura
     IFSCODE - YESB0000072
     A/C No. - 007288700000890

2. पुण्यार्थ दान :
   * युग निर्माण विद्यालय, सप्त क्रांति आंदोलन
   * पूज्य गुरुदेव की साधनास्थली अखण्ड ज्योति संस्थान पर स्मारक निर्माण
   * पं० श्रीराम शर्मा आचार्य पारमार्थिक चिकित्सालय में निःशुल्क चिकित्सा शिविर, अन्नक्षेत्र (भोजन-व्यवस्था)
   * आपदा निवारण, चिकित्सा सुविधा एवं अन्य पारमार्थिक प्रयोजनों के लिए (दान की राशि पर आयकर अधिनियम की धारा 80G के अंतर्गत छूट प्राप्त है।) परिजनों को PAN भेजना अनिवार्य है।

   PAN-AAATY0086E
   Bank A/C-Yug Nirman Yojana Trust,
   * **IOB Branch :** Yug Nirman Tapobhoomi, Mathura
     IFSCODE-IOBA-0001441,
     A/C No.-144102000000002
   * **PNB Branch :** Jawahar Inter College, Govind Nagar, Mathura,
     IFSCODE-PUNB0497600
     A/C No.-4976005700000053,
   * **SBI Branch :** Vrindavan Gate, Mathura
     IFSCODE-SBIN0002503
     A/C No.-00000042588707132

3. गोशाला दान, प्राकृतिक चिकित्सा
   * **PAN**-AAATY2059 F
     Bank A/C-Yug Nirman Yojana Vistar Trust,
   * **IOB Branch :** Yug Nirman Tapobhoomi, Mathura
     IFSCODE-IOBA-0001441,
     A/C No.-144102000002051,
     Bank A/C-Yug Nirman Yojana Vistar Trust (02)
   * **PNB Branch :** Jawahar Inter College, Govind Nagar, Mathura ,
     IFSCODE-PUNB0497600
     A/C No. - 4976005700000062
     A/C No. - 42593590624

4.
   * युग निर्माण योजना (हिंदी) मासिक,
   * युग शक्ति गायत्री (गुजराती) मासिक,
   * साहित्य, हवन सामग्री, प्रचार सामग्री,
   * पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

   PAN-AAATY2059 F
   Bank A/C-Yug Nirman Yojana Vistar Trust (Prachar Khata)
   * **IOB Branch :** Yug Nirman Tapobhoomi, Mathura
     IFSCODE-IOBA0001441,
     A/C No.-144102000002021
     Bank A/C-Yug Nirman Yojana Vistar Trust (01)
   * **PNB Branch :** Jawahar Inter College, Govind Nagar, Mathura,
     IFSCODE-PUNB0497600
     A/C No.-4976005700000071
     Bank A/C-Yug Nirman Yojana Vistar Trust
   * **SBI Branch :** Vrindavan Gate, Mandi Ram Das, Mathura,
     IFSCODE - SBIN0002503
     A/C No. - 42597926175

माँ के चरणों में विनम्र वंदन

योगी मनीषी सभी संत सज्जन।
श्रद्धा से करते रहते हैं वंदन॥
हे माँ तुम्हारी कृपा से सभी जन।
सन्मार्ग चल श्रेष्ठ जीते हैं जीवन॥

माँ तुम हो देती सहारा सदा ही।
तुम्हारे सिवा न अपना है कोई॥
माँ तुमसे संबल प्रखर शक्ति पाकर।
चलते रहेंगे हम लक्ष्य पथ पर॥

माँ तुमने दिया है जो श्रेष्ठ सुंदर।
जगत् हित लगाते रहेंगे निरंतर॥
तुम्हारे चरण चिह्न पर चल हे माता।
निर्माण में हम सतत होंगे तत्पर॥

अनुदान दो माँ, वरदान दो माँ।
नवयुग को साकार हम कर दिखाएँ॥
स्वयं के लिए न रहे कुछ भी इच्छा।
जगत् के लिए हम सब कुछ खपाएँ॥

अवतरण की शताब्दी पूरी होने आई।
नई प्रेरणा-चेतना दिव्य लाई॥
संकल्प अब हम सभी ले रहे हैं।
चलेंगे उसी राह जो तुमने दिखाई॥

नमन है, नमन है, कोटिक नमन है।
माँ-पद्मचरणों में अर्चन-अनुनय है॥
उँगली पकड़कर चलाया है तुमने।
चलता रहे क्रम ये बस यह विनय है॥
बस यह विनय है॥

ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो योनः प्रचोदयात्

- श्रीराम शर्मा आचार्य -
भगवती देवी शर्मा

आशीर्वाद

श्रीराम शर्मा

भगवती देवी शर्मा

२५-१-८०

युग निर्माण योजना

(मासिक) R.N.I No. 13636/64

प्र. ति. 17.08.2026
Regd No. Mathura-024/2024-
Licensed to Post Without Prep
No. Agra/WPP-10/2024-2026

स्कैन करें

(वेबसाइट) (यूट्यूब) (फेसबुक) (इंस्टाग्राम) (व्हाट्सऐप) (एक्स)

स्वामी युग निर्माण योजना ट्रस्ट, मथुरा के लिए मृत्युंजय शर्मा द्वारा युग निर्माण योजना ट्रस्ट, मथुरा से प्रकाशित तथा युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा से मुद्रित। संपादक - ईश्वर शरण पाण्डेय, सह संपादक - सूर्यमणि तिवारी, दीनदयाल अमृते

दूरभाष नंबर - (0565) 2530115, 2530399, 2530128, मो.- 09927086289, 09927086287

E-Mail : yugnirman@yugnirmanyojna.org Website : www.yugnirmanyojna.org